ऋषि-पथ के पथिक

राव हरिश्चन्द्र आर्य

अभिनन्दन ग्रन्थ

नागरिक अभिनन्दन

ऋषि-पथ के पथिक
राव हरिश्चन्द्र आर्य

अभिनन्दन ग्रन्थ
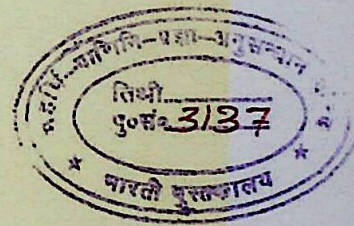
सम्पादक मण्डल

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, आमसेना
प्रो. डॉ. महावीर, हरिद्वार
डॉ. सुरेन्द्र कुमार, गुड़गाँव
आचार्य नँदकिशोर, होशंगाबाद

प्रकाशन :
राव हरिश्चन्द्र आर्य
अमृत महोत्सव अभिनन्दन समिति
३८७, आर्योदय, महल, नागपुर-३२

प्राप्ति स्थल :
(१)
३८७, आर्योदय, रुईकर मार्ग, महल, नागपुर (महाराष्ट्र)
(२)
आर्य समाज, बीगोपुर
पो.धौलेडा, तह. नारनौल,
जिला- महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

प्रथम संस्करण
२१ मई २०११

मुद्रण एवं साजसज्जा : राजेन्द्र बिडकर

मुद्रणालय :
रूपक मल्टी मॅजिक
५४, गुरुदेवनगर,
नंदनवन रोड, नागपुर
मोबा.: ०९३७०५०७८४२
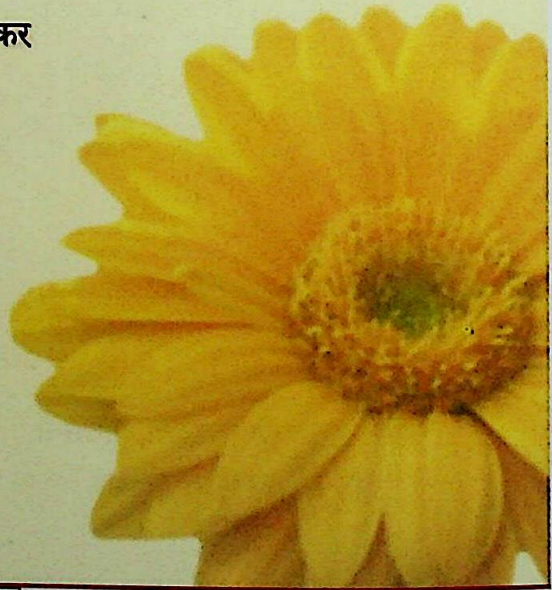
श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य के अनुकरणीय आदर्श

आर्यसमाज के प्रवर्तक नवजागरण के पुरोधा
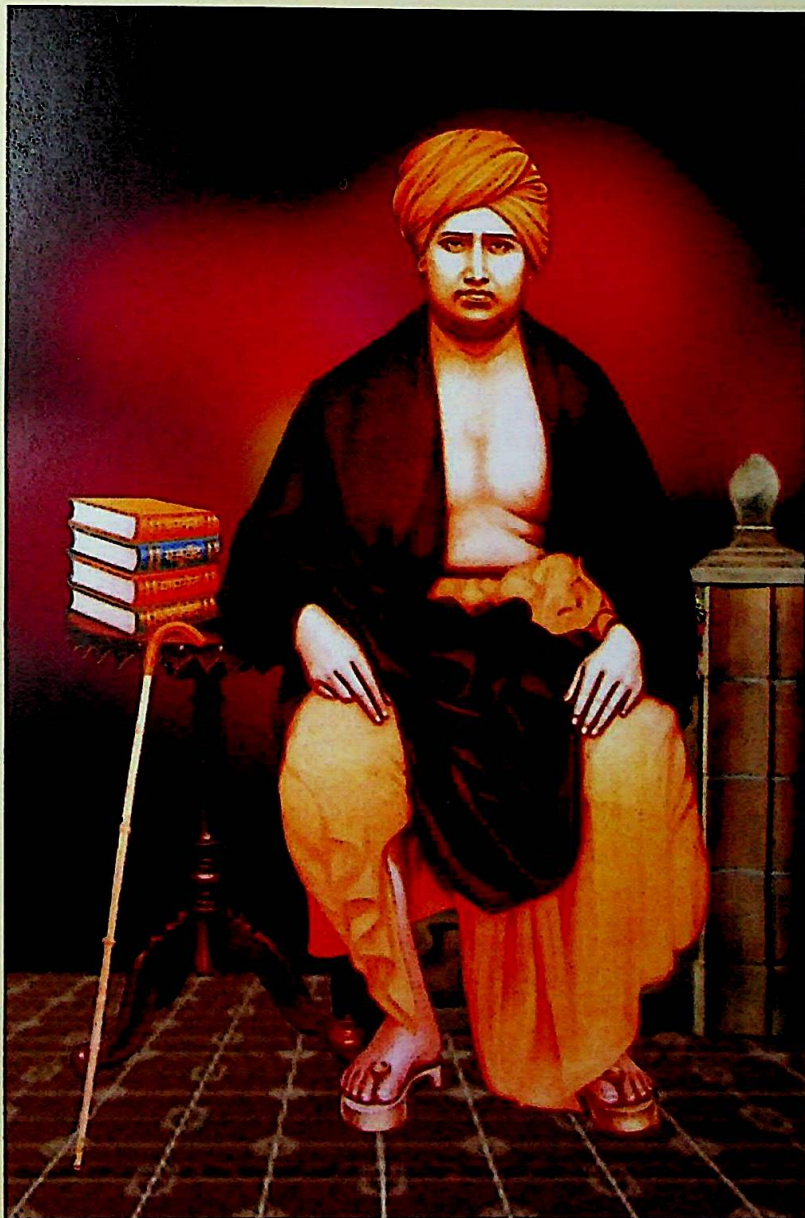
महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म्॥

राष्ट्र-धर्म पुरुस्कर्त्ता

(इश उपासनारत)
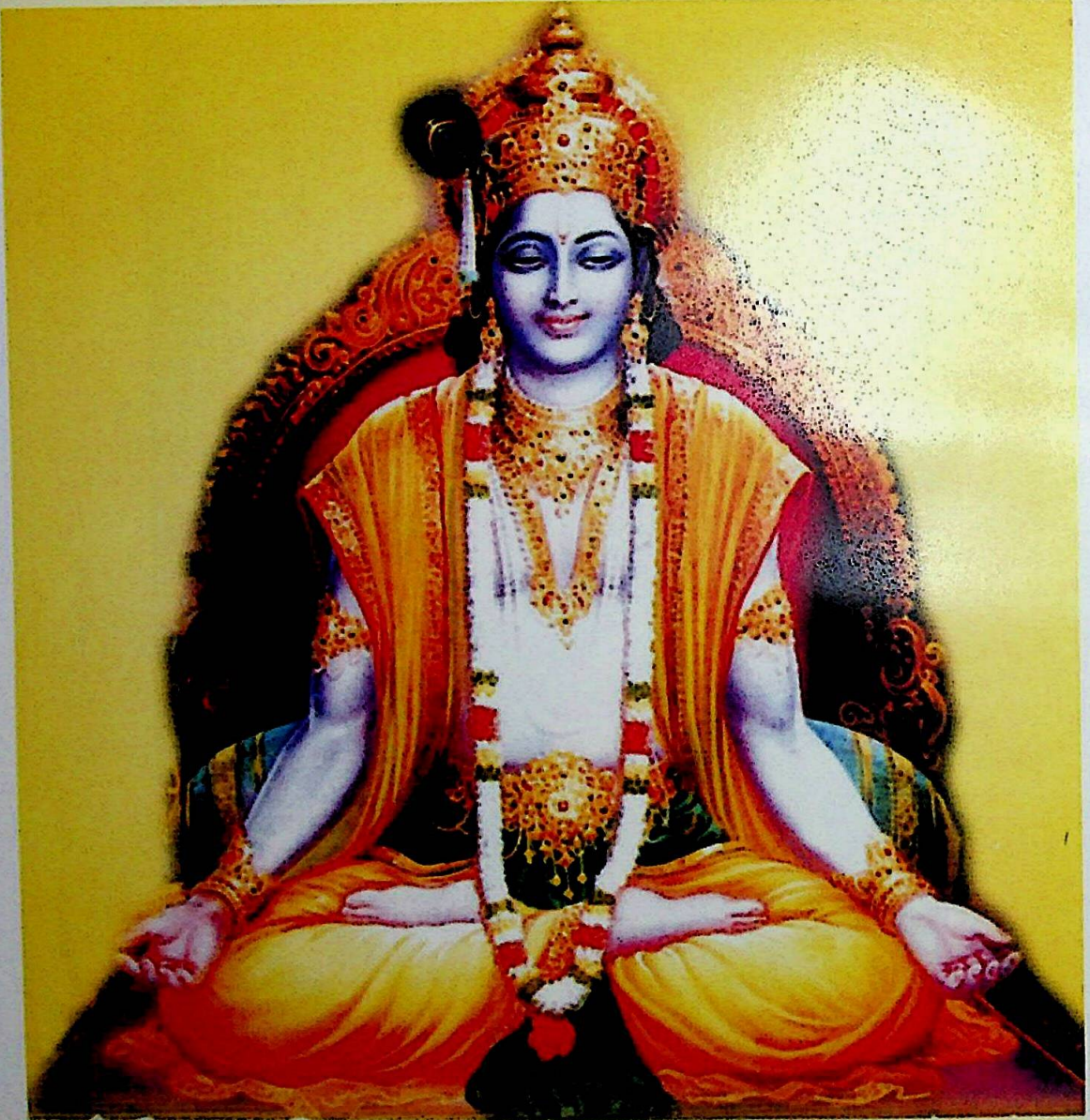
यदुकुल कमल दिवाकर

धर्म शिरोमणि प्रातः स्मरणीय

योगेश्वर श्रीकृष्ण

ऋषि पथ के पथिक

राव हरिश्चन्द्र आर्य

अभिनन्दन ग्रन्थ

मंगलाचरण

ओ३म् पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः
पुनन्तु प्रपितामहाः । पवित्रेण शतायुषा ।। (यजु.१९-३७)

ओ३म् पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।। (यजु. १९-३९)

ओ३म् पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे।
अथो अरिष्टतातये ।। (अथर्व.६-१९-२)

हे सौम्य पिता पितामह और प्रपितामह रूप परमात्मा! मेरे आचरण को पवित्र कीजिये, जिससे मैं सौ वर्ष की आयु प्राप्त करूँ। और मुझे समस्त देवजन पवित्र करें,मेरा मन और बुद्धि मुझे पवित्र करें, समस्त पंचभूत मुझे पवित्र करें, और अग्नि स्वरुप विद्वान् प्रकाशमान मुझे पवित्र करें।

हे प्रभो! आप बुद्धि और कर्म के लिये, वृद्धि तथा बल के लिये, व दीर्घ जीवन के लिये, और पश्चात् अहिंसा विस्तार के लिये, मुझे पवित्र कीजिये।
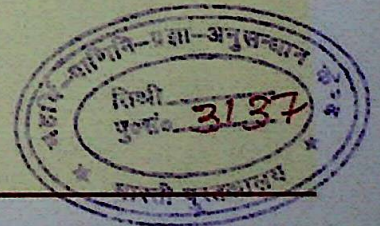
अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती,
आमसेना (मुख्य संयोजक)

पूज्य आचार्य बलदेव जी, रोहतक

पूज्य आचार्य प्रद्युम्न जी,हरिद्वार

पूज्य स्वामी रामदेवजी महाराज जी,हरिद्वार

पूज्य स्वामी संपूर्णानन्द जी,कुरुझेत्र

पूज्य आचार्य विजयपाल जी योगार्थी,झज्जर

पूज्य स्वामी सदानन्द जी,दीनानगर

पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी,दिल्ली

पूज्य आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक ,लाढ़ौत

पूज्य आचार्य स्वदेश जी,मथुरा

पूज्य आचार्य नंदकिशोर जी,होशंगाबाद

पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी,हरिद्वार

मा. डॉ. रामप्रकाशजी सांसद,कुरुक्षेत्र

मा. डॉ. भवानीलाल जी भारतीय जोधपुर

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी, अबोहर

प्रा. डॉ. महावीर जी हरिद्वार

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी, गुड़गाँव

पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वर जी,रोजड़

श्री. बनवारीलाल जी पुरोहित,नागपुर
(कार्यक्रम अध्यक्ष)

श्रीमती अर्चना डेहनकर,महापौर [illegible]

श्रीपाद गोविन्द रिसालदार,ना[illegible]

डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार,कुरुझे[illegible]

श्री. सत्यवीर शास्त्री,अमरावती

श्री. विनय आर्य जी, (आर्यप्रति[illegible]) दिल्ली

श्री. यशदेव जी शास्त्री,हरिद्वार

डॉ. बहन सुमन आर्या, हरिद्वार

पं. उमेश कुमार जी शर्मा,नागपुर

मा. श्री. वेदप्रकाशजी आर्य,गु[illegible]

श्री. दयाराम यादव (पूर्व सरपंच) बीगोपुर

श्री. फूलसिंह आर्य,बीगोपुर

प्राचार्य सुनिल नायक, नागपुर

श्री. प्रदीप काटेकर, नागपुर

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्

ऋषि पथ के पथिक
राव हरिश्चन्द्र आर्य
जन्म :१५ एप्रैल १९३४

इस अभिनन्दन ग्रन्थ की आत्मकथा

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (उड़ीसा)

संभवतः २००६ की बात है जब दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन हो रहा था उस समय श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य ने आर्यजगत् की उच्चविभूतियों को योगऋषि स्वामी रामदेव जी के करकमलों से 'आर्यरत्न' एवं 'आर्य विभूषण' पुरस्कार दिलवाये थे । उस अवसर पर राव साहब ने मुझे भी सम्मान के इस कार्यक्रम में आमन्त्रित किया था । इससे पहले २००२ में अपने गांव के आर्यसमाज में मुझे भी एक लाख रुपये के 'आर्यरत्न पुरस्कार' से सम्मानित किया था । राव साहब की यह सब उदारता देखकर मेरे हृदय में आया कि ऐसे उदारचेता, निस्पृह व्यक्ति का भी अभिनन्दन होना चाहिए। मेरे ये विचार चल ही रहे थे कि अचानक श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य तथा उनके ज्येष्ठ सुपुत्र राव महिपाल जी आर्य सामने से आते हुए दिखाई दिए तब मैंने इनसे निवेदन किया कि आप कड़े परिश्रम की कमाई से आर्यजगत् के इन विशिष्ट व्यक्तियों का सम्मान कर रहे हैं परन्तु आपकी उदारता तो आपके कार्यों को इनसे ऊपर दिखा रही है । इसलिए मेरा विचार है कि आपकी आयु के ७५ वर्ष पूरे होने पर आपका अभिनन्दन होना चाहिए और अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार करके आर्यजनता को आपके इस उदारतापूर्ण, निःस्वार्थ भाव से किए गए कार्यों का परिचय दिया जाये, अतः आपका अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार करने का मेरा विचार है।

इस पर उन्होंने कहा - 'स्वामी जी ! मैं तो आर्यजनता का एक सामान्य सेवक हूं।' तब मैंने कहा कि आपका कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दो-तीन वर्ष पीछे इन्होंने मेरी अभिनन्दन की बात स्वीकार कर ली पर वे उस समय चुप हो गये। ऐसे महापुरुषों के विषयों में महाभारतकार ने लिखा है -

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्
जेज्जीवितस्यापि हेतोः ।
धर्मो नित्यः सुखदुःखे त्वनि[illegible]
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्य[illegible]

अर्थात् किसी प्रकार [illegible] से, भय से या लोभ से यहां तक कि जीवन [illegible] लिए भी धर्म को न छोड़े क्योंकि धर्म नित्य [illegible] सुख-दुःख अनित्य हैं। इसी प्रकार जीव नित्य है परन्तु शरीर अनित्य है । अतः अनित्य वस्तुओं के लिए नित्य परोपकार रूप धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए । विद्वानों ने लिखा है :-

धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ [illegible] ।
सन्निमित्ते वरं त्यागो विनाशे नियत [illegible] ।।

अर्थात् बुद्धिमान् मनुष्य अपना धन और जीवन भी दूसरों के लिए उत्सर्ग कर दे चाहे मृत्यु आ जाये तब भी परोपकार को न छोड़े ।

परोपकारः कर्त्तव्यः प्राणैरपि धनैरपि ।
परोपकारजं पुण्यं न स्यात् क्रतुशतैरपि ।।

अर्थात् चाहे धन जाये, प्राण जाये, सब कुछ लगाकर भी परोपकार करना चाहिए, जीवन और सांसारिक वस्तुएं तो विनाशशील और जाने वाली हैं। इसलिए परोपकार के लिए त्याग करना ही सच्ची सुख शान्ति का कारण है ।

इस अभिनन्दन ग्रंथ रचना के लिये मेरी प्रार्थना पर जिन विद्वानों ने अपने लेख लिखकर भेजे उनका मैं हार्दिक आभारी हूं तथा अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने वाले 'श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य धर्मार्थ न्यास' एवं अभिनन्दन समिति को भी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

विषय सूची

महामहिम राष्ट्रपति का शुभकामना सन्देश

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान तथा सुप्रसिद्ध दानदाता राव हरिश्चंद्र आर्य का अमृत महोत्सव इस वर्ष मनाया जा रहा है। आर्य समाज की स्थापना आधुनिक विश्व के महान समाज सुधारक स्वामी दयानंद द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों और कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए 1875 में की गई थी। उन्होंने वेदों और वैदिक संस्कृति की पुनर्स्थापना के लिए महती कार्य किया।

राव हरिश्चंद्र आर्य ने भी स्वामी दयानंद जी से प्रेरणा लेकर सादगी, सदाचार और त्याग को अपने जीवन का मार्ग बनाया और उसी मार्ग पर कार्य करते हुए निरंतर समाज की सेवा में सन्नद्ध रहे हैं। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए उनके द्वारा किए गए विभिन्न प्रयास प्रशंसनीय हैं और मैं कामना करती हूँ कि वे लंबे समय तक समाज और राष्ट्र की भलाई के कार्य में लगे रहें। मैं उनकी दीर्घायु की भी कामना करती हूँ।

प्रतिभा पाटिल

(प्रतिभा देवीसिंह पाटील)

नई दिल्ली
दिनांक : 13 मई, 2011

हरियाणा के मुख्यमन्त्री का शुभकामना सन्देश

D.O. No. CMH-201 /..

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा
BHUPINDER SINGH HOODA
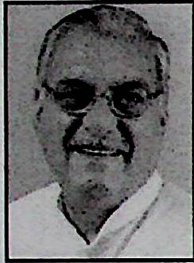
मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।
CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH.

Dated ....

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि राव हरिश्चन्द्र आर्य, अमृत महोत्सव अभिनंदन समिति, गुरुकुल आश्रम आमसेना, जिला नवापारा, उड़ीसा द्वारा इस वर्ष श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक अभिनंदन ग्रंथ भी प्रकाशित किया जाएगा।

भारत की इस पावन धारा पर अनेक संत महात्माओं ने जन्म लिया है और अपने दिव्य संदेशों से मानवता का कल्याण करके इस धरा को कृतार्थ किया है। श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य भी ऐसे ही महान् व्यक्तित्व के धनी रहे हैं, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समाज सेवा को समर्पित कर दिया।

मुझे विश्वास है कि इस अवसर पर प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ राव हरिश्चन्द्र आर्य द्वारा किए गए रचनात्मक कार्योंऔर उनके जीवन के बहुआयामी पहलुओं से लोगों को प्रेरित करेगा।

मैं ग्रंथ के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

भूपेंद्र सिंह हुड्डा
मुख्यमंत्री, हरियाणा, चंडीगढ़

हरियाणा के स्वास्थ्य एवं शिक्षा मन्त्री का सन्देश

राव नरेन्द्र सिंह

अ० स० पत्र क्र० ....134..........

स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं
चुनाव मन्त्री, हरियाणा, चण्डीगढ़।

दिनांक :......6/4/2011........

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा इस वर्ष राव हरिश्चन्द्र आर्य जी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है और इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन भी किया जाना है ।

राव हरिश्चन्द्र आर्य एक कर्मठ समाज सेवक हैं, जिन्होंने आर्य सिद्धांतों पर अटूट श्रद्धा एवं आस्था रखते हुए इस समाज के उत्थान के लिए बढ़-चढ़कर कार्य किये और जनसेवा के लिए हमेशा तत्पर रहे । उनके सहयोग से आज देश में अनेक शैक्षणिक संस्थान, चिकित्सालय एवं अन्य सामाजिक संस्थाएं संचालित हैं और इनके ट्रस्ट के माध्यम से समय-समय पर आर्य समाज के प्रतिष्ठित साधु, महात्मा एवं विद्वानों को भी सम्मानित किया जाता है । राव हरिश्चन्द्र आर्य द्वारा किये जा रहे पुनीत कार्यों की मैं हार्दिक सराहना करता हूं ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके ट्रस्ट द्वारा आर्य समाज के उत्थान के लिए जो प्रयास किए जा रहे हैं, उसके उत्साहवर्धक परिणाम सामने आएंगे ।

मैं अभिनंदन ग्रन्थ के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं और आशा करता हूं कि यह ग्रन्थ आर्य समाज के लिए प्रेरणादायी होगा।

(राव नरेन्द्र सिंह)
स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं
चुनाव मन्त्री, हरियाणा, चण्डीगढ़

योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज का आशीर्वाद

।।ओ३म्।।

पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट)

द्वारा संचालित

पतंजलि योग समिति

मुख्यालय : महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली–हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादराबाद, हरिद्वार–२४९४०२ उतराखण्ड, भारत

दर्प में मोहित व्यक्ति समष्टि से कटता है, वह केवल अपने व्यक्तित्व को ढोता है । समर्पित व्यक्ति समष्टि से जुड़ता है और ऋषि पथ के अनुगामी श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जैसे व्यक्तित्व का जन्म किसी खास उद्‌देश्य के लिए होता है, जिनके पावन हृदय में, जिनके कर्मठ करों में, मानव कल्याण के लिए 'समर्पण' के भाव बसते हैं ।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि ऋषि दयानन्द के प्रबल समर्थक श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य का 'अमृत महोत्सव' इस वर्ष धूमधाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर श्री राव के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित प्रकाश्य 'अभिनंदन ग्रंथ' लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत होगा। अभिनन्दन समिति के सभी सहयोगियों को मेरी शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद।

स्वामी रामदेव

अध्यक्ष

Tel.: 01334-240008, 248888,248999.246737, Fax : 01334-244805,240664 E-mail:divyayoga@rediffmail.com.,info@divyayoga.com

आशीर्वाद एवं शुभ कामना सन्देश

स्वामी श्रद्धानन्द जी (पूर्वनाम हरिश्चन्द्र गुरुजी) महाराष्ट्र हैदराबाद स्टेट में सुप्रसिद्ध हैं इन्होंने हजारों नवयुवकों को आर्यसमाज की शिक्षा दी है। वर्तमान में आप आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के प्रधान हैं।

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि प्रख्यात दानवीर, ऋषि दयानन्द के परम अनुयायी, वैदिक सिद्धान्तों के प्रखर अनुष्ठाता एवं परोपकार की प्रतिमूर्ति श्री राव हरिश्चंन्द्रजी आर्य इस वर्ष अपने जीवन के ७८ वसन्त पूर्ण कर रहे हैं । इस उपलक्ष्य में आप उनके संघर्षमय जीवन व परोपकारमय कार्यों पर प्रकाश डालनेवाला अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने जा रहे हैं। इस ग्रंथ से आनेवाली पीढ़ी को नई प्रेरणा मिलेगी ।

आज समाज की स्थिति दिन-प्रतिदिन दयनीय होती जा रही है । समाज एवं राष्ट्र के कार्यों हेतु समय तथा तन-मन-धन लगानेवाले लोग कम दिखाई दे रहे हैं । ऐसे में श्री हरिश्चन्द्रजी आर्य का महान् जीवन भविष्य के निर्माण में आशा की नई किरण सिद्ध होगा । सौभाग्य से श्री आर्यजी को छात्र अवस्था से ही वैदिक विद्वानों एवं आर्यसमाज का सान्निध्य मिला, जिससे वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों एवं सद्विचारों को ग्रहण करने का सुअवसर इन्हें प्राप्त हुआ ।

अच्छे विचारोंवाला तथा सात्विक वृत्ति धारण करनेवाला व्यक्ति चाहे कहीं पर भी रहे, वह हमेशा अच्छे कार्योंमें संलग्न रहता है । श्री रावजी को परमात्मा ने सच्चाई, ईमानदारी, श्रमनिष्ठा आदि अच्छी बातें प्रदान की हैं । यह उनके पूर्वजन्म के सत्कर्मोंका ही फल है । इसी कारण जब से होश संभाला है, तब से आज तक राव हरिश्चंद्रजी का जीवन उत्तम कार्यों में संलग्न रहा है । हरियाणा की पावन धरती ऐसे दानशूर नररत्नों को पाकर धन्य हो गई है ।

वैद्यनाथ कंपनी के जनरल मैनेजर, आदर्श गृहस्थी, संस्कारप्रदाता पिता, क्रियाशील आर्य कार्यकर्ता व पदाधिकारी, सुयोग्य प्रशासक, ऊँचे दर्जेके सामाजिक कार्यकर्ता, महान् दानी, सबके लिए जीवनज्योति प्रदायक आदि श्रेष्ठ गुणों में वे आगे रहे हैं । ऐसे परोपकार के धनी राव हरिश्चंद्रजी आर्य को मैं अपनी ओर से तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा की ओर से शुभकामना देता हूँ ।

ईश्वर उन्हें वेदानुसार शतायु प्रदान करे तथा वे आजीवन वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार व प्रसार तथा परोपकार एवं दानधर्म करते रहें । भूयश्च शरदः शतात् ।

भवदीय,
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, महाराष्ट्र

आचार्य बालकृष्ण जी का शुभकामना संदेश

।।ओ३म्।।
पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट)
द्वारा संचालित
पतंजलि योग समिति
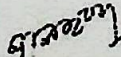
मुख्यालय : महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादराबाद, हरिद्वार-२४९४०२ उतराखण्ड, भारत

आर्य समाज देश-विदेश में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक क्षेत्रों में उन्नति कर रहा है । इसी कड़ी में शिक्षा, चिकित्सा और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा आर्य समाज के अनन्य प्रेमी राव हरिश्चन्द्र आर्य का भी अप्रतिम योगदान है ।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि राव हरिश्चन्द्र आर्य के सम्मान में 'अमृत महोत्सव' का आयोजन किया जा रहा है । अमृत महोत्सव अभिनंदन समिति इस अवसर पर श्री हरिश्चन्द्र जी के सम्यक् जीवन पर आधारित एक 'अभिनंदन ग्रन्थ' (स्मारिका) प्रकाशित करेगी । निश्चय ही यह प्रयास स्तुत्य और सराहनीय है ।

इस कृति (अभिनंदन ग्रन्थ) का स्वागत होगा - ऐसा मेरा विश्वास है । अभिनंदन समिति को मेरी शुभकामना और आशीष ।

आचार्य बालकृष्ण

Tel.: 01334-240008, 248888,248999.246737, Fax : 01334-244805,240664 E-mail:divyayoga@rediffmail.com.,info@divyayoga.com

मानवता के पुजारी, ऋषि पथ के पथिक,

सरलता, सज्जनता एवं सौम्यता के प्रतीक

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य

का संक्षिप्त जीवन परिचय
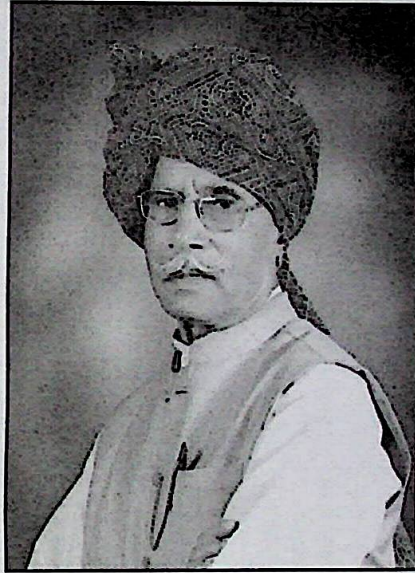
प्रथम खण्ड

जीवन ज्योति

।।ओ३म्।।

राव हरिश्चन्द्र के यदुकुल की वंशावली

(प्रपितामह) श्री रूड़ाराम जी यादव

(पितामह) श्री चेतराम जी यादव
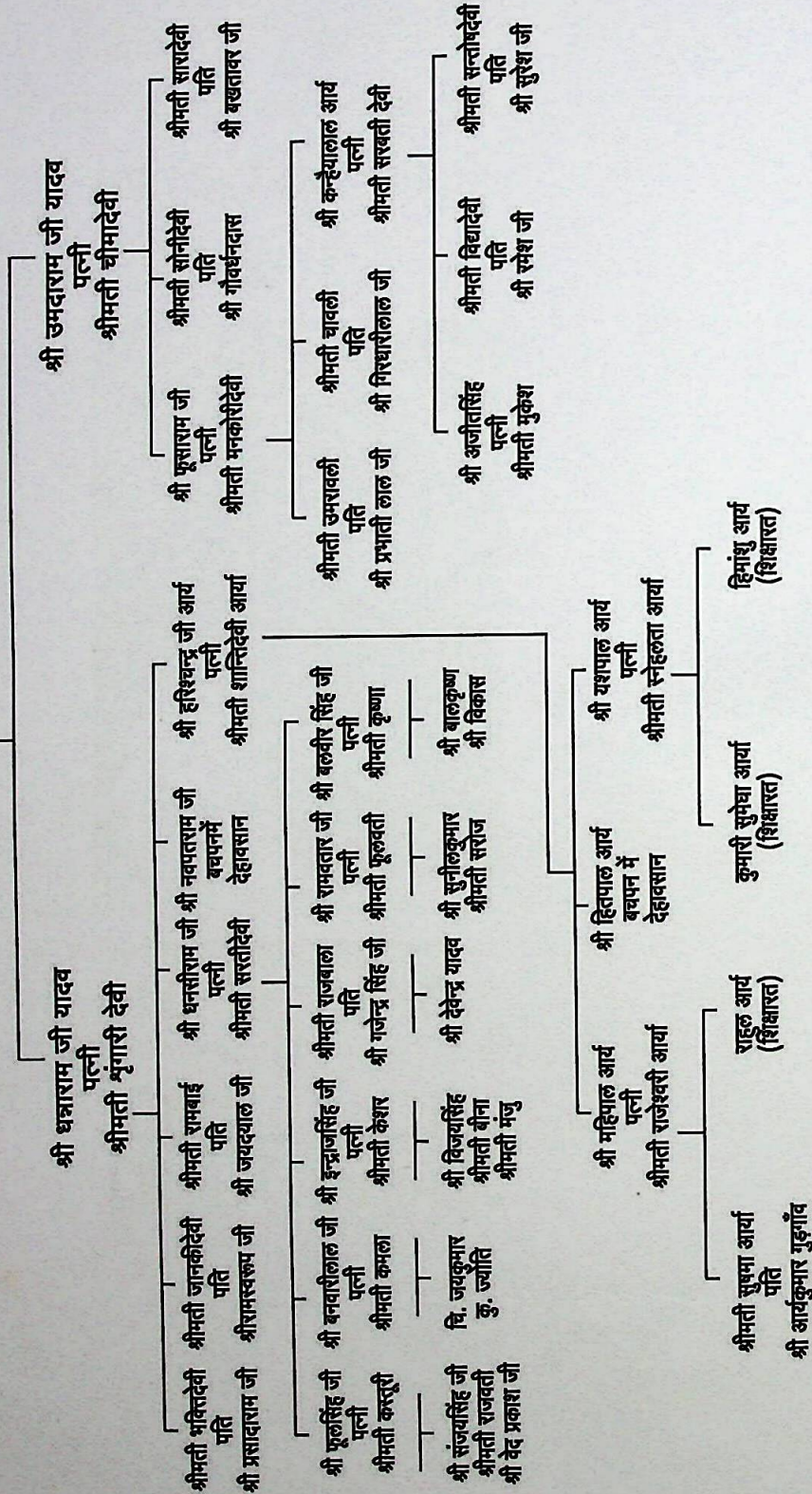
सम्पादकीय

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के सुपुत्र पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति ने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते हुए कहा था।-

जीवनेच्छा संघशक्तिः चारित्र्यं कायिकं बलम्।
सदैवोद्यतभावश्च पञ्च जीवनहेतवः।।

अर्थात् जिजिविषा, संगठन शक्ति, उत्तम चरित्र, शारीरिक मानसिक बल तथा सदैव जागरूक भाव, ये ही जीवन के पांच हेतु हैं। कुछ ऐसे श्रेष्ठ पुरुष होते हैं, जिनपर कवि का यह कथन पूर्णतः सत्य प्रतीत होता है, ऐसे महापुरुषों की माला में स्वनामधन्य श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य का नाम जगमगा रहा है। सदैव **'परहितेरतः'** दूसरों का हित, सेवा, परोपकार ही जिनका जीवन व्रत है। ईश्वरआराधना, स्वाध्याय, सन्ध्या, सत्संग से जिनको अपार तृप्ति मिलती है। विद्वानों,आचार्यों, सन्त-महात्माओं तथा सत्पुरुषों के सान्निध्य को पाकर जिन्हें अपार हर्ष होता है। महात्मा विदुर का कथन है -

धनिनोऽपि निरुन्मादा युवानोऽपि न चञ्चलाः।।
प्रभवोऽप्यप्रमत्तास्ते महामहिमशालिनः।।

अर्थात् धन होने पर जो निरभिमानी हैं, यौवन के होने पर भी जो चञ्चलता रहित हैं और स्वामी अर्थात् उच्च पदासीन होने पर भी जिन्हें मद अहंकार व्याप्त नहीं होता, वे ही महामहिम अर्थात् महात्मा हैं।

ये उक्तियां माननीय श्री हरिश्चन्द्र जी के पवित्र जीवन पर चरितार्थ होती हैं। शून्य से अथवा प्रथम सोपान से उन्नति की यात्रा प्रारम्भ करने वाले श्रीयुत आर्य जी का जीवन करोड़ों व्यक्तियों के लिये उदाहरण एवं प्रेरणास्रोत है। जिस गांव की पावनभूमि में बचपन बीता उस भूमि के प्रति अपार श्रद्धा, और जिस देश में जन्म लिया उस महान् भारत देश के प्रति अटूट विश्वास, दरिद्र नर सेवा ही नारायण सेवा, और **'विद्वांसो हि देवाः'** -जो विद्वान् हैं वे ही धरती के देवता हैं,- इस पावन भाव को सदैव स्मरण रखना यह परिचय है उस विराट् व्यक्तित्व का, जिस पुण्यात्मा श्री हरिश्चन्द्र आर्य का अमृत महोत्सव अत्यन्त उत्साह के साथ २१ मई २०११ को नागपुर के सुप्रसिद्ध और विशाल 'देशपाण्डे सभागार' में मनाया जा रहा है।

संसार में धन-वैभव, पद-प्रतिष्ठा, विद्या, प्रभाव आदि न जाने कितने व्यक्तियों के पास है, किन्तु भामाशाह और दानवीर कर्ण के समान उन्मुक्त हृदय से उस धन को वितरित करने वाला उदार मन बहुत कम लोगों का होता है।

प्रभु ने ऐसा सुन्दर, निर्मल मन श्री आर्य जी को प्रदान किया है। महात्मा विदुर ने कहा था-

अर्धादपि अध्यर्धं कस्मान्नो दीयतेऽर्थिषु।
इच्छानुरूपो विभवो कदा कस्य भविष्यति।।

यदि आपके पास अर्ध ग्रास है तो उसमें से अर्ध ग्रास याचक को क्यों नहीं दे देते? इच्छा के अनुरूप वैभव कब किसका होगा ?

आदरणीय आर्य जी की वैदिक संस्कृति में पूर्ण निष्ठा है। आप आश्रम व्यवस्था के परिपोषक हैं। कविकुलगुरु कालिदास का निम्नलिखित पद्य आपके जीवन में पूर्ण रूप से चरितार्थ हो रहा है-

शैशवे ऽभ्यस्तविद्यानां, यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां, योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।

गृहस्थ धर्म से निवृत्त होकर आपने आत्म-कल्याण के लिये वानप्रस्थ, परोपकार, सेवा, समर्पणता और साधना के तृतीय सोपान को पार कर अब आप आध्यात्मिकता की ओर निरन्तर अग्रसर हो रहे हैं।

श्री आर्य जी का निष्कलंक, धवल जीवन लाखों व्यक्तियों के लिये प्रेरणा का अखण्ड स्रोत है। ऐसा परोपकारमय आदर्श जीवन जीने वाले बहुत कम व्यक्तित्व होते हैं।

आपका व्यक्तित्व उस सत्य सनातन वैदिक संस्कृति का उज्ज्वल रूप है। जो प्रभु की सृष्टि में प्राणी मात्र के सुख एवं सर्व कल्याण की भावना रखता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

यही आपके जीवन का आदर्श है। साथ ही आपके जीवन की उपरोक्त भावना ही आपके जीवन की धरोहर है। आशा है आनेवाली पीढ़ी-दर पीढ़ी आपके इस आदर्श पर चलकर आपके जीवन से प्रेरणा लेती रहेगी।

जीवन के ७८ वसन्त पूर्ण करने पर आपके प्रति स्नेह, श्रद्धा और आत्मीयता रखने वाले सभी विद्वत्जन, संन्यासी, महात्मा और आर्य जन अमृत महोत्सव के माध्यम से आपका हार्दिक अभिनन्दन कर रहे हैं तथा आपके दीर्घ, स्वस्थ, सुखी एवं यशस्वी जीवन की मंगल कामना कर रहे हैं। इस अवसर पर माननीय आर्य जी का संपूर्ण संस्कृत जगत्, आर्य जगत् एवं विद्वत् जगत् सम्पादक मण्डल स्नेहसिक्त हृदय से अभिनन्दन करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता है कि आप सदैव मानवता की सेवा एवं प्रभु की उपासना में रत रहते हुए अपने जीवन को सफल बनायें और परोपकार से दूसरों को सुखी बनायें। इस प्रकार आप परोपकार करते रहेंगे तो परमात्मा आप पर कृपा दृष्टि की वर्षा निरन्तर करता रहेगा। यही हम सब सम्पादक मण्डल की शुभ एवं मंगल कामना है।

सम्पादक मंडल

"ऋषि पथ के पथिक" श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का संक्षिप्त जीवन परिचय

स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती

स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी हैं। आप गुरुकुल आश्रम आमसेना सहित कई गुरुकुलों का संचालन कर रहे हैं और धर्म तथा समाज की सेवा में संलग्न हैं।

वैदिक धर्म के दीवाने, समाज के लिए समर्पित, कर्मठ समाज सेवक, आर्य समाज की उन्नति के लिए निरन्तर संलग्न, वैदिक धर्म एवं ऋषिवर दयानन्द के अनन्य श्रद्धालु भक्त, यज्ञप्रेमी, आर्य जगत् के लिए उदार हृदय से दान देने वाले, वैदिक धर्म के प्रत्येक पवित्र कार्य में बढ़चढ़कर भाग लेने वाले आर्य जगत् की अनेक संस्थाओं के विकास में खुले हृदय से सहयोग करने वाले, अनेक साधु-महात्माओं के चरण सेवक एवं श्रद्धा की प्रतिमूर्ति का नाम है राव हरिश्चन्द्र जी आर्य ।

आर्य जी अपने सभी भाई-बहनों में सबसे छोटे हैं, परन्तु सबसे अधिक सूझ-बूझ वाले, कुशाग्र बुद्धि वाले एवं नम्र स्वभाव के हैं । इनके माता-पिता यद्यपि अशिक्षित थे, परन्तु नम्र स्वभाव के उदार किसान थे । दुर्भाग्यवश बचपन में ही आपके पिता श्री धन्नाराम जी का स्वर्गवास हो गया । अतः आपका पालन-पोषण माता एवं बड़े भाई की देखरेख में हुआ ।

राव हरिश्चन्द्र आर्य - वंशावली

१. वंश - चंद्र वंश, कुल - यदु

२. वंश उत्पत्ति -

प्रपितामह - श्री रुड़ाराम जी

पितामह - श्री चेतराम जी

पिता - श्री धन्नाराम जी

माता - श्रीमती शृंगारी देवी

३. जन्मस्थान - पूर्व में पेप्सु राज्य की रियासत पटियाला में (वर्तमान राज्य हरियाणा) ।

ग्राम बीगोपुर,त. नारनौल,जि. महेन्द्रगढ़

४. जन्मतिथि- विक्रमी संवत् १९९१, प्रथम वैशाख,शुक्लपक्ष, २, रविवार तदनुसार ईसवी सन,१९३४ दिनांक १५ अप्रैल

५. पारिवारिक विस्तार - पितामह श्री चेतराम जी की चार संताने थीं (२ पुत्र व २ पुत्रियां)
दो पुत्रों में पिता श्री धन्नारामजी एवं चाचा श्री उमदाराम जी थे।

६. पूज्य चाचा उमदारामजी की ३ संतानें थीं (२ पुत्रियां व १ पुत्र)
इनके पुत्र श्री फूसाराम जी थे।

७. फूसाराम जी की ३ संतानें थी (१ श्री कन्हैयालाल आर्य व २ पुत्रियां)

८. श्री कन्हैयालालालजी आर्य की ३ संतानें (२ पुत्रियां व १ पुत्र अजीत सिंह)

९. श्री अजीतसिंह की २ संतानें(१पुत्री व १पुत्र) हैं।)

श्री अजीतसिंह हरियाणा सरकार की ग्रामीण सेवा में पटवारी के पद पर कार्य कर रहे हैं एवं दोनों बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं ।

पिता श्री धन्नारामजी का वंश विस्तार

पिता श्री धन्नाराम जी के जीवनकाल में ४ विवाह हुए, जिनमें २ पत्नियों का बाल्य काल में ही निधन हो गया । तीसरी पत्नी १ पुत्री को जन्म देने के बाद निधन हो गया ।

उसके पश्चात् श्रीमती शृंगारीदेवी, ढाणी रायपुर (राजस्थान) निवासी के साथ विवाह हुआ । इनकी ५ संतानें हुई। इस प्रकार श्री धन्नारामजी की दो बार के वैवाहिक जीवन से कुल ६ संतानें हुई । जिसमें पूर्व पत्नी से १ पुत्री व श्रीमती शृंगारी देवी की ५ संतानों में ३पुत्र व २ पुत्रियाँ । इनमें से १ पुत्र नौपतराय का बाल्य अवस्था में ही निधन हो गया एवं शेष ५ संतानों में २ बहनें श्रीमती भक्ति देवी व श्रीमती जानकी देवी का विवाह ग्राम कोहराना (राजस्थान) जिला-अलवर में व एक बहन श्रीमती रामबाई देवी का विवाह ग्राम ढाणी बाठोड़ा, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) में हुआ ।

इनमें से बड़ी बहन श्रीमती भक्तिदेवी को ६ पुत्रियां व १ पुत्र की प्राप्ति हुई जिनमें पुत्र का युवा अवस्था में ही निधन हो गया । ६ पुत्रियां अपने वैवाहिक जीवन में खुशहाल हैं।

उससे छोटी पुत्री श्रीमती जानकी देवी की ४ संतानें (३ पुत्र व १ पुत्री)हैं जो कि अपने वैवाहिक जीवन में खुशहाल हैं।

छोटी श्रीमती रामबाई को कुल ७ संतानें (४ पुत्र व ३ पुत्रियां) हैं। ये सभी अपने पारिवारिक जीवन में खुशहाल हैं ।

बड़े पुत्र श्री धनसीराम जी का वंश विस्तार

श्री धनसीरामजी का विवाह श्रीमती सरतीदेवी, ग्राम नेहरुनगर, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) निवासी से हुआ । इनको ६ संतानें ५ पुत्र व १ पुत्री हुई।

श्री धनसीराम जी का परिवार पूर्व से ही किसान पृष्ठभूमि से रहा है । परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी भूमि पर कृषि कार्य की प्रधानता ही रही है ।
श्री धनसीरामजी घर में कृषि कार्यो के साथ-साथ कई वर्षोतक ग्राम पंचायत के सरपंच भी रहे हैं । श्री धनसीरामजी एवं श्रीमती सरतीदेवी का क्रमशः लगभग ८५ वर्ष एवं ८१ वर्ष की आयु में निधन हो गया ।

श्री धनसीरामजी के बड़े पुत्र श्री फूलसिंह का विवाह श्रीमती कस्तूरीदेवी ग्राम कामर (उ.प्र.) निवासी के साथ हुआ । श्री फूलसिंह हरियाणा सरकार की ग्रामीण सेवा में पटवारी थे । अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् लगभग ६२ वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया । इनके २ पुत्र संजयकुमार व वेदप्रकाश व १ पुत्री श्रीमती राजवती हैं जो कि रेवाड़ी (हरियाणा) में अपने पति वं २ पुत्रों के साथ वैवाहिक जीवन में खुशहाल हैं । तदनुसार पुत्र संजयकुमार को २ संतानें (१ पुत्र व १ पुत्री) व वेदप्रकाश की ३ संतानें (२ पुत्री व १ पुत्र) हैं। दोनों भाई अपने वैवाहिक गृहस्थ जीवन में सुखी एवं संपन्न हैं ।

श्री धनसीरामजी के द्वितीय पुत्र श्री बनवारीलाल का विवाह श्रीमती कमलादेवी के साथ ग्राम डहणा (हरियाणा) निवासी के साथ हुआ जो कि डी.सी. कार्यालय में ड्राइवर पद से सेवामुक्त होने के बाद नारनौल (हरियाणा) में निवास कर रहे है । इनके १ पुत्र जयकुमार व १ पुत्री ज्योति हैं, जो की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं । इनका गृहस्थ जीवन संपन्न एवं खुशहाल है ।

श्री धनसीरामजी के तृतीय सुपुत्र श्री इन्दराजसिंह ग्राम बीगोपुर में ही खेती का कार्य कर रहे हैं । इनका विवाह श्रीमती केशरबाई ग्राम कामर (उ.प्र.)

निवासी के साथ हुआ । इनकी ३ संतानें हैं। बड़ी पुत्री श्रीमती बीना का विवाह ग्राम हाजीपुर में हुआ एवं इनकी ३ संतानें (१ पुत्र व २ पुत्री) हैं । छोटी पुत्री श्रीमती मंजु का विवाह ग्राम भोजास में हुआ एवं (इनका १ पुत्र है)। पुत्र विजय का विवाह ग्राम कादीपुरी (हरियाणा) में हुआ है । इनका पूरा परिवार खुशहाल एवं संपन्न है ।

श्री धनसीरामजी के चतुर्थ पुत्र श्री रामावतार, जो कि बाँध व नहरी शासकीय विभाग में कार्यरत हैं का विवाह श्रीमती फूलमती ग्राम पचेरी (हरियाणा) निवासी के साथ हुआ । इनकी २ संतानें हैं । पुत्री सरोज का विवाह ग्राम गढी बोलनी (हरियाणा) में हुआ व इनकी ३ संतानें (१ पुत्र व २ पुत्रियां हैं) । पुत्र सुनील का विवाह ग्राम ऊँटोली (हरियाणा) में हुआ एवं २ संतानें (१ पुत्र व १ पुत्री) हैं । सभी बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं एवं परिवार खुशहाल व संपन्न है ।

श्री धनसीराम के सबसे छोटे पुत्र बलवीरसिंह, जो की जयपुर निवासी हैं, का विवाह श्रीमती कृष्णादेवी ग्राम हमीद्पुर (राजस्थान) के साथ हुआ । इनका सम्पत्ति खरीदने व बेचने का कारोबार एवं वकालत करने का कार्य है । इनके दो पुत्र हैं, बड़े पुत्र बालकृष्ण का विवाह बजाड़ निवासी श्री ओ३मप्रकाशजी की पुत्री से नारनौल में हुआ है । छोटा पुत्र विकास अभी अविवाहित है। दोनों पुत्र स्कूल (विद्यालय) का कार्य देख रहे है । इनका पूरा परिवार खुशहाल एवं सम्पन्न है ।

श्री धनसीराम जी की अकेली पुत्री श्रीमती राजबाला का विवाह नारनौल निवासी श्री गजेन्द्र जी के साथ हुआ है । इनके एक पुत्र है । आपका भी विवाह हो गया है । इनका भी सारा परिवार सम्पन्न एवं खुशहाल है ।

श्री राव हरिश्चन्द्रजी की शिक्षा-दीक्षा

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण गुरुजनों के सान्निध्य में हुई, इसके पीछे ग्राम नांगल चौधरी (हरियाणा) के हाईस्कूल में आप पढ़े । यद्यपि आप अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे थे, परन्तु थे कुशाग्र बुद्धि, नम्र एवं सरल स्वभाव के । यद्यपि आपके माता-पिता अशिक्षित थे, परन्तु वे भी सीधे-साधे सरल स्वभाव के किसान थे । अध्ययन काल में एक बार आपके भाई ने किसी बात पर आपसे नाराज होकर आपको कुछ दण्ड दे दिया । भाई के दण्ड देने से आपको बहुत दुःख हुआ । तब लगभग बारह वर्ष की आयु में ही आप घर छोड़कर घर परिवार से दूर मथुरा के पास ग्राम राल में ठाकुर लक्खी सिंह के घर दो साल तक रहे । आपके सरल और नम्र स्वभाव के कारण वह ठाकुर परिवार भी सदा के लिए आपका सहयोगी बन गया । दो वर्ष के पीछे ठाकुर लक्खीसिंह ने ही आपके भाई को समाचार भेजकर, उन्ही के साथ में आपको अपने गाँव भेज दिया।

इस प्रकार आपके पुनः घर आने से घर में जो चिन्ता छाई थी, वह दूर हो गई तथा परिवार में नई रौनक आ गई ।

पढ़ाई के पश्चात् आप कृषि कार्य करने लगे, तब खेती का कार्य करते हुए आपको अनुभव हुआ कि इस कृषि की सीमित आय से परिवार का पालन-पोषण अच्छी तरह संभव नहीं है । यह विचार कर आप अच्छी आय के लिए कुछ दूसरा कार्य खोजने लगे । तब आपके गांव के पण्डित हेमराज जी शर्मा से चर्चा होने पर उन्होंने एक पत्र आपको वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन 'लिमिटेड' झांसी के संचालक पण्डित रामनारायणजी

शर्मा के नाम से वैद्यनाथ भवन में कुछ कार्य करने के लिए लिखकर दे दिया । चूंकि वैद्यनाथ कम्पनी के संस्थापक, संचालक पण्डित रामनारायण शर्मा का विवाह इन्हीं के ग्राम के पण्डित हेमराज शर्मा की बहन ग्यारसी देवी से हुआ था । पण्डित हेमराज जी शर्मा ने आपको परिचय पत्र लिखकर देते हुए कहा था कि "हरिश्चन्द्र! तुम झांसी चले जाओ वहां आपको कार्य मिल जाएगा, परन्तु वहां रहकर तुम ऐसा कोई कार्य नहीं करना जिससे आपकी, मेरी और ग्राम की बदनामी हो"। इसके उत्तर में आर्य जी ने पण्डित हेमराज जी को आश्वासन देते हुए कहा था - "पण्डित जी आप निश्चिन्त रहें, मैं ग्राम का तथा आपके मान-सम्मान का सदा ध्यान रखूंगा।" श्री आर्य जी ने अपने इस वचन को अपनी सेवा के तरेपन वर्ष के सेवा-काल में पूरी तरह निभाया । १ जनवरी १९५४ को झांसी जाते ही इनको लिपिक का कार्य मिल गया । उस कार्य को भी इन्होंने बहुत तन्मयता एवं योग्यता से किया । अगली दीपावली के अवसर पर १९५५ में नागपुर (वैद्यनाथ भवन के) प्रबन्धक - श्री मोदी जी प्रबन्ध सम्बन्धी किसी कार्य के प्रसंग में कम्पनी के संचालक वैद्य रामनारायण शर्मा जी से मिलने झाँसी आए। उन्होंने पण्डित रामनारायण शर्मा जी से कहा कि हमारे पास नागपुर कार्यालय में बिल बनाने वाला कोई अच्छा व्यक्ति नहीं है । इससे बिल (बीजक बनाने में) गलतियाँ रहती हैं, तब पण्डित रामनारायण जी शर्मा जो राव जी के कार्य से सन्तुष्ट थे, उन्होंने श्री आर्य जी का हाथ पकड़कर नागपुर कम्पनी के प्रबन्धक श्री मोदी जी के हाथ में देते हुए कहा - यह युवक है तो लड़ाकू परन्तु आपके कार्य के लिए उपयोगी रहेगा । इसे अपने साथ ले जाओ ।

श्री मोदी जी राव हरिश्चन्द्र आर्य को उसी समय अपने साथ नागपुर ले आए और इनको बीजक कार्य करने में लगा दिया । राव जी ने उस कार्य को इतनी अच्छी तरह से किया कि श्री मोदी जी ने सन्तुष्ट होकर इनको लेन-देन का कार्य दे दिया अर्थात् कोषाध्यक्ष बना दिया । वैद्यनाथ कम्पनी नागपुर के प्रबन्धक इनके कार्य से बहुत सन्तुष्ट रहते थे । उनका आशीर्वाद सदा इनको प्राप्त रहा ।

जब राव जी ने लिपिक का कार्य शुरू किया, फिर इन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा, उत्तरोत्तर उन्नति करते महाप्रबन्धक (जनरल मैनेजर) के पद से बहुत आग्रह करके सेवानिवृत्त हुए क्योंकि कम्पनी के मालिक इनकी कर्मठता, ईमानदारी एवं कम्पनी की उन्नति के विषय में इनके कार्यों से बहुत सन्तुष्ट रहते थे । सभी जानते हैं कि आजकल ईमानदार, कर्मठ एवं कम्पनी के कार्योंको अपना मानने वाले व्यक्ति बहुत कम मिलते हैं । क्योंकि वैद्यनाथ भवन की उन्नति में आपने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं वहां आवश्यकतानुसार आपने सभी विभागों में तन्मयता से कार्य किया । इस प्रकार वैद्यनाथ भवन की उत्तरोत्तर उन्नति एवं प्रगति में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही । फलस्वरूप कम्पनी के सभी मालिक एवं उच्च अधिकारी सदा आपसे सन्तुष्ट रहते थे ।

कभी-कभी मालिकों और श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य की कार्यशैली में मतभेद भी होते थे, परन्तु आर्य जी इन मतभेदों की परवाह न करते हुए कम्पनी के हित में लगे रहे । मतभेद होने पर भी कम्पनी के मालिकों ने सदा श्री आर्य जी को सहयोग दिया और इन पर विश्वास किया एवं कंपनी के मालिकों ने कभी भी आर्य जी की किसी बात को नहीं काटा । इनका

अन्तिम निर्णय सदा स्वीकार होता रहा ।

श्री राव जी का गृहस्थ जीवन

आपका विवाह १९ मई १९५८ को एक धर्म परायण, सेवाभावी, सुशीला, पतिव्रता, सरल स्वभाव की साध्वी महिला शांति देवी से राजस्थान के ग्राम छाजाका नाँगल, जिला सीकर में वैदिक पद्धति से हुआ । संस्कृत में एक कहावत है - **न गृहम् गृहम् इत्याहुः गृहिणी तु गृहमुच्यते** । अर्थात् वह घर घर नहीं वन है जिस घर में स्त्री नहीं होती है । वास्तव में गृहिणी के आने से ही घर बसता है। इसी प्रकार सुशीला शांतिदेवी के आने से ही राव हरिश्चन्द्र का घर स्वर्ग बन गया । आपकी कोख से तीन पुत्रों ने जन्म लिया, इनके बड़े पुत्र का नाम महीपाल है, इसके पीछे दूसरे पुत्र का नाम हितपाल था । वह एक वर्ष की अवस्था में ही माता-पिता को छोड़कर स्वर्गवासी हो गया । तीसरे पुत्र का नाम यशपाल है । ये आर्य जी के दोनों सुपुत्र योग्य, सुशील माता-पिता के गुणों के अनुकूल, श्रद्धालु, उदार, धार्मिक स्वभाव के हैं । इनकी माता आने वाले सन्त महात्माओं की सेवा करके प्रसन्नता का अनुभव करती थी । विद्वानों ने लिखा है **''माता निर्माता भवति''**,अर्थात् पतिव्रता एवं धार्मिक माता ही सुयोग्य संतान का निर्माण करती है ।

अतः संतान में माता पिता के गुणों का आना स्वभाविक है । इसलिए महर्षि दयानन्द ने लिखा है - ''वह व्यक्ति धन्य है जिसके माता-पिता और आचार्य धार्मिक एवं ईश्वर भक्त हों''। अतः राव हरिश्चन्द्र आर्य एवं माता शांति देवी के दोनो ही पुत्र बहुत योग्य धार्मिक स्वभाव के कर्मठ एवं कर्तव्य पारायण तथा नम्र हैं ।

बड़े सुपुत्र महीपाल का विवाह ग्राम डेरोली (अहीर) हरियाणा निवासी श्रीमती राजेश्वरी के साथ वैदिक पद्धती से हुआ । महीपाल को भी दो संतान रत्नों की प्राप्ति हुई । इनमें से बड़ी पुत्री का विवाह जनवरी २०११ को गुडगांव निवासी श्री आर्यकुमार जी के साथ वैदिक पद्धती से संपन्न हुआ । इनके सुपुत्र का नाम राहुल है । वह अभी विद्या अध्ययन कर रहा है एवं साथ ही व्यापार में अपने पिता का सहयोग करता है । यह राहुल भी नम्र स्वभाव का सुशील युवक है । श्री महीपाल जी के पास वैद्यनाथ भवन नागपुर की पांच जिलों की "सुपर स्टाकिस्ट एवं खुदरा दवा" का शोरूम एवं आयुर्वेदिक दवाइयों की होल सेल है । इसके साथ डाबर, झण्डू आदि अनेक कंपनियों की भी एजेंसी हैं ।

इनके दूसरे सुपुत्र यशपाल का विवाह अजमेर (राजस्थान) निवासी श्रीमती स्नेहलता के साथ पूर्ण वैदिक रीति से हुआ । इनको दो संतानें प्राप्त हुई । बड़ी सुपुत्री सुमेधा एवं सुपुत्र हिमांशु हैं। ये दोनों ही पढ़ रहे हैं । ये दोनों बालक भी अपने पैतृक गुणों के अनुसार सुशील मेधावी शान्त एवं शिष्ट हैं । पुत्र यशपाल के पास पूज्य स्वामी रामदेव जी की फार्मेसी, पतंजलि आयुर्वेद व दिव्य फार्मेसी हरिद्वार का पूना व नागपुर में सी.एण्ड. एफ. व सात चिकित्सा सेन्टर हैं।

श्रीमती शान्तिदेवी का स्वर्गवास

सन् २००३ की २४ जनवरी को धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी आर्या का असामयिक, असहनीय एवं दुःखद निधन संक्षिप्त बीमारी से हुआ, जिसे परिवार आज तक सह नहीं पाया है । वे धार्मिक, शान्त स्वभाव, आतिथ्य सेवाभावी, धर्म पारायण एवं पारिवारिक महिला थीं । उनके सान्निध्य में परिवार फूला-फला व खुशहाल रहा । जिसने भी सुना वह शोक

संवेदना प्रकट करने के लिए पहुंचा । हजारों व्यक्ति माताजी के निधन का समाचार सुनकर शान्तियज्ञ में पहुंचे ।

धर्मपत्नी के स्वर्गवास के उपरान्त श्री आर्य जी का जीवन वानप्रस्थ के रूप में बीत रहा है । आपका पूरा समय समाज सेवा एवं वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार में लग रहा है ।

सामाजिक सेवा

जब राव हरिश्चन्द्र आर्य स्कूल में पढ़ रहे थे। उन दिनों उनके ग्राम एवं आसपास के ग्रामों में आर्य समाज के भजनोपदेशक आते थे। उनके उपदेश सुनकर आर्य समाज के कार्यों में रुचि जगी। फिर आर्य समाज का साहित्य 'सत्यार्थप्रकाश' आदि पढ़कर आर्य समाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगे । अपने गांव में आर्य समाज की स्थापना की । फिर अपनी सीमित आय से ही प्रति वर्ष आर्य समाज का उत्सव कराते तथा वहां भव्य आर्य समाज मंदिर एवं यज्ञशाला का निर्माण करवाया । अपनी सीमित आय से ही एक पांच शय्या का चिकित्सालय (पी.एच.सी.) का निर्माण कराया है । नागपुर वैद्यनाथ भवन में कार्य करते हुए आप यहां के आर्य समाजों के संपर्क में आए । पहले आर्य समाज हंसापुरी के सदस्य बने, फिर अनेक वर्षों तक वहां के प्रधान तो कभी-कभी मंत्री रहे । इसी बीच आपका संपर्क मध्यप्रदेश एवं विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा से हो गया । वहां भी आर्यजनों ने आपकी उदारता, सौजन्य एवं सात्विकता के कारण आपको कोषाध्यक्ष के पद पर असीन कर दिया ।

नागपुर में ही सभा का कार्यालय था, अतः सभा के निमंत्रण पर आने वाले विद्वानों एवं आर्य संन्यासियों से आपका संपर्क बढ़ता गया । अनेक विद्वान् आपके घर ही आकर ठहरते थे । आप दोनों पति-पत्नी सभी आर्य संन्यासियों, महात्मा एवं विद्वानों की बहुत श्रद्धापूर्वक सेवा करते रहे हैं। इससे आपकी यश एवं कीर्ति शनैः शनैः सारे आर्य जगत् में फैलती गई । आप मध्यप्रदेश विदर्भ आर्य प्रतिनिधि की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य एवं उपप्रधान भी रहे। आपकी नम्रता, सौजन्यता एवं सूझबूझ से सारा आर्यजगत् प्रभावित है। सभी संस्थाओं के सदस्य आपको अपनी संस्था से जोड़कर गौरव अनुभव करते हैं।

मध्यप्रदेश एवं विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा ने आपको कई बार प्रधान बनाना चाहा परन्तु आपने कहा कि वैद्यनाथ भवन नागपुर में मुख्यअधिकारी पद पर कार्य कर रहा हूं, इसलिए मैं आर्य समाज के कार्यों में पूरा समय नहीं दे सकूंगा, अतः प्रधान बनना उचित नहीं होगा । यह कहकर आपने सभा का प्रधान बनना अस्वीकार कर दिया । जबकि ऐसे पदों के लिए बहुत से व्यक्ति अनेक प्रकार के जोड़-तोड़ करते हैं, परन्तु आपने प्राप्त हुए पद को ठुकराया। आप सदा मान सम्मान से दूर रहने का यत्न करते हैं।

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना और सेवा कार्य

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने प्रत्येक गृहस्थी को **'पंच महायज्ञ'** प्रतिदिन करने का विधान किया है । इन सभी महायज्ञों में विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों को तथा प्राणियों को दान देने का ही भाव है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन दिनचर्या में न चाहते हुए भी अनेक पाप कर देता है । उन पापों के निराकरण के उपाय

पंचमहायज्ञ हैं। इस प्रकार जब ब्रह्मचारी अपनी विद्यापूर्ण करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के लिए गुरुकुल से विदा होकर जाता था उस समय उस ब्रह्मचारी का समावर्तन संस्कार किया जाता था । (आजकल उसे **'दीक्षान्त समारोह'** कहते हैं)। उस समावर्तन संस्कार में भी आचार्य अपने शिष्यों को जो उपदेश देते थे । उसी उपदेश को इस युग में वैदिक साहित्य के अद्वितीय विद्वान्, वैदिक संस्कृति के पुनरुद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमरग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के तृतीय सम्मुल्लास में उपनिषद् के वाक्यों को इस प्रकार उद्धृत किया है । **''श्रद्धया देयम् अश्रद्धया देयम्,ह्रिया देयम् संविदा देयम्''** अर्थात् हे शिष्य ! तू गृहस्थाश्रम में जाकर दान अवश्य देना, उस दान को तू श्रद्धापूर्वक देगा तो अच्छी बात होगी, परन्तु श्रद्धा न हो तो अश्रद्धा से, लोक-लज्जा से सामाजिक भय से या सामाजिक व्यवस्था से अवश्य देना, क्योंकि दान देना गृहस्थी का प्रमुख कर्तव्य है ।

इस प्रकार देहात में एक कहावत है **''पानी बाढे नाव में, घर में बाढे दाम, दोनों हाथ उलीचियो यही सयानों काम''** इसका भाव यही है कि जैसे किसी कारण से नौका में पानी आ जाता है तो उसे यथाशीघ्र फेंक देना चाहिए अन्यथा नौका के डूबने का डर रहता है । इसी प्रकार यदि घर में पर्याप्त धन-सम्पत्ति हो जाए तो उसका सदुपयोग दान के रूप में करना चाहिए अन्यथा घर में अधिक धन-सम्पत्ति इकठ्ठी होने पर परिवार के सदस्य विषयों में फंस जाते हैं ।

इसलिए वेदानुयायी एवं स्वाध्यायशील राव हरिश्चन्द्र आर्य के मन में एक शुभसंकल्प का उदय हुआ कि प्रभु कृपा से मेरे पास जो आय हो रही है, उसका सदुपयोग पवित्र कार्य में करने के लिए एक ट्रस्ट का निर्माण करने का विचार किया । तद नुसार उन्होंने परिवार के सदस्यों से परामर्श करके **'राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट'** की स्थापना की। ताकि इसके द्वारा अधिक से अधिक धन का दान समाज की सेवा के लिए की जा सके ।

फिर उनके मन में एक भावना और आई कि आर्यसमाज में अनेक उच्चकोटि के त्यागी, तपस्वी,विद्वान्,महात्मा हैं, परन्तु पौराणिक साधु-महात्माओं के पास बड़े-बड़े मठ हैं । उनके पास अथाह सम्पत्ति है । वैसी कोई व्यवस्था आर्यजगत् के इन अकिंचन महात्माओं की नहीं है। आर्यसमाज में कहीं-कहीं समाजों के द्वारा विद्वानों का जो सम्मान किया जाता है । उसकी अधिकतम राशि २५००० है । अतः हम इस ट्रस्ट के द्वारा **''आर्यरत्न''** के रूप में एक लाख रुपये की राशि तथा विद्वानों को एवं दूसरा **''आर्य विभूषण''** के रुप में सम्मान और नगद राशि प्रदान करेंगे । इन पुरस्कारों को क्रियात्मक रूप देने के लिए उन्होंने सबसे पहले आर्यजगत् के सर्वोच्च संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी से 'आर्यरत्न पुरस्कार' को स्वीकार करने की प्रार्थना की । उन्होंने श्री आर्य का आग्रह स्वीकार कर लिया परन्तु वृद्धावस्था के कारण स्वयं नागपुर नहीं आ सके,

अतः उन्होंने अपने शिष्य स्वामी सदानन्द जी को भेजा । इस प्रकार यह पुरस्कार शृंखला चल पड़ी । जिन विद्वानों, महात्माओं को ये पुरस्कार दिये जा चुके हैं, उनके शुभ नाम इस प्रकार है :-

१) पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी, दीनानगर (पंजाब)
२) पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी, आमसेना (उड़ीसा)

३) श्रद्धेय पं. विशुद्धानन्द जी, बदायूँ (उ.प्र.)
४) पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी, परली वैजनाथ (महाराष्ट्र)
५) पूज्य आचार्य बलदेव जी रोहतक (हरियाणा)
६) पूज्य स्वामी रामदेव जी हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
७) श्रद्धेय डॉ. रामनाथ जी वेदांलकार, हरिद्वार (उ.प्र.)
८) पूज्य स्वामी सत्यप्रति जी आर्यवन, रोजड़ (गुजरात)
९) पूज्य आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर (हरियाणा)
१०) पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी, गुरुकुल गोतमनगर (दिल्ली)

इस ट्रस्ट की ओर से जिन विभूतियों को आपने **'आर्य विभूषण पुरस्कार'** से अब तक सम्मानित किया है उनके नाम निम्नानुसार हैं -।

१) डॉ. कपिलदेव जी द्विवेदी, ज्ञानपुर, भदोही (उ.प्र.)
२) डॉ. भवानीलाल जी भारतीय, जोधपुर (राजस्थान)
३) डॉ. महावीरजी, डी.लिट् हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
४) ब्र. नन्दकिशोर जी, होशंगाबाद (म.प्र.)
५) पं. ताराचन्द वैदिक तोप, नारनौल (हरियाणा)
६) श्री प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर (पंजाब)
७) डॉ. प्रियव्रतदास, भुवनेश्वर (उड़ीसा)
८) आचार्य चन्द्रशेखर जी, दिल्ली (राजधानी)
९) स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, नजीबाबाद (उ.प्र.)
१०) श्री. सुखदेवजी तपस्वी, (दिल्ली)

देश के एवं आर्य जगत् के प्रायः अधिकतर पूज्य साधु-सन्त, महात्मा एवं आर्य विद्वानों का आशीर्वाद आपके परिवार को प्राप्त है । अनेक महात्मा विद्वान् तो समाज में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं वे भी आपके घर आकर आतिथ्य सत्कार पाकर माता शान्तिदेवी की सेवा शुश्रुषा से प्रसन्न होकर परिवार पर आशीर्वाद की वर्षा करते हुए जाते हैं । इस परिवार की शुभकामना एवं समृद्धि के लिए आशीर्वाद देकर प्रभु से भी मंगल की कामना करते हुए अब तक जिन-विभूतियों ने आपके घर को पवित्र किया है तथा आशीर्वाद दिया है। उनमें से कुछेक के नाम उल्लेखनीय हैं। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी गुरुकुल झज्जर, पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी (दिल्ली), पूज्य स्वामी सत्यपति जी गुजरात, पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (दिल्ली), पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा), पूज्य स्वामी सदानन्द जी (दीनानगर), पूज्य स्वामी जगदीश्वरानन्द जी (दिल्ली), पूज्य आचार्य प्रद्युम्न जी (गुरुकुल खानपुर हरियाणा), महात्मा भारतेन्द्रनाथ जी, स्वामी संपूर्णानन्द जी (कुरुक्षेत्र), स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली), आचार्य बलदेव जी (हरियाणा), आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर, डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी (मनुस्मृतिभाष्यकार) गुड़गांव एवं सम्मानित होने वाले सभी विद्वान्, और अनेक आर्यनेता आदि इसी प्रकार देश-विदेश में ख्याति प्राप्त योगऋषि स्वामी रामदेव जी भी आपके घर में पधारकर आशीर्वाद देते रहते हैं ।

राव हरिश्चन्द्र आर्य को आर्य जगत् के प्रतिष्ठित सन्त महात्माओं एवं संन्यासियों का आशीर्वाद प्रारम्भ से ही मिलता आ रहा है । इसके दो-चार उदाहरण यहां उपस्थित किए जा रहे हैं ।

(क) जब आर्य जी ने अपने 'धर्मार्थ ट्रस्ट' की ओर से आर्य जगत् के सर्वोच्च संन्यासी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी को 'आर्यरत्न पुरस्कार' से सम्मानित करने का निर्णय किया तो बड़ी आयु होने के कारण वे स्वयं पुरस्कार ग्रहण करने के लिए नागपुर नहीं आ सके थे।

इस कार्यक्रम के कुछ दिन पीछे श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य स्वयं पू. स्वामी सर्वानन्द जी के दर्शन करने एवं आशीर्वाद ग्रहण करने दीनानगर गए । तब स्वामी सर्वानन्द जी ने उनका हाथ पकड़कर बैठाकर कहा वैसे तो हमें रुपयों की जरूरत नहीं है । श्रद्धालु आर्य सज्जन अपने आप ही दान देने के लिए आते रहते हैं । परन्तु मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई की आज हम साधुओं को भी तुम जैसे लोग सम्मानित करने व पूछने वाले हैं । यही बात मेरे लिए विशेष हर्ष देने वाली है भगवान् तुम्हारा सर्वविध मंगल करे "।

आर्य जी को पूज्य स्वामी जी की यह बात सुनकर बहुत आश्चर्य लगा एवं उनके आशीर्वाद से उत्साह भी मिला । पूज्य स्वामी जी की प्रेरणा से इस 'आर्यरत्न पुरस्कार' के कार्यक्रम को इसी प्रकार आगे बढाने का संकल्प भी आर्य जी अपने ह्रदय में कर लिया।।

(ख) गुरुकुल झज्जर के आचार्य पू. स्वामी ओमानन्द जी का भी राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के प्रति बहुत स्नेह था । अतः आर्य जी पूज्य स्वामी जी को समय-समय पर अपने ग्राम के महोत्सव पर आमन्त्रित करते रहते थे । एक वर्ष बीगोपुर के आर्य समाज मन्दिर के भवन के उद्घाटन के कार्यक्रम में भी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी को पधारना था, परन्तु उनको उद्घाटन के कार्यक्रम में पहुंचने में देर हो गई । उद्घाटन का सारा कार्यक्रम समाप्त हो गया । जनता भी अपने घर चली गई । राव हरिश्चन्द्र जी आर्य भी अपने घर चले गये । तब पूज्य स्वामी ओमानन्द जी अपने छात्रों के साथ आर्य समाज मन्दिर में पहुंचे और उन्होंने देखा की कार्यक्रम तो समाप्त हो गया तो छात्रों ने पूज्य आचार्य जी से पूछा अब हम क्या करें ? इस पर पू. स्वामी जी ने कहा "चलो, हम आर्य जी के घर चलते हैं और वहीं उन्हें आशीर्वाद देंगे"। यह कहकर पूज्य स्वामी जी आर्य जी के घर पहुंच गये। वहां घर में ही साथ आने वाले ब्रह्मचारियों ने तीन ईश्वर भक्ति के गीत गाए। पूज्य स्वामी जी ने भी उपदेश दिया । पूज्य स्वामी जी के इस प्रकार आने से सारे परिवार को नयी प्रेरणा मिली। उपस्थित आर्यजन स्वामी जी का आशीर्वाद पाकर गद्गद् हो गये ।

ऋषि पथ के पथिक राव हरिश्चन्द्र आर्य के परिवार के साथ पूज्य स्वामी रामदेव जी का भी घनिष्ठ सम्बन्ध है । आपने भी उस विभूति को आर्यरत्न पुरस्कार से विभूषित किया है । पूज्य स्वामी जी जब भी नागपुर आते हैं तो आपके घर में ही ठहरते हैं । एक बार पूज्य स्वामी जी नागपुर के योग चिकित्सा शिविर के अवसर पर घर पर ठहरे हुए थे । तब कुछ विद्वानों की उपस्थिति में आर्य जी के पौत्र-पौत्री का उपनयन संस्कार हो रहा था । परन्तु आर्य जी ने इस उपनयन संस्कार के कार्य को सामान्य मानकर बाबा रामदेव जी को नहीं बताया । जब स्वामी जी को इस कार्यक्रम का मालुम हुआ तो, वे बिना बताये स्वयं ही आकर ब्रह्मा के आसन पर आसीन हो गये । यद्यपि उस समय तक संस्कार का बहुत-सा कार्य बड़े-बड़े विद्वानों की देखरेख में सम्पन्न हो गया था । परन्तु स्वामी जी ने कहा उपनयन संस्कार का सारा कार्यक्रम मैं पुनः प्रारम्भ से करवाऊंगा और इसे आस्था चैनल पर रिकार्ड किया जायेगा । उन्होंने बहुत अच्छी विधि से उपनयन संस्कार करवाकर उपस्थित बच्चों को सम्बोधित करते हुए हार्दिक आशीर्वाद दिया तथा उपनयन संस्कार की महत्ता बताई । उन्होंने इस संस्कार को कई बार आस्था चैनल पर दिखाया ।

पूज्य स्वामी रामदेव जी का इस परिवार पर बहुत आशीर्वाद है। उन्होंने छोटे सुपुत्र यशपाल जी को विदर्भ क्षेत्र के बारह जिलों में दिव्य फार्मेसी की तथा पूना क्षेत्र के आठ जिलों में दवाई वितरण की एजेंसी एवं सात पतंजलि चिकित्सा केन्द्र दिये है। अतः श्री आर्य जी का परिवार बाबा जी का बहुत आभार मानता है। यह परिवार भी समय-समय पर पूज्य स्वामी जी का सहयोग करता रहता है ।

इसी प्रकार उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड आदि पिछड़े वनवासी क्षेत्रों में वैदिक धर्म का प्रचार एवं सेवा कार्य करने वाली हमारी संस्थाओं के प्रति भी राव हरिश्चन्द्र आर्य की बहुत श्रद्धा है । पिछले तीसों वर्षों से इस परिवार का मेरे साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है । जब आर्य जी वैद्यनाथ भवन में सेवारत थे तब वैद्यनाथ की दवाई बनाने की पुरानी मशीन आदि हमारे गुरुकुल को दिलाते रहते थे ।

जब अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार करने की बात आयी तो उसका संग्रह और सम्पादन कार्य भी मुझे उत्साहपूर्वक दिया, और अभिनन्दन समिति का अध्यक्ष भी मुझे बनाया ।

हरिश्चन्द्र आर्य के ट्रस्ट के द्वारा विभिन्न संस्थाओं का सहयोग

आर्य जी ने अपने ट्रस्ट के द्वारा सैकड़ो मानवत संस्थाओं को भी समय-समय पर सहयोग किया हैं । उनमें से कुछ संस्थाओं के उल्लेखनीय नाम इस प्रकार हैं -

१. दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) इस मठ से बहुत काल से आपका सम्बन्ध बना हुआ है, क्योंकि इसके संचालक पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा है ।

२. आर्ष गुरुकुल खानपुर जिला (महेन्द्रगढ) । इस गुरुकुल के संचालक श्रद्धेय आचार्य प्रद्युम्न के साथ भी आपका बहुत काल से सम्बन्ध है । उस गुरुकुल के विकास में भी आपका प्रारम्भ से ही सहयोग बना हुआ है ।

३. गुरुकुल किशनगढ धासेड़ा (रेवाड़ी) को भी आप समय-समय पर सहयोग देते रहते हैं । यह गुरुकुल भी आपके क्षेत्र में है तथा आपके स्नेह का पात्र है । अब इस गुरुकुल का संचालन योगऋषि पूज्य स्वामी रामदेव जी कर रहे हैं ।

४. आर्ष गुरुकुल नर्मदापुरम् होशंगाबाद (मध्यप्रदेश)। यह गुरुकुल आपके कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत है तथा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित है । इस सभा के आप बहुत समय तक कोषाध्यक्ष और वरिष्ठ अधिकारी भी रहे हैं । अतः इस संस्था का सहयोग करना आपके लिए स्वाभाविक है ।

५. परोपकारिणी सभा अजमेर (राजस्थान) महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित परोकारिणी सभा आर्य जगत् की सबसे प्रतिष्ठित और पुरानी सभा है । आर्य जी ऋषिवर के अनन्य श्रद्धालु भक्त हैं, अतः उस सभा के साथ भी आपका स्नेह सहयोग होना स्वाभाविक हैं । इन्होंने वहां अतिथिशाला में दो कमरों का निर्माण करवाया है तथा सभा के द्वारा प्रकाशित साहित्य तथा अन्य कार्योंमें श्री आर्य जी अपने ट्रस्ट की ओर से समय-समय पर सहयोग करते रहते हैं । एवं१ कमरा आर्य समाज हंसापुरी व १ कमरा बैद्यनाथ भवन की ओर से बनवाया हैं।

६. महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना एवं आदर्श कन्या गुरुकुल आश्रम के साथ श्री आर्य जी का पुराना सम्बन्ध है । आप इन दोनों संस्थाओ को समय-समय पर सहयोग करते रहते हैं । आपने गुरुकुल आश्रम

आमसेना में छात्रावास के लिए एक कमरे का निर्माण करवाया है । एवं अन्तिम वर्ष के २ छात्र छात्राओं को प्रथम आने पर गोल्ड मेडल देने की स्थिर निधी एक लाख दो हजार रुपयों की स्थापित की है।

७. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (नई दिल्ली) के साथ-साथ आप अनेक वर्षोसे मध्यप्रदेश एवं विदर्भ के पदाधिकारी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य और उपप्रधान रहे हैं । इसलिए समय-समय पर सभा के निर्देशानुसार सहयोग देते आ रहे हैं ।

८. दयानन्द मठ चम्बा (हिमाचल प्रदेश) : इस मठ के संचालक पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी पूज्य स्वामी सर्वानन्द के प्रमुख शिष्य हैं । इसलिए उस मठ को भी आप यदा-कदा सहयोग देते रहते हैं ।

९. आर्ष कन्या गुरुकुल चोटीपुरा (उत्तरप्रदेश) यह कन्या गुरुकुल इस समय सभी गुरुकुलों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है । इस कन्या गुरुकुल का संचालन करने वाली दो आर्य विदुषी बहनें सुश्री सुमेधा एवं सुश्री सुकामा जी भी आर्य जगत् की प्रतिष्ठित विदुषियां हैं । इसलिए उस गुरुकुल को भी आप आर्थिक सहयोग देते रहते हैं ।

१०. इसी प्रकार कन्या गुरुकुल दाधिया, अलवर (राजस्थान) के प्रति भी आपका स्नेह सहयोग बना रहता है । इसके अतिरिक्त कन्या गुरुकुल पचगांव आदि अनेक गुरुकुलों को सहयोग करते रहते हैं।

११. दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ (गुजरात) : प्रसिद्ध योग शिक्षक पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक ने इस दर्शन योग महाविद्यालय की स्थापना त्यागी, तपस्वी,विद्वान् युवक तैयार करने के लिए की है । इस महाविद्यालय से अब तक अनेक उच्चकोटि के तपस्वी विद्वान् कार्यकर्त्ता आर्य जगत् को मिले हैं । इसलिये उस संस्था को भी आर्य जी का सहयोग मिलता रहता है ।

१२. महर्षि दयानन्द स्मारक उपदेशक महाविद्यालय टंकारा : ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि में चल रहा यह उपदेशक महाविद्यालय एवं गुरुकुल टंकारा (गुजरात), सभी आर्योंकी श्रद्धा के केन्द्र है । अतः प्रायः सभी उदारमना दानी उस स्मारक को दान देना अपना सौभाग्य मानते हैं । फिर हमारे चरित्र नायक राव हरिश्चन्द्र आर्य कैसे पीछे रह सकते है? इसलिए उस स्मारक को भी समय-समय पर आप सहयोग करते रहते हैं । एवं अतिथि शाला में एक फ्लॅट भी तैयार करवाया हैं।

१३. आर्य समाज बीगोपुर एवं दयानन्द सेवा आश्रम बीगोपुर (महेन्द्रगढ) जैसा पहले बताया जा चुका है कि आर्य जी ने अपनी जन्मभूमि का उद्धार किया एवं सबसे पहले आर्यसमाज की स्थापना की और वहां भव्य यज्ञशाला का निर्माण एवं दयानन्द सेवा आश्रम का निर्माण किया ।

१४. आपने आर्य समाज नारनौल एवं आर्य समाज धौलेड़ा (महेन्द्रगढ) का भी निर्माण किया है ।

१५. श्री कृष्ण छात्रावास "नीमका थाना" एवं श्रीकृष्ण छात्रावास जयपुर के निर्माण में भी आपने सहयोग दिया है ।

इसी प्रकार आप समय-समय पर यादव समाज की संस्थाओं का भी अन्य सहयोग करते रहते हैं । जैसे यादव महासभा कामठी, यादव महासभा नारनौल, यादव धर्मशाला पुष्कर अजमेर, यादव महासभा दिल्ली आदि को भी सहयोग किया।

१६. आपने आर्ष गुरुकुल आबू पर्वत जिला

सिरोही (राजस्थान),गुरुकुल भादस मेवात (हरियाणा), वेद मन्दिर मथुरा (उत्तरप्रदेश) को भी सहयोग दिया हैं ।

१७. महर्षि निर्वाण स्थल मिनाय कोठी की भी समय-समय पर सहायता की है।

इसी प्रकार आर्य समाज वाबन्द, आर्य समाज रसूलपुर, आर्य समाज महेन्द्रगढ, दयानन्द आर्य कन्या विद्यालय जरीपटका (नागपुर) , श्री घूड़मल धर्मार्थ न्यास हिंन्डोन सिटी को भी साहित्य आदि के प्रकाशन में सहयोग देते रहते हैं

इन शिक्षण एवं सामाजिक संस्थाओं के साथ आप राष्ट्रीय हित के कार्यों में भी पीछे नहीं रहते हैं । देश में जहां भी भूकंप,बाढ,तूफान आदि आते हैं वहां पर भी सहयोग देने में आप पीछे नहीं रहे, चाहे वह लातूर (महाराष्ट्र) का भूकंप हो या कच्छ (गुजरात) का भूकम्प या बिहार बाढ । सभी संस्थाओं को आपने यथाशक्ति दान दिया है । इस प्रकार जब कारगिल के वीर शहीद सैनिकों की सहायता की बात आई तब ५१००० रु. भिजवाये ।

इस श्रृंखला में योगऋषि पूज्य स्वामी जी द्वारा स्थापित पतंजलि योग ट्रस्ट (दिव्य योग ट्रस्ट) कनखल हरिद्वार को भी पूज्य स्वामी जी के आदेशानुसार भरपूर सहयोग किया हैं

इसी प्रकार महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, वेदार्ष गुरुकुल गौतम नगर को भी आर्थिक सहयोग दिया है । भूकम्प पीड़ित गुजरात में जीवन प्रभात (अनाथालय) को आर्थिक सहयोग किया है।

राव जी ने इस दान की पुनीत परम्परा को आगे बढाते हुए वेदभाष्य आदि वैदिक साहित्य के प्रकाशन में भी खुले हृदय से सहयोग दिया । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, परोपकारिणी सभा अजमेर, दयानन्द संस्थान जनज्ञान प्रकाशन दिल्ली आदि को वेदभाष्य आदि प्रकाशित करने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया । इसके साथ वैदिक विनय, व्यवहारभानु, भजन भास्कर, दयानन्द दिव्य दर्शन चित्रावली एवं योगासन, प्राणायाम आदि पुस्तकों के प्रकाशन में भी आपका महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है ।

इस संक्षिप्त लेख से पाठकों को अनुभव हो गया होगा कि सर्वथा साधारण किसान परिवार में भी जन्म लेकर आर्य जी अपनी बौद्धिक कुशलता, कर्मठता और प्रतिभा से इतनी ऊंचाई तक पहुंच गए । इतनी ऊंचाई तक पहुचाने में राव जी की उदारता नम्रता और दानशीलता का भी विशेष सहयोग है, क्योंकि वेदों में भगवान् ने कहा है - **''अहं दाशुषे विभजामि भोजनानि''** अर्थात् दान देने वाले को भी मैं सब प्रकार की सुविधा सामर्थ्य और ऐश्वर्य प्रदान करता हूं । वेद भगवान् के इस पुनीत आदर्श को मानकर श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य चल रहे हैं । इनको जहां जो व्यक्ति सहयोग देने के लिए प्रेरणा देता है वहीं अपने हाथ खोल देते हैं । इन्होंने एक लाख रुपए के 'आर्यरत्न पुरस्कार'की स्थापना करके आर्यसमाज में नया इतिहास रचा है।

इस तरह श्री आर्य जी आर्य जगत् के लिए एक प्रेरणास्रोत बने हुए हैं । आशा है नई पीढ़ी इनके जीवन से प्रेरणा लेगी । श्री आर्य जी अपने दान कार्यों से आर्यजगत् के इतिहास में सदा अमर रहेंगे।

आर्य परिवार की 'अन्नपूर्णा' श्रीमती शान्तिदेवी आर्या का

संक्षिप्त जीवन एवं कुल-परिचय

डॉ. सुरेन्द्रकुमार

परिवार को आगे बढ़ाने में एवं परिवार में सुख-समृद्धि और शान्ति का वातावरण बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है धर्मपत्नी का। राव हरिश्चन्द्र आर्य की धर्मपत्नी स्व. श्रीमती शान्तिदेवी वस्तुतः

शान्ति की प्रतिमूर्ति थीं। उनको पति हरिश्चन्द्रजी 'अन्नपूर्णा' नाम से पुकारा करते थे। उसका कारण था कि वे परिवार के सभी सदस्यों को, आनेवाले अतिथियों को बहुत ही स्नेह और श्रद्धा से अन्न-पान आदि से तृप्त करती थीं। घर में कभी भी, कितने ही अतिथि या रिश्तेदार आयें, उन्होंने सदा प्रसन्नता के साथ उनकी सेवा की। यों कहिए कि अतिथिसेवा में उनकी स्वाभाविक रुचि थी। वे धर्मपरायण महिला थीं। उनके द्वारा दिये संस्कारों और किये गये प्रयासों से आज सारा परिवार धार्मिक प्रवृत्ति का है।

श्रीमती शान्तिदेवी का शुभविवाह राव हरिश्चन्द्र आर्य के साथ १९ मई, १९५८ को वैदिक पद्धति से हुआ। इनका गांव 'छाजाका नांगल' राजस्थान में है। इनके पूज्य पिताजी का नाम श्री चेतराम यादव और माता जी का नाम श्रीमती पारलीदेवी यादव था, जिनका अब देहान्त हो चुका है। इनके चाचा का नाम मूलचन्द यादव था।

श्रीमती शान्तिदेवी के दो भाई है। बलवीरसिंह यादव और रामेश्वरलाल यादव। बड़े भाई बलवीरसिंह यादव कृषि कार्य करतें हैं। उनके तीन पुत्र हैं। छोटे भाई रामेश्वरलाल यादव राजकीय विद्यालय में मुख्याध्यापक थे जो सेवानिवृत्त हो चुके हैं। इनके तीन पुत्र हैं।

श्रीमती शान्तिदेवी के चाचा श्री मूलचन्द यादव के तीन पुत्र और एक पुत्री हैं, इनमें सर्वश्री बनवारीलाल, रामलाल, राधेश्याम यादव और श्रीमती सुमित्रा यादव इनको क्रमशः बनवारीलाल को एक पुत्र एक पुत्री, श्री रामलाल को दो पुत्र, एक पुत्री, श्री राधेश्याम यादव को दो पुत्र है। इनमे से भाई राधेश्याम यादव का देहान्त हो चुका हैं। श्री बनवारीलाल राजकीय विद्यालय कांसली (राजस्थान) में मुख्यलिपिक रहे हैं, जो अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं। श्री रामलाल केन्द्र सरकार के 'खेतड़ी तांबा प्रोजक्ट' में लिपिक थे, वे भी अब सेवानिवृत्त हैं। श्रीमती सुमित्रा गांव कोहराना (राज.) में विवाहित हैं और घरेलू महिला के रुप में जीवनयापन कर रही हैं। इन्हे दो पुत्र हैं।

स्व. शान्तिदेवी का जन्म सन् १९४१ में गांव 'छाजाका नांगल' (राज.) में हुआ था। आर्य परिवार में आने के बाद शान्तिदेवी आर्य-संस्कारों को ग्रहण करके सचमुच में 'श्रीमती आर्या' बन गई थीं। उनकी आर्य-संन्यासी-महात्माओं, विद्वनों, उपदेशकों, कार्यकर्ताओं में गहरी श्रद्धा थी। अतिथि के रुप में पधारने पर उनको वे भोजन आदि से तो सत्कार करती ही थीं, आर्य जी के साथ अपनी ओर से पृथक् दक्षिणा देकर भी सम्मानित करती थीं। अतिथि-सेवा की उपेक्षा करनेवाले इस वातावरण में, इस दृष्टि से श्रीमती शान्तिदेवी विशेष महिला थीं। वे इस बात का ध्यान रखती थीं कि घर में

धार्मिक अनुष्ठान और साधु-सन्तों का सत्संग समय-समय पर अवश्य होना चाहिए, क्योंकि बच्चों पर उसी से अच्छे संस्कार पड़ते हैं।

आर्य परिवार में बहुओं के आने के बाद उनको प्यार और तालमेल से रखने में शान्तिदेवी जी चतुर थीं। कुछ ही समय में बहुओं पर आर्य संस्कारों की छाप छोड़कर उनको परिवार के योग्य बहू उन्होंने बना दिया था। उनके संरक्षण में परिवार का वातावरण प्रेमपूर्ण रहा और परिवार आगे बढ़ाता गया। उनका कहना था कि उनकी माताजी ने विवाह के समय उन्हें दो शिक्षाएं विशेष रुप से दी थीं-"१. पति को परमेश्वर मानकर सदा ऊंचा स्थान देना, २. कभी क्रोध आदि करने पर उलटा न बोलना और न कलह में उलझना। यदि इन दो बातों का ध्यान रखोगी तो तुम्हारा गृहस्थ सुखी-सफल रहेगा।" माताजी की इन दोनों ही शिक्षाओं को उन्होंने पूरे जीवन निभाया। उसका सुखद परिणाम यह रहा कि आर्य परिवार का वातावरण उनकी छत्रछाया में सदा मधुरतापूर्ण रहा और आज भी है।

श्रीमती शान्तिदेवी का असामयिक निधन दिल का दौरा पड़ने से २४ जनवरी, सन. २००३ को हो गया। यह सम्पूर्ण परिवार, रिश्ते-नातेदार, परिचित जनों के लिए आकस्मिक असह्य आघात था। अपनी धार्मिक दृढता के कारण परिजनों ने उस आघात को सहन किया किन्तु उनकी याद प्रत्येक परिजन के हृदय में आज भी बसी हुई है। परिवार ने उनका संस्कार पूर्ण वैदिक विधिसे किया था, जिसकी नागपुर में पर्याप्त समय तक चर्चा रही थी।

पुत्रवधुएं

स्व. श्रीमती शान्तिदेवी ने जिन पुत्रवधुओं का अपने परिवार के लिए चयन किया उनमें बड़ी हैं श्रीमती राजेश्वरी आर्या, जो श्री महिपाल आर्य की पत्नी तथा सौ. सुषमा आर्या एवं चि. राहुल आर्य की माता हैं। इनका गांव डेरोली अहीर, जि. महेन्द्रगढ़ के (हरियाणा) है। इनके पिताजी का नाम दयानन्द यादव एवं माता जी का नाम श्रीमती रामप्यारी यादव है। इनके पिता पहले सेना में रहे। वहां से आने के बाद अपना निजी व्यवसाय करने लगे। ये तीन भाई तथा दो बहनें है। इनका बड़ा भाई अध्यापक हैं। अन्य दो भाइयों का अपना व्यवसाय है। छोटी बहन गांव नखरोला,गुड़गांव (हरियाणा) में विवाहित है। आर्य परिवार के सभी संस्कार इनमें हैं।

दूसरी पुत्रवधू श्रीमती स्नेहलता आर्या गांव-श्रीनगर,अजमेर(राज.) की निवासी हैं। इनके पिताजी का नाम श्री रामाकिशन यादव और माता जी का नाम श्रीमती ग्यारसीदेवी है। पिता जी का देहावसान हो चुका है। इनकी चार बहनें हैं और तीन भाई हैं। सभी अपना सुखमय जीवन व्यतीत कर रहें हैं। बड़े भाई का ट्रांसपोर्ट तथा माइक्रो कंपनी का शोरुम वर्कशॉप बिकानेर में है। बीचके भाईका उपरोक्त ही व्यवसाय अजमेर मे हैं। छोटे भाई के पास पूना में 'पतंजलि योगपीठ' का सेन्टर है। इनके पति श्री यशपाल आर्य हैं। एक पुत्री कु. सुमेधा आर्या पुत्र चि. हिमांशु आर्य हैं। ये भी परिवार में स्नेह तथा तालमेल के साथ रहते हैं। इनमें अतिथिसेवा आदि के गुण अपनी स्वर्गीया सास के समान ही हैं।

परमात्मा की कृपा और अपने पुरुषार्थ एवं सुसंस्कारों के कारण सारा परिवार सुखी,शान्त और सम्पन्न है। परिवार के सभी सदस्य राव हरिश्चन्द्र आर्य का हार्दिक सम्मान और सेवा-संभाल करते हैं। ऐसा परोपकारमय आदर्श जीवन जीनेवाले बहुत कम व्यक्तित्व मिलते हैं। मैंने इस परिवार के विषय में जैसा सुना था निकट से वैसा ही देखने को मिला। मेरी ओरसे आर्य परिवार को आशीर्वाद एवं हार्दिक मंगल व शुभकामनाएँ।

हमारे पूज्य पिताजी

महिपाल आर्य

यशपाल आर्य

रचनात्मक जिंदगी के हर दौर में वे शिखर पर भी रहते हैं और शिखर के करीब भी, ऐसे हैं हमारे बाबूजी । ७७ वर्षों के इस लंबे सफर को उन्होंने अटल आत्मविश्वास, अजेय साहस और प्रबल पुरुषार्थ से पार किया है। वस्त्रों से, आचार से, व्यवहार से, उनमें सोलह आने भारतीयता झलकती है। जब भी मिलते हैं, दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते करते हैं। इस उम्र में भी समाज के कार्य के लिए इनका अदम्य उत्साह हमें, हमेशा प्रेरणा देता रहता है।

व्यावहारिक जीवन और पारिवारिक जीवन में एक सुर होना भी जरूरी है। सामान्यतः पुरानी पीढ़ी परम्परवादी और नयी पीढ़ी परिवर्तनवादी हो जाती है। लेकिन हमारे बाबूजी ने सदा हम दोनों भाइयों को पिता का अनुव्रती होने का उपदेश दिया, भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने की दिशा दिखाई। उनके विचार से जिस परिवार में पुत्र पिता के व्रत को कर्म में परिणत करने वाला हो वह परिवार स्वर्ग बन जाता है।

हमारे बाबूजी ने सदा यही कहा कि पुरुषार्थ से प्राप्त धन में सुख की अनुभूति करनी चाहिए। इससे आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहती है। पारिवारिक समरसता में इस सन्तुलन का बड़ा महत्व है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।।

सबका भला करो भगवान्,
सब पर कृपा करो भगवान्।
सब पर दया करो भगवान्,
सबका सब विधि हो कल्याण।

जीवन में ये वाक्य हमने सर्वप्रथम अपने पिताजी से सुने। हमें ऐसे सुशील, परोपकारी और आदर्श पिता की संतान होने पर गर्व अनुभव होता है।आज हम समाज में जब पिताजी का नाम सम्मान के साथ सुनते हैं तो हमारा हृदय गद्गद् हो जाता है। हम अनुभव करते हैं कि उनकी यह प्रतिष्ठा उनके आदर्श जीवन के कारण है। ऐसे पिता पर किस पुत्र को गर्व नहीं होगा।

पिताजी व माँ के दिये संस्कार ही हैं जो हमें जीवन के हर मोड़ पर अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होने देते और बुराइयों से बचा देते हैं। हमारे बचने से हमारा परिवार भी बचा हुआ है।

जिस तरह पिताजी के ७८ वें जन्मदिन को हम "अमृत महोत्सव" के रूप में मना रहे हैं, प्रभु से प्रार्थना है उनके १०० वें जन्मदिन को भी हम 'शताब्दी महोत्सव' के रूप में मनायें। उनका हाथ और साथ सदा हमारे साथ रहे।

सुपुत्र
महिपाल आर्य
यशपाल आर्य

हमारे पूज्य श्वसुर-पिताश्री

कोई लड़की जब बहू बनकर ससुराल में आती है तो वहां के वातावरण में तालमेल बनाने में उसको काफी समय लगता है और अनेक विरोधाभासी परिस्थितियां भी उसके सामने आती हैं। हम दोनों पुत्रवधुएं अपना सौभाग्य मानती हैं कि हमें ससुराल आकर किसी भी विपरीत परिस्थिति का सामना नहीं करना पड़ा, हमें यहां पिता-माता के रूप में श्वसुर-सास मिले और वातावरण अपने घर जैसा मिला। इस सबका श्रेय हमारे श्वसुर साहब को जाता है। उन्होंने घर का वातावरण इस प्रकार का बनाया हुआ है कि आर्य समाजी संस्कारों का वातावरण होने के कारण यहां बहुओं को बेटियों के समान प्यार और व्यवहार दिया जाता है।

अपने सास-श्वसुर से हमें सुन्दर शिक्षाप्रद प्रेरणाएं मिलती रही हैं। इन्होंने जीवन में संघर्ष करके अपने जीवन का निर्माण किया है। आज परमात्मा की कृपा से सब साधन-सुविधाएं हैं। इनको देखकर हमें पुरुषार्थ करने की प्रेरणा मिलती रहती है। ऐश्वर्य सम्पन्न होकर भी अभिमान इनसे कोसों दूर है। घर का सारा वातावरण धार्मिक और मर्यादित है। छोटे सदस्य बड़ों की आज्ञा का पालन प्रसन्नता से करते हैं, उनकी सेवा-संभाल का ध्यान रखा जाता है। विनम्रता और मधुरतापूर्ण व्यवहार के कारण कभी यही अनुभव नहीं होता कि हम अपने माता-पिता से दूर हैं। हम समझती हैं कि घर का यह अपनत्वभरा वातावरण आर्यत्व के संस्कारों वाले घरमें ही मिल सकता है।

हमारे श्वसुर-पिताश्री ने सारे परिवार को यह शिक्षा दी है कि 'मनुष्य को मर्यादा में रहकर सांसरिक भोगों को भोगना चाहिए। मर्यादा से बाहर जाकर भोगा गया सांसारिक सुख दुःख का कारण बन जाता है। धर्म का पालन करना चाहिए क्योंकि धर्म ही सुख का आधार है और परलोक में स्वर्ग का प्राप्ति का साधन है। परमात्मा ने हमें सुख-सुविधाएं दी हैं तो हमें भी दीनदुःखियों की यथाशक्ति सहायता करनी चाहिए'। इन्हीं संस्कारों के कारण इस परिवार में अतिथिसेवा ,सहयोग और दानशीलता जैसी श्रेष्ठ परम्पराएं बनी हुई हैं।

हमें हार्दिक प्रसन्नता है कि हम अपने श्वसुर पिताश्री का अमृत महोत्सव मना रही हैं। इस अवसर पर हम प्रभु से प्रार्थना करती हैं कि वह इनको लम्बी आयु,अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करे जिससे पूरे परिवार पर इनका वरदहस्त बना रहे और हमें इनका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे। इनका मार्गदर्शन हमारे भविष्य का निर्माता है और इनका आशीर्वाद हमारे सुखी जीवन का सहारा है।

पुत्रवधुएं
श्रीमती राजेश्वरी आर्या
श्रीमती स्नेहलता आर्या

हमारे पूज्य दादाजी

सुषमा आर्या

सुमेधा आर्या

राहुल आर्य

हिमांशु आर्य

आज के आधुनिक होते, परिवर्तित होते संस्कारों के 'हाईटेक' युग में भी हमारे घर के बड़े से लेकर छोटे से छोटे सदस्य तक सबके आदर्श हैं हमारे दादाजी, जिनका हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है क्योंकि उन्होंने सदैव समाज के हित को प्राथमिकता दी है, दूसरों की खुशी को अपनी खुशी से ज्यादा महत्व दिया। हम जब भी आर्यसमाज की संस्थाओं व अन्य सामाजिक संस्थाओं में जाते हैं तो दादाजी के नाम से पहचाने जाते हैं, तो हमें गर्व महसूस होता हैं। हमें जीवन में सभी तरह की सुख-सुविधाएँ होने पर भी अगर किसी बात पर हमें नाज है तो राव हरिश्चन्द्र आर्य जी के पौत्र-पौत्री होने पर है। जब भी हम कुछ अच्छा कार्य करते हैं तो दादाजी हमें प्रोत्साहित करने के लिए ईनाम अवश्य देते हैं। हमेशा यज्ञ के बाद उनका छोटा-सा प्रवचन हमें बहुत प्रभावित करता है कि "अपनी आत्मा को जो व्यवहार पसन्द है, हमें दूसरों के साथ भी वही व्यवहार करना चाहिए इसी का नाम धर्म है और इसी का नाम मानवता है। जिस दिन मनुष्य इस एक उपदेश को भी अपना लेगा उस दिन समाज के अधिकतर कलह,दुःख दूर हो जायेंगे। क्यों कि कोई भी यह नहीं चाहता कि कोई मुझे कष्ट दे, गाली दे, तो हमें भी किसी प्राणी को कष्ट नहीं देना चाहिए, उसकी आत्मा को नहीं दुखाना चाहिए।" कभी वे हमें सिखाते हैं कि "मनुष्य का जन्म बहुत दुर्लभ है। वह अनेक पुण्यकर्मों से मिलता है। इसलिए मनुष्य को बुरे कर्म नहीं करने चाहिएं जिससे हमें अगला जन्म भी मनुष्य का मिल सके।" ऋषि दयानन्द के उपदेशों की शिक्षा देते हुए दादाजी हमें बताया करते हैं कि "मनुष्य को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिये, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्तुत इस सिद्धांत को अपने निज जीवन का आदर्श बनाओ।

हम उनके आदर्शों तथा सिद्धांतों पर चलने की भरकस कोशिश कर रहे हैं। अमृत महोत्सव के अवसर पर हम दादा जी को विश्वास दिलाते हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारे दादाजी को लम्बी आयु दे जिससे वे हमारा मार्गदर्शन लम्बे समय तक करते रहें।

पौत्र	पौत्री
राहुल आर्य	सुषमा आर्या
हिमांशु आर्य	सुमेधा आर्या

श्री हरिश्चन्द्र आर्य : जैसा मैंने देखा

श्री वेद प्रकाश आर्य,सहायक आयुक्त (दिल्ली पुलिस)

आप दिल्ली पुलिस में सहायक आयुक्त हैं। आप का पूरा जीवन आर्य समाज के सिद्धांतो पर आश्रित रहा है। दिल्ली पुलिस में आप की छवि ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ एवं सजग अधिकारी के रूप में जानी जाती है । आप अनेक गुरुकुलों, आश्रमों से जुड़े हैं । आप आर्यसमाज के कुशल कार्यकर्ता हैं।

परम आदरणीय राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का जन्म स्थान व मेरा जन्म स्थान नारनौल तहसील (हरियाणा) में है और हम दोनों के ही जीवन में आर्यसमाज का विशेष प्रभाव है । इन समानताओं के कारण मैं उनसे अनेक वर्षोसे परिचित हूँ । इस दौरान मैं आर्यसमाज से सम्बन्धित अनेक स्थानों व संस्थाओं में गया, अनेक आर्य संन्यासियों-विद्वानों से सम्पर्क हुआ तो मैंने प्रत्येक स्थान पर राव साहब की सेवाभावना, दानशीलता, वैदिक सिद्धांतों व विद्वानों के प्रति विशेष श्रद्धा के चिह्न मौजूद पाये ।

राव साहब को अति निकटता से देखने का मुझे शुभ अवसर प्राप्त हुआ है । मैंने उनको स्वस्थ तन-मन-धन से सम्पन्न, दानशील, यज्ञप्रेमी, विद्वान्, विनम्र, शिष्ट, मृदुभाषी, कर्मठ, परिश्रमी, परोपकारी, वैदिक सिद्धांतों के दृढ़ अनुगामी, पवित्र व सात्विक जीवन, दिखावे से दूर, कुशल प्रबन्धक, स्नेह आदि अनेकों गुणों से युक्त पाया । आर्य संस्थाओं के भवन, आर्य समाज मन्दिरों, धर्मार्थ चिकित्सालय, पुस्तकालय आदि के निर्माण में उनके सहयोग के अनेक उदाहरण विभिन्न प्रान्तों में मौजूद हैं । अनेक गुरुकुलों आदि में उनका निरन्तर सम्पर्क व सहयोग बना रहता है । अनेक विद्वानों को पुरस्कारों व दक्षिणा से सेवा का उनका क्रम निरन्तर चलता रहता है और सामाजिक कार्योंमें सहयोग के लिए वे सदैव तत्पर व अग्रणी रहते हैं । उनके व्यक्तिगत जीवन में भोजन, विचार, वेशभूषा की सात्विकता मौजूद है । उनका व्यक्तित्व स्वस्थ, आकर्षक व प्रभावशाली है । वे अनेक संस्थाओं से पदाधिकारी या सहयोगी के रूप में जुड़े हुए हैं व इनके समारोहों में देश-विदेश में जाते रहते हैं । आर्यसमाज में उनकी विशेष पहचान है । वैदिक सिद्धांतों पर चलते हुए उन्होंने अपने जीवन तथा परिवार का विशेष निर्माण किया है । उन्होंने दोनों पुत्रों, पुत्रवधुओं, दोनों पोते व दोनों पोतियों को वैदिक संस्कार देकर सद्गृहस्थ बनाया है । वे वर्तमान में मानव जीवन के गौरवपूर्ण ७७ वर्ष पार कर चुके हैं और वे "जीवेम शरदः शतम् ..." के वैदिक उद्घोष को पूर्ण करें, ऐसी प्रभु से प्रार्थना व आशा है । ऐसे विशेष मानव को उनके अमृत महोत्सव पर मेरा श्रद्धायुक्त नमन है ।

श्री आर्य ने अपने जीवन में अनेक साधु-संन्यासियों और विद्वानों का श्रद्धापूर्वक पर्याप्त धन से सम्मान किया हैं ऐसे व्यक्ति को सम्मानित करना हम सबका कर्त्तव्य बनता है। इससे लोगों को प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मिलेगा। समाज में अच्छे लोगों की वृद्धि होगी।

फोन : ९९१०१०८८८३

चित्रमय जीवन-प्रवाह
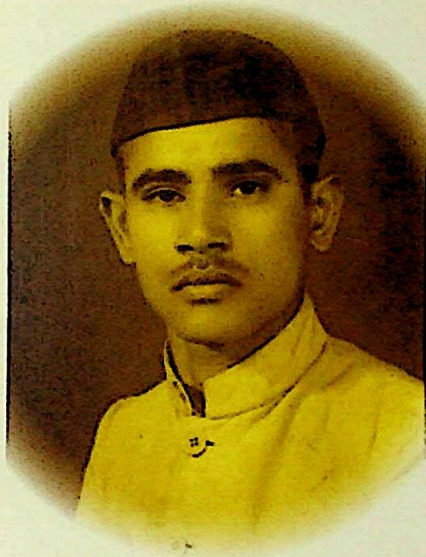
युवावस्था में राव हरिश्चन्द्र आर्य
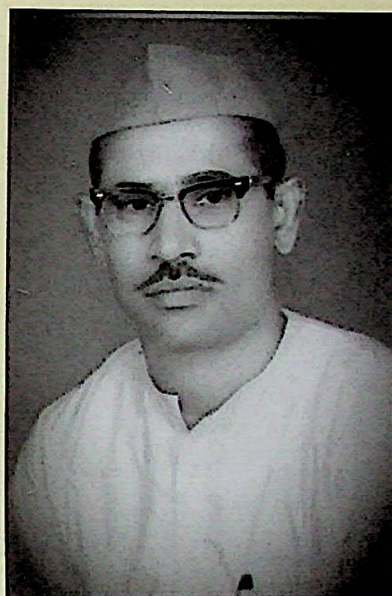
युवा अवस्था में राव हरिश्चन्द्र आर्य

श्रीमती शान्तिदेवी आर्या (धर्मपत्नी)
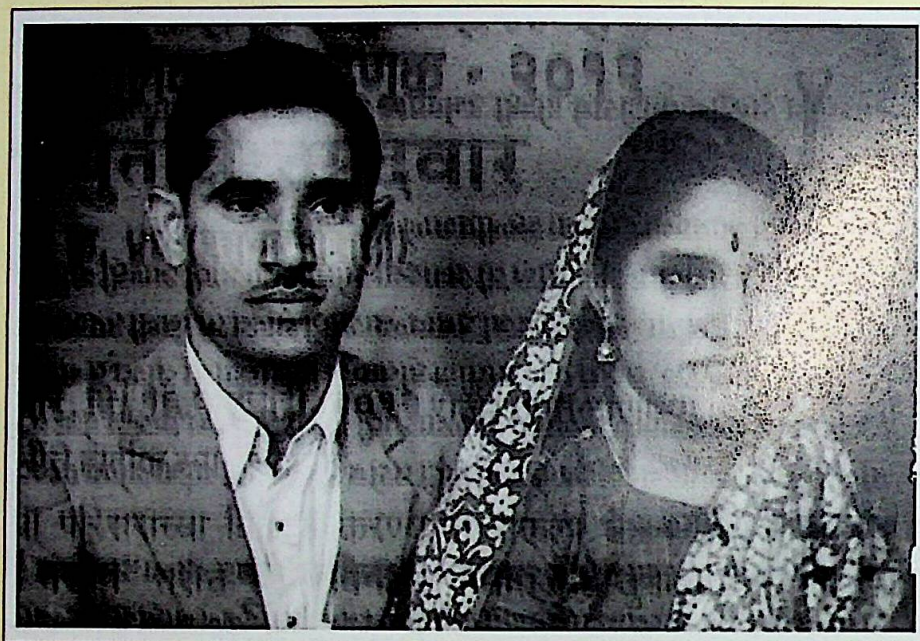
युवा अवस्था में श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य व श्रीमती शान्तिदेवी आर्या
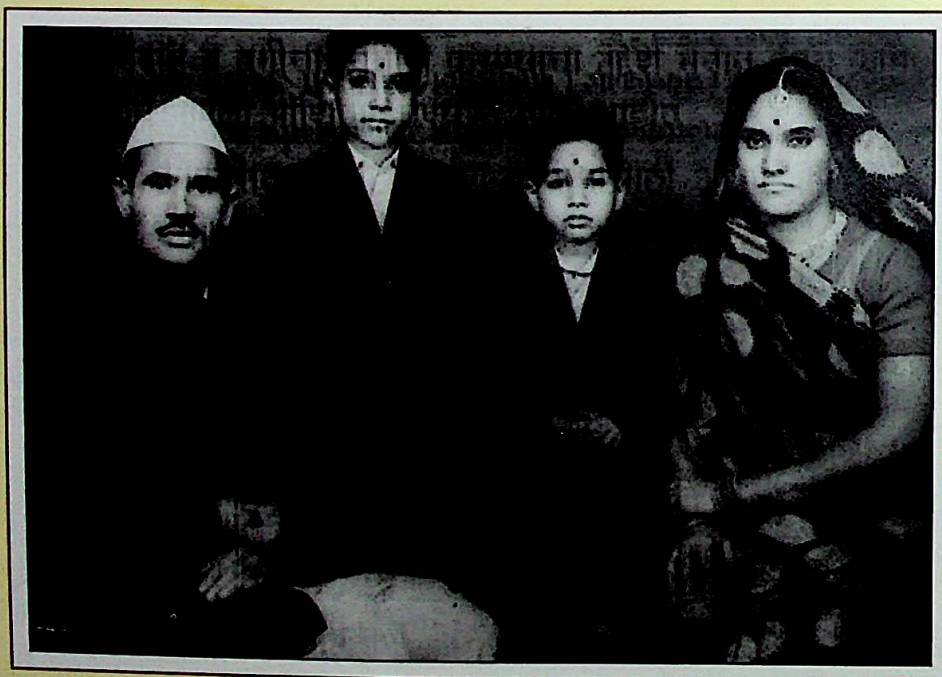
पुत्र महिपाल और यशपाल के साथ राव हरिश्चन्द्र आर्य दम्पती

गौभक्त राव हरिश्चन्द्र आर्य गौ सेवारत और साथ में दोनों पुत्र
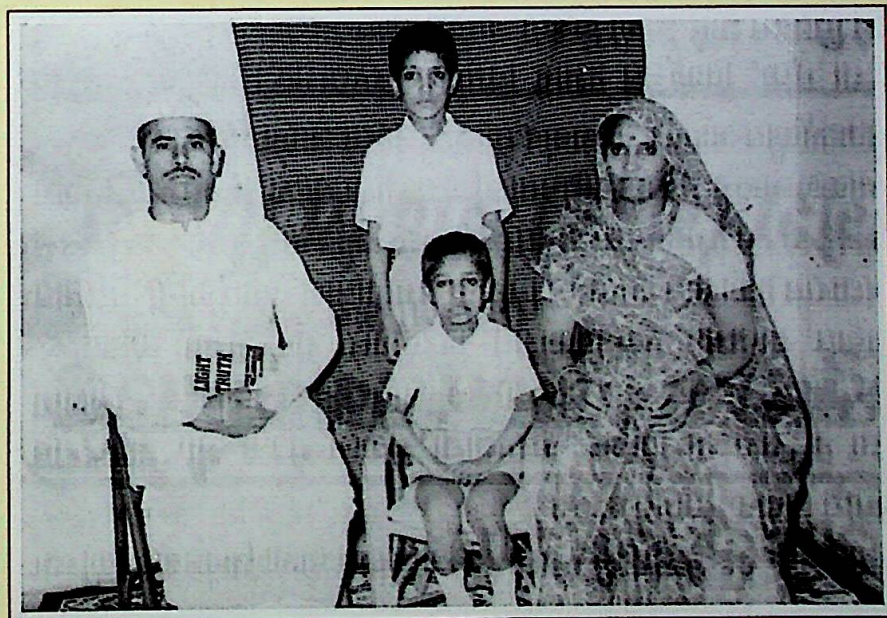
राव हरिश्चन्द्र आर्य,श्रीमती शान्तिदेवी आर्या, दोनों पुत्रों के साथ

प्रौढ़ अवस्था में राव हरिश्चन्द्र आर्य व श्रीमती शान्ति [illegible]

धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी आर्या

बाल अवस्था में पुत्र चि. महिपाल व चि. यशपाल आर्य
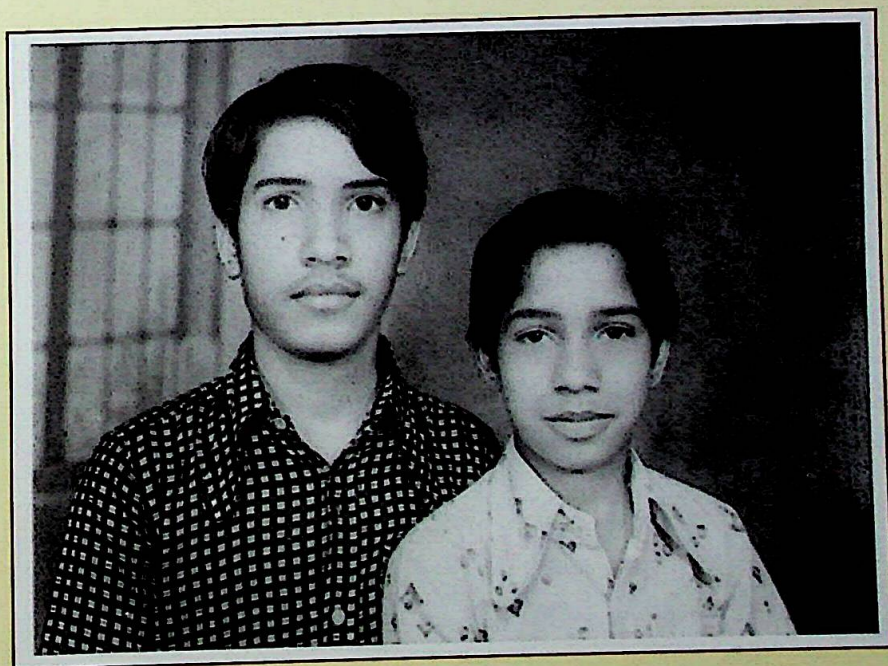
किशोर अवस्था में पुत्र चि. महिपाल व चि. यशपाल आर्य

पुत्र महिपाल आर्य एवं यशपाल आर्य के साथ पिता राव हरिश्चन्द्र आर्य
और माता शान्तिदेवी आर्या

पौत्री सुषमा,सुमेधा और पौत्र राहुल तथा हिमांशु के साथ दादा
हरिश्चन्द्र आर्य एवं दादी शान्तिदेवी आर्या
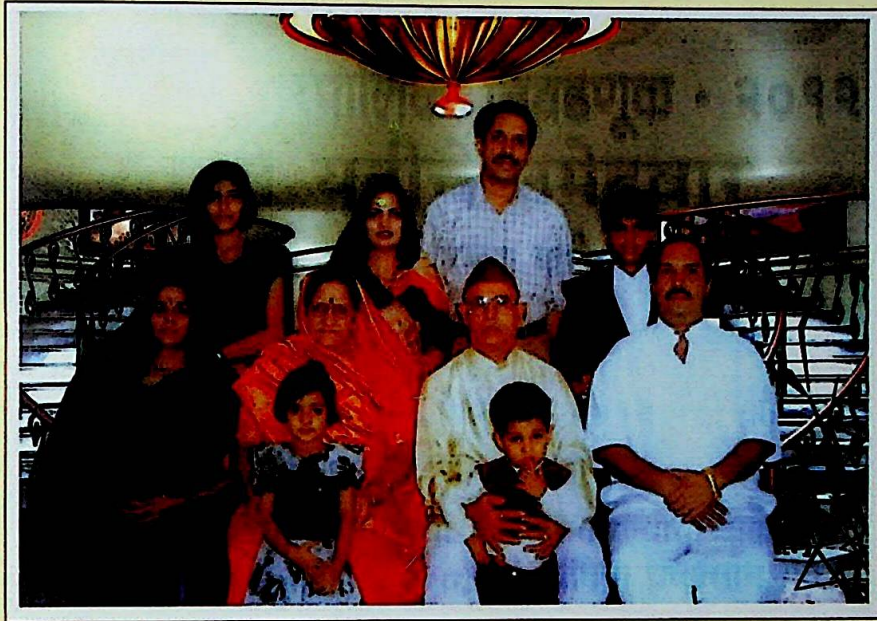
सम्पूर्ण परिवार के साथ राव हरिश्चन्द्र आर्य
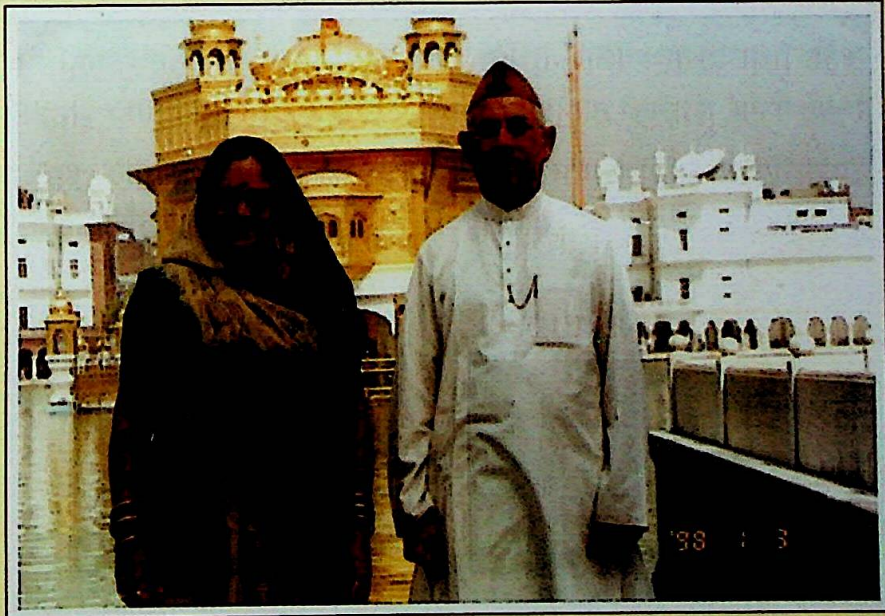
भारत दर्शन पर राव हरिश्चन्द्र आर्य व श्रीमती शान्तिदेवी आर्या
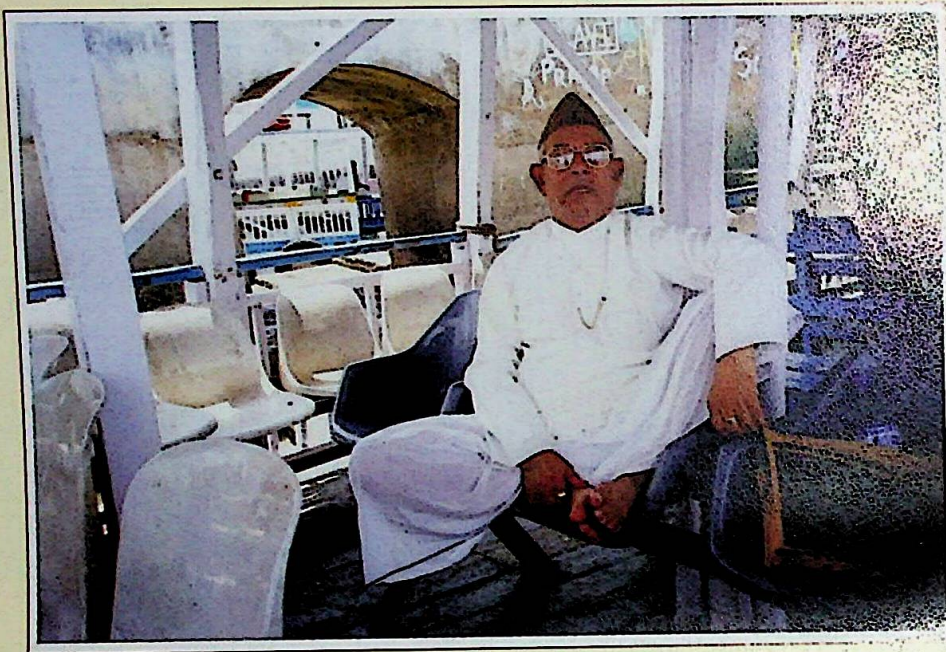
मॉरिशस यात्रा के समय आराम करते हुये राव [illegible]
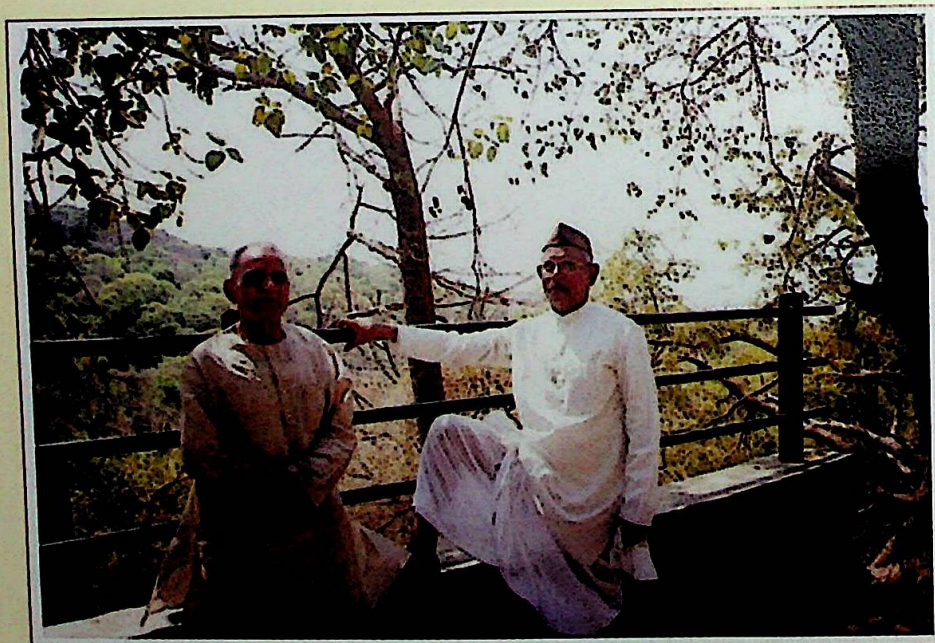
मॉरिशस यात्रा में साथी बैद्यनाथ के प्रधान वैद्य श्री सीतारामजी शर्मा
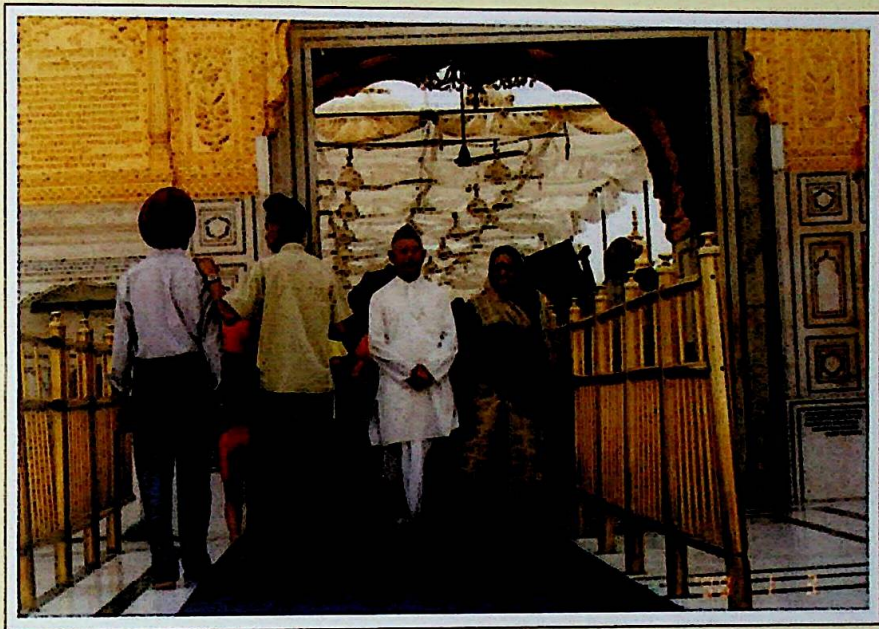
भारत दर्शन पर राव हरिश्चन्द्र आर्य व श्रीमती शान्तिदेवी आर्या
(ऋषिकेश में लक्ष्मणझूला पर)
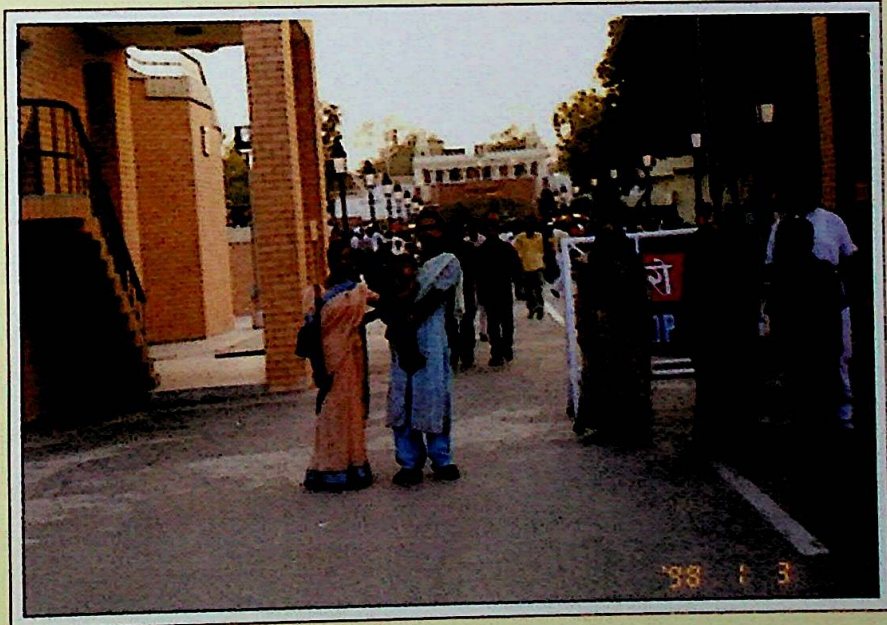
भारत दर्शन पर राव हरिश्चन्द्र आर्य व श्रीमती शान्तीदेवी आर्या (हरिद्वार में)

बैद्यनाथ भवन में
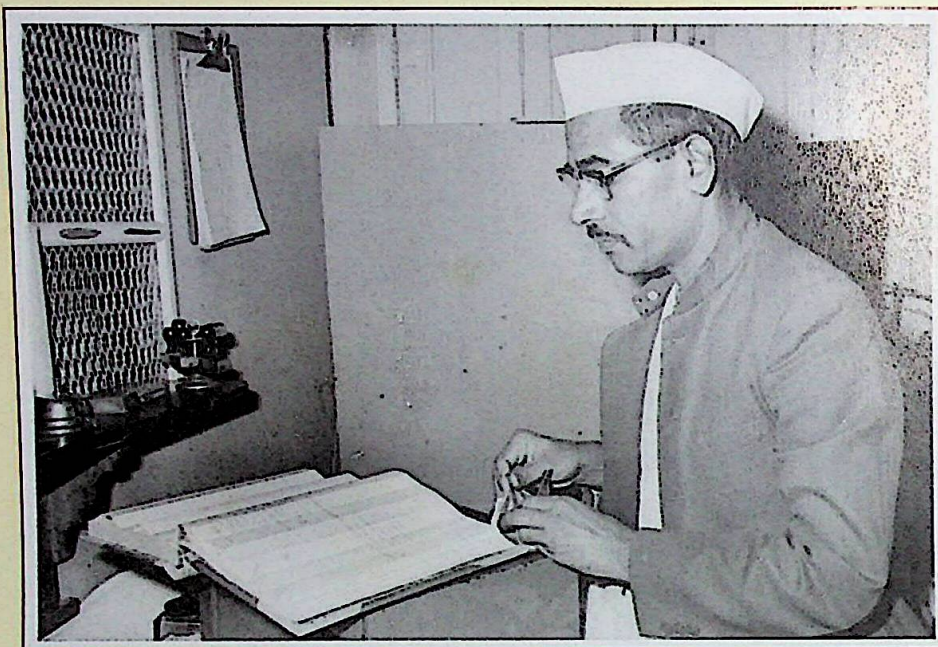
बैद्यनाथ भवन कार्यालय में सेवारत राव हरिश्चन्द्र आर्य

वैद्यनाथ भवन के साथियों के साथ राव हरिश्चन्द्र आर्य

बैद्यनाथ भवन की सेवा से अवकाश

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. शाखा नागपुर से सेवानिवृत्ति के समय सम्बोधन करते हुये राव हरिश्चन्द्र आर्य

उपस्थित पं. शिवनाथजी शर्मा, डायरेक्टर पं. सुरेशकुमारजी शर्मा व राव हरिश्चन्द्र आर्य

बैद्यनाथ भवन के सेवा कार्य काल के साथी,सेवानिवृत्ति के समय रस्मी विदाई
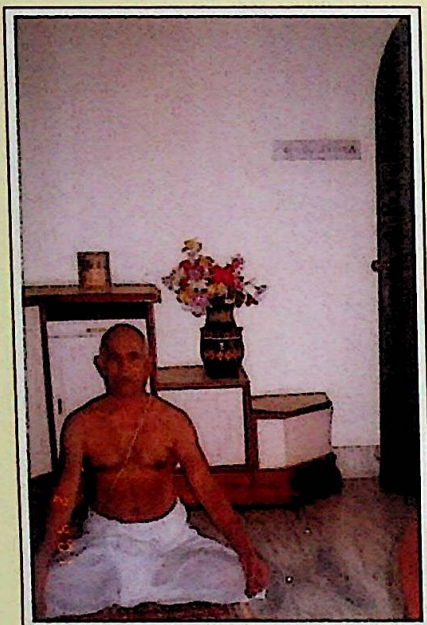
राव हरिश्चन्द्र आर्य
सन्ध्या करते हुए

श्रद्धान्जलि सभा

स्व. श्रीमती शान्तिदेवी की श्रद्धान्जलि सभा दि. २७ जनवरी २००३ में
विद्वत्‌जन व अन्य संन्यासीवृन्द

हरियाणा के दानवीर आर्य-सपूत राव हरिश्चन्द्र जी आर्य

डॉ. सुरेन्द्रकुमार मनुस्मृति भाष्यकार (पूर्व प्राचार्य)

डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी हरियाणा के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गुड़गांव से प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। ये आर्यसमाज के प्रसिद्ध लेखक,समीक्षक एवं वक्ता हैं। मनुस्मृति पर किया गया इनका प्रक्षेपानुसन्धान एवं भाष्य का कार्य देश-विदेश में सर्वाधिक पढ़ा जाता है। इनके द्वारा लिखित एवं सम्पादित बीस पुस्तकें हैं। जिनमें से आठ पुस्तकें महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में नियुक्त हैं।

अत्यन्त प्राचीन काल में सरस्वती नदी के आसपास बसे प्रदेश का नाम **'ब्रह्मावर्त'** था, आज उसका नाम **'हरियाणा'** है । आर्यों द्वारा बसाया हुआ यह वह प्रदेश है, जहां ऋषि-मुनियों के आश्रम थे, जहां अधिकांश वैदिक शास्त्रों की रचना हुई, जहां वैदिक संस्कृति-सभ्यता, शिक्षा-दीक्षा थी, जहां आर्यत्व की विचारधारा थी। आज भी इस प्रदेश में आर्यत्व का पर्याप्त प्रभाव है। महर्षि दयानन्द की आर्य विचारधारा को इस प्रदेश के लोगों ने बहुत शीघ्र और अत्यधिक संख्या में ग्रहण किया। यही कारण है कि इस प्रदेश में गुरुकुलों, आर्यसमाजों, आर्य-उपदेशकों की गतिविधियां सर्वाधिक रही हैं । लोक-व्यवहार में आज भी इस प्रदेश को **'आर्यों का प्रदेश'** कहा जाता है । आर्यों के ऐसे प्रदेश में राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का जन्म हुआ । हरियाणा प्रदेश के जिला महेन्द्रगढ़ के अन्तर्गत नारनौल तहसील के एक छोटे से गांव 'बीगोपुर' में आर्य जी का जन्म हुआ । आप छह भाई-बहनों में सबसे छोटे हैं । गांव में आर्यसमाज के प्रचारार्थ आये आर्य भजनोपदेशकों के उपदेशों से प्रभावित होकर आप किशोर अवस्था में आर्य विचारधारा में दीक्षित हुए और आज सतत्तर वर्ष की आयु तक वह विचारधारा सुदृढ़ से सुदृढ़तर होती रही है । आज आपकी गंणना हरियाणा के विशिष्ट आर्यपुरुषों में होती है, और एक दानशील व्यक्तित्व के रूप में होती है ।

आर्यसमाज में दीक्षित होना आपके लिए बहुत ही सौभाग्यवर्धक रहा। उसने आपको जहां पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा दी वहीं पुरुषार्थ की वह दिशा दी जिससे आपका जीवन न केवल सफल हुआ, अपितु समृद्ध भी हुआ। आपका पारिवारिक व्यवसाय कृषि था, जिसकी सीमित आय थी। स्कूली शिक्षा के उपरान्त आपके मन में बोध हुआ की इस सीमित आय से इतने बड़े परिवार का निर्वाह होना कठिन है। यह विचार आपको नौकरी की ओर खींच लाया। जनवरी १,१९५४ को झांसी स्थित 'श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड' में आपका चयन लिपिक के पद पर हुआ । अपनी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, कर्मठता से आपने वहां अपना विशेष स्थान बना लिया । आपके आर्यगुणों का यह प्रभाव था कि तब से आज तक आपने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा । आपने खूब पुरुषार्थ किया और परमात्मा ने आप पर कृपा की खूब वर्षा की । शास्त्र कहते हैं तीव्र पुण्यों का फल अतिशीघ्र प्राप्त होता है । आपको भी अपने पुण्यों का फल एक सफल-समृद्ध जीवन के रूप में इसी जन्म में मिला । 'आयुर्वेद भवन' में उन्नति करते हुए आप नागपुर शाखा के महाप्रबन्धक पद पर पहुंचे तो दूसरी ओर आपका व्यवसाय भी चमक उठा। साथ ही आप सामाजिक गगन में एक देदीप्यमान नक्षत्र के समान उभरे । कहते हैं कि 'जादू वह होता है जो दूसरे के सिर पर चढ़कर बोले, आर्यत्व से ओतप्रोत आपके गुणों ने

'आयुर्वेद भवन' के प्रबन्धकों पर ऐसा जादू किया कि वहां से सेवानिवृत्ति चाहते हुए भी उन्होंने आपको कई वर्षों तक सेवानिवृत्ति प्रदान नहीं की। उनको निश्चय हो गया था कि मनसा-वाचा-कर्मणा आर्यत्व से ओतप्रोत ऐसा व्यक्ति पुनःमिलना दुर्लभ है, क्योंकि ऐसे साधु व्यक्ति बहुत कम मिलते हैं । अनुभवी नीतिकारों ने ठीक की कहा है-

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ।।

अर्थात् - 'प्रत्येक पर्वत में मणि नहीं मिलती, प्रत्येक हाथी में गजमुक्ता उत्पन्न नहीं होती, प्रत्येक वन में चन्दन के वृक्ष नहीं होते, इसी प्रकार प्रत्येक स्थान पर साधुपुरुष नहीं मिलते ।

कई वर्षों से मैंने इनको, इनके व्यवहार को निकट से देखा है, आर्य जी सचमुच साधु-पुरुष हैं । समृद्धि पाकर भी इनके व्यवहार में विनम्रता है, जीवन में सरलता है, रहन-सहन में सादगी है, आचरण में पवित्रता है । समृद्धि से उपजने वाले अभिमान आदि दोष इनको छू नहीं पाये हैं । इनका जीवन धार्मिक है। आर्य व्यक्ति में जो गुण होने चाहिएं, वे इनमें विद्यमान हैं । इनकी दिनचर्या भी आर्यों की दिनचर्या है । कथनी-करनी में आर्यत्व का प्रभाव इनके परिवार पर भी है । इनके दोनों पुत्र श्री महिपाल आर्य और श्री यशपाल आर्य वस्तुतः आर्य और सुपुत्र हैं । वैसा आर्यत्व इनकी पुत्रवधुओं तथा पौत्रों-पौत्रियों में है । आर्य जी का श्रेष्ठ जीवन होने से इनका परिवार भी एक आर्य-श्रेष्ठ परिवार है, जो वर्तमान वातावरण के दुर्गुणों-दोषों से दूर है । यह परिवार का सौभाग्य है । इस कारण यह परिवार उन्नतिशील ही रहेगा क्योंकि धर्म का मार्ग सदा उन्नति की ओर ले जाता है ।

इन वैयक्तिक गुणों के साथ-साथ आर्य जी की जो उल्लेखनीय और दुर्लभ विशेषता है वह यह है कि ये अपनी सम्पत्ति का पर्याप्त भाग दान-धर्म में लगाते हैं । इसके लिए इनके परिवार ने **'राव हरिश्चन्द्र आर्य धमार्थ ट्रस्ट'** की स्थापना की हुई है । उसके माध्यम से एक ओर ये साधुओं और विद्वानों को सम्मानित करते हैं, दूसरी ओर जन-कल्याण के कार्य सम्पादित करते हैं । यह इनकी तथा इनके परिवार की दान-धर्म की पावन प्रवृत्ति और निर्लोभता का परिचायक कार्य है । ऐसे वातावरण में, जब कि समृद्ध व्यक्ति आसुरी प्रवृत्ति के होकर कृपण और स्वार्थी होते जा रहे हैं उस वातावरण से अप्रभावित रहकर श्री हरिश्चन्द्र आर्य देवत्व और परोपकार में संलग्न हैं । अब तक श्री आर्य लाखों रुपये दान करके दस आर्य संन्यासियों को 'आर्यरत्न' सम्मान से सम्मानित कर चुके हैं और दस आर्य विद्वानों को 'आर्य-विभूषण' सम्मान से सम्मानित कर चुके हैं । ऐसे स्वार्थरहित पुण्यकार्य दैवी संस्कारों का कोई विरला व्यक्ति ही करता है । इसमें भी विशेष बात यह है कि इन पुण्य-कार्योंमें इनके पुत्र आदि सच्चे मन से इनका साथ देते हैं। यह एक आर्य-परिवार का लक्षण है, जहां वेद का यह आदर्श चरितार्थ होता प्रत्यक्ष दिखाई पड़ रहा है-

''अनुव्रतः पितुः पुत्रः'' (अथर्ववेद ३.३०.२)

अर्थात् 'वह परिवार धन्य है जहां पुत्र पिता की आज्ञा में रहकर उनकी सेवा करते हैं और उनके आदर्श का अनुकरण किया करते हैं ।

जहां आर्य जी और इनके परिवार पर नागपुर वासियों को गर्व है, वहां हरियाणा को भी उतना ही गर्व है क्योंकि ये मूलतः हैं तो हरियाणा के ही सपूत । नागपुर में निवास होते हुए भी ये अपनी मातृभूमि हरियाणा को भूले नहीं हैं । अपने क्षेत्र के उपकार को अनुभव करते हुए इनके हृदय में उसका भी प्रत्युपकार करने की भावना बनी रहती है । उसी भावना से प्रेरित होकर इन्होंने अपने गांव में अपनी भूमि में विशाल आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण किया है, जहां निवास, सत्संग और यज्ञानुष्ठान की व्यवस्था है कुछ समय पूर्व आर्य जी की मातृभूमि

गांव 'बीगोपुर' में जाने का मुझे एक अवसर प्राप्त हुआ। मैंने देखा कि आर्य जी ने वहां के लोगों के कष्ट निवारण की भावना से एक 'निःशुल्क औषधालय' का निर्माण अपनी भूमि में किया है। उसका सुविधापूर्ण भव्य भवन है। उससे गांव तथा आसपास के क्षेत्र के लोगों को निःशुल्क चिकित्सा की सुविधा प्राप्त होगी। यहां यह ज्ञातव्य है कि आर्य जी का गांव सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है जिसके आसपास चिकित्सालय की सुविधा उपलब्ध नहीं है। रोगियों को चिकित्सा के लिए दूर जाना पड़ता है, अथवा 'थैलाछाप' चिकित्सकों के हाथों लुटना पड़ता है। आर्य जी के प्रयत्नों से अब उन्हें सुशिक्षित पुरुष एवं महिला डाक्टर उपलब्ध हो सकेंगे और रोगियों के कष्ट -निवारण का सौभाग्य प्राप्त होगा। किसी दानी के लिए इससे उत्तम पुण्यार्जन का अवसर और क्या हो सकता है ? कहा भी है -

''परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम् ''

अर्थात् - 'परोपकार और परपीड़ा का निवारण सबसे बड़ा पुण्य का कार्य है और दूसरों को कष्ट देना सबसे बड़ा पाप है। श्री आर्य जी अपने जीवन में सबसे बड़े पुण्य का कार्य कर रहे हैं।

हरियाणा के आर्यजगत् और अन्य हरियाणा निवासियों के लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि उनके प्रदेश में एक ऐसे व्यक्तित्व ने जन्म लिया है जो उनकी चिन्ता करता है, जो उनको स्मरण करता है, जो दूर रहकर भी उनका अपना है। संसार में एक से बढ़कर एक धर्मात्मा हैं, एक से बढ़कर एक दानी हैं, एक से बढ़कर एक समृद्ध हैं, किन्तु जो अपनत्व और सद्भाव आर्यों और हरियाणावासियों के लिए आर्य जी के हृदय में है, वह किसी अन्य में दृष्टिगत नहीं हो रहा। ऐसे धर्मात्मा व्यक्ति का 'अमृत-महोत्सव' के रूप में सम्मान होना ही चाहिए। इससे समाज में श्रेष्ठ पुरुषों की अभिवृद्धि को प्रोत्साहन मिलेगा। साथ ही उपकृत जनों को कृतज्ञता-ज्ञापन का सुअवसर भी प्राप्त होगा।

संपर्क-४२६/७ गुड़गांव-१२२००१ (हरियाणा)

कल्याणकारी वचन

विषय भोगों में रोगों का भय है, वंश में आचार भ्रष्टता या सन्तान विच्छेद का भय है, धन में राजा का भय है, मौन रहने में दीन कहलाने का भय है, बल प्राप्त करने पर शत्रुओं का भय है, रूप-सौन्दर्य में बुढ़ापे का भय है, शास्त्र पढ़ने पर पराजित होने का भय है, गुण प्राप्त करने में दुष्टों द्वारा व्यर्थ की निन्दा का भय है, शरीर में मृत्यु का भय है, इस प्रकार पृथ्वी पर सारी वस्तुएँ भय से युक्त हैं, केवल एक वैराग्य ही निर्भय बनाने वाला है।

राव हरिश्चन्द्रजी आर्य का संक्षिप्त जीवन -परिचय

प्रो. महावीर, आचार्य एवं उपकुलपति गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय,हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

आप गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय के आचार्य एवं उपकुलपति हैं, आप भारत के विश्वविद्यालयों में निबंध पढ़ने के लिये और अध्यक्षता करने के लिये आहूत किये जाते हैं। डॉ. महावीर अग्रवाल एक लब्ध प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् हैं। आप उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के उपाध्यक्ष भी हैं।

श्रेष्ठ व्यक्तियों का स्वरूप प्रदर्शित करते हुए किसी संस्कृत-कवि ने बहुत सुन्दर कहा है -

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा -
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं,
निज हृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ।।

अर्थात्- जिनका मन, वाणी और शरीर पुण्यरूपी अमृत से भरा हुआ है, जो अनेक उपकारों से तीनों लोकों को तृप्त कर देते हैं, दूसरों के परमाणु के समान छोटे-छोटे गुणों को पर्वत के समान विशालरूप प्रदान कर अपने हृदय में विकसित करते हैं, ऐसे सत्यपुरुष संसार में कितने हैं ? अर्थात् बहुत कम हैं ।

ऐसे श्रेष्ठ सज्जन पुरुषों की पंक्ति में शोभायमान, सहज, सरल, सौम्य और उदार व्यक्तित्व के धनी, सतत समाज-सेवा एवं परोपकार में ही जीवन को सार्थक समझने वाले, श्रद्धा और विश्वास को सदा साथ रखने वाले, मान-सम्मान की कामना से दूर श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य का नाम कौन आर्य नहीं जानता ? धरती से उठकर आकाश को स्पर्श कर लेना, शून्य से यात्रा प्रारम्भ कर महासागर को पा लेना, बहुत अधिक विश्वविद्यालयीन शिक्षा प्राप्त न करने पर भी देश के बड़े-बड़े विद्वानों, वेदभाष्यकारों, साहित्यकारों, साधु-महात्माओं और स्वामी सर्वानन्द जी जैसे वीतराग संन्यासियों के हृदय में अपना अनुपम स्थान बना लेना, ७८ वर्ष की आयु में भी 'चरैवेति, चरैवेति' का सन्देश चरितार्थ कर लेना, यह यदि किसी से सीखना हो तो वे हैं यदुकुल दिवाकर, चन्द्रवंश विभूषण स्वनामधन्य श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य ।

संस्कृत के विद्वानों द्वारा प्रतिपादित **'महात्मा'** शब्द की प्रतीति आपके जीवन में पूर्णतः चरितार्थ होती है । वे कहते हैं -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन । (गीता)
मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।
मनस्यन्यद् वचस्यन्यद् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम् ।।

महात्माओं के मन, वाणी और कर्म में एकरूपता होती है, जबकि दुरात्माओं के मन, वाणी और कर्म में सर्वथा भिन्नता होती है ।

ऐसे श्रेष्ठ मानवीय गुणों से युक्त हमारे चरित नायक श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य का जन्म हरियाणा राज्य के महेन्द्रगढ़ जनपद की नारनौल तहसील के गाँव बीगोपुर में एक किसान परिवार में १५ अप्रैल १९३४ को हुआ । आपके पूज्य पिता श्री धन्नाराम जी का आपके बाल्यकाल में ही स्वर्गवास हो गया। आपकी पूज्या माता

श्रीमती शृंगारी देवी अत्यन्त धार्मिक विचारों की, प्रभुभक्त, परोपकारी विचारों की देवी थी । उन्हीं के पवित्र विचार संस्कार रूप में एवं धरोहर के रूप में आपको प्राप्त हुए । वात्सल्यमयी जननी ने आपको माता और पिता का स्नेह प्रदान करते हुए लालन-पालन किया । माता-पिता यद्यपि अक्षर ज्ञान से रहित थे, किन्तु भोले-भाले, सरल स्वभाव के सीधे-सादे समझदार किसान थे ।

आपके पितामह श्री चेतराम जी धार्मिक प्रकृति के अच्छे मानव थे और आपके प्रपितामह श्री रुड़ाराम जी सरल प्रकृति के किसान थे ।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण गुरुजनों से निजी पाठशालाओं में हुई । तत्पश्चात् स्कूली शिक्षा निकट के नगर 'नांगल चौधरी' के राजकीय विद्यालय में हुई । इस शिक्षा के पश्चात् आपको यह अनुभव हुआ कि गाँव मे रहते हुए कृषि की सीमित आय से परिवार का पालन-पोषण और अच्छी शिक्षा नहीं हो सकती । अतः अपनी योग्यता के अनुसार १ जनवरी १९५४ को झांसी स्थित श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड में लिपिक के रूप में कार्य प्रारम्भ किया । वहाँ पर आपकी कार्य कुशलता और निर्णय क्षमता से प्रभावित होकर श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड के प्रबन्धन ने आपको नागपुर शाखा में स्थानान्तरित कर दिया । वहाँ १९५८ से कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य किया और कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और निरन्तर आगे ही आगे बढ़ते रहे । आपकी गहरी सूझबूझ, कर्मण्यता, ईमानदारी और प्रशासन कुशलता ने आपको नागपुर शाखा में महाप्रबन्धक (जनरल मैनेजर) के पद तक पहुँचाया ।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि नान्यथैतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।।
यजु. ४०.२

इस पद पर योग्यता, निष्ठा एवं सम्मानपूर्वक कार्य करते हुए आप ३१ मार्च २००७ को सेवानिवृत्त हुए । यद्यपि आप १२-१३ वर्ष पूर्व ही वैद्यनाथ का सेवाकार्य छोड़ना चाहते थे, परन्तु अधिकारियों ने आपकी कार्यक्षमता से प्रभावित रहते हुए सेवाकार्य छोड़ने नहीं दिया । २००७ में भी आपने बहुत आग्रहपूर्वक अवकाश ग्रहण किया, क्योंकि ऐसे ईमानदार, चरित्रवान्, योग्य व्यक्तित्व को कौन छोड़ना चाहेगा ?

आप एक ओर वैद्यनाथ आयुर्वेद प्रतिष्ठान में सेवाकार्य कर रहे थे, प्रतिष्ठान को उन्नति की ओर ले जा रहे थे, स्वयं भी आगे बढ़ रहे थे, साथ ही सामाजिक कार्यों एवं वैदिक धर्म के प्रचार में भी आगे बढ़कर अधिकाधिक योगदान कर रहे थे । अपनी जन्मभूमि में किशोर एवं युवावस्था में आर्य भजनोपदेशकों के संसर्ग से आर्य सिद्धान्तों का प्रभाव आपकी बुद्धि, हृदय एवं मन पर स्थापित हो चुका था । आपने इन धार्मिक कार्यों में सहायता करने और गति प्रदान करने के लिये अपनी पवित्र आय में से बहुत बड़ा भाग निकालकर धर्मार्थ न्यास की स्थापना की । आपने ग्राम बीगोपुर में भव्य आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण किया और उसके वार्षिकोत्सव के साथ-साथ साप्ताहिक सत्संग एवं प्रचार-प्रसार के अन्य कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया । आप आर्यसमाज बीगोपुर के संरक्षक हैं, अपने गाँव में क्षेत्र की जनता को स्थास्थ्य लाभ के लिये एक भव्य हॉस्पिटल का निर्माण कुछ समय पूर्व ही आपने कराया है । आपने श्मशान घाट का भी जीर्णोद्धार कराया ।

जो सेवाकार्य आपने अपने जन्म स्थान में किया, वैसेही सेवा कार्य की यह पावन गङ्गा सदैव आपके साथ प्रवाहित होती रही । नागपुर पहुँचकर आप आर्यसमाज के सदस्य बने, अनेक वर्षों तक आर्यसमाज के मन्त्री एवं प्रधान आदि पदों को सुशोभित करते रहे । आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश एवं विदर्भ के कोषाध्यक्ष पद पर अनेक वर्षों तक कार्य करते रहे ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (दिल्ली) के अन्तरंग सदस्य एवं उपप्रधान के पद पर भी आपने श्रद्धापूर्वक कार्य किया । आपकी विनम्रता और सौजन्यता तथा सूझबूझ से समस्त आर्य जगत् प्रभावित है । सभी संस्थाओं के अधिकारी आपको अपनी संस्था से जोड़ने में गौरव अनुभव करते हैं । मध्यप्रदेश एवं विदर्भ के आर्य जनों ने आपसे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को स्वीकार करने का बहुत बार आग्रह किया किन्तु वैद्यनाथ प्रतिष्ठान में रहते हुए समयाभाव के कारण आपने असमर्थता व्यक्त कर दी ।

'चरैवेति, चरैवेति' चलते रहो, चलते रहो

फिर भी आप अनेक संस्थाओं की देखभाल कहीं प्रधान कहीं संरक्षक आदि के रूप में करते रहे हैं ।

आपकी वैदिक विद्वानों, संन्यासियों, ब्रह्मचारियों, उपदेशकों तथा समाजसेवी जनों के प्रति अनन्य श्रद्धा और प्रेम की भावना रही है । आप हरेक अच्छे कार्य में पूर्ण उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर भाग लेते रहे हैं । आप उदारता एवं दानशीलता की प्रतिमूर्ति हैं । अपनी आय का एक बहुत बड़ा भाग समाज एवं राष्ट्र सेवा में समर्पित करना आपका दृढ़व्रत था और आज भी है ।

आप इस धर्मार्थ न्यास के माध्यम से अब तक देश के उच्चकोटि के वैदिक विद्वानों, संन्यासियों और श्रेष्ठ उपदेशकों को सम्मानित और पुरस्कृत कर चुके हैं । ये पुरस्कार दो प्रकार के हैं । एक है 'आर्य रत्न' पुरस्कार और दूसरा है 'आर्य विभूषण' पुरस्कार 'आर्य रत्न' पुरस्कार के अन्तर्गत एक लाख की राशि, अभिनन्दन पत्र, स्मृति चिह्न, शॉल एवं श्रीफल समर्पित किया जाता है । 'आर्य विभूषण' के अन्तर्गत प्रत्येक विद्वान् को 'इक्कीस सहस्त्र' की राशि भेंट की जाती है ।

ट्रस्ट की ओर से अब तक जिन विभूतियों को 'आर्य रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है, वे वरेण्य महापुरुष हैं -

१) पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी, दीनानगर (पंजाब)
२) पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी, आमसेना (उड़ीसा)
३) श्रद्धेय आचार्य विशुद्धानन्द जी, बदायूँ (उ.प्र.)
४) श्रध्देय आचार्य रामनाथ जी वेदालंकार, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
५) पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी, परली बैजनाथ (महाराष्ट्र)
६) पूज्य आचार्य बलदेव जी , रोहतक (हरियाणा)
७) पूज्य स्वामी रामदेव जी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

निकट भविष्य में इन विद्वानों को आर्य रत्न पुरस्कार दिया जानेवाला है

८) स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक (गुजरात)
९) स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती,(गौतमनगर, दिल्ली)
१०) आचार्य विजयपाल जी योगार्थी, गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर (हरियाणा)

इस ट्रस्ट की ओर से जिन विभूतियों को आपने 'आर्य विभूषण' पुरस्कार से अब तक सम्मानित किया है उनके नाम निम्नानुसार हैं -

१) डॉ. कपिलदेव जी द्विवेदी, ज्ञानपुर भदोही (उ.प्र.)
२) डॉ. भवानीलाल जी भारतीय, जोधपुर (राजस्थान)
३) डॉ. महावीर जी, उपकुलपति गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
४) आचार्य ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी होशंगाबाद, (म.प्र.)
५) स्व. पं. ताराचन्द जी 'वैदिक तोप' नारनौल (हरियाणा)
६) श्री प्रो. राजेन्द्र जी जिज्ञासु, अबोहर (पंजाब)

७) डॉ. प्रियव्रत दास जी भुवनेश्वर (उड़ीसा)
८) आचार्य चन्द्रशेखर जी (दिल्ली)
९) श्री सुखदेव जी तपस्वी (दिल्ली)
१०) स्व. पूज्य स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक, नजीबाबाद (उ.प्र.)

इसके अतिरिक्त देशभर के अनेक गुरुकुलों, धर्मशालाओं, यज्ञशालाओं, छात्रावासों तथा अन्य प्रकार के समाजोपयोगी कार्यो में आपने उदार हृदय से आर्थिक सहयोग प्रदान किया है ।

श्री आर्य जी का आदर्श परिवार

आपका परिवार वस्तुतः एक आदर्श परिवार है, जिसमें **'पञ्चैतांस्तु महायज्ञान् यथाशक्ति न हापयेत्'** अर्थात् पञ्चमहायज्ञों का आपके परिवार में सदैव परिपालन होता है ।

आपका विवाह १९ मई १९५८ को एक धर्मपरायण, सेवाभावी, पातिव्रत्य धर्म का पालन करने वाली, मृदुस्वभाव की देवी श्रीमती शान्तिदेवी, राजस्थान के ग्राम छाजाका नांगल, जिला -सीकर के साथ वैदिक पध्दति से हुआ । तभी से आप महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट पद्धति पर चलते हुए गृहस्थ धर्म का पूर्ण निष्ठा के साथ पालन करते रहे हैं । विवाह पश्चात् आपको विधाता ने तीन पुत्र-रत्न प्रदान किये। ज्येष्ठ पुत्र श्री महिपाल आर्य का जन्म १९६२ में तथा कनिष्ठ पुत्र श्री यशपाल आर्य का जन्म १९६५ में हुआ । इन दोनों के मध्य एक सुपुत्र हितपाल आर्य परिवार में जन्म लेकर एक वर्ष बाद ही संसार से नाता तोड़कर चला गया श्री महिपाल आर्य एवं श्री यशपाल आर्य **'अनुव्रतः पितुः पुत्रः'** का पालन करते हुए निरन्तर आगे बढ़ रहे है। नागपुर नगर के विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर श्री महिपाल आर्य १९८३ में सौ. राजेश्वरी देवी से वैवाहिक सूत्र में बंधकर गृहस्थ जीवन में प्रविष्ट हो गये तथा श्री यशपाल आर्य का विवाह १९९० में सौ. स्नेहलता से सम्पन्न हुआ । श्रीमती राजेश्वरी का जन्म स्थान डेरोली अहीर, नारनौल (हरियाणा) है तो श्रीमती स्नेहलता की जन्मभूमि ग्राम बीकानेर त. अजमेर, (राजस्थान) है । दोनों देवियाँ सेवाभावी, व्यवहार कुशल, मृदुभाषी, सुशिक्षित, आतिथ्य कर्म में निपुण, पतिसेवा परायण एवं आज्ञाकारिणी हैं । श्री महिपाल की सुपुत्री सुषमा एवं सुपुत्र चिरंजीव राहुल आर्य श्रेष्ठ संस्कार युक्त हैं छोटे बेटे श्री यशपाल आर्य के भी संस्कारयुक्त एक सुपुत्र हिमांशु एवं एक सुपुत्री कु. सुमेधा आर्या हैं ।

हमारे चरित्रनायक श्री हरिश्चन्द्र आर्य सहित इनके माता पिता से ६ भाई बहन हुए थे । इनमें से एक भी भाई-बहन अब संसार में नहीं हैं। सभी भाई बहनों के भरे-पूरे सुखी परिवार हैं । आप ने १९७४ में नागपुर में वस्त्र व्यवसाय प्रारम्भ किया था, जिसे १९९३ में बन्द कर दिया । १९७८ में दवाओं का व्यवसाय प्रारम्भ हुआ, जो कि निरन्तर बढ़ता गया ।

वर्तमान में बड़े बेटे श्री महिपाल आर्य के पास नागपुर में श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड एवं डाबर तथा साण्डू ब्रदर्स की थोक एवं खुदरा दवाओं का बहुत बड़ा कार्य है । आप बैद्यनाथ के पाँच जिलों के लिये सुपर स्टॉकिस्ट हैं । छोटे सुपुत्र श्री यशपाल आर्य के पास पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड एवं दिव्य फार्मेसी हरिद्वार का संपूर्ण विदर्भ एवं पश्चिमी महाराष्ट्र का होलसेल ,एवं रिटेल का कार्य है । दोनों भाइयों के पास देश की प्रतिष्ठित आयुर्वेदिक औषधियों के तेरह केन्द्र हैं, इस प्रकार आपने जो उद्यान लगाया था वह सुपुत्रों के माध्यम से सतत फल-फूल रहा है ।

श्रीमती शान्तिदेवी का स्वर्गवास

सन् २००३ की २४ जनवरी को धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी आर्या का (असहनीय बिछोह) दुःखद निधन हुआ, जिसे परिवार आजतक भूल नहीं

पाया है । वह धार्मिक शान्त-स्वभावी, अतिथि सेवाभावी, धर्मपारायण, परिवारिक महिला थी, उनके सान्निध्य में परिवार फलाफूला व खुशहाल रहा। धर्मपत्नी के स्वर्गवास के उपरान्त श्री आर्य जी का जीवन वानप्रस्थी के रूप में बीत रहा है । आपका अधिकतर समय सेवा एवं वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार में लग रहा है।

वेद कहता है - **'अहं दाशुषे विभजामि भोजनम्'** अर्थात् मैं दानशील उदारचेता को सर्व ऐश्वर्य प्रदान करता हूँ । वैसे भी यथार्थ में जीवन में भाग्य ने आपका खूब साथ दिया, आपके मन में धन का अहंकार नहीं आया। ये दोष आपको छू भी नहीं सके। इस धन सम्पत्ति को भगवान् की देन समझकर उसी के अनुसार उपयोग करना प्रारम्भ किया ।

एक ग्रामीण लोकोक्ति है - **'पानी बाढे नाव में, घर में बाढे दाम । दोनों हाथ उलीचिए, यही सियाना काम ।।'** अर्थात् यदि नाव में पानी भरने लगे तो जैसे उस पानी को सावधानी पूर्वक बाहर फेंका जाता है उसी प्रकार घर में बढ़े हुए धन का सदुपयोग दान के रूप में करना चाहिये । अन्यथा बिना दान के बढ़ा हुआ धन घर के विनाश का कारण बन जाता है । जैसे तालाब के पानी में दुर्गन्ध हो जाती है यही अवस्था बिना दान दिये धन की होती है । स्वाध्याय के कारण इस बात के रहस्य को समझते हुए आपने हृदय खोलकर दान देना प्रारम्भ किया । आपके इस उदारतापूर्ण सहयोग से देश की अनेक संस्थाएं चाहे वे शैक्षणिक हों, चिकित्सालय हों, समाजसेवी हों, प्रकाशक हों, सभी को आपका सहयोग सामर्थ्यानुसार मिलता आ रहा है । प्रतिवर्ष लाखों रुपये विभिन्न संस्थाओं को, साधु-महात्माओं, विद्वानों को, आप यथाशक्ति सहयोग करते हैं । इससे सारे देश की अनेक संस्थाएं आपके आशीर्वाद से फल-फूल रही हैं ।

श्री आर्य जी की यह उदारतापूर्ण दानशीलता उत्तरोत्तर बढ़ रही है । अब एक सर्वविध सुविधापूर्ण चिकित्सालय लाखों रुपये लगाकर आप अपने गाँव-बीगोपुर में तैयार करवा रहे हैं । इसके निर्माण का बहुत सारा कार्य पूर्ण हो चुका है, वहाँ अभी अस्थायी रूप से डॉक्टरों ने कार्य प्रारम्भ कर दिया है ।

देश के एवं आर्य जगत् के प्रायः अधिकतर पूज्य साधु सन्त-महात्माओं और आर्य विद्वानों का आशीर्वाद आपको प्राप्त है। इनमें से अनेक साधु, महात्मा समाज के अग्रणी हैं जिन्होंने आपके घर में आकर आपके घर को पवित्र किया है । जो भी आपके घर जाता है माता श्रीमती शान्तिदेवी जी की सेवा-शुश्रुषा से प्रभावित हो इस परिवार के शुभ कल्याण एवं समृध्दि के लिये प्रभु से कामना करता है । अब तक जिन विभूतियों ने आपका आतिथ्य ग्रहण किया है उनमें से उल्लेखनीय नाम हैं - पूज्य स्वामी ओमानन्द जी झज्जर, पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी दिल्ली, पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा, पूज्य स्वामी सत्यप्रति जी रोजड़, पूज्य स्वामी सदानन्द जी दीनानगर, पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी दिल्ली, आचार्य आर्य नरेश उद्गीथस्थली, पूज्य आचार्य प्रद्युम्न जी खानपुर, पूज्य स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, महात्मा भारतेन्द्रनाथ जी एवं देश-विदेश के अनेक आर्यनेता और विद्वान् साथ ही देश-विदेश में ख्याति प्राप्त योगऋषि पूज्य स्वामी रामदेव जी भी आपके घर पधार चुके हैं ।

ऐसे उदारचेता, परोपकारी, धर्मात्मा, दानशील, साधु-महात्माओं के भक्त वैदिक आश्रम व्यवस्था के रक्षक श्रद्धेय श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का अमृत महोत्सव आर्यजनों एवं परिवार के सदस्यों द्वारा पवित्र मन एवं श्रद्धापरिपूरित अन्तःकरण से २१ मई २०११ नागपुर के वसन्तराव देशपाण्डे सांस्कृतिक सभागृह में अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है ।

इसमें योग ऋषि पूज्य स्वामी रामदेव जी एवं देश के मूर्धन्य साधु-महात्मा, राजनेता, समाजसेवी, वैदिक विद्वान् एवं आर्य जन बहुत बड़ी संख्या में श्री आर्य जी का अभिनन्दन करने पधार रहे हैं । आप द्वारा किये गये अनेकानेक श्रेष्ठ कार्यों के लिये हम संपूर्ण देश की जनता की ओर से आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करते हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि आप शतायु हों, आपकी धवल कीर्ति सब ओर व्याप्त हो, आपके परिवार में सुख, सौभाग्य, ऐश्वर्य एवं प्रेम की सरिता सतत प्रवाहित होती रहे ।

आचार्य एवं उपकुलपति
गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

कल्याणकारी प्रार्थना

हे दयामय परमपिता परमात्मा! मुझे भक्ति का विशेष ज्ञान प्रदान कीजिये। दया करना तो आपका स्वभाव है। अतः अपने स्वभाव के अनुसार दया कीजिए और मेरी आत्मा को पवित्र बनाइये। हे ईश्वर! आप मेरे ध्यानमें प्रकट होओ तथा मेरे ज्ञानरूपी नेत्र में बस जाओ। अज्ञान से आच्छादित्त मन में आकर ज्ञानरूपी परम ज्योति को प्राप्त कराओ। हे नाथ! हृदय में प्रेम रूपी अमृत उत्पन्न करके प्रेम की गंगा बहा दीजिये। मुझे मिल-जुलकर रहना तथा उत्तम व्यवहार का ज्ञान करा दीजिये। हे स्वामी! मुझे शाघ्र ही ऐसी शिक्षा प्रदान करें कि मैं राष्ट्ररक्षा के लिए प्राणों का त्याग करूँ, राष्ट्ररक्षा के लिए ही प्राणों को धारण करूँ। हे भगवान्! सेवा करना हमारा धर्म हो और सेवा करना ही हमारा कर्म हो। आप मेरे अन्दर ऐसा बल धारण करायें कि मैं धर्म रक्षा के लिए प्राणों का भी दान कर सकूँ।

ऋषि पथ के पथिक योगीपुरुष श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्यका अमृत महोत्सव

प्राचार्य सुनील नायक
पूर्व प्राचार्य ओम आचार्य

असतो मा सद्‌गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतं गमय

मिथ्यामति मिटाकर, तुम सत्य में लगा दो ।
अज्ञानतम हटाकर, तुम ज्योति जगमगा दो ।।
जीवन-मरण का बन्धन, काटने की साधना दो ।
अमृत सुधा पिलाकर, हमको अमर बना दो ।।

हवन कुंड में आहुति छोडते हुए यह प्रार्थना देव पुरुष श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य परिवार द्वारा अनवरत जारी थी। वैदिक धर्म के दीवाने, जीवन दानी, तपस्वी, कर्मठ समाज सेवक, आर्य सन्यासियों और विद्वानों के श्रद्धालु, सेवक, आर्य जगत् के प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य में बढ़चढ़कर भाग लेने वाले व्यक्तित्व का नाम है राव हरिश्चन्द्र आर्य । आप उदारता की प्रतिमूर्ति हैं । आय सीमित हो या अधिक परन्तु उसका एक भाग परोपकार में लगाकर ही उसको अपने कार्य में लेना आपकी महती विशेषता है

आप तथा आपका परिवार आर्य समाज के दस नियमों का पालन करते हैं। इसी श्रृंखला में आपने अपनी सीमित आय में से एक धर्मार्थ ट्रस्ट का निर्माण कर प्रतिष्ठित अग्रगण्य दस आर्य सन्यासियों और उद्‌भट दस विद्वानों को ''आर्य रत्न'' एवम् ''आर्य विभूषण'' नामक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया.

''जिसकी हो सच्ची लगन
जिसका हो सच्चा प्रण
वो कैसे ना उतरे पार ''

आर्य जगत् के ऐसे साहसी, लगनशील, दानवीर, परिश्रमी, सच्चे एवम् ईमानदार, सत्कर्म कमाई करनेवाले आर्य समाज के प्रति समर्पित व्यक्तित्व श्री हरिश्चन्द्रजी आर्य का जन्म वि.स. १९९१ वैशाख शुक्लपक्ष तदनुसार १५ अप्रैल १९३४ रविवार को हरियाणा प्रांत के महेन्द्रगढ जिले के नारनौल तहसील के ग्राम बीगोपुर पो. धौलेड़ा में हुआ। आपके पिता धन्नारामजी का साया बचपन में ही उठ गया अतः आपका लालन-पालन शीतलधारा में माता श्रीमती श्रृंगारीदेवी एवं बड़े भाई धनसीरामजी की देखरेख में हुआ । आप छह भांई बहन थे । जिनमें हरिश्चन्द्र आर्य सबसे छोटे कुशाग्रबुद्धि व नम्र स्वभाव के थे । मातापिता अक्षर ज्ञान रहित परन्तु स्वभाव से नम्र, सरल सीधे-सादे उदार स्वभाव के किसान थे . आपकी माताजी भी सरलता की मूर्तरूप, धर्मपरायण, उदार स्वभाव की महिला थी । इन्हीं के संस्कार आपको प्राप्त हुए हैं ।

आपके जीवन में तीन सतगुरु आये। प्रथम लौकिक शिक्षा देने वाले प. मूलचंदजी शर्मा, द्वितीय आध्यात्मिक शिक्षा देने वाले परोक्षगुरु आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती, तृतीय- योग शिक्षा देने वाले स्वामी रामदेवजी महाराज। इसलिये ही सन्त कबीर ने कहा है -

गुरु बिन ज्ञान ना ऊपजे, गुरु बिन मिले ना मोक्ष ।
गुरु बिन लखे ना सत्य को, गुरु बिन मिटे ना दोष ।।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण गुरुजनों से निजी पाठशाला में हुई। स्कूली शिक्षा नगर 'नांगल चौधरी' के राजकीय स्कूल में पाई। पढ़ाई के दौरान ही

आपकी किसी गलती पर आपके बड़े भाई साहब ने आपको दण्डित किया तो आप बहुत दुखी हुए और छोटी उम्र में घर छोड़कर चले गये और दो साल तक घर-परिवार से दूर मथुरा के पास राल गांव निवासी लक्खीसिंह ठाकुर परिवार में आपने अपने दिन गुजारे। उनसे स्नेहिल वातावरण ही नहीं अपितु जीवन की सच्चाई का भी अनुभव हुआ और सिंह परिवार आपके जीवन का साथी बन गया इस परिवारसे आज भी आपके मधुर संबन्ध बने हुए है।

श्री आर्यजी सादा जीवन एवं उच्च विचार की प्रतिमूर्ति हैं। आपकी पोशाक में सिर्फ धोती कुर्ता-टोपी है जो स्वच्छता, शुद्धता और पवित्रता की प्रतीक है सरल, सहज, मृदुभाषी श्री आर्य जी उच्च से उच्चतम विचारों के प्रेरक रहे हैं। आपकी वाणी की मिठास, वाक्पटुता एवम् गहन विचार शक्ति के कारण ही सभी को प्रभावित करते रहे हैं। दो वर्ष पश्चात् स्वयं ठाकुर परिवार ने आपको आपके बड़े भाई के सुपुर्द कर दिया। पुनः आपके परिवार में रौनक आई, बिछड़े परिवार आनन्दोत्सव मनाने लगे। श्री हरिश्चन्द्रजी ने खेती करना आरंभ किया किन्तु इन्होंने देखा कि खेती की सीमित आय से इस बड़े परिवार का पालन-पोषण समुचित ढंग से नहीं हो सकता अतः आपने अपनी योग्यता के आधार पर १ जनवरी १९५४ को झांसी स्थित वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमि. में लिपिक के पद से सेवाकार्य शुरू किया। आपकी अपनी कार्यकुशलता, कुशाग्रबुद्धि, लगन एवं सूझबूझ को देखकर व्यवस्थापन मण्डल ने नागपुर में कोषाध्यक्ष के पद पर १९५८ में स्थानान्तरित किया। आपकी ईमानदारी से प्रभावित होकर आपको नागपुर शाखा में ही महाप्रबन्धक (जनरल मैनेजर) बनाया। आप सेवानिवृत्ति के १२-१३ वर्ष पहले सेवानिवृत्ति लेना चाहते थे किन्तु प्रबन्धन ने आपको सेवानिवृत्त नहीं किया और बड़े आग्रह के पश्चात् ३१ मार्च २००७ में आपको सेवानिवृत्त किया।

जिस तरह श्रीफल (नारियल) ऊपर से कठोर एवं अन्दर से नरम एवं सुखकारी होता है उसी तरह श्री आर्यजी का व्यक्तित्व है। आप भारतीय संस्कृति-वैदिक संस्कृति के सरंक्षक हैं। तरुणावस्था से ही आप प्रतिदिन सुबह ४.०० बजे बिस्तर छोड़कर उठ जाते है। दैनिक क्रिया-कलाप के बाद आसन व प्राणायाम दोनों समय अर्थात् सुबह व सायं को करते हैं और रात १०.०० बजे सो जाना आपकी अटूट दिनचर्या है। आपके परिवार का जीवन पारस की तरह बनाने में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी आर्य का अथक सहयोग रहा है। श्री वैद्यनाथ प्रतिष्ठान के सर्वोच्च पद पर रहते हुए भी आपको अहं छूआ तक नहीं। आपने जहाँ अपने वरिष्ठों का सम्मान किया वहीं अपने सहयोगियों के साथ भी स्नेहपूर्ण व्यवहार बनाकर कुशल प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया। आपकी इसी सूझबूझ एवं कर्तव्यपरायणता के कारण श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमि. को आपने इन उचाँइयों तक पहुँचाया। तद्हेतु संस्थान द्वारा दो प्रतिष्ठान उपहार स्वरूप प्रदान कर आपकी सेवाओं का सम्मान किया जिसे आपके बेटे आपकी आशा के अनुरूप सचांलित कर आगे बढ़ा रहे हैं एवं मूर्त रूप दे रहे हैं। श्री महिपालजी आर्य वैद्यनाथ, साण्डू एवं डाबर कम्पनी की दवाइयों के थोक व चिल्लर विक्रेता हैं। राव यशपालजी आर्य स्वामी रामदेवबाबा प्रणीत व संचालित पतंजलि योग चिकित्सा केन्द्र के प्रभारी हैं। आपकी वाणी की मिठास और विचारों के तेज को इन पंक्तियों से चरितार्थ किया जा सकता है -

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आपहू शीतल होय ।।

आपका विवाह १९ मई १९५८ को एक धर्म पारायण, सेवाभावी, शान्त, शिष्ट, सुशील, पति

परायण मृदु स्वभाव की देवी श्रीमती शान्तिदेवी, राजस्थान के ग्राम छाजाका नांगल जि. सीकर के साथ वैदिक पद्धति से हुआ। और तभी से आप महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तानुसार श्रद्धा और निष्ठा से गृहस्थ जीवन का सफलतापूर्वक सुखमय जीवन यापन करते रहे हैं। आपको तीन पुत्र रत्न प्राप्त हुए। इनमें सबसे बड़े महिपाल आर्य का जन्म १९६२ में, सबसे छोटे पुत्र यशपाल आर्य का जन्म १९६५ में हुआ। इसके मध्य में एक सुपुत्र हितपाल आर्य का भी जन्म हुआ किन्तु एक वर्ष की उम्र में ही उसका देहान्त हो गया । अब दोनों पुत्र महिपाल आर्य और यशपाल आर्य अपने पिताजी के गुणों के अनुकूल शिक्षा-दीक्षा से परिपूर्ण एवं समर्थ होकर पारिवारिक एवं व्यावसायिक दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रहे हैं । बड़े पुत्र महिपाल का विवाह १९८३ में सौ. का. राजेश्वरी देवी से एवं यशपाल का विवाह १९९० में सौ.का. स्नेहलता से हुआ। दोनों पुत्रवधुएं सेवाभावी, कुशल गृहिणी, मृदुभाषी, शिक्षित, धार्मिक आतिथ्य करने में प्रवीण व आज्ञाकारिणी हैं। आपके सम्पूर्ण पारिवारिक सुख का आनन्द अभी कुछ समय पूर्व आरम्भ हुआ ही था की सन् २००३ की २४ जनवरी को हरिश्चन्द्रजी आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी आर्या का (असहनीय विछोह) दुःखद निधन हुआ, जिसे परिवार आज तक सह नहीं पाया है। श्रीमती शान्तिदेवी धार्मिक, शान्त स्वभाव, धर्मपारायण, सेवाभावी पारिवारिक महिला थी। उनके सान्निध्य में परिवार फलाफूला व खुशहाल रहा । धर्मपत्नी के स्वर्गवास के पश्चात् आपका जीवन वानप्रस्थी के रूप में सेवा एवं वैदिक धर्म के प्रचार में लग रहा है ।

श्री हरिश्चन्द्रजी आर्य ने जो सोचा उसे मूर्त रूप दिया. चाहे गांव बीगोपुर (हरियाणा) में मन्दिर निर्माण करवाना हो, श्मशानघाट का जीर्णोद्धार करवाना हो, हास्पिटल के लिये भवन बनवाना हो, छात्रों के लिये छात्रवृत्ति का इंतजाम करना हो, गरीबों को दवाई व इलाज करवाना हो, हमेशा आप तत्पर रहते हैं। आप सभी को खुश देखना चाहते हैं। आपका मानना है कि गलत तरीके से आया हुआ पैसा विकृति पैदा करता है, वहीं सुकर्म से कमाया पैसा पुण्य प्रदान करता है। आपकी इन्ही सेवाओं और गरिमा को ध्यान में रख देश के एवं आर्यजगत् के प्रायः सभी पूज्य साधु-सन्त व महात्मा तथा आर्य विद्वानों का आशीर्वाद आप को हमेशा प्राप्त हुआ है। इनमें से अधिकतर साधु सन्त-महात्मा जो समाज के अग्रणी हैं, ने आपके घर आकर आपको आर्शीवाद प्रदान किया तथा आपका घर पवित्र कर आपको कृतार्थ किया ।

जिन विभूतियों ने आपका आतिथ्य स्वीकार किया उनमें प्रमुख रूप से पूज्य स्वामी ओमानन्दजी (झज्जर), पूज्य स्वामी दीक्षानन्दजी (दिल्ली), पूज्य स्वामी धर्मानन्दजी (उड़ीसा), पूज्य स्वामी सत्यपतिजी (रोजड़), पूज्य स्वामी सदानन्दजी (दीनानगर), पूज्य स्वामी आनन्दबोधजी (दिल्ली), आचार्य श्री आर्यनरेशजी (उद्गीथ), पूज्य आचार्य प्रद्युम्नजी (खानपुर), पूज्य स्वामी जगदीश्वरानन्दजी, पूज्य भारतेन्द्रनाथजी एवं देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त योग ऋषि पूज्य स्वामी रामदेव जी भी आपके घर को पवित्र कर चुके है ।

उत्तम आचार-विचार के धनी कर्मशील योगी पुरुष श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य अपनी युवापीढ़ी को संदेश देते हैं कि-अपना कार्य निष्ठा, लगन व ईमानदारी से करना यही सच्चा देशप्रेम होगा। जो उन्होंने किया व पाया उसमें उन्हें संतोष है. वे प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि मुझे इस भवबंधन से मुक्त करना, परन्तु अपने बन्धन में अवश्य रखना ।

आपके अमृत महोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित

दीप अंतः का अखण्ड जलता रहे ।
चहुँ दिशाएं आलोकित होती रहें ।।
सुमन-सा मन सदैव खिलता रहे ।
सौरभ यश आपका हर पल फैलता रहे ।।

एक स्वनिर्मित जीवन : राव हरिश्चन्द्र जी आर्य

प्रो.राजेन्द्र जिज्ञासु (वरिष्ठ लेखक)

प्रोफेसर राजेन्द्रजी जिज्ञासु का नाम सुनते ही आर्यजनों में नया उत्साह भर जाता है। आप उच्चकोटि के लेखक और वक्ता हैं, आपने रक्तसाक्षी पं लेखराम की परम्परा का अनुसरण करते हुए विधर्मियों के अनेक आक्षेपों का प्रामाणिक उत्तर देकर उनका मुँह बन्द कर दिया है।
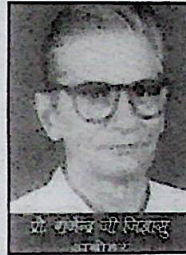
यह हर्ष का विषय है कि आर्यजगत्, बन्धुवर्य राव हरिश्चन्द्र जी का अमृत महोत्सव मनाने जा रहा है । इस शुभ अवसर पर श्रीमान् स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के आदेश पर मैं भी अपने कुछ उद्गार लिपिबद्ध कर रहा हूँ ।

स्वनिर्मित जीवन :- राव हरिश्चन्द्र जी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आप एक स्वनिर्मित जीवन के व्यक्ति हैं । एक छोटे से ग्राम में और अत्यंत पिछड़े क्षेत्र में जन्म पाकर यह धुन का धनी कहाँ से कहाँ पहुँच गया । हरियाणा के अहीरवाल क्षेत्र में कभी आंधियाँ इतनी उठा करती थीं कि पंजाब का कोई सरकारी कर्मचारी स्थानान्तरित होकर रिवाड़ी-महेन्द्रगढ़ जाते हुए कतराता व घबराता था । स्नान के लिए जलका मिलना एक समस्या थी और पीने के लिए मीठा जल पाना अति कठिन था। ऐसे क्षेत्र में जन्म पाकर अपने कर्मबल से, अपनी सतत साधना से और अपने तपोबल से राव हरिश्चन्द्र ने देश भर में अपनी पहचान बना ली है। आज देश की दशों दिशाओं में आपका नाम है, कीर्ति है।

जन्म क्षेत्र से लगाव :-आप ने विदर्भ में अपना काम - धंधा करते हुए महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश व उड़ीसा की लोक कल्याणकारी संस्थाओं को तो सदा सहयोग किया ही है परंतु आर्थिक व शैक्षणिक, हर दृष्टि से पिछड़े अपने ग्रामीण क्षेत्र की जनता की सुधी लेना भी कभी नहीं भूले। उस क्षेत्र में आज जो जन जागृति व विकास दीख रहा है उसमें आपका भी योगदान किसी राजनेता से कम नहीं है। आप चुपचाप अपना सहयोग ऐसे करते हैं कि दायें हाथ से जब देते हैं तो बायें को पता नहीं लगने देते ।

दानशीलता भी एक ईश्वरीय देन है :- हमारे इतिहासकेसरी श्री पं. निरञ्जनदेव जी कहा करते थे कि दान देना हर किसी के भाग्य में नहीं होता । धनीमानी तो आपको हर नगर में व प्रत्येक क्षेत्र में मिल जायेंगे परन्तु दीन, दुःखी, दलित के कल्याण के लिये, गो-सेवा, गुरुकुलों की उन्नति, जाति रक्षा, वेद प्रचार, देश सुधार के लिए विरले सेठ ही दान देते हैं । हाँ,राजनेताओं को और राज्य अधिकारियों तो उनके घर पर जाकर भेंट चढ़ायेंगे। राव हरिश्चन्द्र जी ने स्वतः प्रेरणा से नई-नई योजनायें बनाकर अपनी कमाई का एक बहुत बड़ा अंश दान कर देना अपना स्वभाव बना लिया है ।

कुछ लोग जब तक बोतल न चढ़ा लें, शराब पार्टी न करलें उनको नींद नहीं आती । राव साहब ऐसे समाज सेवी हैं कि जब तक किसी शुभ कार्य में सहयोग न करलें, इन्हें चैन नहीं पड़ता । ऐसे दानियों की धीरे धीरे ऐसी स्थिति बन जाती है कि लेने वाले तो इन्हें खोजते ही हैं ये सुपात्र संस्थाओं व समाज सेवी कार्यकर्ताओं को स्वयं खोज कर सहयोग करते हैं ।

अहीरवाल की देन :- हरियाणा के अहीरवाल क्षेत्र (जहां राव साहब का जन्म हुआ) का इतिहास में बड़ा महत्व रहा है, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि गत साठ वर्षों में

हरियाणा के राजनेताओं की कृपा से इस क्षेत्र का गौरव व देन देशवासियों के सामने आ ही नहीं सकी । वर्तमान की तो कहने की आवश्यकता नहीं। अतीत में राव तुलाराम ने गोरों से टक्कर लेकर देश का गौरव बढ़ाया ।

तुलाराम का साहस बोलो कैसे तोलें ?

इसी क्षेत्र के राव युधिष्ठिर जी ने दिल्ली दरबार सन् १८७७ में महर्षि दयानन्द के दर्शन किये और उन्हें रेवाड़ी पधारने का निमन्त्रण दिया । हरियाणा में ऋषिवर केवल राव हरिश्चन्द्र जी के जन्म क्षेत्र में पधारे और वेद-ज्ञान की निर्मल गंगा प्रवाहित करके जनता को तृप्त कर दिया।

इस क्षेत्र ने अतीत में देश व समाज को श्री स्वामी सोमानन्द जी (नूरगढ़वाले), स्वामी सर्वानन्द जी महाराज व स्वामी सन्तोषानन्द जैसे समर्पित संन्यासी दिये । स्वामी सन्तोषानन्द जी को लोग भूल ही गये । वे एक शूरवीर संन्यासी थे । उनकी सिंहगर्जना कोई भूल नहीं सकता । मैं लम्बे समय तक उनके साथ कारागार में रहा । ये तीनों सन्यासी लौह पुरुष श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी के शिष्य थे ।

फिर इसी क्षेत्र के महाशय हीरालाल जी (बीकानेर) ने इस क्षेत्र में धर्म प्रचार, गो रक्षा, समाज सुधार व जन जागृति का प्रशंसनीय कार्य किया ।

राव हरिश्चन्द्र ध्यान दें :- राव हरिश्चन्द्र बहुत कुछ कर रहे हैं । अब इन्हें अपने अनुभव, अपनी योग्यता व लगन से अपने जन्म के क्षेत्र में समाज सेवा की तड़प रखने वाले समर्पित युवकों का निर्माण करने में लगाना चाहिये । यह बड़ा कठिन कार्य है । हम फूल के, पत्थर के, अन्न व औषधि के सब गुण जान सकते हैं परन्तु मनुष्य के मन को समझना बड़ा कठिन है । लाभ लेकर फुर्र होकर, उड़ जाने वाले युवक तो सर्वत्र मिलते हैं । जिनमें देश व जाति का दर्द हो ऐसे दर्दीले दिल चाहियें ।

हिन्दी प्रेमी राव जी :- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने एक बार संसद् में कहा था :

"चले गये अंग्रेज बनी अंग्रेजी है रानी"

आज हम हिन्दी बोलते व लिखते हुए घबराते हैं । राव हरिश्चन्द्र जी बड़े गौरव से राष्ट्र भाषा का प्रयोग करते हैं । हमें इनसे यह गुण सीखना चाहिये । अपनी भारतीय भाषाओं व राष्ट्रभाषा के प्रयोग में हीन भावना अनुभव नहीं करनी चाहिये ।

एक विशेष गुण जो मैंने देखा :- एक बार आपके निवास पर भोजन करने का अवसर मिला तो भोजन परोसने वाले स्वजनों को आपने कहा, 'मेरे लिए बाजरा की रोटी लायें और जिज्ञासु जी के लिए गेहूँ की ।''
मैंने कहा, ''मैं तो बाजरा की रोटी खाऊंगा । बाजरा की रोटी का जो स्वाद कभी माजरा शिवराज में (रिवाड़ी के पास) आया था । वह मैं भूल नहीं सकता ।''

मेरा यह अनुरोध सुनकर आप गद्गद हो गये। आपने कहा कि सर्दियों में हम प्रति वर्ष गांव से बाजरा मंगवाते है । उसी बाजरे की रोटी का स्वाद लेते हैं ।

आज धनीमानी लोगों का चलन, खानपान सब कुछ परकीय हो गया है, अपने देश के जलवायु तथा आयुर्वेद के सिद्धान्तों के सर्वथा उलट होता जा रहा है । धन्य हैं ऐसे परिवार जिन्होंने अपनी स्वस्थ परम्पराओं का परित्याग नहीं किया ।

सम्मान परम्परा :- राव जी ने विद्वानों का सम्मान करने का जब मन बनाया तो मुझसे भी विचार विमर्श किया । यह भावना और यह निश्चय प्रशंसनीय है । दुर्भाग्य से विद्वानों में से कई अपनी दीनवृत्ति के कारण सम्मान व पुरस्कार पाने के लिए दबाव भी बनाते हैं और स्वयं अपना नाम प्रस्तावित करते हैं । इससे इस विचार का - दानी के सङ्कल्प का महत्व घटता है । समाज की शोभा भी बढ़ने की बजाय विपरीत प्रभाव पड़ता है । विद्वान् स्वाभिमान खो देंगे तो ऐसी उत्तम योजना के दूरगामी परिणामों से समाज वंचित रहेगा । तथापि रावजी का निर्णय व निश्चय प्रशंसा योग्य है ।

संपर्क - वेद सदन, अबोहर-१५२ ११६

सादा जीवन, उच्च विचार

कैप्टन देवरत्नजी आर्य, प्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

आदरणीय श्री कैप्टन देवरत्न जी आर्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के प्रधान तथा अनेक संस्थाओं के प्रेरक और मार्गदर्शक हैं। आप ने अस्वस्थ होते हुए भी अभिनन्दन समिति के आग्रह को स्वीकार किया और यह लेख प्रेषित किया। इसके लिए सम्पादक वर्ग आपका आभारी है ।

मै प्रायः अपने ऑफिस के काम से नागपुर जाया करता था। जिस होटल में ठहरता था, उसके सामने एक बोर्ड "आर्य समाज हंसापुरी" लगा हुआ देखता था। एक बार रविवार होने के कारण मेरा इस आर्य समाज में जाना हुआ और वहां पर श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य से मिलना हुआ। उस समय तक मेरा उनसे कोई परिचय नहीं था। इस आर्य समाज में जाने के बाद मुझे उनके व्यक्तित्व के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ कि साधारण से कपड़ों में एक इतना बड़ा व्यक्तित्व छिपा हुआ है। इसका अनुमान भी नहीं था। उसके पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा विदर्भ का शताब्दी समारोह नागपुर में हुआ। मैं उस समारोह में विशेष आमंत्रित था। उस समय मुझे इस व्यक्तित्व को बहुत समीप से देखने का सौभाग्य मिला।

श्री राव जी सार्वदेशिक सभा की बैठकों में आया करते थे। वे कितने पक्के आर्य विचारों के हैं, मैंने तब अनुभव किया। उसके पश्चात् जब कभी मैं नागपुर जाता था, उनसे उनके कार्यालय में जाकर जरूर मिलता था। मुझे उनके निवास पर भी जाने का सौभाग्य मिला। सादा जीवन, सादा भोजन और सौम्य स्वभाव के ये प्रतीक हैं। जब इन्होंने अपना निवास "महल" कॉलोनी में बनाया, तब उसके उद्घाटन पर भी जाने का सौभाग्य मिला। नये भव्य निवास में प्रवेश से पूर्व उन्होंने महायज्ञ का आयोजन किया। अनेक विद्वान् उसमें उपस्थित थे। रात्रि को अनेक भाषण होते थे और उस समारोह के पश्चात् उन्होंने गृह प्रवेश संस्कार किया। श्री राव जी विचारों से और व्यक्तित्व से पूर्ण आर्य हैं।

उन्होंने "आर्य रत्न और आर्य भूषण" पुरस्कारों का प्रारम्भ किया। जिसमें आर्य संन्यासियों एवं विद्वानों को एक लाख रुपयों की राशि से पुरस्कृत किया जाता रहा है। एक परिवार द्वारा इतनी बड़ी धन राशि से प्रतिवर्ष विद्वानों का सम्मान करने का सौभाग्य श्री राव हरिश्चन्द्र जी को एवं उनके परिवार को ही मिला है। मैं उनके प्रथम समारोह में आमंत्रित था। जिसमें पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी दीनानगर का सम्मान किया गया। वे सादा जीवन एवं उच्च विचारों के प्रतीक थे। जिस भव्यता से उन्होंने इस समारोह का आयोजन किया, मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ। आर्य समाज में ऐसे बहुत कम व्यक्ति मिलेंगे जिनका पूरा परिवार आर्य विचारों से परिपूर्ण हैं। श्री राव हरिश्चन्द्र जी का परिवार

भी पूर्णतः आर्य विचारों का हैं । आर्यसमाज हंसापुरी में उन्होंने शीतल पानी की सार्वजनिक प्याऊ लगाई । उसके उद्घाटन समारोह में मैं और पूज्य स्वामी श्री सुमेधानन्द जी आमंत्रित थे और उसका उद्घाटन हमारे हाथों से हुआ।

उनके सुपुत्र श्री महिपाल जी से मेरा सम्पर्क बराबर बना रहता है । वे अपने पिता श्री आर्य के अनुकूल एवं सौम्य स्वभाव के हैं और बड़ी तत्परता से 'वैद्यनाथ आयुर्वेद' के उत्पादन के विक्रय का कार्य कर रहे हैं। वे पांच जिलों के स्टॉकिस्ट हैं और मैं प्रायः उनसे ही दवाइयां मंगाता रहता हूँ ।

मैं आदरणीय राव हरिश्चन्द्र जी के प्रति बड़ा आकर्षित हूँ । उनका **''सादा जीवन व उच्च विचार''** देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ । उनके अमृत महोत्सव पर उन्हें बधाई देता हूँ और ईश्वर से उनके शतायु होने की प्रार्थना करता हूँ। ईश्वर हमें भी शक्ति दे कि हम उनकी लगन के अनुसार आर्य समाज का कार्य करते रहें और अपने परिवारों को भी आर्य बनायें । **जीवेम शरदः शतम् भूयश्य शरदः शतात्।**

संपर्क-
एफ-६१४,मिल्टन अपार्टमेंट, जूहू हारा रोड़
मुम्बई-४०००४१

कल्याणकारी वचन

लाभ क्या है? श्रेष्ठ पुरुषों का संग। दुःख क्या है? मूर्खों का संग। हानि क्या है? समय की बरबादी या अवसर को खो देना। चतुराई क्या है? धर्म के रहस्यों में लगे रहना। वीर कौन है? इन्द्रियों का विजेता। उत्तम स्त्री कौन सी है? पति की आज्ञा के अनुकूल चलने वाली और मधुर वाणी बोलने वाली। धन क्या है? विद्या। सुख क्या है? विदेश में न रहना। राज्य उत्तम कौन-सा है? जिससें आज्ञाओं का पालन हो।
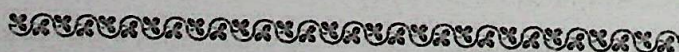
दानवीर आर्यश्रेष्ठि राव हरिश्चन्द्रजी आर्य

डा. भवानीलाल भारतीय (आर्य वरिष्ठ लेखक)

श्री डॉ. भवानीलाल जी भारतीय आर्य जगत् के प्रतिष्ठित लेखक और वक्ता हैं, महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र एवं उनके सिद्धान्तों पर आपके लेख को प्रमाणिक माना जाता है । इस विषय पर आपने सैकड़ों पुस्तकें लिखकर आर्य जगत् को दी हैं ।

द्रव्योपार्जन करने में तो योग्यता तथा क्षमता जरूरी है ही, किन्तु इससे भी बढ़कर है समाज के हित में उसका वितरण । वेद का आदेश है - **"शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर"** सौ हाथों से उपार्जन करो हजार हाथों से उसका वितरण करो । राव साहब ने अपने यशस्वी हाथों को उसी दानकर्म से उज्ज्वल तथा अनुकरणीय बनाया है । उनसे व्यक्तिशः भेंट करने का एक दुर्लभ अवसर तब आया जब उन्होंनें स्वग्राम बीगोपुर में सम्मान समारोह का आयोजन कर उसकी अध्यक्षता के लिए योग ऋषि स्वामी रामदेवजी को आमंत्रित किया। इस प्रकार उन्होंने ग्रामवासी जनों को उस परम तपस्वी सन्त के विचारों को सुनने का अवसर दिया जो अपनी विचार क्रान्ति के द्वारा जनमानस में महत्व पूर्ण परिवर्तन लाने के लिए कृतसंकल्प है । निश्चय ही राव साहब का प्रयास आर्य सभ्यता, वैदिक धर्म तथा ऋषि दयानन्द की पावन विचारधारा को विश्व व्यापी बनाने का है। परमात्मा उन्हें इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल करेगा, यह हमारा दृढ विश्वास है ।

संपर्क -
३/५, शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर.
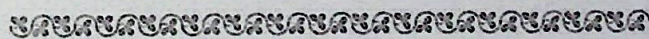
कल्याणकारी वचन

जिन मनुष्यो में न कोई विद्या है, न विद्या प्राप्त करने के लिए तपस्या करते हैं, न दान की प्रवृत्ति है, न ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा है, न सरल स्वभाग है, न जीवन में और कोई उत्तम गुण है, न धर्मयुक्त व्यवहार करते हैं। ऐसे मनुष्य तो धरती पर भार बनकर पशु-समान खाते-पीते हुए जीवन को नष्ट कर रहे हैं। उनमें और पशु में कोई अन्तर नहीं है।

राव हरिश्चन्द्र आर्य : यथारूप

डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, कुरुक्षेत्र

आप आर्यसमाज के सुविख्यात युवा वक्ता, लेखक एवं व्यक्तित्व हैं। सार्वदेशिक आर्यवीरदल के मन्त्री हैं, तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के उपमन्त्री हैं। इस समय आप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं।

मैं यदि कल्पना करूँ कि जिसका अनुराग दयानन्द हो, स्वप्न दयानन्द हो, परिधि दयानन्द हो, गन्तव्य दयानन्द हो और पथ भी दयानन्द हो, वह कैसा होगा? तब मेरा मन कहता है कि वह कमोवेश राव हरिश्चन्द्र आर्य जैसा ही होगा । निश्चय ही राव हरिश्चन्द्र आर्य आर्यजगत् के सार्वकालिक सर्वादरणीय महानुभावों की परम्परा में गण्य हैं । अपने संकल्प, आचरण एवं कार्यो से जैसी विमल-कीर्ति राव हरिश्चन्द्र आर्य जी ने अर्जित की है वह किसी भी नवदीक्षित कार्यकर्ता के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है । राव हरिश्चन्द्र आर्य की यह यशोगाथा कोई कृत्रिम यशोगाथा नहीं है, वे कोई कागजी आर्य नहीं हैं । इस धवलता को उन्होंने सत्य की अत्यंत सघन, कंटकाकीर्ण, चुनौतीपूर्ण पगदण्डी पर भागीरथ संकल्प और पुरुषार्थ के साथ निरन्तर ७८ वर्ष चलकर प्राप्त किया है । इन ७८ वर्षोके एक-एक पल का हिसाब-किताब उनके पास है, क्योंकि उन्होंने इन ७८ वर्षो को 'भोगा' या 'काटा' नहीं है, अपितु संयम और विवेक के साथ जीया है । सर्वविध शुचिता के कारण ही उनका कुल-व्यक्तित्व 'पारदर्शी' और 'स्पष्ट' बन सका है ।

अपने 'पारदर्शिता' और 'स्पष्टता' के गुण के कारण जहां कहीं भी राव साहब ने कालिमा या गन्दगी अनुभव की उसे बहुत शिष्टता लेकिन दृढ़ता के साथ व्यक्त कर दिया, जिसमें जिद्द अनुभव की उस निर्णय में संशोधन कर लिया और जिस सिद्धान्त या आचरण का ऋषि दयानन्द से समर्थन न मिला उससे किनारा कर लिया । इन ७८ वर्षों में राव साहब ने ऋषि दयानन्द के जीवन और दर्शन के कवच-कुण्डल को सोते-जागते सर्वदा धारण किए रखा है इसीलिए उनके मनोमस्तिष्क पर अहं, लिप्सा, वासना और महत्वाकांक्षा के प्रचण्ड विषैले प्रहार भी कभी अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाए हैं । वैदिकों की परिभाषा के अनुसार वे 'गृहस्थ-ब्रह्मचारी' हैं । उनकी सहज, सरस गतिमान् जीवनचर्या को जान-समझकर मुझ जैसा अकिंचन व्यक्ति स्वयं को दयानन्दीय आभा से और अधिक प्रकाशवान् पाता है ।

धनार्जन मानवमात्र की प्रायः सहज प्रवृत्ति है लेकिन आपने अपनी धर्नाजन की वृत्ति को उद्देश्यमूलक बनाया । यह उद्देश्य है - आर्ष ताने-बाने को पल्लवित और पोषित करना । इस उद्देश्य का संस्पर्श पाते ही आपका व्यक्तित्व 'विराट्-व्यक्तित्व' बन गया।

"शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिरः" - की वैदिक मर्यादा को आपने अपने जीवन का अनुशासन बना रखा है । इससे भी अधिक गरिमापूर्ण यह है कि आप अपने बच्चों के लिए भी वैसे ही आदर्श हैं जैसे अन्यों के लिए । आडम्बर और विखराव के इस दौर में सफल व्यवसायी, सफल नेता, सफल गुरु आदि सब कुछ बनना सम्भव है पर अपने बच्चों का पिता बनना - सफल पिता बनना बहुत कठिन है । आपका परिवारिक जीवन 'अनुव्रतः पितुः पुत्रः' का प्रत्यक्ष उदाहरण है । जीवन शैली के संदर्भ में राव हरिश्चन्द्र आर्य जी अनावश्यक प्रयोगधर्मी नहीं हैं । इसीलिए वैभव के मध्य रहते हुए भी अपने आध्यात्मिक स्वत्व की रक्षा कर पाए हैं । अपनी परम्परा के प्रति आपका लगाव सम्मोहजन्य नहीं अपितु तर्कपूर्ण एवं गर्वजन्य है । अपने पूर्वजों की भांति आपने सदा अपने पसीने को ही अपनी सबसे बड़ी ताकत माना है । इत्र का संमोहन आज भी आप पर नाकामयाब है । क्योंकि राव साहब का संकल्प और सदाचरण अभेद्य है इसलिए राव साहब अभेद्य हैं । इस अभेद्य संस्कृतिपुरुष को अमृत महोत्सव पर नमन ।

संपर्क-
संस्कृत विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

कल्याणकारी वचन

सामान्यरूप से मनुष्य की आयु सौ वर्ष की मानी गई है । असका आधा भाग अर्थात् पचास वर्ष तो सोने में ही चला जाता है। शेष बचा आधे का आधा भाग अर्थात् पच्चीस वर्ष, वह बाल्यावस्था और वृद्धावस्था में बीत जाता है। शेष पच्चीस वर्ष का समय रोग, वियोग, आजीविका, बच्चों के लालन-पालन आदि दुःखों में बीत जाता है। जल की चञ्चल तरङ्गों के समान जीवन में मनुष्य को सुख कहाँ है? सच्चा सुख तो ईश्वरोपासना में ही है। इसलिए अधिक से अधिक समय ईश्वरोपसना में लगाना चाहिए।

आदर्श व्यक्तित्व के धनी राव हरिश्चन्द्र आर्य

वेदाचार्य प्रो. रघुवीर वेदालंकार

श्री डॉ. रघुवीर जी वेदालंकार गुरुकुल के प्रतिष्ठित स्नातक हैं, वेदवेदांगों पर आपका अधिकार है। आपने प्राचीन साहित्य की विशुद्ध व्याख्या की है । आपकी काशिका की हिन्दी की व्याख्या छात्रों के लिए बहुत उपयोगी है ।

स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व स्वयं वाजिन् तन्वं कल्पयस्व । महिमा ते अन्येन न संवशे ।।

वेद कहता है मानव? तू स्वयं यज्ञ कर । तदनन्तर प्रीतिपूर्वक उसका उपभोग कर तथा अपने आप को स्वयं समर्थ बना । तेरी महिमा किसी अन्य के द्वारा बाधित न हो। वेद का यह कितना सारगर्भित उपदेश है ? यह मानव को याज्ञिक जीवन व्यतीत करते हुए सम्पत्ति का उपभोग करने तथा संसार में सर्वविध समर्थ होने का उपदेश दिया गया है । इसकी साक्षात् मूर्ति राव हरिश्चन्द्र जी हैं । सामान्य लिपिक के पद पर कार्य का प्रारम्भ करते-करते आपने अपने गांव को इतना विकसित किया कि आज आपकी कीर्ति सर्वत्र सुधी जनों को आनन्दित कर रही है। आज आप अनेक सामाजिक संगठनों से जुड़े हैं कि आर्य समाज मन्दिर, चिकित्सालय आदि बनवा कर स्थायी सेवा स्तम्भ आपने समाज को प्रदान किये । आर्यसमाज में आपका नाम सुपरिचित है । यह सब आपके याज्ञिक जीवन का ही प्रमाण है । आज आपके यहां लक्ष्मी की भी कृपा है क्योंकि आप उसे मुक्तहस्त से सामाजिक कार्योंमें लगाकर आदर्श स्थापित कर रहे हैं । वेदमंत्र में परमेश्वर कहता है - **देहि मे ददामि ते** = हे मानव, तू मुझे दे, तो मैं भी तुझे दूंगा । सामाजिक कार्यों में देना, शुभकार्यों में देना परमेश्वर को ही देना है । यही कार्य राव हरिश्चन्द्र जी कर रहे हैं । परिणामस्वरूप परमेश्वर भी इन्हें दे रहा है, खुले मन से कृपापूर्वक दे रहा है । यह सब प्रभु कृपा का ही परिणाम है ।

धनपति बन कर तथा सामाजिक कार्य करते करते कभी-कभी व्यक्ति के मन में नाना तुच्छ भाव पनप जाते है । अहंकार भी उनमें से एक है । आर्य जी इस भावना से सर्वथा अछूते हैं । इससे वे सोने में सुगन्ध की उक्ति को ही चरितार्थ कर रहे हैं ।

वेद कहता है - **उदानं ते पुंसव** । मानव ? तू उन्नति करते जा, करते जा । ऊपर उठते जा, उठते जा । इसकी कोई सीमा नहीं कि तू कितना ऊंचा उठ सकता है । बस एक उन्मुक्त पंछी की भांति कार्यक्षेत्र में उड़ता चल, उड़ता चल । आर्य जी ने अपने पुरुषार्थ -पंख फैलाकर ऐसी ही उड़ान भरी कि जो अभी भी जारी है । उनका उड़ना जारी है, उनकी कीर्ति सर्वत्र विकसित हो, यही कामना है। ऐसे निरभिमानी, समाजसेवी, दानवीर, ऋषिभक्त का अमृत महोत्सव

मनाया जा रहा है, इसका हम स्वागत करते हैं । यह होना ही चाहिए था।

कार्य करते-करते, विशेषकर सामाजिक कार्यकर्ता के मार्ग में बाधाएं भी बहुत आती हैं, जो उसे शिथिल भी बना देती हैं , किन्तु अपने लक्ष्य को समर्पित व्यक्ति कभी भी उनसे नहीं घबराते । वे तो बाधााओं को मसलकर आगे ही बढ़ते जाते हैं । ऐसे साहसी व्यक्तियों के विषय में ही तो कहा गया है -**'बाधाएं कब रोक सकी हैं आगे बढ़ने वालों को'**। वस्तुतः कष्टों को सहनकर, तपस्या में तपकर ही तो व्यक्ति कुन्दन बनता है । अतः कष्ट या बाधाएं हमारे मित्र ही हैं, शत्रु नहीं । कहा भी है -

जितने कंट कंटकों में है
जिनका जीवन-सुमन खिला ।
गौरव गन्ध उन्हें उतना ही यत्र-तत्र-सर्वत्र मिला ।

राव हरिश्चन्द्र जी इसकी प्रतिमूर्ति हैं । आपकी तपस्या का ही परिणाम है कि आज आप एक सामान्य कृषक जीवन से ऊपर उठकर समर्थ समाजसेवी बन गये । ऐसे उदार मन राव जी का अभिनन्दन ।

अभी आप ७८ वर्षीय हो रहे हैं । आपका जीवन शुद्ध, पवित्र, ऋषि सेवा में लगा है । अतः उनके इस अवसर पर मैं अपनी ओर से शुभ कामनाएं अर्पित करता हुआ उनके **''भूयश्च शरदः शतात्''** होने की कामना करता हूँ।

संपर्क -
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, रामजस कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय
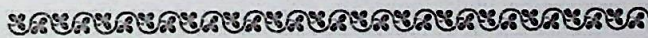
कल्याणकारी वचन

हम सांसारिक विषय-भोगों का उपभोग नहीं कर पाये, अपितु उन भोगों को प्राप्त करने की चिन्ता ने हम को भोग लिया। हमने तप नहीं किया, बल्कि आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक ताप हम को ही जीवन-भर तपाते रहे। भोगों को भोगते-भोगते हम काल को नहीं काट पाये, प्रत्युत काल ने हम को ही नष्ट कर दिया। इसी प्रकार भोगों को प्राप्त करने स्वरूप तृष्णा तो बूढ़ी नहीं हुई अपितु हम ही बूढ़े हो गये। यह जानते हुए भी हम तृष्णाओं से विरत नहीं होते, यह महान् आश्चर्य है।

यशोधन श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी - आर्यधर्म के महान् सेवक

जयदत्त उप्रैती

श्री जयदत्त जी उप्रैती आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के उच्च कोटि के चिन्तक एवं विद्वान् हैं। आपके हृदय में वैदिक धर्म के प्रचार की रक्षा के लिए तड़प है। आप अहर्निश वैदिक धर्म के प्रचार के लिए ही विचरते रहते हैं।

नीतिज्ञ कवियों ने परोपकारैकव्रती सज्जनों के विषय में कहा है -

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः परोपकाराय सतां विभूतयः ।।

अर्थ : नदियाँ अपने पानी को स्वयं नहीं पीतीं, वृक्ष अपने फलों को स्वयं नहीं खाते, और मेघ पानी बरसा कर उत्पन्न हुए धरती के अन्न को स्वयं नहीं खाते । अहो ! धर्मात्मा सत्पुरुषों की धनसंपत्ति भी इसी प्रकार दूसरों की भलाई के लिए हुआ करती हैं ।

श्रोत्रं श्रुतेनैव न तु कंकणेन
दानेन पाणिर्न तु कंकणेन ।
विभाति कायः करुणापराणां ,
परोपकारैर्न तु चन्दनेन ।।

अर्थ : मनुष्यों के कान गुरुओं के ज्ञान-धर्मोपदेशों को सुनकर सुशोभित होते हैं न कि सुन्दर कुण्डल पहनने से, इसी प्रकार हाथ भी सत्पात्रों में दान से सुशोभित होते हैं, न कि कंगन, अंगूठी पहनने से । वस्तुतः करुणाशील सज्जनों का तो शरीर ही परोपकार के कार्यों से सुशोभित हुआ करता है, न कि चन्दन के लेप से ।।

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य इन सूक्तियों के साक्षात् उदाहरण हैं, क्योंकि उनका सारा जीवन ही कर्मठता से परिपूर्ण और परोपकारमय रहा है। क्यों न हो, धर्मात्मा सात्विक दानी जनों का जीवन जो कि परहित के लिए सदैव समर्पित रहता है, श्री राव जी की गणना ऐसे ही श्रेष्ठ गुणिगणगणनास्वग्रगण्य जनों में करने योग्य है। वर्तमान युग में महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म के जिस उज्ज्वल चित्र को संसार के समक्ष प्रस्तुत किया और जिसके प्रचार-प्रसार के लिए आर्यसमाज की स्थापना कर उसे यह कार्य सोंपा, उस आर्यसमाज की श्रेष्ठ सात विभूतियों को आर्यरत्न पुरस्कार से तथा दस अन्य विद्वद्वृन्दों को आर्य-विभूषण पुरस्कार से श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी अभी तक अपने सात्विक दान द्वारा सम्मानित कर चुके हैं, ऐसे आर्य विद्वानों और आर्यसमाज के गुरुकुलों की सेवा-सहायता में निरंतर संलग्न आप श्री राव जी, श्री मित्रसेन आर्य जी, वयोवृद्ध महाशय धर्मपाल आर्य , एम.डी. एच. मसाले वाले आदि गिने चुने दानवीर ही तो आर्यसमाज के गौरव हैं ।

हाल ही में ''राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समिति'' के अध्यक्ष पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने ''ऋषि पथ के पथिक

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य के अमृत महोत्सव पर उनका संक्षिप्त परिचय'' जो प्रकाशित किया है, उसमें श्री राव जी के समुज्ज्वल जीवनवृत्त अर्थात् व्यक्तित्व एवं कृतित्व को संक्षेप में किन्तु सुन्दर रूप से चित्रित किया गया है। यह परिचय वस्तुतः प्रेरणाप्रद, स्मरणीय तथा संग्रहणीय है। एतदर्थ अभिनन्दन समिति के अध्यक्ष श्री स्वामी जी भी साधुवादार्ह और धन्यवादार्ह हैं। सम्भवतः उन्हीं की प्रेरणा से गुरुकुल आश्रम आमसेना, उड़ीसा के द्वारा श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी के ७८ वें वर्ष के शुभारम्भ पर निकट भविष्य में किया जाने वाला अभिनन्दन का यह अत्युत्तम प्रयास है । इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाले अभिनन्दन ग्रन्थ तथा उत्सव की सफलता की कामना करता हुआ मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह ऐसे गुणवान् और परगुण पारखी श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी को स्वस्थ और शतायु जीवन प्रदान करे, जिससे कि भविष्य में भी उनसे आर्यसमाज लाभान्वित होता रहे और वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार जग में बढ़ता रहे । इत्योम् शम् ।

संपर्क - स्वस्त्ययनम्
तल्ला थपलिया, अल्मोड़ा-०१
(उत्तराखण्ड)

कल्याणकारी वचन

विद्या मनुष्य की शोभा है, विद्या ही मनुष्य का अत्यन्त गुप्त धन है। विद्या भोग पदार्थ, यश और सुख देने वाली है। विद्या गुरुओं का भी गुरु है। विदेश यात्रा में विद्या कुटुम्बीजनों और मित्रों के समान सहायक होती है। विद्या ही सबसे बड़ा देवताहै। विद्यायुक्त मनुष्य का ही राजाओं और राज-सभाओं में आदर-सम्मान होता है, धन का नहीं। वास्तव में देखा जाये तो विद्याहीन मनुष्य पशु के तुल्य ही है।
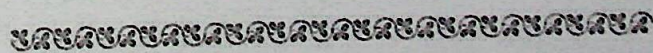
शुभाख्या- आदर्श जीवन

आचार्या सूर्यदेवी चतुर्वेदा

आदरणीया आचार्या सूर्यदेवी चतुर्वेदा पाणिनि विद्यालय वारणासी की आचार्या और स्नातक हैं । आप वेद-वेदाङ्ग की उच्च कोटि की विदुषी हैं, जिन पर आर्य जगत् को गर्व है।

शतं च जीव शरदः पुरूचीः ।

दानवीर सम्माननीय श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का अमृत महोत्सव इस वर्ष मनाया जायेगा तथा इस अवसर पर श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल आमसेना,उड़ीसा एवं आर्योदय, नागपुर महाराष्ट्र के तत्वावधान में भव्य अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित होगा, यह जानकर महती प्रसन्नता हुई । राव जी के अमृत महोत्सव पर अपने हार्दिक भाव व्यक्त करते हुए हर्ष का अनुभव कर रही हूँ ।

श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य तथा मेरा यद्यपि प्रत्यक्षतः परिचय अभी तक नहीं हुआ,तथापि परोक्ष रूप में आपकी महनीयता का यश सुनती रही हूँ, अतः अपरिचित नहीं हूँ । श्री राव जी की वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए की गई सेवाओं से आर्यजगत् भलीभाँति परिचित है। राव जी का जब संक्षिप्त परिचय पढ़ा तो लगा एतादृश वैदिक धर्म के दीवाने,तपस्वी,कर्मठ,समाज सेवक ही गुदड़ी के लाल कहे जाते हैं ।

पूर्व कर्मों के कारण जन्म होता है और वर्तमान के कर्मों से जन्म सार्थक बनता है । जन्म को सार्थक सब को बनाना नहीं आता, विरलों को ही आता है । उन विरलों की पंक्ति के ही धर्म दीवाने श्री राव हरिश्चन्द्र जी हैं। श्री राव हरिश्चन्द्र जी यद्यपि धन के भण्डार में उत्पन्न नहीं हुए, पुनरपि आपने अपने श्रम, अध्यवसाय से अभाव को पछाड़ कर रख दिया। आपने वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड, झांसी में लिपिक के रूप में कार्य करते हुए इसी फार्मेसी के मैनेजमेन्ट के महाप्रबन्धक पद को संभाला । नागपुर शाखा में ससम्मान स्थानान्तरित हुए ।

श्री राव जी ने कठोर प्रयत्न से पूंजी को जोड़कर जहाँ अपने गृह का समुचित लालन-पोषण किया, शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्धन किया, वहीं समाज को भी उन्होंने अपने अर्थ का हिस्सा बनाया । आपने राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ न्यास बनाकर 'आर्य रत्न', 'आर्य विभूषण' दो पुरस्कार स्थापित किये हैं । आर्य रत्न पुरस्कार एक लाख रुपये का सर्वोच्च पुरस्कार है । दान की उपलब्धियों का वर्णन करते हुये वेद में कहा है -

दक्षिणावतामिदिमानि चित्रा दक्षिणावतां दिवि सूर्यासः ।

दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते दक्षिणावन्तः प्रतिरन्त आयुः ।। ऋ.१/१२५/६।।

अर्थात् **दक्षिणावताम्** = जो धर्म से उपार्जित धन को विद्या आदि के निमित्त दान देने व ज्ञान प्राप्त करने की साधना करते हैं, उन मनुष्यों के लिए ही, **इमानि चित्राः** = ये सभी संसार के अद्भुत चित्र

विचित्र सुख होते हैं । **दक्षिणावताम्** = प्रशंसनीय, धर्मानुकूल धन व विद्या की दक्षिणा देने वाले को ही, **दिवि सूर्यासः** = आकाश में सूर्य के समान तेजस्वी जन प्राप्त होते हैं । **दक्षिणावन्तः इत्** = बहुत दान दक्षिणा देने वाले पुरुष ही, **अमृतं भजन्ते** = मोक्षानन्द एवं अन्नादि समृद्धि का भोग करते हैं । **अन्यच्च दक्षिणावन्तः** = बहुत प्रकार की दक्षिणा देने वाले जन, **आयुः प्रतिरन्ते** = दीर्घ जीवन को पूरी आयु प्राप्त करते हैं, भोगते हैं ।

वेद मन्त्र में दक्षिणा = दान देने वाले की उपलब्धियों का प्रतिपादन है । जो दान देते हैं, वे विविध ऐश्वर्यो को,उत्तम मनुष्यों को प्राप्त करते हैं । श्री राव जी ने मन्त्रानुसार भरपूर ऐश्वर्य व उत्तम लोगों का साथ पाया है ।

श्री राव जी ने जीवन व धन को सार्थक करते हुए अपने सात्विक धन का दान देकर अनेक पूज्य संन्यासी,पूज्य विद्वानों का सत्कार, अभिनन्दन करके अमरता प्राप्त की है । वेद प्रचार वैदिक धर्म के विकास एवं आर्यसमाज की उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं । अनेक आर्यसमाजों के संरक्षक, प्रधान , मन्त्री, कोषाध्यक्ष आदि पदों पर रहकर आर्यजगत् की सेवा करते रहे हैं ।

आप स्वभाव से अत्यन्त नम्र,सरल,सादा जीवन उच्च विचार के व्यक्ति हैं । धार्मिकता आपका व्यक्तित्व है । अतिथि सेवा, विद्वान्, संन्यासियों का आदर आपका शील निष्ठ कर्म है । कर्मठता, ईमानदारी आपके जीवन की महनीय शक्ति है । श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड के मैनेजमेन्ट के महाप्रबन्धक पर पर रहते हुए अर्थशुचिता की जो आपने प्रतिष्ठा की है, वह अनुकरणीय है । आपके आदर्श जीवन की पहचान है। आर्यसमाज के गौरव मान्य दानी महानुभाव श्री राव हरिश्चन्द्र जी को बहुशः वर्धापनानि।(बधाइयां)।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है इन महनीय धर्मपरायण,उदारमना,कुबेर बन्धु को दीर्घायु प्रदान करे । आप निरन्तर अपने शुद्ध पवित्र धन को सार्थक कर वैदिक धर्म के दीवानों को अर्चित करते रहें और वैदिक धर्म जनाज्जन की ओर बढता रहे, फूलता रहे
प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ।

संपर्क -
पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी.

कल्याणकारी वचन

तुम्हारे जीवन की सफलता तो काम, क्रोध,लोभ, मोह, अहंकार आदि अविद्या के कुसंस्कारों को नष्ट करमे में ही है। यही समस्त दुःखों से छूटने का श्रेष्ठ उपाय है। यही कुसंस्कार मोक्ष के मार्ग में बाधक हैं। मोक्ष पाना चाहते हैं तो इन कुसंस्कारों से दूर रहें। कुसंस्कार मोक्ष में सबसे बड़े बाधक हैं।
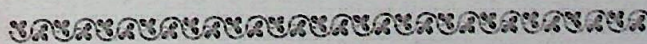
एक सरल, सहज एवं प्रेरक व्यक्तित्व राव हरिश्चंद्रजी आर्य

प्रो. ओमकुमार आर्य, उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

प्रो. ओमकुमार जी जीन्दस्थित महाविद्यालय से प्रध्यापक पद से सेवानिवृत्त हैं और आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान हैं। आप प्रखर लेखक एवं वक्ता हैं। विदेशों में कई वर्ष तक आर्यसमाज का प्रचार कार्य कर चुके हैं।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि भारत देशान्तर्गत हरियाणा की पावन धरती, जिसकी गोद में विश्वप्रसिद्ध ऐतिहासिक धर्मक्षेत्र 'कुरुक्षेत्र' बसा हुआ है, जिसने द्वापर युग में 'गीता' का प्रेरक संदेश संसार को दिया था, उसी भूमि पर जिला महेन्द्रगढ़ के एक छोटे से गाँव बीगोपुर में जन्मे आर्य परंपरा के दृढ़ अनुयायी दानवीर राव हरिश्चन्द्रजी आर्य का 'अमृत महोत्सव' (७५ वीं जयंती) २१ मई २०११ को बड़े समारोहपूर्वक मनाया जा रहा हैं। मैं आदरणीय श्री राव साहब को उनके 'अमृत महोत्सव' के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि श्री राव साहब को उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु देवें ताकि वे सुदीर्घ अवधिपर्यंत वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु हमें सम्बल एवं सहायता प्रदान करते हुए समूची मानवता के कल्याण का पथ प्रशस्त करते रहें। मैं तो उनके जन्मस्थान, माता-पिता, तिथि-वार आदि के विषय में यही कहूँगा कि धन्य तिथि वैशाख सुदी १ संवत् १९९१ और वार रविवार कि जिस दिन जन्मे हरिश्चन्द्र साक्षात् दान अवतार। धन्य धरती बीगोपुर की जिला महेन्द्रगढ़ तहसील नारनौल जिसने दिया भारत भूमि को हरिश्चन्द्ररत्न अनमोल धन्य पिता धन्नाराम, धन्य शृंगारी देवी पूज्य माता जो थे हरिश्चंद्र के जन्मदाता, धन्य संरक्षक धनसीराम भ्राता। मैंने अब से पहले दानवीर राव हरिश्चंद्रजी आर्य का नाम तो कई बार सुना था, उनके दान की चर्चा और प्रशंसा भी कई अवसरों पर सुनी थी किंतु मैंने इनको देखा नहीं था। इन्हें देखने का सुअवसर तथा सौभाग्य तो मुझे तब मिला, जब मैं और मेरी धर्मपत्नी 'अंतराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 'हालैण्ड' में भाग लेने गये। तब मुझे जानकर हर्ष हुआ कि, उक्त आर्य महासम्मेलन हेतु जानेवाले हमारे प्रतिनिधि मण्डल में जहाँ आर्य जगत् के मूर्धन्य साधु संन्यासी, विद्वान्, विदुषी अन्य कर्मठ कार्यकर्ता थे वहीं हरियाणा में जन्मे दो निष्ठावान् ऋषिभक्त, उदार दानवीर भी शामिल थे, अर्थात राव हरिश्चंद्र जी आर्य और कलकत्ता स्थित डॉलर उद्योग के मालिक सेठ दीनदयाल जी गुप्त।

मुझे तो मानो मुँह मांगी मुराद ही मिल गई। लम्बे समय से जिन्हें देखने, मिलने की उत्सुकता थी, आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वानों, लेखकों, वक्तादि को 'आर्य रत्न' एवं 'आर्य विभूषण' जैसे पुरस्कारों से

सम्मानित, पुरस्कृत करने की अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय परंपरा जिन्होंने प्रारंभ की है, वे राव हरिश्चन्द्रजी आर्य मेरे सामने थे, सामने ही नहीं पूरे १७-१८ दिन (१४ सितम्बर २०१० से २ अक्तूम्बर २०१० तक) उनका सान्निध्य हमें मिला, यह ईश्वर की कृपा ही तो थी। और मैंने देखा कि अपनी दानशीलता से वैदिक विचारधारा को फलने-फूलने का सुअवसर प्रदान करने वाला भामाशाही परम्परा का यह दानवीर अपने आर्थिक सहयोग से वेद-पताका को उँचे नभ में फहरा देनेवाला यह आर्य-श्रेष्ठि, वैदिक विद्वानों को विपुल मान-सम्मान देनेवाला यह विद्वत्प्रशंसक गुणग्राहक दानदाता राव हरिश्चन्द्र कितना सरल, सहज, सौम्य एवं विनम्र है, इतना कि लोग शायद ही विश्वास कर सकें कि क्या कोई इतना विनम्र सरल, सहज और सौम्य भी हो सकता है? सादा-सा पहनावा धोती-कुर्ता सिर पर टोपी। विदेश यात्रा पर हैं और सामान के नाम पर एक छोटा सा हैण्ड बैग। बहुत कम बोलना, हर कार्यकलाप एकदम अनुशासित। इस आयु में भी कमाल की चुस्ती, स्फूर्ति, उत्साह। मितभाषिता, शिष्टता, समय की पाबंदी आदि सभी दुर्लभ गुण हमारे चरितनायक राव हरिश्चन्द्रजी आर्य के व्यक्तित्व में हैं।

आज हमें जिन समर्पित, श्रद्धालु, स्वाध्यायशील, परोपकारी, मनसा, वाचा, कर्मणा, शुद्ध पवित्र आर्य जनों की महती आवश्यकता है, उनमें से एक राव हरिश्चन्द्रजी आर्य हैं। हमारी कामना है कि **'वयं स्याम पतयो रयिणाम्'** में निहित भाव के अनुसार वे उत्तम धन-सम्पदा के स्वामी रहें। **'ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीःश्रयतां स्वाहा'** के अनुसार सत्य-मार्ग पर चलते हुए सदा श्री, यशादि को प्राप्त करें। **'यः प्रीणाति स ह देवेषु गच्छति'** के अनुसार अपने दानादि से सुपात्र जनों को तृप्त करते हुये देवलोक के अधिकारी बनें, **'शतहस्त समाहर, सहस्त्रहस्त संकिर'** के अनुरूप मुक्त हस्त से दान-वारि से उत्तम संस्थाओं को सिंचित करते रहें। **'रमन्तां पुण्या लक्ष्मी'** पवित्र कमाई से घर भरा रहे तथा ईश्वर सभी उत्तम मनोकामनाएँ सदा सत्य करे, पूर्ण करे **'सन्त्वाशिषः सत्याः।**

श्रद्धेय राव हरिश्चंद्र जी आर्य धर्म पथ पर चलते हुए जन-सेवा, परोपकार दानादि के उत्तम कार्य संपादित करके, जहाँ समस्त आर्य संस्थाओं एवं राष्ट्र का कल्याण कर रहे हैं, वहीं आनेवाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणाप्रद एवं अनुकरणीय आदर्श भी स्थापित कर रहे हैं। आर्य समाज को अपने इस दानवीर, निःस्वार्थ समाज सेवक एवं निष्काम कर्मयोगी पर गर्व है। ईश्वर इन्हें शतायु ही नहीं **'भूयश्च शरद शतात्'** का वरदान प्रदान करें। हम सभी यही शुभकामना करते हैं कि -

आपके हाथों होते रहें सदा उत्तम शुभ काम
होवें सार्थक अक्षरशः 'राव हरिश्चंद्र' नाम।

संपर्क सूत्र - जवाहर नगर, पटियाला चौक
जीन्द (हरियाणा) १२६१०२

कर्मयोगी श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य

आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक

आचार्य सत्यानन्द जी ने एक करोड़ रुपयों से अधिक का वैदिक साहित्य मुद्रण करके आर्य जनता को लाभान्वित किया है। आप 'सत्यधर्म प्रकाशन' के संचालक हैं। वैदिक साहित्य एवं दुर्लभ साहित्य छापने की इच्छा आपकी बनी ही रहती है। उत्तम साहित्य प्रकाशन में आपका नाम शीर्षस्थ पर है।

महाशय हरिश्चन्द्र जी आर्य से मेरी भेंट लगभग बीस वर्ष पूर्व उनके हरियाणा स्थित गांव बीगोपुर में आर्यसमाज के उत्सव के अवसर पर हुई थी । उनकी मधुर वाणी, विनम्र व्यवहार, सौम्य आकृति, परम्परागत धोती-कुर्ता, टोपी की वेशभूषा को देखकर मैं एकाएक प्रभावित हुआ था । मुझे अनुभव हुआ कि राव हरिश्चन्द्र जी नाम और कर्म दोनों से सच्चे आर्य हैं। अपने गांव में आर्यसमाज के उत्सवों का आयोजन करके आर्य जी ग्राम और क्षेत्रवासियों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित व प्रेरित करते रहे हैं । उस भेंट के पश्चात् इनसे मिलने का क्रम प्रायः बना रहा ।

उधर नागपुर में भी ये आर्यसमाज हंसापुरी के प्रधान पद का दायित्व संभाले हुए थे । वर्षोंतक वहां के प्रधान रहे और आर्य प्रतिनिधि सभा में भी अधिकारी रहे। जहां भी इन्होंने दायित्व स्वीकार किया वहां इन्होंने निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्य का पालन किया । श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, झांसी से इन्होंने सेवा कार्य लिपिक पद से आरम्भ किया और अपनी ईमानदारी और कर्तव्यपरायता के कारण ये महाप्रबन्धक के पद तक पदोन्नत हुए । वहां से जब इन्होंने सेवानिवृत्त होने का मन बनाया तो वहां के प्रबन्धकों ने इनको सेवानिवृत्त ही नहीं किया । उसका कारण था इनकी कर्तव्यनिष्ठा । ये सच्चे कर्मयोगी हैं । जहां भी किसी दायित्व पर रहे हैं वहां कर्म करने में विश्वास रखा है, और सच्चे मन से कर्म करने वाले को फल तो स्वयं ही मिलता है, इसीलिए गीता में भगवान् कृष्ण ने मानवमात्र को उपदेश देते हुए कहा है -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन
मा कर्मफल हेतुर्भूः मा ते संगोऽस्तु विकर्मणि ।।
(गीता २.४७)

अर्थात् मनुष्य को कर्म करने में ही प्रवृत्ति रखनी चाहिए, फल की इच्छा करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि कर्म करेंगे तो फल तो अवश्य मिलेगा ही । इसी प्रकार मनुष्य को फलप्राप्ति की भावना से कर्म में लिप्त नहीं होना चाहिए और न अकर्तव्य कर्म जीवन में करने चाहियें ।

इन्होंने भी कोई गलत कार्य जीवन में नहीं किया । महाशय हरिश्चन्द्र जी आर्य का जीवन में यही आदर्श रहा है और इस पर चलकर वे सफल हुए हैं, उन्नत और समृद्ध हुए हैं । ऐसी धारणा रखने वाले व्यक्ति को कभी दुःख-शोक नहीं होता । इसी कारण इनके अपने जीवन में भी प्रसन्नता रही है और परिवार में भी ।आर्य जी के समान इनका परिवार भी आर्य-गुणों से युक्त है, धार्मिक है, अतिथिसेवी है, श्रद्धालु है । मैंने स्वयं इनके इन गुणों को परिवार में रह कर अनुभव किया है । जहां ऐसे गुण होते हैं वहां गृहस्थ स्वर्ग के समान सुखदायी होता है । इनका परिवार भी आर्य मर्यादाओं के कारण

एक आदर्श परिवार है । उसमें होने वाला दैनिक यज्ञ उस आदर्श में चार चांद लगा देता है । उसके परिणामस्वरूप परिवार में नैरोग्य, सुख, शान्ति प्राप्त होते है ।

श्री हरिश्चन्द्र जी की दानशीलता की चर्चा किये बिना इनके गुणों का वर्णन अधूरा ही रहेगा । इनके दान की विशेषता यह है कि वह किसी बदले में किसी प्राप्ति की भावना से नहीं दिया जाता अपितु निष्काम भाव से दिया जाता है । ऐसे दान को शास्त्रों में सात्विक दान कहा गया है । इन्होंने श्रद्धाभाव से अनेक साधु-सन्तों का एक-एक लाख रुपयों से सम्मान किया है और वह क्रम जारी है । अनेक विद्वानों को पुरस्कारस्वरूप लाखों की धनराशि वितरित की है । इस प्रकार न जाने कितने लोगों के जीवन में इन्होंने निष्काम भाव से प्रसन्नता का संचार किया है । मुझे इन पर चरितार्थ होने वाला एक श्लोक याद आ रहा है । भर्तृहरि ने ऐसे समाज सेवियों की प्रशंसा करते हुए उनको सन्त कहा है -

पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति,
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् ।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति,
सन्तः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः ।।(नीतिशतक७३)

अर्थ :- बिना प्रार्थना किये सूर्य कमल को खिला देता है, यह सूर्य की महानता है । बिना कहे चन्द्रमा सफेद कमल को खिला देता है, यह चन्द्रमा की महानता है । बादल सबको बिना मांगे ही जल देता है, यह बादल की महानता है । इसी प्रकार सन्त स्वभाव के लोग बिना स्वार्थ के परोपकार में संलग्न रहते हैं, ऐसे लोग निश्चय ही महान् होते हैं । श्री हरिश्चन्द्र आर्य भी बिना मांगे और निःस्वार्थभाव से लोगों का उपकार करते हैं, इस कारण इनका चरित्र सन्तों के समान है और उनके स्वभाव में महानता है ।

गुण ही मनुष्य को महान् बनाते हैं और गुण ही किसी को सामान्य मनुष्य से विशेष बनाते हैं । महाशय जी में अनेक गुण हैं जो मिलने वालों को प्रभावित करते हैं। ऐसा ही इनका एक गुण विनम्रता है । समृद्धि और दान देने के बाद भी ये कभी इन बातों पर अभिमान नहीं करते, इसी कारण ये दूसरों से विशेष हैं। इनका पैतृक गांव बीगोपुर है जो हरियाणा प्रदेश के जिला महेन्द्रगढ में नारनौल तहसील के अन्तर्गत है । इनका बाकी परिवार वहीं बसता है । गांव तथा आस-पास के क्षेत्र की सेवा भावना भी इनके मन में रहती है । समाजसेवा की भावना से इन्होंने वहां एक डिस्पेंसरी का निर्माण किया है। यह कार्य इन्होंने धर्म भावना से किया है, अपनत्व की भावना से किया है । डिस्पेंसरी के निर्माण में लाखों रुपये व्यय हुआ है । यह सेवाकार्य यह दर्शाता है कि इनमें लोभ का भाव नहीं है । यदि लोभ का भाव होता तो ये लाखों रुपये इस प्रकार व्यय नहीं करते ।

इस प्रकार आर्य जी में वे सभी गुण मैंने देखे हैं जो एक अच्छे इंसान में होने चाहियें । ऐसे गुणी मनुष्य वर्तमान समय में बहुत कम मिलते हैं । इसलिए ये सबके सम्मान के पात्र हैं ।

यह हर्ष का विषय है कि आर्य जी का अमृत-महोत्सव सोल्लास मनाया जा रहा है । मैं इस अवसर पर आर्य जी के नैरोग्य आयुष्य, सुख, शान्ति, समृद्धि के लिए शुभकामनाएं अर्पित करता हूं । परमात्मा इन पर और इनके परिवार पर सुखों की वर्षा करता रहे । परमात्मा से मेरी प्रार्थना है कि ये और इनके परिवार के सभी सदस्य -

सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाक् भवेत् ।।

सभी सुखी हों, सभी रोगरहित रहें, सभी का कल्याण हो, किसी को कोई दुःख न होवे ।

संपर्क- गुरुकुल लाढ़ौत (भैयापुर)
रोहतक (हरियाणा)

ऋषि के सच्चे अनुयायी : राव हरिश्चन्द्र

श्री स्वामी व्रतानन्दजी सरस्वती आयुर्वेदिक ग्रंथों के विद्वान् हैं, इसके साथ-साथ आप आयुर्वेद के एक प्रमुख चिकित्सक हैं। आप उड़ीसा के निर्धन पिछड़े इलाकों में जाकर आयुर्वेद चिकित्सा कैंप लगवाते रहते हैं। आप गुरुकुल आश्रम आमसेना के प्रतिष्ठित स्नातक हैं,पांच विषयों से आचार्य तथा दो विषयों में स्वर्ण पदक प्राप्त किये हैं। इस समय आप गुरुकुल आमसेना में सचिव पद पर अंलकृत हैं।

आज मुझे एक ऐसे व्यक्ति के संबंध में कुछ लिखने का अवसर मिला है, कि लिखते समये ही मुझे प्रसन्नता हो रही है। आदरणीय राव हरिश्चन्द्र जी को मैं नजदीक से जानता हूँ, उनका जीवन एक आदर्श, कर्मठ, समाजसेवक, आर्य समाज के दीवाने, जीवनदानी, आर्य संन्यासियों तथा विद्वानों के श्रद्धालु सेवक आर्य जगत् के ही नहीं अपितु कोई भी परोपकार कार्य क्यों न हो, सभी धार्मिक कार्यो में बढ़ चढ़कर भाग लेने वाले व्यक्तित्व का नाम श्री राव हरिश्चंद्र आर्य है।

श्री राव जी का हरियाणा प्रांत के बीगोपुर नामक ग्राम में धार्मिक माता-पिता की गोद में जन्म ग्रहण हुआ। आपके माता-पिता सरल-स्वभाव, श्रद्धालु, उदार-भावना, सादा-विचार के थे। वे सभी गुण आप में ओतप्रोत हैं। यहाँ तक कि आपका कार्यक्षेत्र केवल हरियाणा ही नहीं रहा अपितु उड़ीसा के जंगलों में रहनेवाले आदिवासियों में वैदिक धर्म रक्षाभियान को सुरक्षित करने में सहयोग खुल के किया है। भारत में जहाँ कहीं भी ऋषि दयानंद का कार्य हो रहा है, वहाँ राव जी का अवश्य सहयोग देखने को मिलेगा। आप के सामाजिक, धार्मिक कार्य में दिल खोलके सहायता की है। लातूर के भूकंप के समय में, उड़ीसा में तूफान समय में आपका सहयोग आर्य समाज के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा। इतना ही नहीं आपने अनेक साधु-संत, विद्वानों, लेखकों को आर्य रत्न, आर्य विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया है। अनेक विद्वान् एवं उपदेशकों को बुलवाकर वेद प्रचार कार्य कराने में सदा ही आगे रहते हैं। आप अपने ग्राम में एक धर्मार्थ चिकित्सालय का भी संचालन करते हैं।

आपके दो सुपुत्र हैं - श्री महिपाल जी एवं श्री यशपाल जी। इनका भी व्यवहार आपके जैसा है। आपको देश के आर्य जगत् के प्रायः पूज्य साधु-संत, महात्मा और आर्य विद्वानों का आशीर्वाद प्राप्त है। आपको अमृत महोत्सव पर बधाई एवं अभिनंदन! परमात्मा आपको यशस्वी, मनस्वी, तेजस्वी, स्वस्थायु एवं दीर्घायु प्रदान करे। यही कामना के साथ ...

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती
आचार्य
गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा)

सार्थक व्यक्तित्व - राव हरिश्चन्द्र आर्य

श्री. वेदप्रकाश श्रोत्रिय,

श्री वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय आर्यसमाज के ऐसे ओजस्वी वक्ताओं में से हैं। आपकी वक्तृत्व शैली ऐसी है कि एक बार जो भी व्यक्ति आपका उपदेश सुन लेगा वह आपको भी अच्छा वक्ता मान लेगा ।।

(मान्य पाठकवृन्द ! आदरणीय श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के सार्थक व्यक्तित्व पर यह लेख एक साहित्यिक उन्मेष है, उपज्ञा है । साहित्यिक कानन केसरी आनन्द लेकर अनुग्रहीत करने की कृपा करें - लेखक)

व्यक्तित्व के दो पार्श्व होते हैं । एक पार्श्व विश्व की वस्तुओं से सम्मान रखता है । यहाँ विश्वव्यापक विधानों के नियम मानने पड़ते हैं । प्रत्येक व्यक्ति के अस्तित्व की नींव इसी क्षेत्र में बहुत गहरी रखी हुई है । इसकी दृढ़ता का आधार व्यापक विश्व की मजबूत पकड़ और अन्य सब वस्तुओं के साथ पूर्ण समता बनाए रखना है !

व्यक्तित्व का दूसरा पार्श्व यह है कि ''मैं सबसे अलग अकेला हूँ''। सबके साथ बांधने वाली समता का जाल तोड़कर खड़ा हूँ। मैं सर्वथा अद्वितीय हूँ, मैं मैं ही हूँ और सबसे अतुल्य हूँ। ऐसी स्थिति में विश्व का समस्त भार भी मेरे व्यक्तित्व को कुचल नहीं सकता। विश्व की चुम्बकीय शक्तियों के आकर्षण की अवहेलना करता हुआ भी मैं खड़ा हूँ । देखने में यह 'मैं' छोटा सा है किन्तु वस्तुतः बहुत बड़ा है, क्योंकि यह अपने व्यक्तित्व को धूल में मिला देने वाली प्रत्येक शक्ति के विरोध में अकेला खड़ा है । राव हरिश्चन्द्र एक ऐसा ही असमान व्यक्तित्व है ।

इस व्यक्तित्व की अद्वितीयता स्थिर रखने के लिए व्यक्ति को निरन्तर कष्ट उठाने पड़ते हैं । ये कष्ट ही उसका मूल्य निर्धारित करते हैं। इस मूल्य का एक पार्श्व वह बलिदान है जो इसके व्यय का अंक़न करता है। दूसरा पार्श्व वह उपलब्धि है जो लाभ को अंकित करती है। व्यक्तित्व का अर्थ यदि केवल कष्ट और बलिदान ही होता तो व्यक्ति के लिए इसका कुछ भी मूल्य नहीं होता और हम स्वेच्छा से बलिदान करने को कभी तैयार नहीं होते । इसके हेतु किए गए बलिदान इसे और भी कीमती बना देते हैं। जिन्होंने इस व्यक्तित्व को उपलब्ध करके इसके वरदानों का उपयोग किया है और इसके उत्तरदायित्वों को बड़ी तत्परता से अपनाया है या बड़ी उत्सुकता से इसके लिए कष्ट उठाये हैं, वे ही इसके मूल्य की साक्षी देते है ।

कई बार धर्म इतना अस्पष्ट सा लगता है कि उसका स्वरूप स्पष्ट नहीं दिखता,फिर कई लोग यह विश्वास करने लगते हैं कि पाप करना मनुष्य की प्रकृति है । केवल कुछ ईश्वरेच्छाओं के आधार पर उसकी दया से मनुष्य को पाप से मुक्ति मिल सकती है । यह कथन ऐसा ही है जैसे कोई कहे कि बीज की प्रकृति अपने खोल में बन्द रहती है कोई चमत्कार ही उसे वृक्ष बनने को अंकुरित कर सकता है । किन्तु क्या बीज का स्वरूप ही इस धारणा को मिथ्या नहीं बना देता है ?

जब बीज का रासायनिक विश्लेषण करें तो उसमें कार्बन व प्रोटीन के तत्व मिलते हैं। वृक्ष रूप में

अंकुरित होने की प्रकृति को कोई प्रमाण नहीं मिलता,उसका सम्मान तभी होता है जब बीज अंकुर के रूप में फूटता है। यह बीज का धर्म है ।

मनुष्य के प्रयोजन का प्रमाण भी जब तक उनका धर्म महापुरुषों के महत्कार्यों में अंकुरित न हो जाए, नहीं मिलता। बहुसंख्यक मनुष्यों के निष्फल रहने का अर्थ भी यह नहीं है कि मनुष्य प्रकृति निर्बीज है। किन्तु मनुष्य का यह दायित्व है कि वह अपने आवरण को फोड़कर बाहर निकले और ज्ञान के प्रकाश व वायु में विकास पाकर सब ओर पल्लवित और पुष्पित हो । हरियाणा के गाँव बीगोपुर का यह बीज अपने आवरण को फोड़कर विटप बन अपने वितान से छाया में आश्रय देकर अनेक को अपने धर्म का परिचय दे रहा है।

राव साहिब के समग्र व्यक्त्त्वि के भीतर झाककर यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति के 'अहं' को दो रूपों में देख सकते हैं - एक वह जो स्वयं को प्रदर्शित करता है दूसरा वह जो प्रकाश का प्रतिक्षेप करते हुए अपने प्रयोजन का स्वंय उद्घाटन करता है, प्रदर्शन करने में वह महान् बनने का यत्न करता है। अपने संचित स्वत्वों के अम्बर पर खड़ा होकर ऊँचा बनने की कोशिश करता है। इसके विपरीत दूसरा स्वयं को प्रकाशित करने में स्वत्वों का त्याग करता है और कली से फूटकर निकले फूल की तरह विकास में ही पूर्णता को प्राप्त करता है।

बुझा दीपक अपने तेल को सुरक्षित रखता है। वह उसे अन्य सब बीजों से दूर अपनी दीवारों में एक कृपण की तरह संभालकर रखता है । किन्तु चिनगारी लगते ही वह अपना प्रयोजन समझ जाता है। वह एक क्षण में ही दूर-पास की सब चीजों से सम्पर्क बना लेता है और दिपशिखा को प्रज्वलित रखने के लिए बड़ी उदारता से अपने पात्र में संचित तेल प्रदान करता है। राव साहिब की आत्मा का दीपक भी कुछ ऐसा ही है। जब तक वह अपनी विभूतियों को समेट कर संचित करता रहा, तब तक वह बुझा रहा, प्रदीप्त होते ही बिना समय लगे अपने सर्वोपकारी प्रयोजन को समझ दूर पास सबसे सम्पर्क बना बड़ी उदारता से अपने पात्र में संचित स्वत्व रूपी तेल प्रदान करते हुए सब को जगमगा दिया ।

त्याग स्वार्थ और प्रेम दोनों में ही होता है। निःसंदेह स्वार्थ भी त्याग की अपेक्षा रखता है किन्तु स्वार्थी व्यक्ति बाधित होकर ही त्याग करता है। परन्तु प्रेम में त्याग स्वेच्छा से होता है । वहाँ त्याग में आनंद है । हमारे स्वत्व हमारे शरीर के अंग बन जाते हैं । उन्हें अलग करते हुए हमें दुःख होता है । किन्तु जब हम प्रेमाधीन होते हैं तो वह आसक्ति स्वयं शिथिल हो जाती है । पके हुए फलों का त्याग करते समय वृक्ष को, या बच्चे को दूध देते हुए मां को, जिस तरह कष्ट नहीं होता, उस व्यक्त्त्वि को भी कष्ट नहीं होता । इस देने में ही आत्मिक तृप्ति मिलती है ।

इस तरह हम पूर्ण प्रेम में ही आत्मा की स्वाधीन प्रकृति को देखते हैं । प्रेम में जो भी किया जाता है, वही पूर्ण स्वाधीनता से किया जाता है । भले ही वह कितना ही कष्टप्रद प्रतीत होता है । प्रेमहित कार्य करना ही स्वतन्त्र कार्य करना है । वह कर्म स्वतन्त्र कर्म नहीं है जो भय वा. वासना से प्रेरित हो क्योंकि ऐसे कर्मोंमें व्यक्ति की प्रकृति प्रकट नहीं होती। माँ अपने बच्चों के हित काम करने में अपनी प्रकृति का प्रदर्शन करती है - न उसमें भय है न वासना !

सम्मान्य श्री राव साहिब का व्यक्तित्व एक पुस्तकाकार विवेचना की अपेक्षा रखता है। इतने से लघु लेख को साहित्यिक उपज्ञा में बांधना सर्वथा अशक्य है, क्योंकि अपने विचारों को प्रकट करने के लिए केवल शब्दाश्रयी होना पर्याप्त नहीं होता। शब्द भावों को व्यक्त करने में पूर्णतः सफल व समर्थ नहीं हो पाते। शब्द भाषा न बनकर केवल गूँगे की भाव भंगिभाओं के समान चेष्टा मात्र रह जाते हैं। शब्दों से भावों का संकेत मात्र तो मिल सकता है, विचारों की अभिव्यक्ति नहीं

मिलती । यह विचार जिस व्यक्ति की अभिव्यक्ति के लिए जितने महत्वपूर्ण होंगे उतनी ही यह प्रगाढ़ संभावना होगी कि उन शब्दों को व्यक्तित्व की जीवन छाया में देखना पड़ेगा। जीवन की संगति में उनका सच्चा अर्थ जानना होगा। शब्दकोष की सहायता से अर्थज्ञान पाने वाले अन्वेषक अर्थ की बाह्य परिधि तक ही पहुँच पायेंगे, अन्तर का द्वार उन्हें बन्द ही मिलेगा ।

यही हाल ठीक मेरा भी है । मैं शब्दाश्रय से इस महान् व्यक्तित्व के अर्थपूर्ण जीवन को बहुत विचारों में नही बांध पाया हूँ । यह तो अनन्त गगन स्थित टिमटिमाते अनेक नक्षत्रों के मध्य एक देदीप्यमान सौम्य नक्षत्र है ! यह तो एक चमकृत चारु चन्द्र है, जिसने अपनी दिव्य छटा छिटकाकर कुमुद जनों के मनकुमुदों को मुदित बनाया है ! यह एक प्रज्वलित अग्निज्वाल है, जिसने पाप पुंजों को भस्मीकृत किया ! यह एक प्रचंड मार्तण्ड है, जिसने तम को खण्ड-खण्ड किया है ! यह एक ऐसा मदारहान है जो अत्यन्त सुन्दर, सुखकर और सुरभित है

अंत में आदरणीय श्री राव साहिब के इस अमृत महोत्सव के अवसर यह कहना चाहूँगा कि उनके अन्दर जो आयुसूत्र है उसकी पूर्णता को ऋषियों ने अमृत कहा है, अर्थात् यदि सौ वर्ष की आयु तक देखते हुए, सुनते हुए, बोलते और सांस लेते हुए स्वस्थ और बलिष्ठ होकर जीवित रहें तो मानो अमर जीवन पा लिया

एतद्वै मनुष्यस्य अमृत्वं यत्सर्वमायुरेति ।

(शतपथ एवं ताण्ड्य)

अर्थात् सारी आयु तक जीवित रहे यही अमरपना है । मनुष्य की आयु यज्ञ के द्वारा समर्थता को प्राप्त होती है । आयुयर्ज्ञेन कल्पताम् अथवा आयु में यज्ञ भाव उत्पन्न हो और यह यज्ञ कहीं पर खण्डित न हो । जैसे यज्ञ प्रातः माध्यंदिन और सायंसवन के बाद पूर्ण होता है वैसे ही राव साहिब की आयु भी पूर्ण हो - यह दैवी विधान है । मनुष्य जीवन में अमृत की कल्पना करने वाले मनीषी यह जानते हैं कि मानव जीवन की स्वाभाविक मर्यादा सौ वर्ष की है ।

शतायुः पुरुषः (ताण्डय २५/८/३)

इसी सौ वर्ष की आयु को ब्रह्मचर्य एवं युक्ताहार विहार से त्रिगुणायु भी कहा जाता है अर्थात् तीन सौ अथवा चार सौ वर्ष की अमृतायु प्राप्त की जा सकती है ।

य एव शतं वर्षाणि यो वा भूयांसि जीवति स ह वै तदमृतमाप्नोति । (श.१०/२/६/८)

जो सौ वर्ष तक या उससे अधिक जीता है वह अमृत पा लेता है । इस शत सांवत्सरिक जीवन में मुख्य बात है आयु का सूत्र । आयु नाम है ओजस्वी, बलिष्ठ जीवन का ! शत प्रतिशत जीवन की अनुभूति ही वास्तविक आयु है, उसी का नाम अमृत है। जहाँ मन और प्राण का तेज जीर्ण नहीं हुआ, वहीं जीवन या अमृत का निवास है । मनुष्य शरीर से मर्त्य होते हुए भी मन और प्राण से अमृत है । राव साहिब ने इसी जीवन में अमृत प्राप्ति की है क्योंकि उन्होंने अमृत के स्रोतों की ही उपासना की है । प्राण ही अमृत का स्रोत है। प्रश्न किया कि अमृत कहाँ मिलता है? उत्तर मिला-जहाँ जहाँ प्राण है, वहीं अमृत है । अमृत को सच्चे अर्थों में प्राण का पर्याय कह सकते हैं -

अमृतमु वै प्राणाः(शतपथ)

जिस वस्त्र में और जिस मनुष्य में प्राण की जितनी मात्रा अधिक होगी उसमें अमृत भी उतना ही अधिक होना चाहिए ! श्री राव साहिब के इस ओजस्वी बलिष्ठ शरीर को देखकर यह अनुमान लगाया ही जा सकता है कि उन का आयु का यज्ञ सत्र सतत प्रवहमान रहकर और अधिक अमृतत्व को प्राप्त करता रहेगा ।

संपर्क- अरावली अपार्टमेंट, नईदिल्ली

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य - एक अलौकिक व्यक्तित्व

श्री ब्रह्ममुनिजी वानप्रस्थ

श्री ब्रह्ममुनि जी वानप्रस्थ पूर्वनाम डॉ. सुग्रीव काले महाराष्ट्र के आर्य समाज के नेता हैं। हजारों नवयुवकों के प्रेरणास्रोत हैं। आपने स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से आर्ष गुरुकुल की स्थापना की है। आप गर्मी की छुट्टियों में संस्कार शिविर के माध्यम से विद्वानों को बुलाकर वैदिक धर्म की शिक्षा देते है।

पूज्य स्वामी धर्मानंदजी की सूझबूझ कुछ और ही रहती है । वे ब्रह्मचारियों से लेकर साधु संन्यासियों तक सबके गुणों की प्रशंसा करके आशीर्वाद देते रहते हैं और उनको और आगे बढ़ने, त्याग, तपश्चर्या, समर्पण से सामाजिक-राष्ट्रीय काम करने की प्रेरणा देते हैं । धन्य हो स्वामीजी, इसी कारण तो आप उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्र में गुरुकुल चलाकर कितने नैष्ठिक आचार्यों, कार्यकर्ताओं का निर्माण करके राष्ट्र का बड़ा काम कर रहे हैं । परमात्मा ने उनको पुनर्जन्म दिया है तो ये सब काम करने को बहुत अच्छा संघठन बढ़ाने का काम करते हैं । मैं उनके सामने नतमस्तक हूँ। जीवन, ज्योति-दीपकों के जैसा जलाते-जलाते अनेक जीवन ज्योति दीपक पैदा किये। कुछ दिन पहले उन्होंने ही श्री मित्रसेन आर्य के अभिनंदन ग्रंथ का संपादन किया और गौरव समारोह, रोहतक में किया। और अब श्री राव हरिश्चंद्रजी का अमृत महोत्सव करने जा रहे हैं । उसी उपलक्ष्य में अभिनंदन ग्रंथ का भी प्रकाशन करने जा रहे हैं । स्वामीजी की प्रकृति कमजोर हो गयी है, आयु ज्यादा हुई है, तो भी काम करने की लगन है, जिद है । मैं उनके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना करते हुए नमन करता हूँ ।

श्री राव हरिश्चंद्रजी का मेरा परिचय आर्यसमाज के कार्य से ही हुआ । श्री राव हरिश्चंद्रजी आर्य का जीवन धन्य हैं । धन्य हैं वे माता-पिता जिन्होंने ऐसा रत्न समाज, राष्ट्र को दिया । पिता जी की मृत्यु के बाद, बड़े भाई और माता जी ने उनकी देखभाल की, ये विशेष है । श्री राव हरिश्चंद्रजी का जन्म एक छोटे से गाँव में हुआ, वहीं पर पढ़े और इतने बड़े हो गये, ये उनका पुरुषार्थ है । एक लिपिक के पद पर होकर वैद्यनाथ आयुर्वेद कंपनी में लगकर उसी कंपनी में नागपुर में महाप्रबंधक बनना, ये उनकी ईमानदारी, सूझबूझ, कार्यक्षमता व नैतिकता का फल है ।

बचपन से आर्यसमाज से जुड़े रहे, आज भी जुड़े हैं। ये वैदिक सिद्धांत अपने जीवन में आचरण में लाये । जैसे नौकरी में सबसे अच्छे, सबसे आगे रहे, वैसे ही गृहस्थाश्रम में भी जीवन का आदर्श रखा। पंचमहायज्ञ करते-करते उन्होंने अतिथि सेवा भी खूब की । सही अर्थों में विद्वानों की सेवा की है ।

अपना जीवन-यापन, नौकरी करते-करते ईमानदारी से आर्यसमाज का तथा ऋषि दयानन्द का वेदों

के प्रचार-प्रसार का काम करते रहे। आर्यसमाज के सदस्य से लेकर पदाधिकारी बनना, प्रान्तीय सभा नागपुर के मंत्री व कोषाध्यक्ष बनना, सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान बनना, काम करना, समय देना, यह ईमानदारी का, नैतिकता का, विनम्रता-श्रेष्ठता का, महानता का द्योतक है । अपनी आय का कुछ हिस्सा निकालकर सामाजिक कार्यों में व्यय करने का विचार भी बहुत उच्च है । और उस कार्य के लिए स्वयं का ट्रस्ट बनाकर अपने पश्चात् भी आर्यजगत् का काम चालू रहे । इसमें भी उनकी उदारता और आर्यसमाज के प्रचार की लगन दिखती है ।

आर्यजगत् के त्यागी, तपस्वी, साधु संन्यासी, विद्वानों को बड़ी राशि देकर सम्मानित करना ये भी एक आर्यजगत् को आगे बढ़ाने का काम है। सचमुच ये बड़ी सूझबूझ है। जहाँ आर्यसमाज के संघटन में प्रान्तीय सभाओं में, सार्वदेशिक सभाओं में ऐसी व्यवस्था नहीं है, वहाँ श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य ने करके रखी है और उनके पश्चात् ये सुविधाएँ बनी रहेंगी 'आर्यरत्न पुरस्कार', 'आर्य विभूषण' पुरस्कार से सम्मानित हुए सभी व्यक्ति महान् व श्रेष्ठ हैं । इसमें भी ईमानदार, अच्छे त्यागी तपस्वी लोगों का ही चयन करते हैं।

लोग पैसे से, पद से बड़े बनने के बाद अपने गांव को, परिवार के लोगों को, गरीब साथीदारों को, गरीब सहयोगियों को भूल जाते है, स्वयं उच्च समझते है और बाकी लोगों को निम्न समझते हैं । परंतु श्री राव हरिश्चन्द्रजी ने अपने गांव को भुलाया नहीं। वहाँ आर्यसमाज का भवन बनाया, दवाखाना बनाया और मानव निर्माण एवं सेवा का काम हमेशा चलता रहे उसकी व्यवस्था कर के रखी है । संस्थाओं को उदारता से सहयोग देना आपकी विशेषता है ।

उनको देखते ही उनके मुखमंडल पर सात्विकता, विनम्रता दीखती है । सादगी सरलता दीखती है । वे देश-विदेश में आयोजित आर्यसमाज के कार्यक्रमों में सहभागी होते हैं । आपने अपने पुत्र, पुत्र वधू, पौत्र-पोतियों को भी सुसंस्कारित करके आर्यजगत् की सेवा योग्य बनाकर अभिनंदनीय कार्य किया है ।

कुल मिलाकर उनका व्यक्तित्व एक अलौकिक है । नम्रता, सदाचार, नैतिकता,राजनीति से दूर, सात्विक ,परोपकारी, दानी, दूरदर्शिता, उदारता, नैतिकता, धार्मिकता आदि सभी अच्छे गुणों व विचारों से युक्त आपका जीवन है ।

आपके जीवन की (खुशबू) जन्म गांव से लेकर पूरे भारत में ही नहीं तो सारी दुनिया में फैली है । मैं हृदय से परमात्मा से प्रार्थना करूंगा की भगवान् इनको, अच्छा स्वास्थ्य, दीर्घायुष्य और सद्बुद्धि दे और इनसे और भी अच्छे-अच्छे काम होते रहें और आज के युग के ये राजा हरिश्चन्द्र सिद्ध होवें, यही मेरी शुभकामना है ।

संपर्क-
परली बैजनाथ, लातूर (महाराष्ट्र)

शुभ कर्मों से यश अर्जित करने वाले आर्य जी

श्री मोहनलाल आर्य

श्री. मोहनलाल जी चड्डा हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी आदि भाषाओं के अच्छे विद्वान् हैं । आप इन भाषाओं में अच्छी कविताएं भी बनाते हैं । वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार और रक्षा के लिए आपका जीवन समर्पित हैं ।

जो कोई आदमी अपने जीवन के उद्देश्य और आदर्श को सामने रख कर संघर्ष करता है उसी के पग सफलता की ऊंचाइयों को छूते हैं। उसी मार्ग के पथिक है राव हरिश्चन्द्र जी । उन्हों ने अपनी निष्ठा, मेहनत और ईमानदारी से जिन्दगी की ऊँचाइयों को छूआ है, और वह सब प्राप्त किया है जिस की अभिलाषा ले अनवरत परिस्थितियों से लड़ते रहे हैं।

हरियाणा में एक किसान परिवार में जन्म लेने और ग्रामीण वातावरण में पले-बढ़े होने के बावजूद आप ने जिन्दगी में जो कामयाबी हासिल की वह कोई गुणी ही प्राप्त करता है । बाल्य काल से आपको वैदिक सत्संगों में जाने से जो शुभ संस्कार मिले, यह सब उसी का प्रतिफल है कि आप सफल एवं योग्य व्यक्तित्व के धनी बने । राव हरिश्चन्द्रजी का जन्म १५ अप्रैल १९३४ को बीगोपुर - तहसील नारनौल (हरियाणा) में हुआ । आप अपने छह बहन-भाइयों में सब से छोटे हैं । पिताजी का साया बचपन में ही सिर से उठ गया था । आप की माताजी और बड़े भाई ने आपका लालन-पालन किया । आपकी पूरी लिखाई-पढ़ाई ग्रामीण अंचल में ही हुई । आपको ईश्वर ने कुशाग्र बुद्धि प्रदान की । आपने आर्य संतों, विद्वानों से जो प्राप्त किया, उसे अपने जीवन में ढालने का यत्न किया ।

राव हरिश्चन्द्रजी ने २० साल की आयु में अपने नये जीवन की शुरुआत की । आप गांव छोड़ घर वालों की अनुमति से शहर झांसी आ गये । यहां आपने आयुर्वेद वैद्यनाथ कम्पनी में क्लर्क के रूप में नौकरी शुरू की । आपकी लगन और निष्ठा को देख ४ साल बाद आपको पदोन्नत कर नागपुर शाखा में अकाऊंट आफिसर बना कर भेज दिया ।

आप नागपुर कार्यालय में अकाऊंट आफिसर के पद पर कार्य करते रहे । आपकी निष्ठा, सेवा, व्यवहार और ईमानदारी को देख कर कम्पनी मेंनिजमैंट ने आपका प्रमोशन कर आप को महाप्रबन्धक की जिम्मेदारी सौंपी, जिसे आप बड़ी मेहनत और ईमानदारी से निभाते रहे । यहां से आप २००७ में सेवानिवृत्त हुए । आयु के हिसाब से तो राव हरिश्चन्द्रजी को १९९४ में सेवानिवृत्त हो जाना चाहिये था । पर आपकी लगन और कार्यकुशलता को देख कर कम्पनी ने आपको २००७ में सेवा मुक्त किया ।

आपका विवाह २४ वर्ष की आयु में शान्ति देवी जी से हुआ । नाम के अनुसार गुणों वाली शान्ति देवी सेवा और सहयोग करने में कभी पीछे नहीं रहीं । राव हरिश्चंद्रजी की पत्नी ने हर कदम पर आप का साथ

दिया और कोई मेहमान आपके घर भोजन किये बगैर चला जाये, ऐसा कभी होने नहीं दिया । आर्यजी गृहस्थ आश्रम में रहते और अपने कर्तव्यों को निभाते हुए समाज सेवा के कार्य कभी नहीं भूले । आप कई संस्थानों से जुड़े रहे । आप आर्य समाज हंसापुरी के प्रधान पद पर सुशोभित रहे । आपने इस माध्यम से वैदिक धर्म की खूब सेवा की । कोई भी विद्वान् नागपुर में आये और आपके घर भोजन किये बगैर चला जाये, हो नहीं सकता । अतिथि सत्कार और सेवा भाव आप में कूट-कूट कर भरा है । आर्य जी नम्र इतने कि कोई भी आपसे आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता ।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ के साथ लम्बे समय से जुड़े हैं । आप कई वर्षों तक सभा के कोषाध्यक्ष रहे । आपने काम को हमेशा बड़ी खूबी से निभाया । सभा सदस्य तो चाहते थे कि आप प्रधान पद की शोभा बढ़ायें पर समय अभाव के कारण आर्य जी ने यह पद स्वीकार नहीं किया । राव हरिश्चंद्र जी को अपने गांव और वैदिक धर्म से बहुत प्यार है । उसी का उदाहरण है कि आर्यजी ने अपने गांव बीगोपुर हरियाणा में भव्य आर्य समाज का निर्माण कराया । जहां हर साल धार्मिक कार्यक्रम होते रहते हैं ।

सन्त कबीर कह गये हैं, **'चिड़ी चोंच भर ले गई नदी न घट्यो नीर, दान दिये धन ना घटे कह गये दास कबीर'** । इसी प्रकार राव हरिश्चन्द्रजी दान और सम्मान देने में सर्वदा आगे रहे । आपने राव हरिश्चन्द्र धर्मार्थ ट्रस्ट दान और विद्वानों के सम्मान हेतु बनाया है । आप कोषाध्यक्ष रहे हैं, आप धन का सदुपयोग करना भली भाँति जानते हैं ।

आप के ट्रस्ट के द्वारा हर वर्ष एक विद्वान् को सम्मानित किया जाता है । 'आर्य रत्न' एवं 'आर्य विभूषण' नामक उपाधि से । प्रशस्ति पत्र एवं एक लाख रुपये राशि से विद्वान् को सम्मानित किया जाता है ।

ईश्वर धन तो बहुतों को देता है पर दान देने की प्रवृत्ति सबमें नहीं होती । दान वही देता है, जिस पर ईश्वर की विशेष कृपा होती है । उनके अपने शुभ कर्मों के कारण प्रभु उन्हें प्रेरित करता है और आर्य जी के हाथ दान देने हेतु उठ जाते हैं । अपने सेवा काल से अब तक राव हरिश्चंद्रजी कई संस्थाओं को आर्थिक सहायता करते आये हैं, विशेषतः गुरुकुलों को ।

ईश्वर कृपा से आप के दो सपूत हैं श्री महिपाल आर्य और यशपाल आर्य । दोनों पुत्रों को परिवार से वैदिक संस्कार शुरू से ही मिले । समाज का कोई भी कार्य हो उस में पूरा सहयोग हमेशा करते आये हैं। इसका स्वरूप अधिवेशनों में देखने को मिला । राव हरिश्चंद्र के निर्देशानुसार दोनों सुपुत्र - आयुर्वेदिक दवाओं के व्यापार में व्यस्त हैं। फुटकर और थोक के, दोनों प्रकार के कई बिक्री केन्द्र बड़ी कुशलता से चला रहे हैं।

२००३ में पत्नी के स्वर्गवास होने के बाद से राव हरिश्चन्द्र जी पूरी तरह वानप्रस्थ जीवन का निर्वाह कर रहे हैं। आर्य जी का अधिक समय धार्मिक एवं सेवा कार्यो में व्यतीत होता है । जहाँ कहीं इन की जरूरत होती है, आर्य जी बिना संकोच हाजिर हो जाते हैं और पूरा सहयोग देते हैं ।

अभी हाल में २४, २५, २६ सितम्बर २०१० को हालैंड में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। आप भी उस में भाग लेने गये थे ।

आप ने अपने शुभ कर्मों से जो यश अर्जित किया है, ईश कृपा से उस में बढ़ोतरी होती रहे ।

"रावहरिश्चन्द्र आर्य - आर्य समाज के भामाशाह"

ले. पं. सत्यवीर शास्त्री, प्रधान

श्री पं. सत्यवीर जी शास्त्री मध्यप्रदेश एवं विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक वर्षोतक प्रधान एवं मन्त्री रहे हैं। अब यह सभा आपके नेतृत्व में ही वैदिक धर्म के प्रचार - प्रसार करने में संलग्न है । आप जुझारू और कर्मठ आर्यनेता हैं।

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते । सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ।।

स्वभावमृदुल, प्राप्तधनैश्वर्य, कृतार्थजीवन, ऋषिवर स्वामी दयानन्द निर्देशित वेदमार्गपथिक, सत्यसनातन धर्मानुरागी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी-संन्यासी-विद्वान्-महात्माओं के सेवाधारी - राव हरिश्चन्द्र आर्य धमार्थ ट्रस्ट के संस्थापक, आर्यरत्न, आर्य विभूषण - पुरस्कारों के प्रस्तोता, आर्यसमाज - गुरुकुल - विद्यालय-वानप्रस्थाश्रम-संन्यासाश्रम - के संचालक श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य को आर्यजगत् में कौन नहीं जानता ?

ऐसी महान् विभूति का "अमृत-महोत्सव" मनाना आर्यजगत् के लिए - स्वाभिमान एवं आर्यों को वैदिक कार्यों में प्रेरित करनेवाला महान् कार्य है ।

राव हरिश्चन्द्रजी आर्य पदलोलुप नहीं हैं । १९७७ से लेकर कई बार सर्वसम्मति से उनको, आर्यप्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ का कोषाध्यक्ष बनाया गया । उनकी त्यागभावना और आर्यसमाज के प्रति उनके कृतित्वको देखते हुए सभा के प्रधान-पद के लिए उनसे आग्रह किया गया । लेकिन उन्होंने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा मैं नामधारी प्रधान बनना नहीं चाहता हूँ । जब मेरे पास समय होगा तब मैं पद को स्वीकार करूँगा । ऐसा होने पर भी कई आर्य -संस्थाओं ने आदर एवं आग्रह के द्वारा, उनको अपनी संस्था का किसी ने "प्रधान" तो किसी ने "उपाध्यक्ष" तो किसी ने "संरक्षक" तो किसी ने 'सदस्य' बनाकर ही चैन की साँस ली है ।

राव हरिश्चन्द्रजी आर्य "नागपुर शहर की शान हैं" जो अत्यंत सेवाभावी हैं। आपका द्वार अतिथियों के लिए चौबीस घंटे-खुला रहता है । सच्चे दिल से की गई प्रार्थना भगवान् सुनते हैं। वैसे ही जो भी आर्यसमाजी सच्चे कार्य के लिए अपनी माँग लेकर आर्य जी के पास पहुँचता है, उसकी माँग पूरी होती है । दान से झोली भर जाती है ।

राव हरिश्चन्द्रजी आर्य की, आर्यसमाजियों को मदद करने की अनूठी शैली है। ई.सन् २००० में "मारिशस में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन होनेवाला था । इसके आठ दिन पूर्व पूज्य कैप्टन देवरत्नजी आर्य, प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली का मुझे फोन आया । उन्होंने पूछा, शास्त्रीजी आपने पासपोर्ट बनवाया होगा । परकीय चलन (वीजा) भी प्राप्त किया होगा, आपको इस सम्मेलन में आना ही होगा । सुनकर मैं दंग रह गया । मैने कहा "मुझे इस संबंध में कुछ भी जानकारी नहीं है । बात यह हुई थी, कि सार्वदेशिक

सभा का पत्र दिखाना ही भूल गये थे । अधीक्षक महोदय ने अपनी गलती के लिए बार-बार क्षमा माँगी । मै बहुत परेशान हुआ । पासपोर्ट कार्यालय से तुरन्त जानकारी प्राप्त की । जबाब मिला ''पासपोर्ट'' बनवाने के लिए कम से कम एक माह का समय लगता है । मैं बहुत निराश हुआ, सोचा, मॉरिशस जाने का सुनहरा अवसर हाथ से जा रहा है । ऐसा अवसर पुनः आना असंभव होगा । क्योंकि, उस समय मैं आर्यप्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ का प्रधान भी था । इस समय मुझे राव हरिश्चन्द्रजी का स्मरण हुआ । मैंने फोन लगाया श्रीरावजी ने कहा ''शास्त्रीजी'' आप चिन्ता न कीजिए । आप तो सिर्फ ''मॉरिशस'' चलने की तैयारी करो मैने श्रीरावजी को सारी वस्तुस्थिति सुना दी । उन्होंने कहा, आप पासपोर्ट बनाने के लिए नागपुर पहुँच जाओ । निराशा-आशा में बदल गई । दूसरे दिन सबेरे रावजी के निवास स्थान 'आर्योदय' महल नागपुर को पहुँचा । आदरातिथ्य के उपरान्त उन्होंने कहा, आप पासपोर्ट ऑफिस चले जाइए । मैं कार्यालय में पहुँचा। बड़ी लम्बी लाइन में खड़ा रहा । दस बजे गया था, नंबर आया बारह बजे । ''बाबू'' ने पूछा ''आप सत्यवीर शास्त्री'' हो? मैंने कहा, हाँ, आपको कैसे मालूम ? बाबू ने मुस्कुराते हुए कहा आप सायंकाल साढ़े पाँच बजे आकर आपना पासपोर्ट ले जाना । मै पाँच बजे ही पहुँच गया । बाबू ने ''मेरे हाथ'' में पासपोर्ट थमा दिया और कहा बड़े भाग्यवान् हो । अब मुझे आभास हुआ कि यह सारी करामात रावजी की थी । अब समस्या थी, पच्चीस़ हजार रुपयों का विमान टिकट खरीदने की । पैसा पास में तो था नहीं। मैंने पुनः सभा कार्यालय से फोन लगाकर स्थिति से अवगत कराया । श्री रावजी ने फिर कहा कि, आप किसी बात की चिंता मत कीजिए । रेल में बैठकर आर्यसमाज सांताक्रुज, मुंबई पहुँचो । अब रावजी ने स्वयं के पैसों से टिकट भी बनवाया और परकीय चलन (वीजा)भी दिलवाया । और रावजी के कारण मैं मॉरिशस आर्य महासंम्मेलन पहुँच पाया । जहाँ मेरे पाँच भाषण मराठी भाषा में हुए थे । यात्रा-सफल रही ।

जैसे महाराणा प्रताप को आर्थिक मदद करनेवाले भामाशाह मिले थे, उसी प्रकार आर्यजगत् को श्री राव हरिश्चद्रजी आर्य, भामाशाह मिले हैं। आपने अब तक पच्चीस लाख रुपयों का दान किया होगा । प्रतिवर्ष आप आर्यजगत् मे चल रहे, गुरुकुलों को, टंकारा - ट्रस्ट को दान देते रहते है । इसमें अतिशयोक्ति न होगी कि, सारे आर्यजगत् को रावजी की ओर से कुछ न कुछ आर्थिक लाभ होता ही है । श्री राव हरिश्चंद्रजी पारसमणि पत्थर हैं। इनके संपर्क में आनेवाला कुंदन बन जाता है । आपने अपने ''ग्राम बीगोपुर'' में अपने सारे रिश्तेदारों को नौकरियाँ लगा दी हैं। सारा बीगोपुर ग्राम आपका लोहा मानता है । गाँव में आपका वही - सम्मान है जैसे राजा का अपनेराज्य में होता है । मुझे भी प्रतिनिधि सभा का आपने एक बार नहीं, तीन बार प्रधान बनाया है ।

ऐसी महान् विभूति को परमपिता परमेश्वर सुंदर स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदान करे, यही मेरी शुभकामनाएँ हैं।

प्रधान

आ. प्र. सभा नागपुर(महाराष्ट्र)

नर रत्न के रूप में राव हरिश्चन्द्र आर्य

आचार्य राजकुमार जी

आचार्य राजकुमार जी एक विद्वान् प्रवक्ता एवं महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त व दीवानें है। आपने बानसूर के निकट एक आश्रम का निर्माण किया है । आप आश्रम के संचालक हैं । आस पास की जनता को आपसे धार्मिक एवं आध्यात्मिक मदद मिलती है ।

जब किसी भी राष्ट्र का सौभाग्य होता है तो उसमें नरनत्न के रूप में महान् आत्मायें जन्म लेती हैं । इसी भाव के अनुरूप "दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते" वेद के इस आदर्श वचन को साकार करने वाले कर्ण व दधीचि के सदृश शीर्षस्थ महान् दानवीर, आर्य समाज के गौरव, वैदिक सम्यता व संस्कृति के सुदृढ प्रहरी, महर्षि दयानन्द के कार्यों को संजीवनी प्रदान करने वाले पुरोधा, सौम्य स्वभाव, त्याग व तपस्या की मूर्ति, गोभक्त, कर्मठ, राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का जन्म चंद्रवंशीय क्षत्रियों की महान् यदुवंश शाखा में गाँव - बीगोपुर, तहसील - नारनौल, जिला महेन्द्रगढ़ (हरि.) के श्री राव धन्नाराम जी के पावन परिवार में माता शृगांरी देवी जी की गोद से दिनांक १५ अप्रैल सन् १९३४ को हुआ।

आप बचपन से ही लग्नशील, पुरुषार्थी, मिलनसार, सभ्य व शिष्ट मेधावी, ईमानदार, परोपकारी आदि सद्गुणों को संजोये हुये हैं । उच्च शिक्षा प्राप्त कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करके स्व-परिवार को आदर्शस्वरूप प्रदान किया तथा आपके परिवार में बड़ी कुशलता श्रद्धा व निष्ठा के साथ महायज्ञों को परिजन नियमित करते हैं । तथा परिवार में आर्य जगत् के बड़े-बड़े विद्वान् व तपोनिष्ठ महात्मा, साधु-सन्यासी व भजनोपदेशक एवं समाज सुधाकर पधारते रहे हैं। उन सभी का बड़ा ही आदर मान सत्कार आदि करते रहे हैं ।

राव साहब ने वैद्यनाथ फार्मेसी नागपुर के महाप्रबन्धक के रूप में व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि समाओं तथा अन्य संस्थाओं के संरक्षक प्रधान, मन्त्री आदि पदों पर रहकर ईमानदारी कुशलता, कर्मठता से अपने दायित्व का निर्वहन कर राष्ट्र सेवा की है ।

आपने 'राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट' बनाकर देश के आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों व साधु-सन्यासियों को "आर्यरत्न पुरस्कार" जो एक लाख रुपये का होता है और "आर्य विभूषण पुरस्कार" आदि पुरस्कारों को बनाकर लाखों रुपये की राशि प्रदान कर सम्मानित करते रहे हैं ।

देश की धार्मिक संस्थाओं जैसे गुरुकुलों, संस्कृत पाठशालाओं, अनाथालयों, औषधालयों, वैदिक पुस्तकालयों, गौशालाओं, आर्यसमाजों, यज्ञशालाओं व समाज के भवन निर्माणार्थ एवं प्रतिभावान् छात्र-छात्राओं को वार्षिक छात्रवृत्ति के रूप में लाखों रुपयों कि राशि अपनी कमाई से प्रदान कर चुके हैं ।

सन् २००८ में तपोनिष्ठ महासन्त आदित्य ब्रह्मंचारी घनश्यामदास जी महाराज, जो मेरे गुरु भी हैं के श्री कृष्ण आश्रम के वार्षिकोत्सव पर मैंने राव साहब को आमन्त्रित किया था और राव साहब कार्यक्रम में पधारे थे और आपने आश्रम में यज्ञशाला निर्माणार्थ ५१००० रुपये के सहयोग की मंच से घोषणा की जबकि रावसाहब को किसी प्रकार के सहयोग के लिए नहीं कहा था । सन् २००९ में आर्य समाज बीगोपुर जो राव साहब की ही देन है, के वार्षिकोत्सव पर मुझे भी वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था । अनेक संस्थाओं के संचालकों व प्रतिनिधिसमाज सेवियों को संस्थाओं के विकासार्थ लाखों रुपये सम्भवतः १०-१५ लाख रुपये की राशि विशाल जन समूह की उपस्थिति में भेंट की और मुझे भी (आंचार्य राजकुमार शास्त्री, शास्त्रार्थ महारथी) को अपने आश्रम श्री कृष्ण आश्रम बालावास, बानसूर, जिला-अलवर (राज.) में सुन्दर यज्ञशाला निर्माणार्थ एक लाख रुपये की राशि प्रदान की । जबकी आश्रम के कार्यक्रम में घोषणा तो स्वेच्छा से ५१००० रुपये की थी । जब कभी भी मैं राव साहब के पास फोन करता हूँ तो राव साहब कहते हैं आचार्य जी, आप फोन काट दो, मैं इधर से आपके पास फोन करूंगा क्योंकि आपके पैसे खर्च होते हैं और राव साहब फोन करते और कहते हैं कि विद्वानों का खर्च नहीं करवाना चाहिए, उनका तो सहयोग करना चाहिए जो देश का कार्य करते हैं । ऐसे उदात्त विचारों के धनी राव साहब को परमात्मा ने सभी सद्‌गुण, सम्पत्ति व अपार धन दिया है । जो तन, मन, धन, से राष्ट्र की सेवा में वर्तमान में वानप्रस्थ बनकर समर्पित हैं । ऐसे नवरत्न व महान् देश के महान् दानवीर श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है व अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है । एतदर्थ हार्दिक प्रसन्नता है और परमात्मा से प्रार्थना है कि राव साहब को और उत्तम स्वास्थ्य व शक्ति, सामर्थ्य प्रदान करे । जिससे और अधिक से अधिक वैदिक संस्कृति के रक्षार्थ अपने समस्त सम्बल से महर्षि दयानंद सरस्वती के स्वप्नों को साकार करनें में संजीवनी प्रदान करते रहें । उपरोक्त शब्द राशि राव साहब के अभिनन्दन ग्रन्थ हेतु प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

संपर्क- श्रीकृष्ण आश्रम बालावास
बानपूर, जिला- अलवर (राजस्थान)
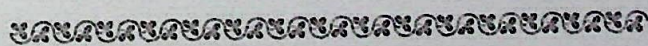
कल्याणकारी वचन

विषयों को भोगकर, इन्द्रियों की तृष्णा को समाप्त करनेवाला तुम्हारा विचार ऐसा ही है, जैसा कि आग को बुझाने के लिए उसमें घी डालना। जैसे आग में घी डालने से आग अधिक-अधिक बढ़ती है उसी प्रकार भोगों को भोगने से तृष्णा और अधिक बढ़ती है।

"राव हरिश्चन्द्र आर्य एक सच्चे व समर्पित आर्य समाजी हैं"

खुशहाल चन्द्र आर्य, कोलकाता

श्री खुशहालचन्द्र जी आर्यसमाज बंगाल के प्रसिद्ध आर्य नेता तथा आर्यत्व की प्रेरणा देनेवाले हैं। आपकी आर्यजगत् के प्रसिद्ध लेखकों में गिनती है। महर्षि दयानन्द एवं आर्य सिद्धान्तों पर आप अधिकार पूर्वक प्रेरणाप्रद लिखते हैं।

पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती का एक स्नेहभरा पत्र (दिनांक २/५/२०१० को लिखा) मुझे प्राप्त हुआ, जिसको पढ़कर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। उन्होंने उस पत्र में लिखा था राव हरिश्चन्द्र आर्य जो आर्य जगत् के एक मूक सेवक, महर्षि दयानन्द के परम भक्त, उदारमना, दानशील व आर्य साधु-सन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों व कर्मठ कार्यकर्ताओं को पुरस्कृत करके अपने धन का सदुपयोग करने में लगे हैं, उनका अमृत महोत्सव इसी वर्ष मनाया जायेगा । इसी पुनीत अवसर पर एक भव्यअभिनन्दन ग्रन्थ तैयार करने के लिए समिति ने मुझसे आग्रह किया है । इसके लिए स्वामी जी ने मुझे भी आर्यसमाज का एक सेवाभावी व वफादर कार्यकर्ता समझकर राव जी के सम्मान में कुछ विचार लिखकर भेजने का आदेश दिया, जिनको अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित किया जा सके । स्वामी जी ने मुझे इस योग्य समझा, इसके लिए मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ । मुझे उस निरभिमानी, सरलता व सादगी की प्रतिमूर्ति, महान् परोपकारी, उदार हृदय, जन-सेवक, देवतास्वरूप राव हरिश्चन्द्र जी के सम्बन्ध में कुछ लिखने में जो अपार आनन्द का अनुभव हो रहा है, वह अवर्णनीय है ।

जैसे किसी सच्चे देश भक्त को देश पर बलिदान होने वाले शहीदों की प्रशंसा करने में जो आनन्द आता है, वही आनन्द मुझे अभिनन्दनीय व्यक्तित्व राव जी की प्रशंसा करने में आ रहा है। वैसे तो आदरणीय राव हरिश्चन्द्र जी आर्य से मेरा कभी भी सीधा सम्पर्क व परिचय नहीं हुआ है। परन्तु अधिकतर आर्य पत्र-पत्रिकाओं में इनके द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों के सम्बन्ध में पढ़कर तथा इनके प्रशंसक व परिचितों से इनकी प्रशंसा सुनकर मुझे इनके बारे में काफी जानकारी हो गई है। मैं इनके उदार हृदय, दृढ़ आर्य समाजी, पक्के ऋषि भक्त, कर्मठ व लगनशील कार्यकर्ता, कर्तव्य परायणता तथा आर्य जगत् के मूर्धन्य सन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों व कर्मठ कार्यकर्ताओं में सही आर्यत्व को पहचानकर जिस प्रसन्नता व उल्लास के साथ उनका सम्मान करते हैं, इन सबका हृदय से प्रशंसक हूँ । इस पुनीत कार्य की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है।

सम्पर्क करने से तो परिचय होता ही है, साथ ही परिचय व जानकारी मनुष्य के लिये अच्छे कार्योंसे व अच्छे गुणों से भी होती है । जैसे राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, दयानन्द, बीर सावरकर व सुभाष आदि से आपका और हमारा कोई सम्पर्क व परिचय नहीं है, पर जानते हम सब हैं । इसके पीछे कारण यह है कि उन्होंने

इतने अधिक परोपकार, जन-सेवा व देश -सेवा के कार्य किये और उनमें मानवता के अधिकतर गुण जैसे दया, उदारता, सहृदयता, संयम, स्वाभिमान, साहस, ईमानदारी, सच्चाई, निष्पक्षता आदि गुण विद्यमान थे जिससे सभी उनको जानते हैं और सभी के ह्रदय में बसे हुऐ हैं। यदि कोई उनके विरुद्ध भी विचार रखता है, वह भी उनके आर्यत्व और गुणों का प्रशंसक है। उसी प्रकार राव जी के सद्कार्यों व सद्गुणों के माध्यम से मेरा उनसे सम्पर्क व परिचय है और वे मेरे ह्रदय की गहराई तक बसे हुए हैं, जिसे मैं अपना सही परिचय मानता हूँ।

मुझे इस बात का हर्ष है कि मैं आर्य समाज के अधिकतर उत्सवों व सम्मेलनों में शामिल होता रहता हूँ सबसे पहले मैं सन् १९७८-७९ में स्वामी विरजानन्द की निर्वाण शताब्दी पर मथुरा गया जो स्व. ईश्वरी प्रसाद प्रेम (प्रेम भिक्षु) के सद् प्रयास से मनाई गई थी और जिसमें स्व. चौ. चरण सिंह मुख्य अतिथि थे। सन् १९८३ में महर्षि निर्वाण शताब्दी पर अजमेर, २००१ में, आर्य महासम्मेलन मुम्बई, २००२ में, गुरुकुल की शाताब्दी पर हरिद्वार, दो-तीन बार सत्यार्थप्रकाश न्यास के तत्वावधान में उदयपुर गया। कारण मैं वहाँ का ट्रस्टी भी हूँ, दो बार महर्षि बोध दिवस पर टंकारा, एक बार महर्षि निर्वाण सम्मेलन में अजमेर तथा गुरुकुल आमसेना, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के वार्षिक उत्सवों पर और सार्वदेशिक के तीन वर्षीय चुनावों पर भी दो बार दिल्ली गया हूँ। पर राव जी के कहीं पर भी दर्शनों का लाभ नहीं उठा सका। हाँ, उनके दर्शन करने की इच्छा को मैं अपने मन में संजोए हुए हूँ। ईश्वर कब पूरी करेगा यह तो भविष्य के गर्भ में है।

वैसे तो मुझे विद्यार्थी जीवन से ही लेख व कविताएँ लिखने का शौक है, पर पन्द्रह वर्षोंमें तो मैंने करीब २७५-३०० लेख और १००-१२५ कविताएँ लिखी हैं, जो आर्यजगत् की अधिकतर मुख्य-मुख्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं और होती रहती हैं। जैसे उनके सेवा कार्यों व सद्गुणों से उनसे मेरा परिचय है, वैसे ही मेरी कृतियों के माध्यम से मेरा परिचय उनको भी अवश्य होगा। यदि है, तो यह मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है।

राव जी का जन्म गाँव बीगोपुर (हरियाणा) में स्व. धन्नाराम के घर माता शृंगारी की कोख से सन् १९३४ में हुआ। इनके पिता एक अति विनम्र, सरल, सीधे-सच्चे व उदार ह्रदय के किसान थे। इसी प्रकार इनकी माता भी सरलता की प्रतिमूर्ति व उदार स्वभाव की गृहिणी थीं। इन दोनों के संस्कार राव जी पर पड़े। इनमें अमर आर्य संस्कार बचपन में ही आर्य भजनोपदेशकों द्वारा पड़ गये थे। ये छः भाई-बहन थे। जिनमें रावजी सबसे छोटे थे। इनके तीन पुत्र हुए जिनमें एक बीचका पुत्र जिसका नाम हितपाल था उसका एक वर्ष बाद ही स्वर्गवास हो गया। दो पुत्र जिनमें सबसे बड़े का नाम महिपाल और सबसे छोटे का नाम यशपाल है। इनकी दोनों पुत्रवधुएं सेवाभावी, मृदुभाषी, व्यवहार कुशल, शिक्षित, धार्मिक व आतिथ्य करने में प्रवीण और आज्ञाकारिणी हैं। इस प्रकार इनका पूरा परिवार वैदिक सिद्धान्तवादी है। इसलिए इनका परिवार स्वर्गतुल्य है।

राव जी ने बहुत छोटी उम्र में ही श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड की झाँसी ब्राँच में सन् १९५४ में लिपिक के रूप में सेवा कार्य करना आरम्भ किया और चार साल बाद ही आपकी योग्यता, सूझ-बूझकार्यकुशलता व व्यावहारिकता पर प्रसन्न होकर मालिक ने आपको नागपुर शाखा में स्थानान्तरित कर

दिया और, वहाँ सन् १९५८ में आपको कोषाध्यक्ष बना दिया और फिर जल्दी ही आपकी योग्यता और गुणों पर मुग्ध होकर आपको नागपुर शाखा का महाप्रबन्धक बना दिया गया। सन् २००७ में अपने आग्रह से आपने अवकाश प्राप्त कर लिया। अब तो आपने अपना पूरा समय आर्यसमाज की सेवा में लगाना आरम्भ कर दिया। आप आर्य विद्वानों, संन्यासियों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों व कर्मठ कार्यकर्ताओं को पुरस्कृत करके उनको आर्यरत्न और आर्य विभूषण पुरस्कार से सम्मानित कर रहे हैं जिसमें आप एक वर्ष में लाखों रुपए खर्च करके आर्य समाज की भरपूर सेवा कर रहे हैं, जिसको हम पाँच महायज्ञों में से एक पितृ यज्ञ की संज्ञा दे सकते हैं । ऐसे काम हर सम्पन्न व सामर्थ्यवान् आर्यसमाजी को करने चाहियें ।

मैं राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के द्वारा किये जा रहे पुनीत कार्यों की हृदय से सराहना करता हूँ। साथ ही परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि इनको पूर्ण स्वस्थ रखते हुए दीर्घ-आयु प्रदान करें ताकि ये आर्य समाज की तन, मन, धन से और अधिक सेवा कर सकें ।
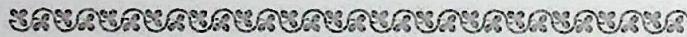
नीति-वचन

संसार में वे मनुष्य 'सत्पुरुष' हैं, जो अपने स्वार्थ को छोड़कर दूसरों की भलाई के लिए अपने तन-मन-धन को लगा देते हैं। दूसरे प्रकार के मनुष्य 'सामान्य' कहलाते हैं जो अपने काम न बिगाड़ते हुए दूसरों की भी भलाई करते हैं। तीसरे प्रकार के मनुष्य 'राक्षस' कहलाते हैं जो अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए दूसरों के बने बनाये काम को बिगाड़ देते है। परन्तु जो लोग बिना किसी स्वार्थ के (अपने लाभ के) व्यर्थ ही दूसरों की हानि करते हैं, ऐसे चौथे प्रकार के मनुष्यों को किस नाम से पुकारा जाये हम नहीं जानते, आप स्वयं ही सोचें। अर्थात् वे 'राक्षस' से भी नीच स्वभाव के हैं।
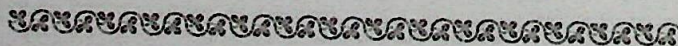
समाजसेवा को समर्पित राव हरिश्चन्द्र

डा. जे.एस. यादव

आप यादव महासभा के सचिव हैं, और कुरुक्षेत्र के इलाके में सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जाने जाते है। देश, जाति, धर्म के लिये आप निष्ठावान् पुरुष हैं।

'चन्द्रमे जे अलांछन, मार्तंड जे तापहीन' अर्थात् चन्द्रमा जिस पर दाग नहीं हो, सूर्य जिसमें जलाने वाली, भस्म करने वाली आग नहीं हो- सज्जन ऐसे होते हैं । इस वचन को अपने नाम के अनुसार सार्थक बनाने वाले हैं राव हरिश्चन्द्र आर्य । सदैव शीतल चन्द्रमा जैसे, मगर सूर्य जैसे दाहक नहीं ।

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रवाह की समृद्ध धारा जिस घर में अखंड बह रही थी, ऐसे घर में आर्य जी का शैशव गुजरा । भारतीय परम्परा के अभिजात वांग्मय से उनका यौवन प्रस्फुटित हुआ। जन्मजात चिन्तनशीलता ने महाभारत का अध्ययन करते हुए एकलव्य के प्रति हुए अन्याय को स्पष्ट रूप से दिखाया। रामायण की काव्यानुभूति सीता का पक्ष स्वीकार करने में सहायक सिद्ध हुई । ऐसे व्यक्ति का अपने समाज के प्रति दृष्टिकोण बलिदान, प्रतिकूल परिस्थितियों में अनुकूल सोचना लाजिमी था । आवश्यकता थी मेहनत और लगन की, जिसे चरितार्थ करते हुए स्वयं एक उदाहरण बने ।

सूखा, पानी की कमी, शिक्षण संस्थाओं का अभाव, कृषि पर आधारित परिवार अर्थात् आजादी के बाद के पूर्ण पंजाब के पिछड़े क्षेत्र दक्षिणी पंजाब अर्थात् हरियाणा और इस दक्षिण के दक्षिण अर्थात् जिला महेन्द्रगढ़ की तहसील नारनौल के गांव बीगोपुर में १५ अप्रैल, १९३४ में हरिश्चन्द्र आर्य का जन्म हुआ । पिता धन्ना राम का साया बचपन में ही उठ गया तथा छः भाई-बहनों में सबसे छोटे हरिश्चन्द्र का पालन-पोषण बड़े भाई धनसीराम एवं माता शृंगारी देवी की देखरेख में हुआ । माता-पिता अक्षर ज्ञान से रहित थे, लेकिन माता सरलता की मूर्तिरूप, धर्मपारायण व उदार स्वभाव की थीं, यही संस्कार आपको प्राप्त हुए । संसाधनों की कमी, प्रतिकूल परिस्थितियों तथा मार्गदर्शन के अभाव में शिक्षा, गौ सेवा, समाज सेवा के क्षेत्र में आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के सच्चे सिपाही बन आपने वह कार्य कर दिखाया, जिसे याद कर आने वाली पीढ़ियां अपने आपको गौरवन्वित महसूस करेंगी । यदि मन में इच्छा व दृढ़संकल्प हो तो व्यक्ति अपनी बुलंदियों पर अवश्य पहुंच जाता है, अपने को सिद्ध कर दिखाया ।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण गुरुजनों से निजी पाठशालाओं में हुई । तत्पश्चात् स्कूली शिक्षा नजदीक के नगर 'नांगल चौधरी' के राजकीय स्कूल में हुई । इस शिक्षा के पश्चात् आपने अनुभव किया कि इस खेती-बाड़ी की सीमित आय से इस बड़े परिवार का पालन-पोषण समुचित ढंग से नहीं हो सकता । अतः

आपने अपनी योग्यता के आधार पर १ जनवरी १९५४ को झांसी स्थित श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड में लिपिक के रूप में सेवा कार्य प्रारम्भ किया । वहां पर आपकी कार्य कुशलता तथा सूझबूझ से प्रभावित होकर श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड के मैनेजमेंट ने आपका नागपुर शाखा में स्थानांतरण कर दिया । वहां १९५८ से कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य किया और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा । आपकी तत्कालीन सूझबूझ, कर्मठता और ईमानदारी ने आपको नागपुर शाखा में महाप्रबंधक (जनरल मैनेजर) के पद पर पहुँचाया । इसी पद पर कार्य करते हुए आप ३१ मार्च २००७ को सेवानिवृत्त हुए । यद्यपि आप १२-१३ वर्ष पहले ही सेवा कार्य छोड़ना चाहते थे, परन्तु श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड के अधिकारियों ने आपको अवकाश नहीं दिया । २००७ में भी आपने बहुत आग्रह करके अपने कार्य से अवकाश लिया, क्योंकि ऐसी विभूति को छोड़ना भला कौन चाहेगा ?

जहां आप 'श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड' में अपने सेवा कार्य को तत्परतापूर्वक निभाते रहे वहां आप सामाजिक कार्य एवं वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार से भी उदासीन नहीं रहे, क्योंकि सन् १९४७-१९५३ तक अपने गांव में आर्य भजनोपदेशकों के उपदेशों से प्रभावित होकर आप वैदिक धर्म के रंग में रंग चुके थे । तभी से आपकी आर्य सिद्धान्तों पर अटूट श्रद्धा व आस्था उत्पन्न हो गई थी और प्रारम्भ से ही आर्यसमाज के सदस्य बन गए थे । आपने अपने ट्रस्ट की ओर से अपने ग्राम बीगोपुर में एक भव्य आर्य समाज मन्दिर का निर्माण किया है । उसके वार्षिक उत्सव तथा प्रचार-प्रसार के अन्य कार्यक्रम समय-समय पर आप करवाते रहते हैं । आप आर्य समाज बीगोपुर के संरक्षक हैं, परन्तु आपका यह क्रम यहीं पर नहीं रुका। जब आप नागपुर गए तो वहां आर्य समाज के सदस्य बने, कई वर्षों तक उस समाज के प्रधान व मंत्री रहे। उसी समाज की ओर से प्रतिनिधि बनकर आप आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ के कोषाध्यक्ष भी अनेक वर्षों तक रहे तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अंतरंग सदस्य और उप प्रधान के पद पर भी आपने कार्य किया । आपकी नम्रता, सौजन्यता एवं सूझबूझ से सारा आर्य जगत् प्रभावित है । सभी संस्थाओं के अधिकारी आपको अपनी संस्था से जोड़कर गौरव अनुभव करते हैं । अतः मध्यप्रदेश एंव विदर्भ के प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर भी कार्य करने का आग्रह वहां के आर्यजनों ने किया, परन्तु समयाभाव के कारण इस पद को आपने अस्वीकार कर दिया कि मैं अपने मूल प्रतिष्ठान में रहते हुए इस पद के उत्तरदायित्व को निभा नहीं पाऊंगा, फिर भी आप अनेक संस्थाओं की देखभाल करते हैं, कहीं के प्रधान, कहीं के संरक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं ।

आपका विवाह १९ मई १९५८ को एक धर्म पारायण, सेवाभावी, शान्तशिष्ट, सुशीला, पतिपारायण, मृदु स्वभाव की देवी श्रीमती शान्ति देवी, राजस्थान के ग्राम छाजका नांगल जि. सीकर के साथ वैदिक पद्धति से हुआ और तभी से आप महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तानुसार श्रद्धा और निष्ठा से गृहस्थ जीवन का सफलतापूर्वक सुखमय जीवन यापन करते रहे हैं । विवाह के पीछे आपको तीन पुत्र रत्न प्राप्त हुए । इनमें से सबसे बड़े श्री महिपाल आर्य का जन्म १९६२ में एव १९६५ में छोटे पुत्र यशपाल आर्य उत्पन्न हुए । इनके मध्य में एक सुपुत्र हितपाल आर्य उत्पन्न हुआ, परंतु एक वर्ष के पीछे ही उसका स्वर्गवास हो गया । अब

दोनों श्री महिपाल आर्य और श्री यशपाल आर्य अपने पिता जी के गुणों के अनुकूल शिक्षा-दीक्षा से सर्वविध समर्थ होकर पारिवारिक दायित्वों को सफलतापूर्वक निभा रहे हैं । इनमें से बड़े सुपुत्र महिपाल का विवाह १९८३ में सौ. कां. राजेश्वरी देवी से तथा यशपाल का विवाह १९९० में सौ. कां. स्नेहलता से हुआ । दोनों ही पुत्रवधुएं सेवाभावी, व्यवहारकुशल, मृदुभाषी, शिक्षित धार्मिक आतिथ्य करने में प्रवीण, पतिभक्ति में रत व आज्ञाकारिणी हैं । वर्तमान में बड़े पुत्र महिपाल को एक लड़की बड़ी कुमारी सुषमा व एक छोटा लड़का राहुल आर्य है। छोटे पुत्र यशपाल को एक लड़की सुमेधा बड़ी व छोटा लड़का हिमांशु है। नागपुर में बड़े पुत्र महिपाल आर्य के पास श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड का ५ जिलों के लिए सुपर स्टॉकिस्टशिप व एक खुदरा दवा का शोरूम है एवं छोटे पुत्र यशपाल आर्य के पास पंतजलि आयुर्वेद लि. एवं दिव्य फार्मेसी हरिद्वार की पूरे विदर्भ एवं पश्चिम महाराष्ट्र के लिए सुपर स्टॉकिस्टशिप है एवं इन्हीं के ६ सेवा केन्द्र तथा दो दवाओं की खुदरा दुकानों का व्यवसाय है ।

सन् २००३ की २४ जनवरी को धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी आर्या का (असहनीय बिछोह) दुःखद निधन हुआ, जिसे परिवार आज तक सह नहीं पाया है। वह धार्मिक, शान्त-स्वभाव, आतिथ्य सेवाभावी, धर्म-पारायण पारिवारिक महिला थीं, उनके सान्निध्य में परिवार फला-फूला व खुशहाल रहा।

धर्मपत्नी के स्वर्गवास के उपरान्त श्री आर्य जी का जीवन वानप्रस्थ के रूप में बीत रहा है । आपका अधिकतर समय सेवा एवं वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार में लग रहा है।

वेद कहता है - 'अहं दाशुषे विभजामि भोजनम्' अर्थात् मैं दानशील उदारचेता को सर्व ऐश्वर्य प्रदान करता हूं । वैसे भी यथार्थ में जीवन में भाग्य ने आपका खूब साथ दिया । आपके मन में धन का अहंकार नहीं आया । ये दोष आपको छू भी नहीं सके । इस धन-सम्पत्ति को भगवान् की देन समझकर उसी के अनुसार उपयोग करना आरम्भ किया । एक ग्रामीण लोकोक्ति है -

''पानी बाढ़े नाव में, घर में में बाढ़े दाम ।
दोनों हाथ उलीचिए, यह सज्जन का काम ।।''

अर्थात् यदि नाव में पानी भरने लगे तो जैसे उस पानी को सावधानीपूर्वक बाहर फेंका जाता है, उसी प्रकार घर में बढ़े हुए धन का सदुपयोग दान के रूप में करना चाहिए, अन्यथा बिना दान के बढ़ा हुआ धन घर के विनाश का कारण बन जाता है। जैसे तालाब के पानी में दुर्गन्ध हो जाती है। यही अवस्था बिना दान दिए धन की होती है । स्वाध्याय के कारण इस बात के रहस्य को समझते हुए आपने हृदय खोलकर दान देना प्रारम्भ किया। आपके इस उदारतापूर्वक सहयोग से देश की अनेक संस्थाएं चाहे वे शैक्षणिक हों, चिकित्सालय हों, धर्मशाला हों, समाजसेवक हों, प्रकाशक हों, सभी को सहयोग आप सामर्थ्यानुसार करते आ रहे हैं। प्रतिवर्ष लाखों रुपये विभिन्न संस्थाओं को, साधु-महात्माओं, विद्वानों को, आप यथाशक्ति सहयोग करते हैं । इसमें सारे देश की अनेक संस्थाएं आपके आशीर्वाद से फल-फूल रही हैं । श्री आर्य जी की यह उदारतापूर्ण दानशीलता उत्तरोत्तर बढ़ रही है । अब आप एक सर्वविध सुविधापूर्ण चिकित्सालय लाखों रुपये लगाकर अपने गांव बीगोपुर में तैयार करवा रहे हैं। इसके निर्माण का बहुत सारा कार्य पूर्ण हो चुका है, वहां अभी अस्थायी रूप से डॉक्टरों ने कार्य प्रारम्भ कर दिया है ।

देश के एवं आर्यजगत् के प्रायः अधिकतर पूज्य साधु सन्त महात्मा और आर्य विद्वानों का आशीर्वाद आपको प्राप्त है । इनमें से अनेक साधु, महात्मा समाज के अग्रणी हैं, जिन्होंने आपके घर में आकर आपके घर को पवित्र किया है । जो भी आपके घर आता है माता श्रीमती शान्तिदेवी जी की सेवा-शुश्रूषा से प्रभावित हो इस परिवार की शुभ कल्याण एवं समृद्धि के लिए प्रभु से कामना करता है ।

आर्य जी जिस दर्शन परम्परा को मानते हैं उसका सबसे कठिन तत्व है **'साधन शुचिता'** अर्थात् परिणाम को लक्ष्य करते हुए साधन की नैतिक मूल्यों के साथ समझौता न करना । इस युग के वातावरण में इस व्रत को निभाता बहुत ही कठिन कार्य है। इसको आर्य जी जैसे व्यक्ति ही निभा सकते हैं।

संपर्क-
१, कुबेर कालोनी, झांसा रोड, कुरुक्षेत्र

प्रभु से भक्त की प्रार्थना

हे सर्वव्यापक आनन्द के सागर प्रभुदेव! मुझे उत्तम बुद्धि प्रदान कीजिये। हे दीनबन्धो! मुझ में जो बुरे गुण, कर्म, स्वभाव हैं, उन्हें कृपा करके दूर कीजिये। मेरी इन्द्रियां और मन अत्यन्त चंचल तथा अपवित्र हैं, इनको पवित्र तथा स्थिर कीजिये। मैं आपकी शरण में आया हूँ आप दया कर मुझ सेवक को अपने आश्रय में रख लीजिये। हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! आप में जो शक्तियाँ हैं वे मुझ में धारण कराइये तथा मुझ में जो दुर्गुण, दीनता, निर्बलता है, उसे शीघ्र ही दूर कीजिये। हे दयानिधान! हमारे भारत देश के सभी निवासियों को शूरवीर, तेजस्वी, धैर्यशाली बनाइये। हे अनादे! मेरी यह प्रार्थना सुनिये और मेरी कामना को शीघ्र ही पूरा कीजिये।।
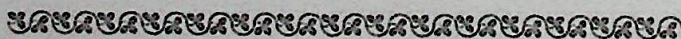
सौजन्यता और सरलता के प्रतीक श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य

कुमारी सुव्रता शास्त्री कन्या गुरुकुल आश्रम आमसेना में निवास करते हुए अध्ययन-अध्यापन कर रही है। स्वलक्ष्य के प्रति गुरुजनों के आशीर्वाद से प्रगति कर रही है।

"मुक्तसंगोऽनहंवादी
धृत्युत्साहसमन्वितः।
सिद्ध्यर्थो हिनिर्विकारः
कर्त्ता सात्विक उच्यते।"

आर्य जी का जीवन इसी श्लोक के अनुरूप है। उनके व्यक्तिगत पारिवारिक,सामाजिक,व्यावसायिक जीवन में इस श्लोक का व्यावहारिक रूप दिखता है। आप बचपन से ही कुशाग्रबुद्धि, नम्र, सरल,सीधे-सादे,उदार स्वभाव की प्रतिमूर्ति हैं।

आज आर्यजगत् के अनेक उच्चकोटि के विद्वान्, साधु, महात्मा, कर्मठ कार्यकर्त्ता इनके साथ इसी प्रकार स्नेह सम्बन्ध में बंधे हुए हैं। चाल-चलन, रहन-सहन से सर्वथा सादे-सरल दिखने वाले श्री राव जी का व्यक्तित्व आर्य जगत् के उच्चकोटि के कार्यकर्त्ताओं में गिना जाता है। आपका गृहस्थ जीवन भी आदर्श रहा। आपकी धर्मपत्नी माता श्रीमती शान्तिदेवी भी एक आदर्श महिला थीं।

वक्त नूर को बेनूर कर देता है,
थोड़े से जख्म को नासूर कर देता है।
कौन चाहता है अपनों से दूर रहना,
पर वक्त सबको मजबूर कर देता है ।।

आपके दो सुपुत्र श्री महिपाल और श्री यशपाल भी आपके चरणानुगामी हैं। इस प्रकार आपका सारा परिवार एक आदर्श आर्य परिवार है।

देश के एवं आर्यजगत् के प्रायः पूज्य साधु, संत, महात्मा जो समाज में अग्रणी हैं, उन्होंने आपके घर में आकर आपके घर को पवित्र किया है।

श्री राव जी अनेक वर्षों तक मध्यप्रदेश एवं विदर्भ आर्यप्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष रहे। उन दिनों आप सारे आय-व्यय पर तेज नजर रखते थे, फलस्वरूप खूब वैदिक धर्म का प्रचार तो हुआ ही, सभा का कोष भी उत्तरोत्तर आगे बढ़ा। कई बार आर्यजनों ने आपको प्रान्तीय सभा का प्रधान बनाने का भी यत्न किया, परन्तु आपने नम्रतापूर्वक इस पद को अस्वीकार कर दिया। आप कह देते थे कि मैं वैद्यनाथ भवन के कार्य में व्यस्त हूं अतः प्रधान पद के अनुसार कार्य नहीं कर पाऊंगा। इस प्रकार आप उच्चपद को ठुकरा देते रहे जबकि अनेक लोग छोटे-छोटे पद के लिए लड़ते-झगड़ते हैं। इससे आपका समाज के प्रति समर्पण भाव तथा निस्पृहता ज्ञात होती है। ऐसे उदार भावना वाले त्यागी आर्य जी को अमृत महोत्सव पर शत शत नमन!

कुमारी सुव्रता शास्त्री,
गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा)

सदाचारी व्यक्तित्वः राव हरिश्चन्द्र आर्य

आर्य मिश्नरी पं. ताराचन्द जी वैदिक आर्य समाज के तड़पवाले श्रद्धालु भजनोपदेशक थे। आपके उपदेश और भजन बहुत ही प्रभावशाली और प्रेरणाप्रद होते थे। गत जून २९/६/२०१० को संक्षिप्त बीमारी के बाद अचानक आपका स्वर्गवास हो गया। स्वर्गवास से दो दिन पहले ही यह लेख आपने लिख रखा था।

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक् संयमः।
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रो व्ययः ।
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुधर्मस्य निर्व्याजता।
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ।।

'ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शौर्य का आभूषण वाक्संयम, ज्ञान का भूषण शांति, शास्त्र की शोभा विनय, धन की गरिमा सद्व्यय, तप की महत्ता अक्रोध, प्रभुत्व की शोभा क्षमादान से, धर्म की शोभा निष्कपटता से और इन का कारणस्वरूप 'सदाचार' सभी का भूषण है ।''

समाज को नई दिशा व प्रेरणा सदा से महान् विभूतियों के द्वारा ही मिली है, वे देहरी के दीपक की भाँति बाहर और भीतर प्रकाश से आलोकित करते हैं। इसी तरह का एक सदाचारी और परोपकारी व्यक्तित्व है राव हरिश्चन्द्र आर्य, जो किसी नाम या परिचय का मोहताज नहीं। राव हरिश्चन्द्र आर्य के परिवार का सम्बन्ध मुझसे इनके बाल्यकाल से ही रहा है। इनके पिताश्री स्व. धन्नाराम जी आर्यभक्त सज्जन पुरुष थे। इनके अग्रज श्री धनसीराम जी पक्के आर्य समाजी थे, जो आर्य भजनोपदेशकों से गाँव में समय-समय पर, धर्म प्रचार करवाते रहे। जब मैं वैदिक धर्म प्रचार के लिए अथवा यदा-कदा वहाँ जाता तो एक श्रध्दालु, ज्ञानपिपासु और सदाचारी युवक को विद्वानों की सेवा में निश्छल भाव से सेवारत देखता तो अनजाने ही मन ही मन सोचता कि एक दिन चलकर यह युवक इस समाज में अलौकिक व्यक्तित्व बनकर चमकेगा । भाषण में मृदुता, कार्य में तत्परता, कोमलता, सौम्यता आदि अप्रतिम गुणों का धनी वह नवांकुर आज विशाल वृक्ष की भाँति अपनी उदारता और दानशीलता से सबको आनन्दित कर रहा है ।

मैं क्या कहूँ, राव हरिश्चन्द्र आर्य मेरे अत्यन्त निकटस्थ श्रद्धालु रहे हैं, जब भी वे नारनौल आते मुझसे मिलने अवश्य आते और विभिन्न विषयों पर परामर्श करते। अपने हाथ से कोई सुअवसर उन्होंने शायद ही जाने दिया हो। प्रत्येक धार्मिक और सामाजिक कार्यों में उनकी उदारता और दानशीलता से सभी परिचित हैं। मेरे द्वारा स्थापित ''वैदिक पुस्तकालय'' और आर्यकृति ''

"वैदिक भजन भास्कर" के लिए इनका पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। भारतरत्न आदि पुरस्कारों का अनुसरण कर "आर्यरत्न" और "आर्य विभूषण" जैसे गौरवशाली पुरस्कारों की परम्परा स्थापित कर महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्य को अनन्य गति प्रदान की है। महाराज भतृहरि के "सत्संगतिः किं न करोति पुंसाम्" को राव हरिश्चन्द्र आर्य में उदारहरण-स्वरूप देखा जा सकता है।

मैं राव हरिश्चन्द्र आर्य की सर्वविध उन्नति एवं दीर्घायु के लिए मंगल कामना करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे इससे भी अधिक बुलन्दियों पर पहुँचें।

संपर्क-

वैदिकभवन (नारनौल)
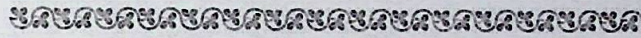
न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्। (ऋ०१.७.७)

मैं प्रभु की स्तुति का पार नहीं सकता। उसकी महिमा अनन्त है।
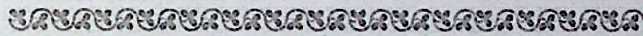
कल्याणकारी वचन

चन्दन को ज्यों-ज्यों घिसेंगे, त्यों-त्यों वह मधुर सुगन्ध प्रदान करेगा। ईख (गन्ने) को ज्यों-ज्यों पेलेंगे, त्यों-त्यों वह अधिक मीठा रस देगा। सोने को ज्यों-ज्यों तपायेंगे, त्यों-त्यों वह और अधिक चमकता जायेगा। ठीक ऐसे ही जो महान् आत्माए हैं, उनको कोई कितना ही अपमानित करे, पीड़ा दे, बाधा पहुँचावे, वे अपने सत्य, न्याय, परापेकार, प्रसन्नता, नम्रता एवं प्रेम युक्त स्वभाव को कभी भी नहीं छोडते हैं, चाहे प्राण भी क्यों न चले जावें। साधु पुरुष को चन्दन जैसा होना चाहिए। चन्दन पर साँप लिपटे रहते है। किन्तु चन्दन उनकी कुसंगति से प्रभावित नहीं होता अपितु अपनी सुगन्ध बिखेरता रहता है।
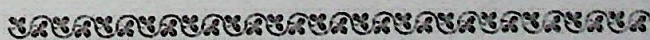
आदर्श व्यक्तित्व के धनी श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य

शरच्चन्द्र आर्य (लोहरदगा)

आचार्य श्री शरतचन्द्रजी आर्यसमाज के उदीयमान युवक मधुर एवं मितभाषी कर्मठ विद्वान् हैं। आप झारखण्ड प्रान्त के वनवासी विदेशीयत एवं नक्सलवाद से पीड़ित क्षेत्र में शान्तिआश्रम लोहरदगा का संचालन कर रहे हैं।

स्वनामधन्य श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी का जीवन बड़े ही धार्मिक एवं वैदिक मान्यताओं से परिपूर्ण रहा है । श्री आर्य ने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को स्थापित करने का महान् काम किया है ।

उनको जीवन में समावेश करने का महान् यत्न किया है। उनके अपने गाँव में आर्य भजनोपदेशकों के प्रचार से प्रभावित होकर वे आर्य समाज में आये और धीरे-धीरे स्वाध्याय से आर्य विद्वानों के सान्निध्य से वे पक्के आर्य बन गये । सामान्य कृषक परिवार में उनका जन्म हुआ था, परंन्तु माता पिता के धार्मिक होने के कारण वे प्रबल संस्कारी थे । यही संस्कार उन्हें आर्य विचारधारा में प्रविष्ट होने में सहायक सिद्ध हुए । घर की आर्थिक स्थिति उतनी सुदृढ़ नहीं थी अतः आर्य जी के महत्वाकांक्षी मन ने चाहा कि कुछ और किया जाए । अतः उन्होंने बैद्यनाथ कम्पनी में लिपिक के रूप में सेवाकार्य प्रारंभ किया । परन्तु अपनी सूझ-बूझ , कार्यदक्षता व आर्यत्व के गुणों ने उन्हें कम्पनी के महाप्रबन्धक पद तक पहुंचा दिया । इस महान् उत्तरदायित्व को संभालते हुए भी श्री आर्य आर्यसमाज से कभी विमुख नहीं हुए । नागपुर में रहते हुए वहां आर्यसमाज के प्रधानमन्त्री के रूप में प्रतिदिन अपनी सेवायें देते रहे । वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ सभा के कार्यों को ऊँचाइयों तक पहुंचाया । वे आर्यसमाज के एक निष्ठावान् सेवक हैं ही **''अतिथि देवो भव''** के आदर्श से भी अनुप्राणित हैं और केवल श्री आर्य ही नहीं उनके पूरे परिवारने अतिथि सेवा के ध्येय को अपनाया है । यह बहुत सौभाग्य की बात है कि आर्यसमाज के लब्धप्रतिष्ठित कई साधु संन्यासियों व महात्मा-विद्वानों का सेवा का अवसर आर्यपरिवार को मिला है ।

श्री राव हरिश्चंन्द्र जी के जीवन की चर्चा हो और उनकी दानवीरता का उल्लेख न हो तो शायद उनके जीवन का कुछ पहलू अधूरा ही रह जायेगा । श्री आर्य जी का आर्यजगत् हमेशा ही ऋणी रहेगा कि उन्होंने अपनी सात्विक आय से **''आर्यरत्न''**, **''आर्यभूषण''** जैसे पुरस्कारों से आर्यजगत् के कई लब्ध प्रतिष्ठित साधु-संन्यासी व विद्वानों को सम्मानित कर गौरव अर्जन किया है। अनेक सामाजिक संगठनों, गुरुकुलों, चिकित्सालयों व असहायों के परम हितैषी बनकर उन्हें सहयोग कर रहे हैं । 'सादा जीवन उच्च विचार' के धनी श्री आर्य में इन विचारों का अपने परिवार के अन्य सदस्यों में भी चरितार्थ किया है ।

अपने जन्म स्थान बीगोपुर में श्री आर्य द्वारा स्थापित आर्य समाज व चिकित्सालय उनके परोपकारमय जीवन का एक अनूठा उदाहरण है। वे वन्दनीय हैं, अभिनन्दनीय हैं । प्रभु उन्हें शतायु करे । चिरायु करे , ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है।

संपर्क - गुरुकुल शान्ति आश्रम
लोहरदगा, झारखण्ड

राव हरिश्चन्द्र आर्य यथा नाम तथा गुण

आचार्य ब्र. नन्दकिशोर

आप 'आर्यसमाज के हनुमान्' के नाम से जाने जाते हैं। देश-विदेश में आप वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करते हैं। आप अनेक पुस्तकों के लेखक एवं सम्पादक हैं। विशेष रूप से वैदिक धर्म के संवाहक एवं आर्य समाज के प्रहरी हैं।

प्राचीन काल के सत्यवादी हरिश्चन्द्र को कौन नहीं जानता ? उनके विषय में किसी कवि ने कहा है -

चन्द्र टरै,सूरज टरै, टरै जगत् व्यवहार।
पै दृढ़ व्रत हरिश्चन्द्र को टरै न सत्य विचार।।

उस हरिश्चन्द्र के नाटक को देखकर लोग रो पड़ते हैं, वे सत्य की खातिर सम्पूर्ण परिवार एवं सर्वस्व को होम कर देते हैं। वे दानी सत्यवादी हरिश्चन्द्र के नाम से विश्व विख्यात हैं।

''पूर्वजों की भाँति तुम कर्तव्य के मानी बनो''। पूर्वजों के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए वर्तमान आर्य जगत् के राव हरिश्चन्द्रजी आर्य दान, परोपकार, प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हैं। इनको वैदिक विद्वान्, ब्रह्मचारी, सद्गृहस्थ, साधु-संन्यासी, आर्यनेता लोग दानशील ''भामाशाह'' के रुप में जानते हैं । भारतवर्ष की पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सभी दिशाओं में राव हरिश्चन्द्र जी आर्य चाहे किसी ने इशारा किया या प्रेरणा दी हो, गुरुकुलों को, गोशालाओं को या अन्य पौराणिक संस्थायें जो परोपकार का कार्य करती हों, वे स्वयं बिना माँगे ही मुक्तहस्त से बिना पक्षपात के संस्थाओं में जाकर दान दे आते हैं।

वैदिक विद्वानों को प्रत्येक वर्ष सम्मेलनों में नागपुर, दिल्ली, आर्य समाज बीगोपुर नारनौल (हरियाणा) आहूत करके आर्यरत्न की उपाधि से अलंकृत करके एक लाख का पुरस्कार शाल, ट्राफी द्वारा सम्मानित करते हैं। इसी प्रकार दूसरे पुरस्कार आर्य विभूषण से भी सम्मानित करते हैं जिससे प्रेरित होकर वैदिक विद्वान् अधिक से अधिक वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार कर सकें। न जाने कितने ही छात्रों को, आर्यवीरदल को राष्ट्र निर्माण हेतु ''राव हरिश्चन्द्र न्यास'' की ओर से सहयोग प्रदान करते रहते हैं। महाशय राव साहब ने अपने ग्राम में जहाँ पर जन्म स्थान है वहाँ पर इन्होंने आर्यसमाज और आर्यवीर दल की स्थापना की है, नई-नई आर्य समाज शाखा का जो व्यक्ति स्थापना-संगठन करते हैं उनमें भी काफी सहयोग करते है ।

प्रायः देखा जाता है कि अनेक व्यक्ति अपने जीवन में बहुत कुछ दान करते हैं, यश को प्राप्त करते हैं, और दुनिया से चले जाते है, किन्तु अपनी सन्तति पर अच्छे संस्कार नहीं डाल पाते हैं। राव हरिश्चन्द्र जी आर्य में ऐसा नहीं है। इन्होंने तो परिवार में पुत्र, पुत्रवधू, पोते - पोतियों में अर्थात् तीन-चार पीढ़ियों में वैदिक धर्म के संस्कार कूट-कूट कर भर दिये हैं, जो देश जाति धर्म की सेवा निरंतर करते रहेंगे ।

किसी नीतिकार ने कहा है कि - **''महाजनो येन गतः स पन्थाः''** जैसे बड़े लोग सद् आचरण करते हैं, वैसे ही उनके अनुसार छोटे लोग देखा-देखी महापुरुष के पद्चिन्हों पर चलने लगते हैं।

पद्चिन्हों पर चलने लगते हैं।

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य में महापुरुषों के जो गुण होते हैं, वे सब परिलक्षित अर्थात् दिखाई देते हैं। किसी नीतिकार ने ऐसे व्यक्तियों के लिये बहुत कुछ कहा है, जो सटीक ज्यों का त्यों इनके जीवन में घटता है

सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् ।
आपत्सु च महाशैलशिलासङ्घातकर्कशम् ।।

अर्थ : महापुरुषों का चित्त समृद्धि में कमल के समान कोमल हो जाता है और विपत्ति पड़ने पर बड़े पर्वत की चट्टानों के समूह के समान अत्यन्त सुदृढ़ हो जाता है ।

उदये सविता रक्तः रक्तश्चास्तमये तथा ।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ।।

अर्थ : उदय होता हुआ भी सूर्य रक्तिम (लाल) होता है और अस्त होते समय भी, इसी तरह बुद्धिमान् सज्जन भी विपत्ति और संपत्ति में एक-समान रहते हैं। सुख-दुःख से उनमें कोई विकार नहीं आता ।

आदर्श महिला वैदिक धर्म के अनुसार आचरण कर्तव्य पथ पर चलने वाली शान्तिदेवी का निधन होना राव साहब के लिये सहसा वज्रपात था। वेद के अनुसार **''जाया पत्ये मधुमर्ती वाचं वदतु शान्तिवाम्''** प्रतिदिन पति के लिये मीठी वाणी बोलने वाली पतिव्रता शान्तिदेवी का विछोह, यशस्वी पुत्रों को जन्म देने वाली माता का दारुण दुःख सहना । पहाड़ से दुःखों का सामना करने वाला व्यक्ति पुनः वैदिक धर्म परोपकार और दीन-दुखियों की सेवा में जुट जाता है, जैसा कि उनके जीवन में कुछ हुआ ही नहीं । पुनः नीतिकार ने कहा है

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुर्महति ।।

अर्थ : भद्रपुरुषों का हृदय दिव्यता से परिपूर्ण (लोकोत्तर) होता है । उनके मन की थाह कौन पा ल्ये फूल से भी कोमल होते हैं ।

अहो किमपि चित्राणि चरित्राणि महात्मनाम्
लक्ष्मीं तृणाय मन्यन्ते तद्भारेण नमन्त्यपि ।।

अर्थ : अहो ! महात्माओं के चरित्र भी बड़े अद्भुत होते हैं। लक्ष्मी को वे तिनके के समान तुच्छ समझते हैं और लक्ष्मी प्राप्त होने पर उसके बोझ से नम्र भी हो जाते हैं (उन्हें धन का अभिमान नहीं होता है)।

उपरोक्त श्लोक राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के जीवन में ज्यों का त्यों घटता है, किसी प्रकार से धन का अभिमान नहीं है। ईश्वर की कृपा से धन का सदुपयोग करते हैं। वैदिक धर्म और अन्य मतालम्बियों के लिये वे प्रेरणा के स्रोत हैं। सामाजिक कार्यों में भी आप २० वर्षो तक आर्यप्रतिनिधि मध्यप्रदेश विदर्भ के कोषाध्यक्ष रहे हैं। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान रहे हैं। नागपुर आर्य समाज हंसापुरी के कई वर्षोतक प्रधान रहे। उस समाज की चहुँमुखी उन्नति में आप का काफी योगदान रहा हैं। इनके जीवन वृत्त पर जितना कुछ लिखा जाय, उतना कम है। इनका आर्यसमाज के लिये योग दान काफी है । आर्य साहब ने विदेशों में शिकागो आर्य महासम्मेलन, अमेरिका के समय कई देशों का भ्रमण किया है । मारीशस (टापू) जहाँ के समुद्री विशेष पर्यटन स्थल हैं वहां आर्य महासम्मेलन में भाग लिया है ।

वर्तमान में आप कई वर्षोसे अपनी जन्मभूमि में हस्पताल (औषधालय) निर्माण में संलग्न हैं। मैं श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य के अमृतमहोत्सव पर हार्दिक बधाई और **''जीवेत् शरदः शतम्''** की भगवान् से दिन-प्रतिदिन प्रार्थना करता हूँ ।

संपर्क- गुरुकुल, होशंगाबाद (म.प्र.)

ऋषि-पथ के आर्य पथिक राव हरिश्चन्द्र

डॉ कुञ्जदेव मनीषी,आचार्य

डॉ. कुञ्जदेव मनीषी गुरुकुल आश्रम आमसेना के उपप्राचार्य हैं। आप अत्यन्त मधुर भाषी व्यवहारशील एवं व्यक्तित्व के धनी हैं। आप वैदिक साहित्य के अच्छे विद्वान् भी हैं।

भारत माता धन्य है, जिसने अपनी कोख से ऐसे लाल उत्पन्न किए हैं जिनके क्रियाकलापों से न केवल गांव और शहर,अपितु पूरा देश (भारत) गौरवान्वित है, ऐसे ही नर रत्नों में आर्य पथ के पथिक श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य का नाम सर्वोपरि है।

आपका जन्म वि. सं. १९९१ वै १ शुक्ल पक्ष तदनुसार १५ अप्रैल १९३४ रविवार को हरियाणा प्रान्त के महेन्द्रगढ़ जिले के नारनौल तहसील के ग्रा. बीगोपुर पो. धौलेड़ा में हुआ। आपके पिता श्री धन्नाराम बचपन में ही स्वर्गवासी हो गए थे। अतः आपका पालन-पोषण बड़े भाई श्री धनसीराम एवं माता श्रीमती शृंगारी देवी जी की देखरेख में हुआ। आप की प्रारम्भिक शिक्षा गांव के गुरुजनों से निजी पाठशालाओं में हुई। स्कूली शिक्षा राजकीय स्कूल से हुई व जनवरी १९५४ में झांसी स्थित श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड में लिपिक के रूप में सेवा कार्य आरम्भ किया। वहां पर आप की दक्षता से आकर्षित होकर वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. ने मैनेजमेन्ट में आपका नागपुर शाखा में स्थानांतरण कर दिया, वहाँ सन् १९५८ से कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। आपकी लगन, कार्य-कुशलता, कर्तव्य-परायणता ने आपको नागपुर शाखा में महाप्रबंधक (G. M.) के पद तक पहुंचाया। इसी पद से ३१ मार्च २००७ को सेवानिवृत्त हुए।

सौभाग्य से आप बाल्यकाल से आर्य भजनोपदेशकों के उपदेश से प्रभावित होकर आर्य वैदिक धर्म के रंग में रंग चुके थे। सौभाग्य से आपको संस्कारित श्रीमती शान्ति देवी सहधर्मिणी के रूप में प्राप्त हुई। आपका दाम्पत्य जीवन बड़ा आदर्शपूर्ण एवं सुखद रहा है। वैदिक धर्म के प्रचार - प्रसार एवं समर्पण का भाव, जैसा इस दम्पती में देखा गया है, वैसा तो दुर्लभ अवश्य है। आप मधुरभाषी, मन, वचन और कर्म से सत्यवादी, अहिंसावादी, धर्मात्मा और मिलनसार हैं। आपका जीवन सादा और सरल है। आप लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष और क्रोध से रहित हैं। आप संयमी, नम्र, संतोषी, सहनशील, दृढ परिश्रमी, तन-मन से शुद्धपवित्र, ईश्वरविश्वासी, श्रद्धालु तथा प्रभु भक्त हैं। सबका भला चाहने वाले परोपकारी हैं। आपका जीवन यज्ञमय है। श्रद्धा से पंचमहायज्ञों का अनुष्ठान करते हैं। आपके बड़े पुत्र श्री महिपाल आर्य हैं, जो वैद्यनाथ फार्मेसी के पाँच जिलों के मुख्य वितरक हैं। दूसरे पुत्र श्री यशपाल आर्य हैं जो दिव्य फार्मेसी के विदर्भ-एवं प. महाराष्ट्र के मुख्य वितरक हैं, दोनों सुपुत्र आपके अनुकूल शिक्षा-दीक्षा से सर्वविध समर्थ होकर पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों को सफलतापूर्वक निभा रहे हैं। आप कई संस्थाओं को प्रतिवर्ष सहयोग प्रदान करते हैं, अपनी सीमित आय में से एक धर्मार्थ ट्रस्ट बनाकर उसके

माध्यम से प्रतिष्ठित अग्रगण्य आर्य संन्यासियों और विद्वानों के सन्मानार्थ आपने राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट बनाकर "आर्य रत्न" एवं "आर्य विभूषण" नामक पुरस्कार सर्वोच्च पुरस्कारों का भी प्रचलन किया है । आर्यजगत् में "आर्य रत्न" पुरस्कार सर्वोच्च पुरस्कार है। इसकी राशि १ लाख रु. है । आप एक अच्छे उपदेशक जैसी योग्यता रखते हैं । फालतू बोलना पसंद नहीं करते । विद्वानों की बातें सुनना पसंद करते हैं। आप जन चेतना को अधिक महत्व देते हैं । आशा है आपका स्नेह इसी प्रकार समाज व देश के प्रति बना रहेगा।आप शतायु पर्यन्त ऋषि पथ पर चलते हुए भारत माता की सेवा करेंगे । मैं आपकी दीर्घायु की कामना करता हुआ परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आप धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त हों ।

संपर्क - महाविद्यालय गुरुकुल आमसेना
खरियार रोड़ नवापारा (उड़ीसा)
चलभाष-९४३७०७०६१५

कल्याणकारी वचन

सूर्य देवता के उदय और अस्त होने के साथ-साथ प्रतिदिन आयु भी घटती जा रही है और इसी प्रकार दिन, सप्ताह, पक्ष, मास और वर्ष पर वर्ष बीतते जा रहे हैं, किन्तु सांसारिक कार्यों में निमग्न मनुष्य को समय के व्यतीत होने का कोई भी ज्ञान नहीं हो रहा। जन्म, बुढ़ापा, रोना, कष्ट और मृत्यु आदि भयंकर दुःखों को देखकर कोई भय उत्पन्न नहीं हो रहा, इससे ऐसा लगता है कि सारा संसार (-प्राणी जगत्) मोह-अज्ञान रूपी मदिरा को पीकर मतवाला हो रहा है अर्थात् सब कुछ देख-सुनकर भी जीवन के लक्ष्य के प्रति असावधान एवं पुरुषार्थ हीन है। मोह रूपी मदिरा को पीकर वह संसार में इस प्रकार फंसता जा रहा है जैसे मनुष्य दलदल में धंसता जाता है। वह मोक्षप्राप्ति रूप अपने लक्ष्य से भटक रहा है।
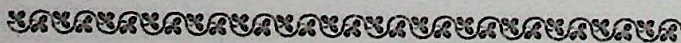
कर्मयोगी राव श्री हरिश्चन्द्र जी

महात्मा चैतन्यमुनि जी (हिमाचल)

श्री महात्मा चैतन्यमुनि जी उच्च कोटि के तपस्वी, साधक, वैदिक पद्धति के आदर्श चिन्तक और मनीषी विद्वान् हैं । आपके प्रेरणाप्रद लेख आर्यजगत् की पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

अपने पूर्व जन्म के कर्मो के आधार पर व्यक्ति को मानव देह प्राप्त होती है मगर यह देह भोग के साथ-साथ कर्मयोनि भी है अतः व्यक्ति इस मानव देह का सदुपयोग करके ऐसे-ऐसे कार्य कर लेता है जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती है । साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपनी बुद्धि, परिश्रम, निष्ठा और दृढ़ संकल्प के आधार पर ऐसे महान् कार्य करने में सफलता प्राप्त कर लेता है जो दूसरों के लिए उदाहरण बन जाते हैं। श्री राव हरिश्चन्द्र जी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। हरियाणा प्रान्त के महेन्द्रगढ़ जिले की तहसील नारनौल के गांव बीगोपुर में १५ अप्रैल, १९३४ को जन्मे श्री राव जी ने अपनी प्रतिभा और लगन से वह सब-कुछ कर दिखाया जो असंभव को संभव बनाने जैसी बात है । बचपन में ही पिता का देहान्त हो जाने के कारण इनका पालन-पोषण बड़े भाई श्री धनसीराम जी ने किया । आपकी प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण परिवेश में हुई और फिर नगर नांगल में इनकी शिक्षा हुई । आपने १ जनवरी, १९५४ को बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड में लिपिक के पद से अपना सेवाकार्य आरंभ किया और फिर अपनी ईमानदारी, कार्य-कुशलता और प्रतिभा के बल पर आपको कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य सौंपा गया तथा आपका स्थानान्तरण नागपुर कर दिया गया । जब एक बार कदम आगे बढ़ाया तो पीछे मुड़कर देखने के लिए इनके पास मानो समय ही नहीं था और इसी कम्पनी में महाप्रबन्धक के पद से ३१ मार्च,२००७ को सेवा-निवृत्त हुए ।

अपने गांव में ही आर्य भजनोपदेशक के सम्पर्क में आने से आप पर वैदिक धर्म का रंग चढ़ा और अपनी कम्पनी में सेवाकार्य करते हुए भी आप आर्यसमाज की गतिविधियों में प्रमुखता के साथ भाग लेने लगे । अपने परिश्रम एवं परमात्मा की कृपा से आप ज्यों-ज्यों आर्थिक रूप से सम्पन्न होते गए, आपने उस धन का सदुपयोग वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए करना आरंभ किया । कालान्तर में आपने इस पावन कार्य के लिए विधिवत् एक ट्रस्ट की स्थापना की जिसके माध्यम से आप वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार एवं लेखन कार्य में लगी हुई संस्थाओं तथा व्यक्तियों को अपना आर्थिक सहयोग निरन्तर दे रहे हैं। यही नहीं, ट्रस्ट के माध्यम से प्रतिष्ठित आर्य संन्यासियों एवं उद्भट विद्वानों को 'आर्यरत्न' तथा 'आर्य विभूषण' सम्मान से सम्मानित किया जाता हैं। उल्लेखनीय है कि 'आर्य रत्न पुरस्कार' आर्यजगत् में सर्वोच्च पुरस्कार है । आप

आर्यसमाज बीगोपुर के संरक्षक हैं। नागपुर की आर्यसमाज के आप कई वर्षोतक प्रधान एवं मन्त्री रहे । अनेक वर्षो तक आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश के कोषाध्यक्ष रहे । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के आप अन्तरंग सदस्य तथा उपप्रधान भी रहे हैं ।

मेरा मानना है कि किन्हीं पुण्य-कर्मोके फलस्वरूप ही व्यक्ति का सम्पर्क वैदिक मान्यताओं के साथ होता है । निश्चितरूप से राव जी के बहुत ही उत्कृष्ट पुण्य कर्म रहे होंगे जो सौभाग्य से इनका सम्पर्क वैदिक विचारधारा के साथ हुआ है । यह विचारधारा व्यक्ति के चरित्र का उत्थान करती है क्योंकि यहां पर **'न लिंगम् धर्मकारणम्'** अर्थात बाहर के चिह्न मात्र धारण कर लेना धर्म नहीं है, बल्कि धार्मिक व मानवीय गुणों को धारण करना ही धर्म है। जो व्यक्ति धर्म के ऐसे स्वरूप को आत्मसात् कर लेता है उसकी चतुर्दिक् उन्नति होना स्वाभाविक है । श्री राव जी के साथ भी ऐसा ही हुआ । आपकी सेवाओं के लिए आर्यजगत् आपका सदा ऋणी रहेगा । आर्यसमाज जैसी सार्वभौमिक संस्था का कार्य करना अपने आप में बहुत ही उत्कृष्ट एवं पुण्य का कार्य है तथा इस पुण्य को कमाने वाले पर प्रभु की विशेष कृपा रहती है । इस प्रकार आप भी परमात्मा की कृपा के पात्र बने तथा यह लोक और परलोक संवार लिया । इसी का यह परिणाम है कि आपके परिवार पर वैदिक धर्म के संस्कार पड़े तथा सभी अच्छी प्रकार से अपने-अपने कार्य में स्थापित हैं।

आपका विवाह १९ मई, १९५८ को एक धर्मपारायणा देवी श्रीमती शान्ति देवी जी के साथ हुआ था । आपके यहां तीन पुत्र पैदा हुए, मगर एक का जन्म से एक वर्ष बाद ही देहावसान हो गया था । बडे पुत्र श्री महिपाल आर्य का १९६२ तथा छोटे यशपाल आर्य का जन्म १९६५ में हुआ । यह सौभाग्य की बात है कि दोनों बेटों एवं पुत्रवधुओं सौ. राजेश्वरी देवी तथा सौ. स्नेहलता भी अनुव्रती बनकर वैदिक संस्कारों से पूर्णतया परिपक्व हैं। आपकी धर्मपत्नी सेवाभावी विनम्र महिला थीं तथा विद्वानों का आतिथ्य करने में उन्हें विशेष आनन्द की अनुभूति होती थी । हालांकि २४ जनवरी,२००३ को उनका देहावसान हो गया मगर परिवार में अव भी उन्हीं की परम्पराओं को बड़ी श्रद्धा के साथ कार्यान्वित किया जाता है । हम अगस्त/सितम्बर -२००४ में प्रचारार्थ नागपुर गए थे तो राव परिवार ने हमें अपने घर भोजन पर बुलाया था । वहां जो आत्मीयता, आदर एवं स्नेह मिला वह अविस्मरणीय है ।

मनीषियों की बात सत्य है कि जीवन की सार्थकता मानव सेवा करने और यशस्वी बनने में ही है । आपने मनीषियों की इस उक्ति को चरितार्थ किया है, आप धन्य हैं । उपनिषद् के ऋषि का सार्थक जीवन के बारे में कहना है -**''अहं ब्रम्ह अहं यज्ञ अहं लोकाः ।''** अर्थात् हम महान् बनें, हमारा जीवन यज्ञमयी भावनाओं से परिपूर्ण हो और हम संसार में यशस्वी बनकर जीएँ। आपने अपने जीवन में इस सार्थकता को भी परिपूर्ण किया है ..... आपके अमृत महोत्सव पर हार्दिक बधाई देते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है । परमात्मा आपको उत्तम स्वाथ्य एवं दीर्घायु प्रदान करे ताकि आप इसी प्रकार अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करते रहें ....

संपर्क-सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)

राष्ट्र तथा सामाजिक कार्य में धन, और जीवन समर्पित करने वाले ऋषि के परमभक्त : श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य

सुश्री पुष्पा वेदश्री (उड़ीसा)

सुश्री पुष्पा वेदश्री कन्या गुरुकुल आश्रम आमसेना की आचार्या हैं। कन्याओं के साथ तन-मन से मधुर व्यवहार करते हुए अपने जीवन की आहुति दे रही हैं। यह गुरुकुल के लिए गौरव की बात है।

कोई भी व्यक्ति यदि जन्म के साथ अपने माता-पिता तथा अपने प्राचीन विचारों के संस्कारों को लेकर आता है, तो वह संस्कार से अपने बीज को पल्लुवित और पुष्पित करके परिवार, समाज तथा राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान करता है । उसके प्राचीन विचार विश्व के लिए आदर्श बन जाते हैं। यह सब भाव श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के जीवन में परिलक्षित होता है ।

श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य ने एक सामान्य कृषक परिवार में जन्म लेकर भी प्राचीन विचारों के संस्कारों के कारण मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर झांसी में वैद्यनाथ भवन में प्रारम्भिक लेखक के रूप में अपना कार्य प्रारम्भ किया । तत्पश्चात् कार्यक्षेत्र में उत्तरोत्तर आगे बढ़ते गये, फिर पीछे मुड़कर भी नहीं देखा । किसी ने कहा है -

"एक अच्छा लेखक होना बड़ी बात है, अच्छा वक्ता होना भी मनोहरी बात है, पर इनके साथ एक सुदृढ़ सामाजिक, ऋषिभक्त व धार्मिक कार्यकर्त्ता होना 'सोने में सुगन्ध' जैसा है ।"

आदर्श दानवीर - श्री राव जी उदारता की प्रतिमूर्ति हैं । जब आप की आय बढ़ने लगी तब दान के लिए भी आपके हाथ खुलते गये ।

ओ३म् शतहस्त समाहर सहस्त्र हस्त संकिरः ।
ऋतस्य कार्यस्य चेह स्फार्तिं समावह ।।

अर्थात् सौ हार्थों से इकट्ठा करो, हजारा हार्थो से बिखेरो और इस कार्य को करते हुए समान भाव का समावेश रहे ।

अथर्ववेद के सन्देशानुसार आपकी रुचि दान के प्रति बढ़ती गई और आप कुछ धन सुपात्रों निर्धनों एवं असहायों को देने लगे ।

आपने प्रतिवर्ष अनेक महत्त्वपूर्ण संस्थाओं को दान देना शुरू किया, जिससे वे खुलकर सेवा कार्य कर सकें ।

इसी प्रकार अपने अनेक प्रतिष्ठित संन्यासियों को एक एक लाख रुपये के 'आर्यरत्न पुरस्कार' से सम्मानित करने का एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्य भी किया है । आप अनेक सामाजिक और शिक्षण संस्थाओं को उदारतापूर्ण सहयोग देते रहते हैं । आज आप अपने दान कर्मों के कारण जगत् के प्रतिष्ठित समाजसेवी तथा दानदाताओं में गिने जाते हैं । कवि रहीम के शब्दों में -

"तबहिं तक जीवों भलो, दीवो परे न धीम ।
बिन दीवो जीवे जगत्, हमहिं न रुचे रहीम ।।"

इन पदों को श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी अपने जीवन में सार्थक कर रहे हैं ।

महान् व्यक्तित्व के धनी -आर्य जी का रहन-सहन, वेश-भूषा सर्वथा सादी है । सादगी का जीवन जीने वाले श्री राव जी का व्यक्तित्व आर्य जगत् के

उच्चकाटि के व्यक्तियों में गिना जाता है ।

आर्य जी के जीवन में सरसता, सरलता, नम्रता, मधुरता एवं सौहार्दता आदि गुणों का दिग्दर्शन स्वतः होता है -

''वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसदृशः''

सूक्त तथा -

''मीठा हो मेरा मिलन, मीठा हो मेरा बिछुड़न
वाणी से बोल मधुर, हो जाऊं मधु सम मधुर''

पद आपके जीवन में गहराई से देखने को मिलता है । आपसे मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपके प्रथम दर्शन से ही आपसे पहचान बना लेता है ।

अन्त में, मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि ईश्वर आपको दीर्घायु, अच्छा स्वाथ्य, भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करे। आपका जीवन सदैव कर्त्तव्यनिष्ठ उज्ज्वलमय बना रहे ।

आपके अमृतमहोत्सव पर इन्हीं शुभकामनाओं के साथ ....

आचार्या,
कन्या गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा)

कल्याणकारी वचन

मनुष्य के जीवन में यदि लोभवृत्ति विद्यमान है, तो अन्य दुर्गुणों को ढूँढने की क्या आवश्यकता है, यदि चुगलखोरी है, तो अन्य दोषों की गणना क्या करनी? यदि सत्य है, तो तपस्या का क्या प्रयोजन? यदि मन पवित्र है, तो तीर्थ में घूमने से क्या लाभ? यदि सज्जनता है, तो अन्य गुणों की क्या आवश्यकता है? यदि यश फैल रहा है, तो आभुषणों से क्या प्रयोजन? यदि उत्तम विद्या है, तो धन की क्या आवश्यकता है? और यदि अपयश है, तो फिर मृत्यु की क्या आवश्यकता है?
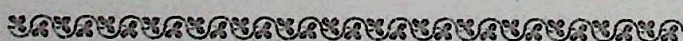
राव हरिश्चन्द आर्य - आदर्श समाजसेवी

डॉ. भीमदेव सिंह, वानप्रस्थ (पर्यावरणविद्)

श्री वानप्रस्थ भीमदेवजी सरल स्वभाव के तपस्वी समाज सेवक हैं। आपने पश्चिम उत्तरप्रदेश, विशेषकर अलीगढ़ में पर्यावरण को शद्ध कर प्रदूषण को दूर करने में महत्वपूर्ण कार्य किया है । इसके लिए आपको कई पुरस्कार भी मिले हैं।

राव हरिश्चन्द्र आर्य पुरुषार्थवादी, संयमी, संतोषी, त्यागी तथा अहर्निश प्रयत्नशील रहने वाले व्यक्ति हैं । कर्मसिध्दान्ती, निष्काम कर्मयोगी, उन्नतपथ के आरुढ़ी एवं यथार्थवादी, धर्म में दृढ विश्वास करने वाले हैं। आप सदैव ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार से परे रहे । लोभ तो उन्हें लेशमात्र भी छू न पाया था । वैदिक संस्कृति के प्रेय और श्रेय मूल्यों से, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से तथा विश्वकल्याण की कामना से ओतप्रोत हैं। सहानुभूति, राष्ट्र-भावना, भ्रातृत्व, सद्भावना की प्रतिमूर्ति, स्वार्थ से उठ कर परमार्थ का जीवन जीनेवाले हैं । वेदमार्ग पर चलकर ही मानव विश्व शान्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है । आप निर्भीक वाणी के धनी हैं, प्रोत्साहन देने में कंजूसी नहीं करते । भाषा पर अद्भुत अधिकार है ।

राव हरिश्चन्द्र जी अत्यन्त कुशलता से समाज के दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं तथा आर्य प्रतिनिधि सभा को सुचारु रूप से चलाने में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं,जो अत्यन्त उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय है । आप रचनात्मक कार्योंमें विश्वास करते हैं । आपका दृष्टिकोण समन्वयवादी रहा है । व्यावहारिक जीवन अत्यन्त सरल, मृदु, एवं विनम्र है । आपका सिद्धांत रहा है सेवक बन कर कार्य करना न कि मालिक बनकर । आपकी सोच सदा सकारात्मक रही है, प्राकृतिक जीवन, कोई बनावट नहीं। लगन के पक्के और धुन के धुनी हैं।। आज उनकी पारिवारिक सम्पन्नता में उन्हीं का निरन्तर मार्गदर्शन रहा है । जो भी आपके सम्पर्क में आया आपकी सौजन्यता एवं महानता व दैविक गुणों से प्रभावित होकर आपका हितैषी, मित्र, सखा बन गया । आर्यजगत् के वानप्रस्थ, संन्यासी , तथा उत्कृष्ट समाज सेवियों के प्रति आपकी विशेष सहानुभूति प्रेम एवं सम्मान रहा है । आपने ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियों को सम्मानित कर पुरस्कार देने की योजनाएं बना रखी हैं जो सफलतापूर्वक क्रियान्वयन में हैं, जिनसे औरों को भी प्रेरणा मिलती है विश्वकल्याण के मार्ग पर चलने की ।

मेरा भी सौभाग्य है कि मुझे एक उत्तरदायित्व सभा की ओर से मिला । रायपुर की आर्यसमाज में एक विवाद उत्पन्न हो गया था, सभा प्रधान श्रीमती कौशल्यादेवी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ था जिसमें मुझे सदस्य बनाया था । मैंने समाज में

डेरा डाल दिया, समस्या का समाधान सफलतापूर्वक हो गया ।

मुझे प्रतिनिधिसभा ने आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद का प्रबन्ध संचालक नियुक्त किया था । इन कारणों से मेरा व्यक्तिगत सम्पर्क राव हरिश्चन्द्र से काफी रहा, उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ । स्वामी धर्मानन्द सरस्वती को राव साहब ने अपने गांव बीगोपुर में 'आर्यरत्न' से सम्मानित किया, उस सम्मान समारोह में मैं भी उपस्थित था । श्री मित्रसेन जी के अमृत महोत्सव में भी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती ने मुझे बुलाया था, मैं उपस्थित हुआ था ।

मैं राव हरिश्चन्द्र आर्य के अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन के अवसर पर उनको हार्दिक बधाई देता हूं तथा परमपिता परमात्मा से उनके अच्छे स्वास्थ्य, सुख, समृद्धि तथा शतायु होने की प्रार्थना करता हूं ताकि राव साहब की सेवाएं एवं कुशल मार्गदर्शन मिलता रहे । आप मानव श्रेष्ठ है, संत हैं , इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है ।

संपर्क - मित्र नगर, गुलर रोड,
अलीगढ़ (उ.प्र.)
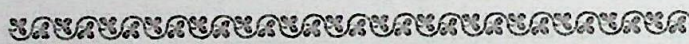
कल्याणकारी वचन

संसार के ये नाना प्रकार के विषय भोग क्षणिक सुख देकर नष्ट होने वाले हैं और जन्म-मृत्यु-रूप बन्धन के भी कारण हैं । अरे मनुष्यो! इन तुच्छ कार्यों के करने से क्या लाभ होगा? अर्थात् इस कर्म भोग के चक्र में पड़ने से कोई विशेष लाभ नहीं होगा यदि हमारी बातों पर विश्वास और श्रद्धा हो, तो सांसारिक आशा- पाशों को तोड़कर मन को शुद्ध बनाते हुए तीव्र इच्छा के साथ अपने मन को परमात्मा में स्थिर करो।
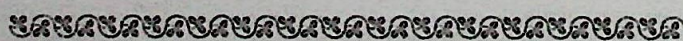
श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य

सोमानन्द सरस्वती उपाध्याय

श्री स्वामी सोमानन्द सरस्वती गुरूकुल झज्जर के पुराने स्नातक, वैदिक साहित्य के विद्वान् और अच्छे चिकित्सक हैं।

आप का जन्म हरियाणा प्रान्त के जिला महेन्द्रगढ़ तहसील नारनौल के ग्राम बीगोपुर में विक्रम सम्वत् १९९१ वै. शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तदनुसार १५ अप्रैल १९३४ रविवार के दिन मध्यम वर्ग परिवार में हुआ। आप आपने परिवार में छः भाई-बहिन थे, उनमें आप सबसे लघु थे। आपके पिता जी श्री धन्नारामजी का स्वर्गवास आपके बाल्यकाल में ही हो गया था। अतः आपका पालन-पोषण आपके बड़े भाई धनसीरामजी व माता श्रीमती श्रृंगारी देवी की छत्र छाया में हुआ। आपके माता-पिता अनपढ़ सरल, नम्र, धार्मिक श्रम स्वभाव के कृषक थे।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव की पाठशाला में सादगी पूर्ण ग्राम्य वातावरण में हुई। स्कूल शिक्षा-दीक्षा निकट ग्राम नांगल चौधरी के हाईस्कूल में प्राप्त की। तत्पश्चात् गृहकार्य में हाथ बटाने लगे तथा अनुभव किया कि इस भाँति कृषि कार्य से इतने बड़े परिवार का निर्वाह होना सम्भव नहीं है। अत आप दृढ़ संकल्प शक्ति लेकर घर से निकल पड़े और झाँसी पहुंचकर श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड में लिपिक के पद पर कार्य करने लगे। आप अपने पुरुषार्थ एव कुशाग्र बुद्धि के बल पर शीघ्र ही नागपुर शाखा में कोषाध्यक्ष पद पर नियुक्त हो गये। कालान्तर में आप अपनी कर्मठता - कार्यकुशलता से इसी नागपुर की शाखा में महाप्रबन्धक बन गये। इस पद पर आप अपनी सेवानिवृत्ति ३१ मार्च २००७ तक निरन्तर अबाध रूप से कार्य करते रहे।

इसी सेवाकाल की अवधि में आप का विवाह १९ मई १९५८ में राजस्थान जिला सीकर के ग्राम छाजाका नांगल में श्रीमती शान्तिदेवी के साथ वैदिकरीति से हुआ। आपने अपना सम्पूर्ण गृहस्थजीवन सफलतापूर्वक वैदिक सिद्धान्तानुसार सुखमय निष्कंटक निर्वाह किया। विवाहोपरान्त आपको गृहस्थ्यधर्म का विधिपूर्वक पालन करते हुए तीन पुत्र प्राप्त हुए। जिनके नाम क्रमशः महीपाल आर्य, यशपाल आर्य और हितपाल आर्य रखे गये। एक वर्ष पश्चात् सबसे द्वितीय सुपुत्र हितपाल का दैवयोग से निधन हो गया। बड़े सुपुत्र श्री महीपाल आर्य के पास नागपुर में श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड की पांच मण्डलों की औषध एर्जेसी का व्यवसाय है। विशाल शोरूम है। श्रीयशपाल आर्य के पास श्री पतंजलि योग आयुर्वेद तथा दिव्य फार्मेसी हरिद्वार की विदर्भ व महाराष्ट्र के लिये सुपर स्टाकिस्ट-शिप है। इस तरह परम्परागत आर्थिक व्यवसाय से पूरा परिवार सुदृढ़ता के साथ दिन दुगनी-रात चौगुंनी उन्नति की ओर अग्रसर है।

समस्त परिवार का प्रत्येक सदस्य धार्मिक क्रिया-कलाप एवं विचारधारा से ओतप्रोत है। घर का सारा वातावरण सामयिक सभी वैदिक धर्मानुकूलानुष्ठान से सुशोभित रहता है। आर्य, साधु-संतों, महात्माओं का आपके अपने निवास स्थान पर निरंतर आवागमन लगा रहता है और ऐसी पुण्यात्माओं का अनेक रूपमें आपका परिवार सान्निध्य की आकांक्षा रखता है। मान-सम्मान करके अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। आप अपनी सेवा काल से ही इस प्रकार के धार्मिक-सामाजिक परोपकारमय अनुष्ठानों के लिये कृतसंकल्प हैं। आपका अधिक समय वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में व्यतीत हुआ है। फलस्वरूप आपका व्यक्तित्व आज समाज के सामने एक कर्मठ ओजस्वी-तेजस्वी कार्यकर्ता के रूप में उभरकर आया है। आपने अपने गांव में एक भव्य आर्यसमाज मन्दिर लाखों रुपये खर्च करके बनवाया है। गांव बीगोपुर में ही सर्वविध साधनों प्रसाधन-उपकरण युक्त सुसज्जित सुन्दर चिकित्सालय का भी निर्माण कराया है।

आपकी कार्यशैली, मृदुभाषिता, दानशीलता आदि गुणों से प्रभावित होकर आर्य जगत् के अनेक व्यक्ति अपनी संस्थाओं, प्रतिष्ठानों को आपसे जोड़े रखने में अपना अहोभाग्य समझते हैं। हमारे चरित्र नायक के स्वभाव में नम्रता, सुशीलता, उदारता, पवित्रता, दानशीलता आदि श्रेष्ठ भावों को जानकर प्रत्येक आर्यजन आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता है। आपका पूरा परिवार अहर्निश देशहित परोपकार के कार्य में संलग्न रहता है। शैक्षणिक धार्मिक प्रतिष्ठान हो, गुरुकुल-आश्रम-अनाथालय हो, समाज सेवा का कार्य हो, साहित्य प्रकाशनादि कार्य हो, सब तरह का उचित आर्थिक सहयोग सामर्थ्यानुसार आप करते रहते हैं। अतः आर्य जगत् में आपका यशोगान सर्वत्र चर्चित है। आप अनेक आर्य प्रतिष्ठानों के सरंक्षक, मन्त्री, प्रधान, कोषाध्यक्ष आदि पदों पर आज भी आसीन हैं और रहे हैं। परम पिता परमात्मा आपको दीर्घायु, यश, बल, कीर्ति प्रदान करे यही मेरी शुभ कामना है, जिससे आप जैसी दिव्य विभूति देश-समाज राष्ट्र का और अधिक उपकार कर सके।
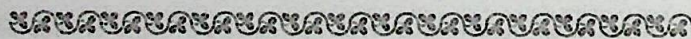
कल्याणकारी वचन

धन तो पैरों की धूलि के समान है, यौवन पहाड़ी नदी के वेग के समान है, आयु पानी के प्रवाह के समान है, और जीवन फेन(झाग) के समान है, ऐसा जानते हुए भी जो मूर्ख स्वर्गद्वार को खोलनेवाला धर्माचरण नहीं करता, वह पीछे बुढ़ापे में शोक रूपी अग्नि में पश्चात्ताप करता हुआ जलता है।

आर्य समाज का मसीहा
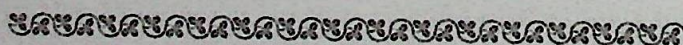
आचार्य रणजीत 'विवित्सु'

आचार्य रणजीत विवित्सु गुरुकुल आमसेना के योग्य ब्रह्मचारी हैं। गुरुकुल से शिक्षित होकर दीक्षा लेकर आर्य समाज के कार्यों में सलग्न हैं।

किसी भी संस्था या समाज को आगे बढ़ाने के लिए कई ऐसे व्यक्तियों की जरूरत होती है जिनका जीवन उन्नत हो, जो पवित्र स्वभाव के हों, सम्पन्न हों, कर्मठ हों एवं तपस्वी हों। ऐसे व्यक्ति एवं समाज से ही कुछ आशायें की जा सकती हैं। श्री राव हरिश्चन्द्र जी इन्हीं व्यक्तियों में से एक हैं। बहुत से ऐसे धनी व्यक्ति देखे जाते हैं, जिनमें केवल प्रतिस्पर्धा लगी है कि मैं दुनिया में या अपने देश के धनिकों में सर्वप्रथम स्थान पर रहूँ। जिनको सामाजिक कार्यों से कोई लेना-देना नहीं है, जो केवल स्वार्थ के बलबूते जीवन निर्वाह कर रहे हैं। परंतु श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य उन व्यक्तियों में से हैं जिन्होंने कि परोपकार के लिए अपने जीवन को समाज के प्रति समर्पित कर दिया है। इस संसार में धनिकों की कोई कमी नहीं है परंतु धनाढ्य होने के साथ-साथ श्री राव हरिश्चंद्र जैसे दानी हों एवं उदार ह्रदय वाले हों ऐसे व्यक्ति विरले ही होते हैं। भले ही आपकी सीमित आय है लेकिन इसी सीमित आय से आपने एक ट्रस्ट का निर्माण किया और उस ट्रस्ट के जरिये आप ऐसे वरेण्य आर्य संन्यासियों और वैदिक विद्वानों का सम्मान करते आ रहे हैं जिनका जीवन देश, धर्म, समाज, राष्ट्र के लिए समर्पित हो, जो कई वर्षों से गुरुकुल का संचालन कर रहे हों या जिनका वैदिक साहित्य पर संपूर्ण अधिकार हो। आपके इस ट्रस्ट के माध्यम से सात आर्य संन्यासी "आर्यरत्न पुरस्कार" से एवं दस वैदिक विद्वान् "आर्य विभूषण पुरस्कार" से नवाजे जा चुके हैं। आपके अंदर साधु, संन्यासियों, विद्वानों के प्रति असीम श्रद्धा, विनम्रता, उदारता आदि सब गुण आपको विरासत में मिले हैं।

बचपन में ही आपके पिताश्री का निधन हो गया। तब आपने संघर्ष करते हुए शिक्षा को अपना ध्येय बनाया। पुनः शिक्षा के पश्चात् खेती-बाड़ी की सीमित आय से अपने बड़े परिवार का भरण-पोषण न होता देखकर भारत के प्रसिद्ध 'वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड' में लिपिक के रूप में कार्य प्रारंभ किया। उस कंपनी के अधिकारियों ने आपकी सूझबूझ, कर्मठता और ईमानदारी आदि महान् गुणों से प्रभावित होकर आपको महाप्रबंधक पद पर आसीन कर दिया। इस उत्तरदायित्व को वहन कर आपने उत्तमता के साथ अपने कर्तव्य को निभाया।

ऋषि दयानंद के दीवाने एवं आर्यसमाज के प्रचारक आप ऋषि दयानंद के सपनों को साकार करने के लिए गांव-गांव में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करते रहते हैं। एक बार आपके ग्राम में प्रचार के लिए एक भजनोपदेशक आए हुए थे जिनकी ओजस्वी एवं मधुर वाणी से प्रभावित होकर आपने आर्यसमाज के प्रति, वैदिक धर्म के प्रति अपना जीवन सदा-सदा के लिए समर्पित कर दिया। तभी से आपके अंदर आर्य सिद्धांतों पर अटूट श्रद्धा व आस्था उत्पन्न हो गई। इस प्रकार वैदिक ग्रंथों का स्वाध्याय करते हुए आप आगे बढ़ते गए।

आपके अंदर आर्य समाज के प्रति गहरी श्रद्धा है। अतः आपने अपने गांव बीगोपुर में एक भव्य आर्यसमाज मंदिर का निर्माण कराया है जिससे लोगों का आर्यसमाज के प्रति झुकाव हो, लोग आर्य विचारधाराओं से ओतप्रोत हों। समय-समय पर आप विविध कार्यक्रमों का आयोजन करते रहते हैं। आपने कई आर्यसमाजों, संस्थाओं के संरक्षक, प्रधान व मंत्री पद पर रहकर सफलतापूर्वक उनका संचालन किया है। आपकी विनम्रता, सौजन्यता, कुशलता, सहनशीलता एवं मधुरता को देखकर सम्पूर्ण आर्यजगत् आपसे प्रभावित है तथा सभी संस्थाओं के अधिकारीवर्ग आपको अपनी संस्था में जोड़कर गौरव अनुभव करते हैं।

आप एक गृहस्थ होते हुए भी **''इदं राष्ट्राय इदन्न मम''** की भावना से ओतप्रोत होकर सामाजिक कार्य के लिए मुक्त हृदय से दान कर रहे हैं। आपके इस उदारतापूर्ण सहयोग से देश की अनेक संस्थाएं चाहे वे शैक्षणिक हों, चिकित्सालय हों, समाजसेवक हों या प्रकाशक हों सभी को आप स्वसामर्थ्यानुसार सहयोग करते आ रहे हैं। प्रतिवर्ष लाखों रुपयोंका विभिन्न संस्थाओं को आप यथाशक्ति सहयोग करते हैं। इसमें पूरे देश की अनेक संस्थाएँ आपके आशीर्वाद से उत्तरोत्तर पुष्पित-पल्लवित हो रही हैं।

इन उपरोक्त कार्यों को देखकर आपको यदि आर्यसमाज का मसीहा कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पूज्य स्वामी धर्मानंद जी सरस्वती एवं गुरुकुल आमसेना के प्रति आपका विशेष स्नेह एवं श्रद्धा है। अतः आप समय-समय पर गुरुकुल आकर हम सबको आशीर्वाद एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करते रहते हैं।

मुझे स्वामी जी के निर्देशानुसार ज्ञात हुआ कि आपके अमृत महोत्सव के अवसर पर एक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको दीर्घायु और उत्तम स्वाथ्य प्रदान करे ताकि पूर्वापेक्षया आप अधिक से अधिक सामाजिक कार्यो में बढ़चढ़कर भाग ले सकें एवं **''जीवेम् शरदः शतम्''** की उक्ति को चरितार्थ कर सकें।

संपर्क

गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा)

आर्यरत्न पारखी श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य

श्री देवदत्त शर्मा

श्री आदरणीय देवदत्तजी शर्मा महाराष्ट्र के प्रसिद्ध विद्वान्, उच्च कोटि के लेखक और ओजस्वी वक्ता हैं। सभी प्रकार के संस्कारों को संपन्न कराने में प्रवीण हैं। आपका उपदेश बहुत मोहक और प्रभावशाली होता है ।

जो श्रेष्ठ है वह आर्य है,
श्रेष्ठता कृति से सिद्ध होती है,
कृति चरितार्थ होती है, व्रत से
व्रत, आत्मबल, संयम प्रभु कृपा से पूर्ण होता है।

इनको चरितार्थ करने वाले आर्य महानुभाव हैं राव हरिश्चन्द्रजी। आपकी जीवनशैली और कार्यक्षेत्र में कर्म-कलाप के दिव्य गुणों की झलक देखने को मिलेगी ।

प्रभुभक्ति, राष्ट्रभक्ति और वैदिक परंपरा के प्रति सजगतापूर्ण कार्य करने का श्रद्धायुक्त मानस रखकर उसे क्रियान्वित करने का संकल्प आपमें सदैव रहा है ।

विगत ३० वर्षों से मेरा व्यक्तिगत संबंध सम्पर्क आप से रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश विदर्भ में कार्य करते हुए उनके व्यक्तित्व, आर्यत्व एवं सदाशयता से मैं प्रभावित रहा हूँ।

निरभिमानता और सहृदयता का संगम आप के व्यक्तित्व और जीवन में सदा देखने को मिला । जिस व्यक्ति की कथनी-करनी में बिसंगति है, वह कैसे यश प्राप्त करेगा ? परंतु जिन्होने "पंचमहायज्ञ" का व्रत अपने जीवन में धारण किया है, उसकी सुगंध तो होगी ही "फूलों की महक जिस ओर हवायें बहेगी उस ओर जावेंगी किन्तु दिव्यता, सद्गुणों की महक सभी ओर का वातावरण महका देगी।"

राव साहब ने अपने मातापिता, मार्गदर्शकों, तथा स्वाध्याय तप से दिव्यगुणों का संचयन प्रचुर मात्रा में किया है। अपने प्रबल पुरुषार्थ से जो भी कार्य सम्पन्न किये उसमें विपुल ऐश्वर्य, कीर्ति प्राप्त की। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में योगदान करना धर्म है इसको अपने कार्यकलाप में समाहित करने वाले राव साहब हैं। प्रसिद्ध प्रतिष्ठान में सेवारत रहते हुये मैंने कई बार देखा कि, देश के कोने-कोने से आये याचक, प्रचारक, वैदिक धर्म के सेवाव्रतियों के आर्थिक सहयोग के लिये राव साहब से भेंट करते थे और अपनी ओर से तो उसे संतुष्ट करते, साथ ही प्रेरणा करके उनके कार्य की महत्ता को समझकर अन्य जगह से भी भरपूर सहयोग करवाते रहे हैं।

आपका गृहस्थ जीवन भी स्वस्थ, सफल, प्रेरणात्मक है। आपकी धर्मपत्नी स्व. माता शान्तिदेवीजी तथा पुत्र महिपाल जी, यशपाल जी, पुत्रवधुएं, पौत्र-पौत्री बाबूजी के अनुगामी हैं। परिवार के प्रत्येक कार्य में उत्कर्षसिद्धि के लिये सभी सदस्य अनुव्रती हैं।

किसी आर्य संन्यासी, महात्मा प्रचारक, नेता, कार्यकर्ता का नागपुर आगमन हो और परिवार में पता

चले तो आतिथ्य सहयोग न हो ऐसा कभी नहीं होगा । व्यस्ततम कार्य से समय निकालकर भी सेवा उपलब्ध कराने में सभी कृतसंकल्प हैं ।

अपने अर्जित एश्वर्य में परोपकार, वैदिक धर्म आर्य समाज के संगठन को दृढ़ बनाने का संकल्प तथा कर्तव्य निभाने का महायज्ञ भी मन, वाणी, कर्म से करते हैं। उसके साक्षात् उदाहरण साधु-संन्यांसियों, प्रचारक वेदज्ञ विद्वानों को "आर्यरत्न" पुरस्कार से गौरवान्वित करने के लिए श्री राव हरिश्चन्द्रजी ने ट्रस्ट की स्थापना कर प्रशंसनीय कार्य किया है ।

नागपुर नगरी के प्रसिद्ध आर्यसमाज हंसापुरी का उत्कर्ष आपके सहयोग से हुआ है तथा देश के अनेक गुरुकुल व संस्थायें आपसे सहयोग प्राप्त कर रही हैं।

हरियाणा में अपनी जन्मभूमि में शिक्षासंस्था खोलकर विद्यादान तथा दीपोत्सव पर्व के दिनों में आर्य विद्वानों, ब्रह्मचारियों, संन्यासीवृन्द, भजनोपदशेकों को आमंत्रित कर वेदपारायण यज्ञ द्वारा प्रवचन उपदेश से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के अज्ञान तिमिर को दूर करने का महत्वपूर्ण कार्य आपके द्वारा प्रतिवर्ष होता है । वेदामृत पान का सुवर्ण अवसर परिसर के महानुभावों को प्रदान करने का कल्याणकारी कार्य करके पुण्यार्जन के अपने खाते को समृद्ध करते हैं।

देव दयानन्द और वैदिक धर्म के प्रति प्रतिबद्धता अनुकरणीय है ।

सद्य परिस्थिति में आर्य विद्वानों के प्रति सम्मान, संगठनप्रेम, वैदिक धर्म में पूर्ण रूपेण निष्ठा, अनुराग तथा सहयोग भावना कम होने जा रही है, जो कुछ प्रभुकृपा से इस पवित्र मार्ग पर आरूढ हैं, उन देवत्ववाले महानुभावों में आपकी गणना है ।

राव साहब का सान्निध्य समिश्रण करते हुए उनके आर्यत्व के प्रेरणात्मक उदाहरण प्रस्तुत करने से अतिशयोक्ति लगेगी क्योंकि आर्य शब्द में ही यह गांभीर्य चमत्कार भरा हुआ है जो अन्य जगह देखने में क्वचित् ही है । प्रकाश के अस्तित्व का परिचय क्या दें ? सुवर्ण के मूल्य का वखान क्या हो ?

एक घटना रावसाहब के धैर्य, उदात्तता तथा स्वस्थ चिंतन की दे रहा हूं-

राव साहब के बेटे यशपालजी नागपुर के युवा राजनेता हैं उनके एक मित्र महाराष्ट्र के विधान सभा के विधायक हैं। उनके बेटे के विवाह में सम्मिलित होने नागपुर से ३०० किलोमीटर दूर कार्यक्रम में गये थे । यशपालजी को पुत्रवधू को ले जाने की मनाई की गयी थी तथा रावसाहब किसी कार्य से नगर से बाहर गये हुए थे। विधायक मित्र के अनुनय, आग्रह संबंध को देखते हुए यशपाल धर्मपत्नीजी के साथ यात्रा पर निकल गये। लौट कर आते हुए रास्ते में बहू का स्वास्थ्य बिगड़ गया । अमरावती नगर में प्रसिद्ध प्रसूति अस्पताल में उन्हें दाखिल कराया गया । बहू ने बेटे को जन्म दिया, किन्तु बच्चा अस्वस्थ हो गया । इस घटना से रावसाहब को अवगत कराया गया । तब यशपालजी को मुझसे संपर्क करने को कहा गया, अस्पताल में जाकर मेरे द्वारा जानकारी लेने पर डॉक्टर ने बताया कि प्रिमोच्योर डिलीवरी है नवजात के लिये कुछ कहना संभव नहीं। नवजात शिशु के उपचार में कोई कसर नहीं रखी गई। किन्तु अनहोनी को कौन टाले ? नवजात ने प्राण त्याग दिये ।

मैंने सारा वृत्तान्त रावसाहब को कथन किया उनका फोन पर सम्पर्क बना हुआ था। समझ सकते हैं, इस घटना से दादा, दादी व परिवार के सदस्यों पर क्या

बीतती है। मैंने राव साहब से कहा कि आप सब ईश्वरीय व्यवस्था समझते हैं। आप वहां संभालिये और मैं यहाँ सब व्यवस्थित करके आपके बेटे-बहू को नागपुर भेजता हूँ। आप आकर क्या करेंगे ? आपके पधारने से बहू को बच्चे की दुर्घटना का पता चल जाएगा । डॉक्टर ने बहू को घटना बताने से मना किया था ।

धीरोदात्त राव साहब ने उत्तरादायित्व मुझे सौंप कर मेरे निर्णय से सहमति की और बच्चे की सारी व्यवस्था पूर्ण कर मैंने बेटे-बहू को नागपुर रवाना किया। असामायिक अनहोनी का समाचार सुनकर किस दादा दादी का मन सुन्न हुए बगैर रह सकता है ?

ईश्वरभक्ति, दूरदर्शिता, स्वाध्याय, चिन्तन धर्म से पूरित व्यक्तित्व ही इस कसौटी पर खरे उतरते हैं और प्रभु उनकी सहायता करते हैं।

यथासमय राव हरिश्चन्द्रजी आर्य का अमृतोत्सव सम्पन्न हो रहा है और उत्सव समितिके अध्यक्ष पद संयोजन का दायित्व भी मूर्धन्य तपस्वी आर्य संन्यासी श्री धर्मानन्दजी सरस्वती वहन कर आयोजन को अंलकृत कर रहे हैं। इसीमें इस गौरवशाली तपस्वी, दानशूर आर्य हरिश्चन्द्रजी के कार्य-कलाप सेवा, तप, सम्मान के प्रति धन्यवाद के भाव हैं।

रावसाहब की दीर्घायु, आरोग्य, संपन्नता की कामनाओं के साथ

संपर्क - बचनदीप
हार्वेसभापति कम्पाउंड, अमरावती.
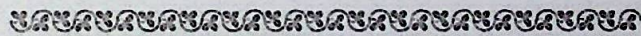
कल्याणकारी वचन

इस संसार में एक आशा नाम की नदी है। यह नदी मनोरथ-इच्छारूपी जल से भरी हुई है। इसमें तृष्णा, लोभ रूपी तरङ्गें उठ रही हैं। यह राग-द्वेष रूपी मगरमच्छों से परिपूर्ण हैं तथा तर्क-वितर्क रूपी जल-पक्षी इस में तैर रहे हैं। धैर्यरूपी वृक्षों को उखाड़ने वाली इस नदी में अज्ञान रूपी भँवर उठ रहे हैं। इस नदी के दोनों किनारों पर ऊँचे-ऊँचे चिन्ता रूपी तट हैं। इस नदी को पार करना बहुत कठिन है, परन्तु इस नदी को शुद्ध अन्तःकरण वाले त्यागी, तपस्वी, विरक्त योगी पार करके बन्धनों से छूटकर ब्रह्मानन्द को भोगते हैं।
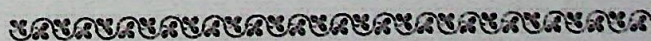
उच्च विचारों के धारणकर्ता : राव हरिश्चन्द्र जी आर्य

ब्र. पुष्पेन्द्र कुमार आर्य

आप होनहार आर्य युवक हैं, लेख लिखने में आप की रुचि है, आशा है, आप गुरुकुल आमसेना से वैदिक विद्वान् बन कर आर्य धर्म की सेवा करेगें।

आज सम्पूर्ण संसार में प्रत्येक भौतिक क्षेत्र में मनुष्य चरमोत्कर्ष पर पहुंच चुका है, कोई राजनीति की दृष्टि से, कोई सामाजिक कार्यों की दृष्टि से, कोई आर्थिक दृष्टि से तो कोई कला - कौशल विद्या की दृष्टि से आगे है। ये सब जो हम देख रहे हैं, इन सबमें मनुष्य सफलता को प्राप्त करता है और सफलता प्राप्त करने का रहस्य है उनके विचार, उनका मन ।

परमपिता परमात्मा ने अनेक जन्म बनाये हैं। मगर मनुष्य जन्म ही एक ऐसा जन्म है जिसे परमात्मा ने चिंतन करने, मनन करने की शक्ति, सामर्थ्य प्रदान किया, जिससे मनुष्य सुख-दुःख, हानि-लाभ, ऊंच-नीच समझकर उनके अनुकूल अपने जीवन को ढाल सके । मनुष्य का मन ही एक ऐसा कवच होता है जो बड़ी से बड़ी प्रतिकूल अवस्था रूपी बाधाओं को क्षत-विक्षत कर देता है । मगर अफसोस! आज मनुष्य ने स्वयं को पाश्चात्य संस्कृति में ढालकर अपने मन-मस्तिष्क को छोटा कर लिया है । आज हम छोटी-छोटी बातों को लेकर बड़ा आडम्बर खड़ा कर देते हैं । आज के युग के अधिकतर मनुष्य अपने दूषित विचारों के कारण ही कोर्ट-कचहरी में चक्कर काटते नजर आ रहे हैं ।

अस्तु! मैं बड़ाई न करता हुआ अपनी लेखनी को उस ओर लेजाना चाहूंगा जो आर्य विचारों से ओतप्रोत, ऋषि दयानन्द के अनुयायी, अद्भुत प्रतिभा के धनी, कट्टर आर्यसमाजी तथा करोड़ों के मालिक होते हुए भी ''सादा जीवन उच्च विचार'' को सार्थक कर रहे हैं। प्रतिकूल अवस्था में भी अपने मन को पवित्रता से युक्त करके धैर्यशीलता को धारण करने वाले हैं, वो हैं श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य।

जिंदगी संघर्ष का नाम है,
चलना ही वीर का काम है ।
पराजित हो गया जो थक गया,
समझो वही पूर्ण विराम है ।।

और भी कहा है -

कर्म करने में आजाद है नर,
इस रहस्य को कब पहचाना है ।
लकीर के फकीर जो बन बैठे हैं,
जिन्दगी उनके लिए जेलखाना है ।।

आपका जीवन भी संघर्षमय रहा, जो एक कृषक के घर से उत्पन्न हो श्री बैद्यनाथ कम्पनी नागपुर के महाप्रबंधक बने। आप कभी भाग्य के भरोसे नहीं रहे। सदा अपने लक्ष्य को आगे रखके तथा परिश्रम करते रहे, परिणामस्वरूप आज आप हमारे प्रेरक हैं, कि ''कोई भी मनुष्य जो जैसा सोचता है वैसा बोलता है, जैसा बोलता है, वैसा करता है और जैसा करता है, वह वैसा ही बन जाता है ।'' यह है विचार शक्ति का कमाल !

मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हुआ कि ऐसी दिव्यात्मा विभूति का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है ।

श्री राव जी से मेरी मुलाकात एक बार ही हुई, मगर एक ही बार के मिलन ने ही मुझे प्रभावित कर दिया था । राव जी से मेरी पहली मुलाकात सिर्फ ७-८ महीने पहले उनके अमृत महोत्सव में उनके संक्षिप्त जीवन परिचय को टाइप करने के लिए हुई । गर्मी का समय था, मैं कम्प्यूटर कक्ष में बैठा हुआ था। मै उन्हीं के जीवन परिचय के कार्य में व्यस्त था। आप मेरे कम्प्यूटर रूम में आए और प्रूफ संशोधन कार्य में मेरा हाथ बंटाने लगे । तभी अचानक बिजली की बोल्टेज कम हो गई । पंखे की गति थम सी गई मानो गर्मी देना ही इस पंखे का काम हो । कम्प्यूटर स्टेपलाइजर पर होने के कारण चल ही रहा था। गर्मी से दोनों परेशान होने लगे थे । मुझे शर्म महसूस होने लगी थी कि एक करोड़ों के मालिक आज मेरे समक्ष इस गर्मी में अपने अंगोछे से मुंह पोंछ रहे हैं और मेरे कार्य में हाथ बंटा रहे हैं । मुझे आश्चर्य होने लगा था, आश्चर्य भी होगा क्यों नहीं? आज आप किसी करोड़पति के घर में जाकर देखो, मानलो वहां थोड़ी देर के लिए बिजली गुल हो जाती है तो देखिए उस थोड़ी देर के लिए अपने विचारों को बिजली विभाग के प्रति कितना आक्रोशी बना लेता है । मगर श्री राव जी के चेहरे पर चिंता की एक भी रेखा नजर नहीं दिख रही थी वरन् पहले जैसी प्रसन्नता झलक रही थी ।

मुझसे रहा नहीं गया, अचानक कह बैठा - "राव जी ! यहां बहुत गर्मी महसूस हो रही है। आप बाहर जाकर ठण्डी हवा का आनन्द लीजिए । मैं आपका कार्य कर दूंगा ।

सुनते ही आप मुझसे कहने लगे - "समाज के कार्योंमें गर्मी और सर्दी कहां ? हमें बस कार्य करते जाना है ।"

आपका कहना था -

पूजा में सेवा की भावना होनी चाहिए,
कर्म की निष्काम आराधना होनी चाहिए ।
परिश्रम के बिना सब व्यर्थ है
पुरुषार्थपूर्वक प्रार्थना होनी चाहिए ।।

आपके इस पवित्र विचार को देखकर मैं तो स्तब्ध-सा रह गया । आपके मन में न तो कोई उत्तेजना की रेखा दिखाई दे रही थी और न ही रोष के लक्षण । उनके एक ही मिलन में उनके विचारों ने मुझे आकर्षित कर दिया था। ऐसे विचारवान् विद्वान्, सरल, दानशील व्यक्ति आर्यसमाज को मिलना स्वयं आर्यसमाज के लिए गौरव की बात है ।

मैं उनके इस अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि श्री राव जी को शतायु तथा अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करे, जिसे देख सारे आर्यजन उनके जीवन से प्रेरणा युगों-युगों तक लेते रहें और आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी का सपना साकार हो सके । श्री राव जी के जीवन में ऐसे गुणों की भरमार है जिसका बखान करते - करते जिह्वा नहीं थकती तथा लेखनी नहीं रुकती । श्री राव जी का जीवन अनुकरणीय है, उस दिव्य पुरुष को मेरा तथा सभी आर्यजनों की ओर से शत-शत वंदन और अभिनन्दन । अन्त में मेरी कामना है-

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का उच्च आदर्श रहे,
आर्यजाति प्राचीन जगद्गुरु भारतवर्ष रहे ।
पुष्प सूर्य सम जगती में, मानव का मणिमय ताज रहे,
सारा संसार एक स्वर में, "जय जय आर्यसमाज" कहे ।।

संपर्क - गुरुकुल आश्रम,
आमसेना (उड़ीसा)

आर्य जगत् रुपी आकाश के एक उज्वल नक्षत्र श्री. राव हरिश्चन्द्र जी आर्य

श्री वानप्रस्थ कन्हैयालाल जी चौरसिया विचारशील मधुर एवं मितभाषी, गंभीर चिन्तक, विद्वान् वक्ता एवं लेखक है । साहित्य के प्रचार-प्रसार में आप की बहुत रुचि है, आप आर्य विद्वानों के नम्र सेवक हैं। आपकी नम्रता से हर कोई प्रभावित होता हैं।

प्राचीन वैदिक काल संबंधी कहानियों में कहीं मैने पढ़ा था कि गुरुकुल का कोई ब्रह्मचारी गुरुकुल की किसी समस्या को लेकर राजा के दरबार में जाता था तो राजा अपने सिंहासन से उठकर उसका स्वागत करता था, उसकी समस्या को ध्यानपूर्वक सुनता था और उसकी समस्या का समुचित समाधान करके ही उसे वापस भेजता था । इस घटना की पुनरावृत्ति श्री राव साहब के समीप जाने पर गुरुकुल और आर्य समाज की समस्याओं के समाधान हेतु वही तत्परता, लगन, उत्साह एवं निष्ठा देखने को राव साहब की वाणी एवं व्यवहार में मिलता है । गुरुकुल आमसेना पर तो उनकी सदा कृपा रही । गुरुकुल फार्मेसी में राव साहब द्वारा उत्साह पूर्वक प्रदत्त मशीनें मेरे इस कथन की प्रत्यक्ष प्रमाण हैं ।

हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले के एक छोटे से ग्राम बीगोपुर में इनका जन्म हुआ । माता-पिता यद्यपि अक्षर ज्ञान विहीन थे किन्तु उनके जीवन में ऊंचे संस्कार एवं सरलता कूट-कूट कर भरी थी । आर्य संस्कार उन्हें अपने माता पिता से विरासत में मिले थे । वह छः भाई बहनों में सबसे छोटे थे ।

दुर्भाग्यवश पिता की छत्रछाया बाल्यकाल में ही उठ गई । इनके पालन पोषण का भार सर्व गुण सम्पन्न माता श्रीमती श्रृंगारी देवी एवं बड़े भाई धनसीराम ही पर आ गया । प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण गुरुजनों की निजी पाठशाला में प्राप्तकर वह नगर नांगल के हाई स्कूल में उच्च शिक्षा हेतु गये । उन्हें यह बहुत छोटी आयु में आभास हो गया कि सीमित आय में शिक्षा जारी रखना परिवार के हित में न होगा । अपनी शिक्षा को अधूरी ही छोडकर वह जीवन संग्राम में कूद पड़े । झाँसी के बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड में एक छोटी सी नौकरी से प्रारंभ करके उक्त संस्था की नागपुर शाखा मे महाप्रबंधक (मुख्य व्यवस्था) पद तक पहुँचना उनकी सूझबूझ, निष्ठा, ईमानदारी एवं लगन का प्रत्यक्ष प्रमाण है । ३१ मार्च २००७ को बड़े प्रयास के बाद अधिकारियों ने उन्हें सेवानिवृत्ति की अनुमति दी ।

आर्य समाज के सम्पर्क में आने और उसके रंग में रंगजाने का अवसर उन्हें अपने गाँव में ही आर्य भजनोपदेशकेंकी वाणी एवं भावपूर्ण भजनों से मिला । वह रंग आज तक भी रंचमात्र धूमिल नहीं हुआ है । आर्य समाज के साधारण सदस्य से प्रारम्भ करके मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पद एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान एवं अंतरंग सदस्य के रूप में सेवाकाल में रहते हुए भलीभाँति निभाया । आर्य सेवक के शताब्दी समारोह एवं आर्य महासम्मेलन नागपुर के अवसर पर उनकी तत्परता, आर्य कुशलता और लगन देखते ही बनती थी । नगर भ्रमण के अवसर पर आर्यजनों का सामूहिक सत्कार एवं स्वागत का चित्र तो ह्दय पटलभर आज भी अंकित हैं।

गृहस्थ जीवन में धर्मपरायण, सेवाभावी, सुशील एवं निष्ठापूर्वक समर्पित भाव वाली पत्नी श्रीमती शांन्तिदेवीजी ने सही अर्थों में अर्धांगिनी ही नहीं वरन् सहयोगी के रूप में भी ने उनका साथ निभाया। गृहस्थ जीवन मे भी उन्होने उतार चढ़ाव के बीच भी दोनों ने मिलकर गृहस्थी की गाड़ी को कुशलतापूर्वक आगे बढ़ाया । श्री राव जी के द्वारा आर्य सन्यासियों और विद्वानों का श्रद्धापूर्वक आदर सत्कार एवं आर्य समाज के प्रत्यक्ष महत्वपूर्ण कार्या में बढ़ चढ़कर भाग लेने का क्रम निरंतर चलता रहा ।

सन २००३ की २४ जनवरी को धर्मपत्नी के दुःखद निधन ने उन्हे कमजोर कर दिया, किन्तु उनके गृहस्थ जीवन का आधार इतना दृढ़ था कि उसमें कोई विशेष प्रभाव नहीं आया । आज भी वह उसी उत्साह, लगन एवं निष्ठा से अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं।

उन्होंने अपनी सीमित आय से कुछ निश्चित धन निकाल करके एक धर्मार्थ ट्रस्ट बनाया । वह ट्रस्ट आज "आर्यरत्न" एवं "आर्यभूषण" नामक पुरस्कारों से प्रतिष्ठित, अग्रणी आर्य सन्यासियों एवं उद्भट विद्वानों का सम्मान एवं सेवा कर रहा है । उस ट्रस्ट के माध्यम से ही उन्होंने अपने ग्राम बीगोपुर में एक अन्य आर्य समाज मंदिर का निर्माण कराया ।

सचमुच वह व्यक्ति और परिवार सौभाग्य शाली एवं साधुवाद का पात्र है जो अपने पूर्वजों की स्वस्थ परंपरा एवं संस्कारों को अपने जीवन के योगदान से पल्लवित एवं पुष्पित करता है तथा उन्हें अगली पीढ़ी को विरासत के रूप में देता है । यह उन्होने अति कुशलता, तप, त्याग, एवं स्नेह से इस विरासत को अपने दोनों पुत्रों को सौंपा हैं। वे भी अनुकरण करते हुए इसे आगे बढ़ा रहे हैं।

ऐसे शांत, सुशील, उदार एवं समर्पित व्यक्ति को तो सौ साल अधिक जीवित होने तक का वरदान तो परमपिता परमेश्वर से मिलता ही है । उसके साथ गुरुकुल आमसेना परिवार के सभी सदस्य परमपिता परमेश्वर से प्रार्थी हैं कि वह उन्हे सौ वर्ष से अधिक प्रतिष्ठित, ऐश्वर्य युक्त जीवन प्रदान करे ।

सपर्क - गाजीपुर(उ.प्र.)
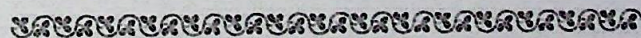
कल्याणकारी वचन

भोजन करना, नींद लेना, भयभीत होना तथा सन्तान पैदा करना, ये सब क्रियाएँ तो मनुष्यों में पशुओं के समान पायी जाती हैं। मनुष्यों में धर्माचरण ही एक ऐसा कार्य है, जो उनको पशुओं से अलग करता है और उनको प्राणियों में सर्वोच्च सिद्ध करता है। अतः जो मनुष्य शरीर धारण करके धर्माचरण नहीं करता, वह तो पशु-समान ही होता है।

कल्याणकारी प्रार्थना

हे परमपिता परमेश्वर! मै अपने अन्तःकरण में आपकी भक्ति (स्तुति-उपासना) सदा श्रद्धापूर्वक करता रहूँ तथा वेदों में वर्णित धार्मिक कार्यों को भी प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक करता रहूँ। क्योंकि यही मुक्तिप्रद मार्ग है।

आपकी कृपा से मैं सदैव धार्मिक विद्वानों का सत्संग करता रहूँ और सज्जन लोगों के मार्ग पर ही चलता रहूँ। मुझ में ऐसी भावना भरो कि में पाप कर्मों से सदा डरता रहूँ और सत्कर्मों को सदा करता रहूँ

हे प्रभो! शरीर को अनेक रोग उत्पन्न होकर जर्जर कर रहे हैं। इन समस्त रोगों के निवारण हेतु ब्रह्मचर्यरूपी महा-औषधि का सदा सेवन करता रहूँ, ऐसी कृपा करो कि मैं अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करूँ।

नीति-वचन

क्षमा किया, किन्तु असमर्थता के कारण; गृहसुख त्यागा, किन्तु विवशता से; सर्दी, गर्मी, आंधी आदि के अतिकष्ट सहे, किन्तु धनोपार्जन-आजीविका के लिए; तपस्या के लिए नहीं। प्राणों को वश में करके धन का तो चिन्तन किया, किन्तु कल्याणकारी शिव का ध्यान नहीं किया। इस प्रकार मुनिजन जो कर्म करते हैं, वे सब हमने किये, किन्तु मुनियों को प्राप्त होने वाले फलों से हम वञ्चित ही रहे। क्योंकि हमारा लक्ष्य सत्यतायुक्त नहीं था, मन में कुछ और था तथा कर्म में कुछ और था। उत्तम फल वहां मिलता है जहां कथनी-करनी एक हो।
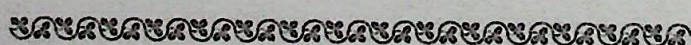
द्वितीय खण्ड

काव्यकुञ्ज
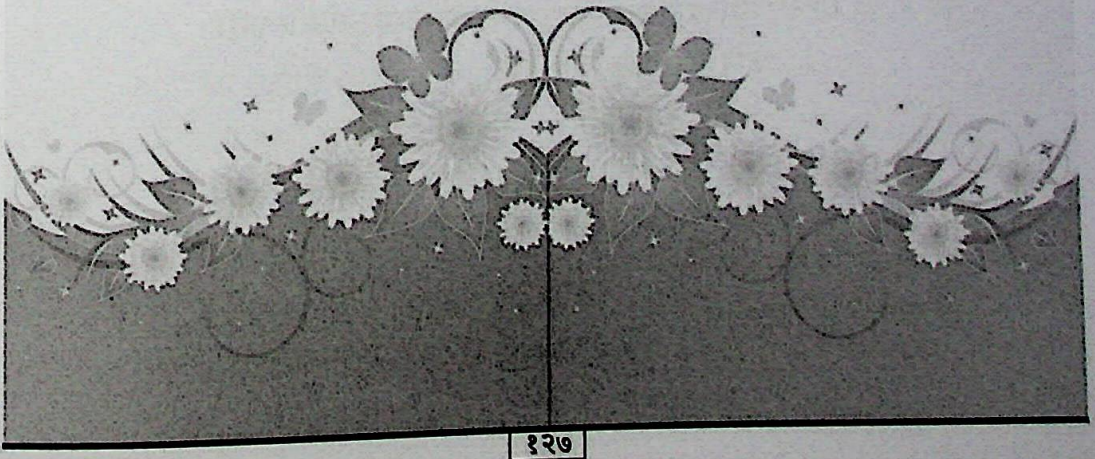
प्रभु तुम्हे नमस्कार

नमस्कार भगवान तुम्हें, भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी, मंगल में स्वीकार हो।।

तुम कण-कण में, बसे हुये हो,
तुम में जगत समाया है।
तिनका हो या पर्वत भारी,
सभी तुम्हारी माया है।।

जर्रे-जर्रे में व्यापक हो,
सब के सर्वाधार हो। श्रद्धा रूपी भेंट हमारी, मंगल में स्वीकार हो।।

जग के सच्चे पिता तुम्हीं हो,
तुम्हीं जगत् की माता हो।
भाई बन्धु मित्र सचा तुम,
सहायक रक्षक दाता हो।।

चीटी से लेकर हाथी तक,
सब के पालन हार हो। श्रद्धा रूपी भेंट हमारी, मंगल में स्वीकार हो।।

जीवन के तूफानों में प्रभु,
तुम ही एक सहारा हो।
डगमग-डगमग नैया डोले,
तुम ही नाथ किनारा हो।।

इस नैया के तुम केवट हो,
तुम ही तो पतवार हो। श्रद्धा रूपी भेंट हमारी, मंगल में स्वीकार हो।।

ऋषि मुनि और योगी सारे,
तेरे ही गुण गाते हैं।
क्या राजा क्या सन्त गृहस्थी
तुझ को शीष झुकाते हैं।

हम भी तेरी शरण आज हैं।
तुम करुणा के आधार हो।। श्रद्धा रूपी भेंट हमारी, मंगल में स्वीकार हो।।

आर्यत्व की प्रतिमूर्त्ति राव हरिश्चन्द्र

आचार्य स्वदेशजी, मथुरा (उ.प्र.)

श्री आचार्य स्वदेश जी स्वर्गीय प्रेमभिक्षु जी के उत्तराधिकारी हैं और प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'तपोभूमि' के सम्पादक, सत्य प्रकाशन एवं गुरुकुल के संचालक हैं। आप श्री विरजानन्द मार्ग ट्रस्ट के प्रमुख सहयोगी हैं । आप हिन्दी-संस्कृत के कवि एवं उच्च कोटि के लेखक एव वक्ता हैं।
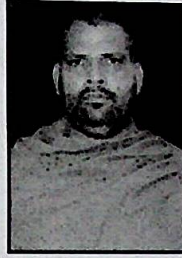
राष्ट्र प्रेम के भावों से सबने कर लिया किनारा ।
वर्त्तमान को देख व्यथित था सचमुच हृदय हमारा ।।
हम तो समझे हरिश्चन्द्र से भूप रहे न दानी ।
रिश्वतखोरी छीना-झपटी की ही बची कहानी ।।
चहुँ ओर स्वार्थ की देख साधना व्याकुल था मन मेरा ।
न्यून से न्यून भावना का भी नहीं कहीं था डेरा ।।
द्रष्टा बने मूक हो हमने चारों ओर निहारा ।
जीवन से फिर दिखा चमकता 'हरिश्चन्द्र' ध्रुव तारा ।।
काम किये तुमने जनहित में रखी वेद मर्यादा ।
अपनाया जीवन का जो पथ बिल्कुल सीधा-सादा ।।
बस जाती है बात आपके हिय में धरम-करम की
नहीं कभी घर कर पाती है नीति कोई भरम की ।।
न्याय पूर्ण उपदेश सदा ही जीवन में अपनाया ।
दयावान् हो दीन-दुःखी का संकट सदा हटाया ।।
नवजीवन उनको दे डाला जो भी मरे पड़े थे ।
होश नहीं था जिनको अपना बेसुध, दीन खड़े थे ।।

आर्यजगत् में दानवीर बन तुमने सुयश कमाया ।
निश्छल त्यागी विद्वानों का तुमने मान बढ़ाया।।
अपनी उन्नति देख कभी सन्तुष्ट न मन में होना ।
सबकी उन्नति के हित जग में सदा समय को खोना ।।
ऋषि दयानन्द की वाणी ही तुमने है अपनाई ।
परहित हेतु समर्पित कर दी अपनी बहुत कमाई ।।
अमृत-जीवन को कर डाला विषमय जीवन जीकर ।
सुधा बाँट दी सारे जग को गरल दुःखों का पीकर ।।
धन्यवाद **'श्रृंगारी'** माता तुम-सा पुत्र दिया है ।
मानवता का मानो तुमसे ही शृंगार किया है ।।
धन्य है **'धन्नाराम'** पिता और धन्य है **'धनसी'** भाई ।
पालन-पोषण किया साथ में विद्या खूब पढ़ाई ।।
कर सकता है नहीं कभी नर अपने मन का भाया ।
होता नहीं साथ में उसके यदि पत्नी का साया ।।
पत्नी का दायित्व **'शांतिदेवी'** ने खूब निभाया ।
धर्म-कर्म में आगे बढ़कर पति का हाथ बँटाया ।।
यादव कुल है धन्य आप सा पाकर रत्न निराला ।
हरिश्चन्द्र के आदर्शों को तुमने ही तो पाला ।।
है मेरी बस यही कामना जीवन जीयो सुधामय ।
शत वर्षों से अधिक तुम्हारा जीवन रहे निरामय ।।
प्रिय **'स्वदेश'** के लिए जिन्दगी काम आपकी आये ।
ऋषि दयानन्द के सपनों का भारत फिर बन जाये ।।

जयतु सकलविश्वे श्री हरिश्चन्द्रावः

डा. कपिलदेव जी द्विवेदी उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् हैं। प्राचीन वैदिक एवं अर्वाचीन साहित्य पर आप का अधिकार है। आप कई भाषाओं के उच्चकोटि के वक्ता एवं लेखक हैं। भारतवर्ष के विश्वविद्यालयों में आपकी पुस्तकें कोर्स में लगी हुई हैं।

वैदिकधर्मसेवायां दृढव्रतास्तपस्विनः ।
श्रीहरिश्चन्द्रावार्याः समाजसेवकाः श्रुताः ॥१॥

दानवीरो हरिश्चन्द्रो धन्नारामसुतोऽन्तिमः ।
ग्रामे बीगोपुरे मातृ शृङ्गारी देविलालितः ॥२॥

अग्रजो धनसीरामः पालको पोषकोऽभवत् ।
श्री रावहरिश्चन्द्रस्य बाल्ये ताते दिवंगते ॥३॥

श्री वैद्यनाथसंस्थायाः स्म आयुर्वेदविधौ रतः ।
लिपिकपद्युक्तोऽपि महाप्रबन्धकोऽभवत् ॥४॥

संस्थाया उन्नतिरेषा प्रमाणयति पौरुषम् ।
एवमार्यसमाजेऽपि एतैः प्राप्तं महद्यशः ॥५॥

आर्यसंन्यासिनां मान्यः विदुषां धर्मदीक्षिताम् ।
महाभागः सुधीः सौम्यो हरिश्चन्द्रो व्रती महान् ॥६॥

ट्रस्टं धर्माय संस्थाप्य उदारमतिना धिया ।
आर्यसंन्यासिनो बुद्धाः विद्वांसश्च सभाजिताः ॥७॥

'आर्यरत्नः' पुरस्कारः 'आर्यविभूषणः' परः ।
देयावुभौ पुरस्कारौ संन्यासिषु सुधीषु च ॥८॥

अभिनवगुणशोभालङ्कृतः शान्तचित्तः
अनुसृतनिवृत्तिः आर्यधर्मैकनिष्ठः ।
श्रम-सुचरित-कीर्ति-ज्ञान-सत्त्व-प्रतापो,
जयतु सकल -विश्वे श्री हरिश्चन्द्रावः ॥९॥

डा. कपिलदेवजी द्विवेदी

हे दानशूर, हे धर्मशूर! स्वस्थश्चिरं जीव्याः

आचार्य रामनाथ जी वेदालंकार, विद्यामार्तण्ड गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के प्रतिष्ठित स्नातक है और पूर्व उपकुलपति एवं संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे हैं। आप महर्षि दयानन्द वैदिक शोधपीठ पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में भी अध्यक्ष रहे हैं ।

शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं नृचक्षसस्ते अभि चक्षते हविः ।
ये पृणन्ति प्र च यच्छन्ति संगमे ते दक्षिणां दुहते सप्तमातरम् ।। ऋग्वेद १०.१०७.४

हे दानशूर, हे धर्मशूर !
हे दानशूर ! राव हरिश्चन्द्र आर्य !
महिमा ते भारते सर्वत्र कीर्त्यते ।
स्वावासे नागपुरे त्वया नागा न फलिताः
सत्यानिष्ठा धार्मिका आर्या एव संवर्धिताः ।
स्वजन्मस्थले बीगोपुरे मार्गदर्शकः
आर्यसमाजः सुदृढं स्थापितः ।
विद्वांसो योगिनः संस्कृतकोविदा वेदधुरन्धराः
महार्घेण 'आर्यरत्नेन' त्वया सम्पूजिताः ।
अन्येऽपि ये वहन्ति सम्मानयोग्यताम्
ते सादरम् 'आर्यविभूषणेन' भूषिताः ।
देहलीस्थसार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभायाः
उपप्रधानपदं त्वया गौरवान्वितं कृतम् ।
श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवनस्य नागपुरीयशाखायाः
महाप्रबन्धकः संवर्धको भवानभूत् ।
अनेके शिक्षालयाश्चिकित्सालयाः प्रकाशकाः
धनवर्षणेन भवता सन्ततं सत्कृताः ।
हे धर्मशूर! सपरिजनस्त्वं स्वस्थश्चिरं जीव्याः
धवलधवला त्वत्कीर्तिश्चतुर्दिक्षु प्रसरन्ती
मुक्तहस्ताभ्यां कृतं त्वद्दानं
गायं-गायं सुघोषयेत् तव महान्ति धर्मकार्याणि।
ओ३म् स्वस्ति - ओ३म् स्वस्ति ओ३म् स्वस्ति।

पं. रामनाथ वेदालंकार
वेदमन्दिर, ज्वालापुर(हरिद्वार)१/८/२०१०

"जीव्यात् वर्षशतादनन्तरमपि हरिः"

डा. प्रशस्यमित्र जी शास्त्री वैदिक साहित्य के गंभीर विद्वान्, संस्कृत भाषा के आशुकवि, ओजस्वी प्रभावशील प्रवक्ता हैं, जिनके लेखन और प्रस्तुतीकरण की शैली पर सारा आर्यजगत् मंत्रमुग्ध है। उन्होंने अपनी ललितकाव्य शैली में ही श्री आर्य जी का अभिनन्दन किया है।

(शार्दूलविक्रीडितानि)

सेवाभावमुदारवृत्तिसहितं सम्प्राप्य लोके ध्रुवम्
यो वेदाश्रितसत्यधर्मवरणे यद् वा प्रचारे रतः ।
शुद्धं सात्विकमेव जीवनविधिं सम्पादयन् शाश्वतम्
पूर्णं येन च सप्तसप्ततितमं वर्षं निजे जीवने ॥१॥

गार्हस्थ्यं रुचिरं सदा त्वभिमतं पौत्रैः सुपुत्रैर्वृतम्
सत्त्वं शीलगुणान्वितं रसभरं सम्पादयन् तत्त्वतः ।
आतिथ्ये च परोपकारकरणे युक्तः सुदृष्टस्तथा,
सन्मार्गाभिमुखः सदा मुनिदयानन्दस्य भक्तो व्रती ॥२॥

धर्मार्थं भुवि निर्मिमाय सुखदं न्यासं स्वनाम्नैव यः,
सम्मानार्थमहो! सतां च विदुषां संन्यासिनां सुकृताम् ।
सामान्ये ऽपि जने सदैव करुणावृत्तिं समुत्पादयन्,
रावः श्री हरिचन्द्र एव लभते कीर्त्तिं सदा सात्त्विकीम् ॥३॥

सर्वोच्चां खलु लक्षरूप्यकमितां संस्थाप्य पौरस्कृतिम्
आर्याणां बहुमानदां स्तुतिकरीं यश्चाऽऽर्यरत्नाऽभिधाम् ।
संस्तुत्यः स्वयमेव यः समभवद् विद्वद्भिराशंसितः,
देशे सद्गुणभूषितःकिल हरिश्चन्द्रः सदा वर्धताम् ॥४॥

आर्यसंघटनेऽपि यो बहुविधे नानापदारोहणम्,
कृत्वा संघरुचिं प्रदर्श्य जनता-कल्याणकार्ये रतः ।
सारल्यं प्रतिभासयन् हृदि सदा सिद्धान्तनिष्ठो हरिः,
जीव्यात् वर्षशतादनन्तरमपि प्रार्थ्यस्तदर्थं विभुः ॥५॥

प्रख्यात संस्कृतकविः डा. प्रशस्यमित्र शास्त्री, रायबरेली

अमृत स्तवन

आर्य अभिनन्दन करते हैं।
अपने प्रिय का वन्दन करते हैं ।।
जिनका जीवन इतना सुन्दर।
जैसे अमृत भरा हो अन्दर।।
अमृत स्तवन करते हैं ।।१।।
सोम्य सरस स्वरूप है पाकर।
शीतलता सबको है देकर।।
जीवन में रस भरते हैं ।।२।।
विद्वानों की करूंगा सेवा।
चाहे मिले ना मुझको मेवा ।।३।।
सेवा का धर्म अपनाकर।
मान-अपमान से अछूत रहकर।।
प्रभु काम करते हैं ।।४।।
हरि ने दो चन्द्र बनाकर।
आकाश और हरियाणा सजाकर।।
नाम भी हरिश्चन्द्र धरते हैं।।५।।
हरियाणा के चन्द्र हैं आप ।
शान्ति ने हर लिए आपके ताप ।।
पुत्र पा लिया महिपाल ।
राजेश्वरी से सजा लिया थाल ।।
स्नेहलता का स्नेह ना मिलता ।
कैसे यशपाल का यश फैलता ।।
किसने सजा दी मेरी बगिया ।
बनाके मुझको इसका बागवां।।
उसका हम भजन करते हैं ।।

रचयिता - आचार्य देवशर्मा, दिल्ली

राव हरिश्चन्द्र आर्य के अमृत महोत्सव पर

यह चन्द्रकिरण की सुषमा है या आसमान का तारा है।
हरिश्चन्द्र का चरित मनोहर प्रभु ने स्वयं संवारा है।।
बीगोपुर में जन्म लिया था फिर देसावर में किया प्रस्थान।
कई साल तक काम किया वहाँ बने ज्ञानी और धनवान्।।
जनहित परहित ध्यान लगाया दिल में सदा रहे भगवान्।
जन्मभूमि में मन्दिर बनवाया यज्ञ शाला का किया निर्माण ।।
लाखों रुपये दिये दान में पददि्लतों को उबारा है।
आर्यसमाज की संस्थाओं का देश में बने सहारा है।।
हर वर्ष ये उत्सव करके विद्वानों का करते सत्कार।
जिनने काम किया मानव हित उनका तुम करते उपकार।।
हे मानव के राजहंस तेरी हो रही यहाँ पर जय-जयकार।
मैं कहां तक तेरा चरित सुनाऊँ गाते चाँद-सितारे संसार ।।
यदुकुल का नाम बढ़ाया आर्य बनने का दिया नारा है।
समाज सुधार कर-करके तुमने पृथ्वी का भार उतारा है।।
तुमको दुनिया याद रखेगी जब तक रहेंगे पृथ्वी अम्बर
तू कोई रामकृष्ण है या कलियुग का है शंकर।।
महाभारत में कर्ण सुना था सतयुग में हरिश्चन्द्र महाराज
बीगोपुर में हरिश्चन्द्र है सब गुणियों का वह सरताज।।
पिछड़ा गांव और पिछड़ा समाज तूने किया उसका उद्धार।
बच्चा-बच्चा आवाज लगाता तू सच्चा है हरिश्चन्द्र सरदार ।।
हे सरदार, धर्मावतार, दानशिरोमणि हर युग में आना भू पर।
हमें नाज है हे वीर शिरोमणि हरिश्चन्द्र तेरे ऊपर।।

रोहित यादव
रिपोर्टर, नवभारत टाइम्स,दिल्ली

अभिनन्दन गीतम्

करते हैं आपका हम अभिनन्दनम्
आयु हो आपकी शरदः शतम्।
जीवन की मुश्किलों को हंस के गुजारा
आर्य समाज समझा प्राणों से प्यारा
समर्पित ऋषि को किया तन-मन-धन

यदुवंश 'शृंगारी' जी की गोदी में पले हो
'बीगोपुर' की धूली में घुटनों से चले हो
हरियाणा प्रान्त से हुआ उदयन
शैक्षणिक जीवन में सम्मान पाया
अनेक पदों पर रहकर जीवन बिताया
कर्मक्षेत्र रहा आयुर्वेद का भवन

कुशल मृदुभाषी मिली शान्ति-सी नारी
निष्कपट निष्कलंक पतिव्रत-धारी
वैदिक परिणय में हुआ दो हृदय का मिलन
वेद अनुकूल अपने जीवन को बनाया
श्रद्धा व निष्ठा से गृहस्थ को निभाया
यश-महिपाल खिले घर में दो सुमन

जीवन लगाया अपना समाज सुधार में
खजाने को खोल दिया वेद के प्रचार में
आगे बढ़ाया प्यारे ऋषि का मिशन
निर्धन अनाथों का बनके सहारा
मुफलासी गरीबी से उनको उभारा
यश गाते आपका ये धरती व गगन

धर्म के ही अनुकूल धन है कमाया
राष्ट्र और संस्कृति के हित में लगाया
सन्यासियों को भूषित किया आर्य रत्न
कुशल सूझ-बूझ से ही ख्याति ये पाई
संन्यासी तपस्वी सज्जन करते बड़ाई
'मन' युग पुरुष को हमारा नमन।।

वाग्मी
ब्रह्मचारी मनुदेव आर्य

तृतीय खण्ड

आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं

राष्ट्रीय प्रार्थना (१)

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां, निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् -यजुः० २२।२२

राष्ट्रीय प्रार्थना (हिन्दी)

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म-तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों अरिदल-विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौएँ पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योद्धा यजमान-पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षें पर्जन्य ताप धोवें।।
फल-फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी।
हो योगक्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।।

सौजन्यता और सरलता के प्रतीक श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य के लिए शुभकामना

आप आर्ष गुरुकुल आश्रम आमसेना और कन्या गुरुकुल आमसेना के संस्थापक हैं, जो भाई-बन्धु हिन्दू से ईसाई-मुसलमान बन गये है, आप अपनी सूझ-बूझ से समझाकर शुद्धि करके उनको घर वापस लाते है, आर्यसमाज के हित में कई गतिविधियाँ आपने चला रखी हैं।

श्री आर्य जी की मृदु मुस्कान, निश्छल सौम्य आकृति, उदारता और श्रद्धा से भरे हृदय को अनुभव करके इनसे मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रथम दर्शन से ही उनसे बंध जाता है। कुछ व्यक्तियों की महानता सुनने में ही आकर्षित करती है। उनके सम्पर्क में आना 'ऊँची दूकान फीके पकवान' जैसा होता है, परन्तु राव जी का प्रथम मिलन ही व्यक्ति को जोड़ने वाला होता है तथा यह स्नेह, संबंध उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। नीतिकारों का कथन है कि दो दुष्ट व्यक्तियों का मिलना ऐसा होता है जैसे प्रातःकाल की छाया प्रथम लम्बी होती है तथा मध्याह्न आने तक वह सिकुड़ जाती है। ऐसे ही दुष्टों की मित्रता पहले गहरी फिर उत्तरोत्तर टूटती जाती है परन्तु सज्जनों की मित्रता मध्याह्न के पीछे की छाया की तरह प्रथम में थोड़ी फिर उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। श्री आर्य जी का स्नेह -सम्बन्ध व मित्रता इसी प्रकार की होती है।

आज आर्यजगत् के अनेक उच्चकोटि के विद्वान्, साधु-महात्मा, कर्मठ कार्यकर्ता इनके साथ इसी प्रकार के स्नेह-सम्बन्ध में बंधे हुए हैं। चाल-चलन, रहन-सहन से सर्वथा सादे सरल दिखने वाले श्री राव जी का व्यक्तित्व आर्य जगत् के उच्चकोटि के व्यक्तियों में गिना जाता है।

सर्वथा सामान्य किसान परिवार में जन्मे मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त, धुन के धनी श्री राव जी ने झांसी में वैद्यनाथ भवन में प्रारम्भिक लेखक (लिपिक) के रूप में अपना कार्य प्रारम्भ किया, फिर उत्तरोत्तर सीढ़ी दर सीढ़ी आगे चढ़ते गये फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा।

अंत में लगभग ७० वर्ष की आयु में जनरल मैनेजर (महाप्रबंधक) के पद से अवकाश ग्रहण किया। आप प्रारम्भ से ही आर्य समाज की गतिविधियों से जुड़ गये थे। आर्य विद्वानों के उपदेश से आर्य समाज का संगठन करके अपनी आय से अप्ने ग्राम में भव्य आर्यसमाज मंदिर का निर्माण कराया। उसके वार्षिक उत्सव तथा प्रचार-प्रसार के अन्य कार्यक्रम समय-समय पर आप करवाते रहते हैं। अब अपने उसी पैतृक गांव में वृहत् चिकित्सालय का निर्माण कराया है।

श्री आर्य उदारता की प्रतिमूर्ति हैं। जब आपकी आय बढ़ने लगी तब दान के लिए भी आपके हाथ खुलते गये। किसी कवि ने लिखा है- **"पानी बाढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम, दोनों हाथों उलीचिए यही सज्जन का काम"** के अनुसार आपकी रुचि दान के प्रति बढ़ती गई। आपने प्रतिवर्ष अनेक महत्वपूर्ण

संस्थाओं को दान देना शुरू किया, जिससे वे खुलकर सेवा कार्य शुरू कर सकें।

इसी प्रकार आपने एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्य किया, कि आर्य जगत् के किसी एक प्रतिष्ठित संन्यासी या विद्वान् को एक लाख रुपये के आर्यरत्न पुरस्कार से सम्मानित करना। ऐसा प्रतिष्ठित सम्मान सारे आर्य जगत् में और किसी ने नहीं किया है। इस प्रतिष्ठित सम्मान के लिए अनेक व्यक्ति लालायित रहते हैं। इस प्रकार सर्वथा सामान्य कार्य प्रारम्भ करके आज आप आर्य जगत् के प्रतिष्ठित समाजसेवी, दानी महानुभावों में गिने जाते हैं। अनेक सामाजिक और शिक्षण संस्थायें आपके उदारतापूर्ण सहयोग से आगे बढ़ रही हैं।

मै आपके स्वास्थ्य, नैरोग्य, चिरायुष्य एवं समृद्धता की कामना करता हूं। परमात्मा आंपको और आपके परिवार को सुखी और सानन्द रखे। अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ,

आपका
स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा)
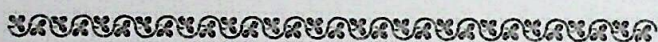
कल्याणकारी वचन

· प्राचीन काल में लोगों का जीवन, लक्ष्य तथा चिन्तन आज से सर्वथा भिन्न होता था। उस समय व्यक्ति विचारता था कि मेरे ऐसे सुदिनों से बढ़कर और क्या दिन होंगे, जब गंगा के किनारे, हिमालय पर्वत की किसी शिला पर, पद्मासन लगाकर, योग की क्रियाओं के अनुष्ठानपूर्वक ब्रह्म के स्वरूप का ध्यान करते हुए समाधि में लीन हो जाऊंगा और मेरी अहिंसा वृत्ति के प्रभाव से बूढ़े हिरण निर्भयतापूर्वक मेरे पास आकर मेरे शरीर से अपने शरीर को खुजाने का आनन्द लेंगे।
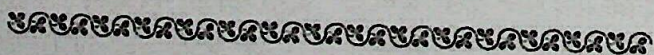
शुभाशीष एवं शुभकामना सन्देश

श्री स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक ने बड़ी आयु में गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) में वैदिक साहित्य का अध्ययन कठोर तपस्यापूर्वक किया। आप उच्चकोटि के योगी, साधक एवं ऋषिभक्त हैं। योगाभ्यास एवं आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा देना ही आपके जीवन का उद्देश्य है। दर्शन-योग महाविद्यालय रोजड़ (गुजरात) की स्थापना करके वहाँ से अनेक उच्चकोटि के तपस्वी विद्वान् तैयार किये हैं। आप तपोनिष्ठ आर्य संन्यासी हैं। श्री आर्यजी के प्रति भी आपका बहुत स्नेह है।

समादरणीय श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती
सादर नमस्ते

ईश्वर की असीम अनुकम्पा तथा अनेक महानुभावों के सहयोग से मेरे स्वास्थ्य में लाभ हो रहा है। आशा है कि आप भी स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के अमृत महोत्सव के विषय में आपका पत्र प्राप्त हुआ।

प्रसन्नता का विषय है कि वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के प्रति समर्पित, कर्मठ समाजसेवक राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का इस वर्ष अमृत महोत्सव मनाया जायेगा। इस अवसर पर एक भव्य अभिनन्दन ग्रंथ भी प्रकाशित करने की तैयारी चल रही है। इसके लिए मैं अपना शुभकामना सन्देश प्रेषित कर रहा हूँ।

ईश्वर प्रदत्त सामर्थ्य एवं अपने उत्तम संस्कारों के कारण श्री हरिश्चन्द्रजी एवं उनका परिवार तन, मन, धन से आर्य समाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार एवं वैदिक विद्वानों के आतिथ्य सत्कार, सत्संग में श्रद्धापूर्वक संलग्न हैं तथा "शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर" वेद के इस ऋचाखण्ड को भी क्रियान्वित कर रहे हैं।

मैं श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य और उनके परिवारजनों के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ तथा वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूपी पुरुषार्थ चतुष्टय को शीघ्र सिद्ध करें यह शुभाशीष प्रदान करता हूँ।

भवदीय
स्वामी सत्यपति परिव्राजक
वानप्रस्थ साधक आश्रम
आर्यवन, रोजड़ (गुजरात)

अमृत महोत्सव पर शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद

आचार्य बलदेवजी नैष्ठिक ब्रह्मचारी, तपस्वी एवं प्रतिष्ठित आर्य नेता हैं। आप प्राचीन संस्कृत व्याकरण के विद्वान् हैं। आप अनेक विद्वानों व योगाचार्यों के निर्माता हैं। विश्व-विख्यात स्वामी रामदेवजी आपके शिष्य हैं।
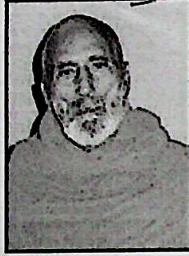
राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का नाम उद्योग जगत् तथा आर्यजगत् में सुविख्यात है। इन्होंने सौभाग्य और पुरुषार्थ से समृद्धि भी प्राप्त की है और उसके साथ-साथ आर्यत्व के संस्कार भी प्राप्त किये हैं। मूलतः हरियाणा निवासी श्री आर्य ने आज आर्यजगत् में प्रतिष्ठापूर्ण स्थान बनाया हुआ है। दान-भावना ने उस प्रतिष्ठा को और विस्तारित किया है।

आर्य जी की एक विशेषता यह है कि वे अत्यन्त विनम्र तथा सुशील स्वभाव के हैं। दृढ़ आर्य हैं। इनके प्रयास से सारा परिवार भी आर्य संस्कारों से ओतप्रोत है। ये आर्य जगत् के पहले ऐसे धनाढ्य व्यक्ति हैं जिन्होंने संन्यासियों, ब्रह्मचारियों तथा विद्वानों को एक-एक लाख रुपयों के सम्मानजनक पुरस्कार प्रदान किये हैं। इनसे आर्य संन्यासियों तथा विद्वानों को प्रोत्साहन मिला है। समाज को आगे बढ़ाने के लिए ऐसे उदारमना आर्यों की महती आवश्यकता है। परमात्मा उनके पुत्रों-पौत्रों में भी यह लगन लगाये रखे।

अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर मैं आर्य जी के सुस्वास्थ्य, सुख, शान्ति, समृद्धि और दीर्घायुष्य की कामना परमात्मा से करता हूँ और इन्हें आशीर्वाद देता हूँ - **''त्वं जीव शरदः शतं वर्धमानः''** - आप समग्र प्रकार की उन्नति करते हुए सौ वर्ष की, अपितु उससे भी अधिक वर्षों की आयु प्राप्त करें। अन्य संपूर्ण परिवार के लिए भी मेरा यही आशीर्वाद है।

आचार्य बलदेव
उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा, दिल्ली
संरक्षक, आर्य प्रतिनिधिसभा हरियाणा
अध्यक्ष हरियाणा गोशाला संघ

"मानव जीवन जीने की कला का केन्द्र राव हरिश्चन्द्र आर्य"

स्वामी सदानन्द सरस्वती

श्री स्वामी सदानन्दजी सरस्वती दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब के प्रबन्धक तथा स्वामी सर्वानन्दजी के प्रतिष्ठित उत्तराधिकारी हैं। अब आपकी छत्रछाया में उस क्षेत्र में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार हो रहा है।

मानव जन्म ईश्वर की अमूल्य निधि है, इससे बढ़कर कोई दूसरी वस्तु दुनिया में नहीं है । पुण्य कर्मों के फल से मिलता है नरतन चोला इसलिए संसार के सभी पदार्थों में मनुष्य जीवन कीमती है । इस मानव जीवन की जितनी महिमा और गुण गान किया जाये थोड़ा है। इसका एक-एक सांस करोड़ों का है । अतः जीवन एक कला है । जीवन को कैसे जीना है, इसको जानने के लिये राव हरिश्चन्द्र आर्य को जानो। एक बार राव हरिश्चन्द्र जी से मेरी बातचीत हो रही थी। बातचीत में राव हरिश्चन्द्र जी ने कहा। सबको जीना नहीं आता, जीने के लिए विचारों की जरूरत होती है। जीवन जब खत्म हो जाता है, तब लोगों को जीना आता है । गुजरा हुआ समय दोबारा वापस नहीं आता। आम आदमी रोता हुआ पैदा होता है और शिकवे-शिकायत, चिंताओं-समस्याओं व इच्छाओं की भागदौड़ में जीता है तथा अन्त में पछताता- रोता हुआ दुनिया से विदा हो जाता है । यह विचार मैंने राव हरिश्चन्द्र जी से नागपुर में जब आर्यरत्न पुरस्कार लेने स्वामी सर्वानन्द जी की जगह गया था, तब सुने, जीवन को कैसे जीना है, जीवन का क्या ध्येय है, यह सब राव हरिश्चन्द्र जी के जीवन से पता चलता है। यह उनके जीवन की सम्पूर्ण व्याख्या है । राव हरिश्चन्द्र जी ने जीरो से कार्य आरम्भ किया और आज अपनी मेहनत से वे हीरो हैं। आर्य समाज के भामाशाह हैं। सीधे-सादे एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। कभी-कभी देखा जाता है कि हमारे कुछ आर्यसमाज के नेता स्टेज के धनी होते हैं, वाक्शूर होते हैं, वाकपटु होते हैं, परन्तु आर्यत्व हीन होते है, व्यक्तिगत जीवन एवं पारिवारिक जीवन से परेशान होते हैं। परन्तु हमारे आर्य नेता भामाशाह राव हरिश्चन्द्र जी वैदिक धर्म के दीवाने, जीवन धनी, तपस्वी, कर्मठ आर्य, कर्मठ समाजसेवक साधु-संतों, विद्वानों के नतमस्तक सेवक, आर्य जगत् के प्रत्येक यज्ञ में आहुति डालकर बढ़-चढ़ कर भाग लेने वाले व्यक्तित्व के धनी हैं । राव हरिश्चन्द्र जी का जीवन सरल, सरस एवं सौम्य है। समाज में इनका यश है । पुत्र एवं पुत्रवधुएं एवं परिवार के समस्त सदस्य इनको देवता स्वरूप समझते हैं । लोग इनके जीवन को देखकर स्वयं को धन्य समझते हैं ।

इनके जीवन जीने की कला को देखकर अनेक परिवार ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त की ओर झुके हैं। इनके पुत्र और पुत्रवधुओं का जीवन मैंने इनके परिवार में रहकर देखा है, इनकी पुत्रवधुएं बार-बार यही कहती हैं कि सब कुछ हमारे बापू जी की देन है। राव हरिश्चन्द्र जी अपने वक्तव्य में लोगों को उपदेश देते हुए यह कहते हैं, "यह जीवन कुरुक्षेत्र है । इसमें नित्य

लड़ाइयों, चिंताओं, इच्छाओं, वासनाओं आदि के संघर्ष छिड़े रहते हैं। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो संघर्षों, समस्याओं, चिंताओं और इच्छाओं की उलझन में न उलझा हुआ हो। स्त्री-पुरुष बूढ़े-बच्चे सभी लड़ाई के मैदान में हैं, कोई पाने के लिए संघर्ष कर रहा है,तो कोई छोड़ने के लिये परेशान है, कोई भूख से परेशान है, तो कोई भूख न लगने से बीमार व बेचैन है। सभी के जीवन में संघर्ष है।

जीवन संग्राम है। इस संग्राम में कैसे विजयी हुआ जाए, यही जीवन कला हमें सिखाती है । जीवन के हर क्षेत्र और पहलू की समस्या का व्यावहारिक उपयोगी एवं सीधा सच्चा मार्ग बताती है। जीवन का सन्देश है, कि जीवन की समस्याओं, चिंताओं एवं उलझनों से भागना नहीं है, प्रत्युत जागना है। ज्ञान और धैर्यपूर्वक समस्याओं का समाधान खोजना है। समस्या है तो उसका समाधान भी है। संसार में रहते हुये भागते-दौड़ते उलझनों और चिंताओं-भरे जीवन को जीते हुए अपने जीवन के उद्देश्य को पाना है, धीरे-धीरे उस ओर बढ़ना है । ऐसा ही कर्मशील व्यक्ति जीवन संग्राम में सफल व विजयी होता है । जीवन एक युद्ध है। अन्दर-बाहर दोनों जगह युद्ध हो रहा है, इसे जीतना है, कैसे जीतना है, जिसने इसे समझ लिया, वह भवसागर से पार हो गया। भवसागर से पार होना ही मानव-जीवन की सार्थकता और उपयोगिता है ।''

ये बातें राव हरिश्चन्द्र जी कहते ही नहीं, अपितु इन्होंने अपने जीवन में उतारी भी हैं। माता-पिता ने जन्म दिया क्षत्रिय वंश में, और सचमुच मनु महाराज के कथनानुसार मन, वचन, कर्म से क्षत्रिय धर्म का पालन कर रहे हैं । मनु महाराज ने 'मनुस्मृति' नामक धर्मशास्त्र में 'क्षत्रिय' की व्याख्या की थी, यज्ञ करना, ''यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना नहीं और वेद पढ़ना।'' क्षत्रिय धर्म का साक्षात्कार करना हो तो राव हरिश्चन्द्र एवं उनके परिवार के दर्शन करें। भगवान् से मैं इनकी लंबी आयु की एवं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं । ये जितना अधिक जीयेंगे,लोग उतनी ही अधिक जीवन जीने की कला इनसे सीखेंगे।

संपर्क- अध्यक्ष
दयानन्द मठ, दीनानगर (पंजाब)
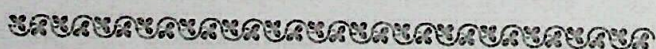
कल्याणकारी वचन

धैर्य जिसका पिता है, क्षमा जिसकी माता है, लम्बे काल तक साथ देने वाली शान्ति जिसकी स्त्री है, सत्य जिसका मित्र है, दया जिसकी बहिन है, मन का संयम जिसका भाई है, भूमि ही जिसकी शय्या है, दिशाएँ ही जिसके वस्त्र हैं और ज्ञान रूपी अमृत का पान करना ही जिसका भोजन है, हे मित्र! जिस योगी के ऐसे कुटुम्बीजन हैं, उसे संसार में किससे भय होगा? अर्थात् किसी से भी भय नहीं होगा ।योगी निर्भय होता है।
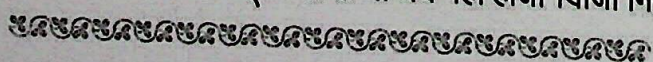
विद्वानों की सुमति में रहने वाला पराजित नहीं होता ।

श्री स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती वैदिक शास्त्रों के विद्वान्, योगसाधक, एवं मनीषी विद्वान् हैं। आप की ओर से वर्षभर योग-शिक्षण और प्रचार-प्रसार चलता रहता है। आपने गुरुकुल झज्जर में तपस्या करते हुए वेद-वेदाङ्गों की शिक्षा ग्रहण की। आपकी आर्यजगत् के प्रतिष्ठित संन्यासियों में गिनती है ।

वैदिक साहित्य में मानव को सर्वांगीण रूप से विकसित होने के विशेष उपाय वर्णित हैं । निराशा, अवसाद, कष्ट क्लेश को दूर कर साहसी होकर धैर्यपूर्वक निरन्तर विद्या-बल-धन-पराक्रम तथा यशस्वी बनने की सशक्त प्रेरणाएँ वेद में मिलती हैं। यथा **"उद्यानं ते नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि"** परमात्मा प्रबल प्रेरणा देते हैं, हे मानव ! निरंतर समुन्नत होने के लिए मैंने तुझे संसार में भेजा है। तुम्हारे स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर में अनेक दक्षता-निपुणता रूप विद्या-कला कौशल का आधान किया है। तुम्हें बुद्धि-विकास के प्रसंग आने पर बौद्धिक विकास से विद्या ब्रह्मज्ञान, समाज सेवा, परोपकार आदि यज्ञमय कार्य करने का अवसर मिलेगा। उत्तम सदाचारी, धर्मनिष्ठ, योगनिष्ठ स्थितप्रज्ञ सज्जनों का साथ सदैव करते रहना है। इससे तेरा जीवन समुन्नत होगा। तेरी रक्षा मेधावी विद्वान् करेंगे । तुम्हें शास्त्रबल के पराक्रमी क्षत्रिय सुरक्षित रखेंगे। उचित सत्य न्यायाधीश अन्याय से तेरी रक्षा करेंगे, तुझे कोई असत्य अपवादों, आरोपों से दबा नहीं सकता और न हरा सकता है ।

इस वेद वचन -

"यं रक्षन्ति प्रचेतसो मित्रो वरुणोअर्यमा।न किः स दभ्यते जनः।"

को श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य ने अपने जीवन में चरितार्थ किया है । उन्होंने अनेक संन्यासियों, विद्वानों, लेखकों, समाज-सुधारकों को सम्मानित करके पवित्र परम्परा का पालन किया है । वैदिक जनों के शुभाशीष से वे आज आयु, धन, यश, वैभव से समुन्नत हैं । आगामी जीवन शैली में इसी शैली का अनुसरण करते हुए उदात्त भावनाओं के साथ समुन्नत होते रहें और दीर्घायुष्य का सुख प्राप्त कर ईश्वरीय आनन्द के भागी बनें ।

इसी मंगल कामना के साथ

डा. दिव्यानन्द सरस्वती

एम.ए.,पी.एच.डी.

योग प्रशिक्षक, वेद कथाकार

ज्वालापुर (हरिद्वार)

संकल्प के धनी राव हरिश्चन्द्रजी के लिए स्वस्ति-कामना

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती एक कर्मठ और तपस्वी विद्वान् संन्यासी हैं। आप धनुर्विद्या के विशेषज्ञ हैं। धनुर्विद्या में पी एच.डी. करनेवाले एकमात्र विद्वान् हैं।

'क्रतुमयः पुरुषः' मनुष्य अपने संकल्पों का बना हुआ होता है। वह जैसा संकल्प करता है, वैसा ही बन जाता है। इसीलिये आर्यों की दिनचर्या में सोते समय शिवसंकल्प के मंत्रों का पाठ किया जाता है। रात्रि में सोते समय भी शुभसंकल्पों का निर्माण किया जाता है।

संकल्प व्यक्ति के समस्त चिन्तन को एक दिशा प्रदान कर उसकी समस्त ऊर्जा को निर्धारित लक्ष्य की ओर केन्द्रित कर देता है और परमात्मा भी उसका सहायक बन जाता है। किसी कवि ने कहा है-

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिःशक्तिःपराक्रमः।

षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्।।

पुरुषार्थ, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम ये छः गुण जिस व्यक्ति में होते हैं वहाँ भाग्य भी सहयोगी या अनुकूल बन जाता है।

पुरुषार्थ और भाग्य दोनों में पुरुषार्थ ही बड़ा है क्योंकि जो कर्म किये हैं अर्थात् पुरुषार्थ से ही भाग्य बनता है और पुरुषार्थ भाग्य की प्रतिकूलता को बदल भी देता है। पञ्चतन्त्र में कहा है -

यस्याऽस्ति सर्वत्र गतिः सः कस्मात्

दारिद्र्यजातान् प्रसहेत दुःखान्।

तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः

क्षीरं जलं कापुरुषाःपिबन्ति।।

जिसका सर्वत्र जाने का सामर्थ्य है वह धनाभाव से होने वाले दुःखो को क्यों सहन करता है? यह कुँआ हमारे बाप-दादाओं ने बनवाया है, यह कहते हुये उसके खारे जल को कायर पुरुष ही पीते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में गति रखनेवाला कभी धनाभाव से पीड़ित नहीं होता।

राव हरिश्चन्द्र जी की गणना ऐसे ही संकल्प के धनी व्यक्तियों में होती है जिन्होंने अपने पुरुषार्थ से भाग्य को भी अपने अनुकूल बना लिया। लक्ष्मी की कृपा होने पर भी अपने पूर्वजों की मर्यादा को नहीं भूले। सौम्य और विनम्रता की मूर्ति, सबका हाथ-जोड़ कर अभिवादन, हँसते हुये आत्मीय की भाँति व्यवहार व्यक्ति को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

ऐसा देखा जाता है कि, साधन सम्पन्न होने पर व्यक्ति अपने पैतृक ग्राम या नगर को भूल जाता है परन्तु आदरणीय राव साहब इसके अपवाद हैं। अपनी जन्मभूमि में सुन्दर आर्यसमाज का निर्माण और वार्षिक उत्सव का प्रारम्भ आपकी ही देन है। अब उसी बीगोपुर

ग्राम में धर्मार्थ औषधालय का निर्माण कराया है जिससे लोगों को सहज में ही चिकित्सा सेवा उपलब्ध हो सके। **"अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः"** वेद के इस उपदेश के अनुसार इनके सुपुत्र श्री महिपाल, यशपाल भी धार्मिक प्रवृत्ति और कुशल व्यावसायिकता दोनों ही गुणों से सुभूषित हैं।

'राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट" द्वारा अनेक आर्य विद्वानों को सम्मानित किया गया है और यह सद्प्रयास अब भी चल रहा है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

"अहो किमपि चित्राणि चरित्राणि महात्मनाम्।

लक्ष्मीं तृणाय मन्यन्ते तद्भारेण नमन्त्यपि।

अर्थात्- महापुरुषों का जीवन विलक्षण होता है। वे लक्ष्मी को तिनके के समान तुच्छ समझते हैं, क्योंकि **"मानो हि महताम् धनम्"** मान, यश, कीर्ति ही उनका धन है। यदि लक्ष्मी की कृपा हो जाये तो उसके भार से वे विनम्र भी हो जाते हैं।

इस वर्ष उनका अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मैं सार्वदेशिक आर्यावीर दल की ओर से उनके शतायु, आरोग्य और आयु के चतुर्थ काल में मुक्ति पथ के पथिक बनने की शुभकामनाएं देता हूँ। ओ३म् स्वस्तिः।

स्वामी देवव्रत सरस्वती
प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल
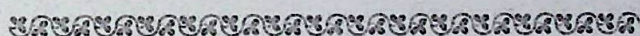
कल्याणकारी वचन

मनुष्य जब मरता है तब सारी धन-सम्पत्ति पृथ्वी पर ही पड़ी रह जाती है, पशु बाड़े में रहते हैं, जीवन-साथी घर के दरवाजे तक साथ देता है, मित्र बन्धु-सम्बन्धी श्मशान तक साथ चलते हैं और यह शरीर चिता पर जलकर भस्म हो जाता है। यदि जीवात्मा के साथ परलोक में कोई चलता है, तो वह कर्म ही है, जो उसने जीवित रहते हुए अच्छा-बुरा किया है, और कोई साथ नहीं जाता। इसलिये मनुष्य को अच्छे कर्मों का पालन करना चाहिए जिससे उनके अनुसार भावी जन्म अच्छा मिले, सुखी-समृद्ध जन्म मिले।
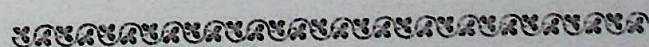
अमृत महोत्सव पर शुभकामनाएँ

आचार्य विजयपालजी गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर के स्नातक व त्यागी तपस्वी, कर्मठ विद्वान्, नैष्ठिक ब्रह्मचारी एवं वर्तमान में गुरुकुल झज्जर के आचार्य व आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान हैं।

श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य एक समृद्ध परिवार के मुखिया होते हुए भी "सादा जीवन, उच्च विचार" के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं। विनम्रता इनके व्यवहार का आभूषण है। अभिमान से ये सदा दूर रहते हैं। इनका जीवन आर्यत्व के अनुरूप है। इनके परिवार की यह विशेषता है कि सारा परिवार आर्य संस्कारों और आचरण वाला है। श्रद्धा और सेवा इनके परिवार के विशेष गुण हैं।

आर्य जी मूलतः गांव बीगोपुर (नारनौल, हरियाणा) के निवासी हैं। नागपुर में आकर इन्होंने अपना व्यवसाय स्थापित किया। अच्छे व्यवहार और पुरुषार्थ से व्यापार में पर्याप्त प्रगति हुई। सज्जनों पर परमात्मा की भी कृपा रहती है। समृद्धि प्राप्त करके इन्होंने दान-धर्म को सदा स्मरण रखा है। अपने सात्विक दान से इन्होंने आर्यजगत् के अनेक व्यक्तियों का सम्मान किया है तथा अपने गांव में जन कल्याण की योजनाएँ आरम्भ की हुई हैं। इस प्रकार आर्य जी जनसेवा में संलग्न रहते हैं। ऐसा श्रेष्ठ सज्जन व्यक्ति जितना अधिक जीवित रहेगा, उतना ही समाज का परोपकार होगा।

मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि राव हरिश्चन्द्र जी आर्य को चिरायु, स्वस्थ और सुखी जीवन प्रदान करें। ये **"जीवेम शरदः शतम् - भूयश्च शरदः शतात्"** वेद के इस निर्देश के अनुसार सौ वर्षों से अधिक जीवन प्राप्त करें तथा परोपकार करते रहें। अमृत महोत्सव के अवसर पर इनको मैं शतशः शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ।

आचार्य विजयपाल
प्राचार्य गुरुकुल झज्जर (हरियाणा)
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (हरियाणा)

श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के लिए मंगलकामना

श्री स्वामी प्रणवानन्द सरस्वतीजी की गिनती आर्यजगत् के समर्पित एवं कर्मठ संन्यासियों में की जाती है। आप आर्य साहित्य के प्रसारक एवं रक्षक हैं। आपने आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा के लिए पांच गुरुकुलों की स्थापना की है। आप बहुत उदारभाव के सेवाभावी संन्यासी हैं।

भारत की इस पवित्र भूमि पर समय-समय पर ऐसे अनेक महात्माओं और भक्तों ने जन्म लिया है, जिन्होंने समाज सुधार और देश सेवा को ही अपने जीवन की सार्थकता माना है। इन्हीं पुण्यात्माओं में श्रद्धेय श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य भी एक हैं। राव साहब से मेरा निकट सम्बन्ध रहा है और यह सम्बन्ध अत्यंत श्रद्धा और स्नेह का सम्बन्ध रहा है। महर्षि दधीचि, राजा शिवि और राजा हरिश्चन्द्र के जीवन दर्शन के बारे में पढ़ने और सुनने पर मेरे मानस पटल पर जो अमूर्त छाप पड़ी थी, श्री राव हरिश्चंद्र जी आर्य को निकट से देखने और उनके जीवन दर्शन करने पर वह छाप मूर्त रूप में मेरे सामने आई है।

माननीय राव हरिश्चन्द्र जी आर्य अपने मन, वचन और आचरण से सच्चे आर्य हैं। उन्होंने महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार में अपने जीवन की पर्याप्त सम्पत्ति की आहुति तो दी ही, परंतु उन्होंने इसके लिये अपने को भी महर्षि के चरणों में अर्पित कर दिया। इनका तप, त्याग, देश-सेवा और आर्यसमाज के प्रति पूर्ण समर्पित जीवन सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के लिए एक आदर्श रहा है। उन्होंने पहले से ही शुद्ध विचार, सात्विक आहार, व्यायाम, प्राणायाम सत्संग, स्वाध्याय तथा ईश्वर भक्ति आदि को अपने जीवन में धारण किया था। और 'परोपकारजं पुण्यं न स्यात् क्रतुशतैरपि' की उक्ति को भलीभाँति जान लिया था। अतएव अपना सर्वस्व परोपकार के लिए लगा दिया। इन्होंने अनेक संस्थाओं को दान देकर एवं अनेक वैदिक विद्वानों को 'आर्यरत्न पुरस्कार' से सम्मानित कर लाभान्वित किया है तथा अनेक सम्मेलनों का आयोजन कर आर्यजगत् का उपकार किया है। वास्तव में इन्होंने **'परोपकाराय सतां विभूतयः'** को चरितार्थ किया है। जो देश का इतना बड़ा परोपकार कर देता है उसका अनुकरण जनता अवश्यमेव करती रहेगी।

मैं परमपिता परमात्मा से प्राचीन संस्कृति के महान् उपासक, महर्षि दयानन्द के परमभक्त, आर्य जाति के अनथक सेवक, राष्ट्रसेवा में अहर्निश जागरूक, अपना सर्वस्व होम कर भी आर्यसमाज के उत्थान में संलग्न, जीवित हुतात्मा, तपोनिष्ठ एवं मानवता के प्रकाशपुञ्ज श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य की दीर्घायु एवं पूर्ण स्वास्थ्य की कामना करता हूँ तथा प्रार्थना करता हूँ कि परमात्मा इनका उत्साह बनाए रखे जिससे वह समाज का चिरकाल तक उपकार करते रहें।

भवदीय मंगलाभिलाषी
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गुरुकुल, नई-दिल्ली

शुभकामना सन्देश

श्री स्वामी धर्ममुनिजी आर्य जगत् के कर्मठ, त्यागी संन्यासी हैं। आप हरियाणा के बहादुरगढ में आत्मशुद्धि नाम से आश्रम बनाकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगे हुए है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई है की श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य का इस वर्ष अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है । इस सुअवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित करने की योजना है ।

श्री राव हरिश्चन्द्रजी का जन्म १५ अप्रैल १९३४ को रविवार को हरियाणा प्रान्त के महेन्द्रगढ़ जिले में नारनौल तहसील के बीगोपुर ग्राम में हुआ था । आपके पिता श्री धन्नाराम बचपन में ही स्वर्गवासी हो गये, आप होनहार कुशाग्रबुद्धि तथा विनम्र स्वभाव के थे। अपनी शिक्षा पूरी कर अपनी कार्य कुशलता से ही आप बैद्यनाथ आयुर्वेद लिमिटेड में लिपिक के पद पर कार्य करते हुये महाप्रबन्धक पद तक पहुँचे । आपकी सूझ-बूझ ईमानदारी तथा कार्य कुशलता के कारण ही कम्पनी ने आपको चाहते हुए भी पूर्व अवकाश नहीं दिया ।

अपने गाँव में ही आर्य भजनोपदेशों के प्रभाव से वैदिक सिद्धान्तों में रंग गये और निरंन्तर आर्य समाज की गतिविधियों में बढ़चढ़कर भाग लेने लगे । वैदिक सिद्धान्तों का आपने कठोरता से पालन किया है । दैनिक यज्ञोपरान्त ही आप अपने दैनिक कार्य सम्पन्न करते हैं। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिये ही आपने अपनी पुण्य कमाई से राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना कर आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासियों एवं विद्वानों को "आर्य रत्न" और "आर्य विभूषण" नामक पुरस्कारों से अलंकृत कर प्रोत्साहित किया है। अग्रगण्य आर्य संन्यासियों, आर्य विद्वानों और आर्य समाज की गतिविधियों में एक उत्साह पैदा हुआ है । आप अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। आप आत्मशुध्दि आश्रम बहादुरगढ़ हरियाणा द्वारा प्रकाशित 'आत्म शुद्धि पथ' के संरक्षक सम्पादक हैं। आपके दोनों सुयोग्य पुत्र श्री महीपालजी आर्य एवं श्री यशपालजी आर्य "अनुव्रतः पितुः पुत्रो" वेद की आज्ञा को शिरोधार्य कर अपने पूज्य पिताजी की प्रेरणा पाकर सतत सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक आदि कार्योमें संलग्न हैं। आप पुण्यकमाई से मानव कल्याण का कार्य करते हुए वैदिक धर्म के दीवाने जीवनदानी, तपस्वी, कर्मठ, ईमानदार, आर्य समाज की विभूतियों के प्रति श्रद्धालु तथा उदारता युक्त हैं ।

प्रभु से प्रार्थना है कि **'भूयश्च शरदः शतात्'** आयु पा कर सहपरिवार आनन्दमय होकर, इसी प्रकार परोपकार, समाज सेवादि कार्यो में निरंतर लगे रहें। अभिनन्दन ग्रन्थ समिति हार्दिक बधाई की पात्र है क्योंकि इस परोपकारप्रिय व्यक्ति के सम्बन्ध में अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित कर रही है ।

शुभकामना और धन्यवाद सहित !

स्वामी धर्म मुनि
मुख्याधिष्ठाता - आत्मशुध्दि आश्रम बहादुरगढ़
सम्पादक - आत्मशुध्दि पथ मासिक

शुभकामना सन्देश

स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती अपने सुमधुर व्यवहार और समाज में जागृति लाने के लिये अपने सतत प्रयास से कार्यरत हैं । वैदिक सेवा संस्थान पिपराली राजस्थान के आप संस्थापक हैं ।

संसार में धनवान् मनुष्य बहुत मिलेंगे , परन्तु ऐसे व्यक्ति विरले ही होंगे जिन्होंने धन के साथ-साथ यश प्राप्त किया हो । धन की सार्थकता परोपकार है । आर्यजगत् में जिन्होंने यश कमाया है वे स्वनामधन्य हैं माननीय राव हरिश्चन्द्र जी। श्री राव साहब अपने जीवन के ७७ वर्ष पूरे कर रहे हैं । इसी अवसर पर उनका अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है । इस ग्रन्थ में आर्य जी के जीवन तथा उनके समाजोपयोगी कार्यों पर प्रकाश डाला जावेगा। यह ग्रन्थ पाठकों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसी मेरी कामना है । श्री आर्य जी ने एक सामान्य किसान परिवार में जन्म लेकर अपने कदमों को सेवा की ओर बढ़ाया । यहीं से वे व्यापार जगत् में आये । उन्होंने पूर्ण पुरुषार्थ करके सफलता प्राप्त की तथा अपने धन को वैदिक धर्म के लिए अर्पित करने का संकल्प लिया । आपने अनेक गुरुकुलों,आश्रमों ,आर्य समाजों तथा अन्य संस्थाओं को श्रद्धाभाव से उदारता पूर्वक दान देकर पुण्य अर्जित किया है। आप प्रतिवर्ष विद्वानों को भी सम्मानित कर उनका आशीर्वाद लेते हैं ।

इनके अमृत महोत्सव के अवसर पर मैं इन्हें शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ कि परमेश्वर इन्हें दीर्घायु तथा उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करें ताकि इसी प्रकार मानवता की सेवा करते रहें । वैदिक सेवा संस्थान पिपराली की ओर से इन्हें हार्दिक बधाई एवं साधुवाद !

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
वैदिक आश्रम पिपराली (राजस्थान)
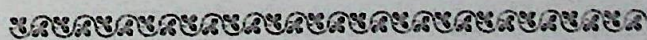
मंगलकामना

आप दर्शनों के विद्वान् एवं पूज्य स्वामी सत्यपति जी के शिष्य हैं । दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़ के संचालक हैं । योग एवं प्राणायाम में आप सिद्धहस्त हैं । आप देश विदेश में समय-समय भ्रमण करते हैं एवं आर्यसमाज व वैदिक धर्म का प्रचार करते हैं।

एक अकेला व्यक्ति ईश्वर से प्रेरणा प्राप्त करके तीव्र इच्छा, अदम्य साहस, अटूट उत्साह, अचल पराक्रम, पूर्ण पुरुषार्थ, घोर तपस्या करके न केवल अपने व्यक्तिगत और परिवारिक दायित्वों का निर्वहन सफलता पूर्वक करता है अपितु सर्वहितकारी सामाजिक कार्यों को भी कितनी अधिक संख्या में कर सकता है इसका कोई जीता-जागता उदाहरण देखना हो तो हमारे समक्ष राव हरिश्चन्द्र जी आर्य हैं। आप धर्मप्रेमी, कर्मठ, तत्कालीन सूझ-बूझ वाले, उदार सज्जन पुरुष हैं। आप की सच्चाई ने आपको अपने उद्यम के उच्चतम शिखर तक पहुँचा दिया । यह इतिहास सामान्य जनों के लिए प्रेरक है ।

राव साहब का नाम तो अनेक वर्षों से सुनता आया हूं। कभी एक-दो वार संक्षिप्त सम्मिलन भी हुआ किन्तु पिछले वर्ष यूरोप के पाँच-छः देशों की यात्रा काल में इनके साथ अधिक समय व्यतीत करने का अवसर मिला । आपके सरल मितभाषी व्यवहार को देखकर मैं विशेष प्रभावित हुआ । आपने अपनी पुण्य अर्जित आय में से एक कोष बनाया है और उसके माध्यम से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु प्रतिष्ठित विद्वानों, आचार्यों, उपदेशकों और संन्यासी महानुभावों के सम्मानार्थ प्रतिवर्ष प्रभूत राशि प्रदान करते हैं यह एक स्तुत्य, अद्वितीय, अनुकरणीय कार्य है । ऐसे कार्यों से आर्यजगत् में विद्वानों का सत्कार होने के कारण विद्वान् बनने की प्रेरणा मिलती है ।

समाज में इस प्रकार के उदारमना, आतिथ्य सत्कारी, दानी, विनम्र, सरल स्वभाव वाले व्यक्तित्वों की संख्या यदि बढ़ जाये तो निश्चित ही समाज, राष्ट्र में जो अभाव, अन्याय, अज्ञान, विद्यमान है उसे शीघ्र ही दूर किया जा सकता है । मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों का आर्यजगत् में अधिकाधिक प्रादुर्भाव हो जिससे कि वैदिकधर्म के प्रचार-प्रसार में जो कमी है उसकी पूर्ति हो सके । पुनश्च राव साहब के विशिष्ट व्यक्तित्व के प्रति और आश्रम की ओर से बहुत शुभकामनाएँ प्रेषित कर रहा हूँ।

शुभेच्छुक
ज्ञानेश्वरार्यः
वानप्रस्थ साधक आश्रम,
आर्यवन, रोजड़, गुजरात.

आशीर्वाद एवं शुभकामना सन्देश

श्रद्धेय पं. विशुद्धानन्द जी शास्त्री प्राचीन वैदिक साहित्य के अधिकारप्राप्त विद्वान् हैं । वैदिक सिद्धान्तों के गंभीर विद्वान् और लेखक हैं। जब स्वामी करपात्रीजी ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' पर आक्षेप किये तो उसका प्रमाणिक उत्तर लिखकर आपने आर्यजगत् का गौरव बढ़ाया है ।

मै आर्यरत्न आचार्य डा.विशुद्धानन्द मिश्र की ज्येष्ठ पुत्रवधू डा. प्रतिभा मिश्रा आपको श्रद्धावनत होकर अभिवादन कर हर्षित हृदय से कहना चाहती हूँ कि दानवीर कर्ण के मार्ग को प्रशस्त करते हुए आप दानार्थक न्यास के माध्यम से विद्धानों को 'तत् तत्' शैक्षिक सुयोग्यता के अनुरूप प्रतिवर्ष सम्मानित व पुरस्कृत करते हैं। इसी पारम्परिक सुनिश्चय में डा. आचार्य विशुद्धानन्दजी मिश्र को सर्वोच्च उपाधिस्थान 'आर्यरत्न अनूचान = अध्यापन-अध्ययन' निर्धारित किए जाने पर सम्मानित व पुरस्कृत किया गया। दैवयोग से इसी वर्ष 'महामहिम राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार से भी विभूषित किया गया । इस संदेश के उपरान्त मैं अवगत कराना चाहती हूँ कि ईश्वर की कृपा एवं आपके आशीर्वाद से पूज्य पिताजी का वरदहस्त उनकी १० वर्ष की आयु के रहते हम पर है ।दीर्घायु के रहते उनकी श्रवण क्षमता एवं नेत्र ज्योति दुर्बल हो चली है। ऐसी दशा में उनका स्वाध्याय से किंचित् विरत होना स्वाभाविक है । फिर भी आप जैसे सद्पुरुषों की स्मृतियाँ रक्त संचार को गतिशील बनाये हुए हैं । अन्त में पूज्य पिता जी के आदेशानुसार निम्नलेख आपके पास प्रेषित कर रही हूँ ।

''परिवार परिचय श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य''

पं. विशुद्धानन्द जी शास्त्री, बदायूं
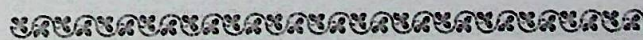
ईश्वर का साक्षात्कार होने पर आत्मा की अविद्या नष्ट हो जाती है।
सारे संशय मिट जाते है और सारे कुसंस्कारों का नाश हो जाता है।
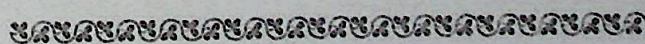
अमृत महोत्सव पर शतशः शुभकामनाएं

आचार्य सत्यानन्द जी नैष्ठिक अनथक सन्त हैं । आप 'सत्यधर्म प्रकाशन' के द्वारा आर्य ग्रन्थों का बहुत ही सुन्दर प्रकाशन करते हैं । वर्तमान में गुरुकुल लाढ़ौत (रोहतक, हरियाणा) में निवास रखकर साहित्य प्रचार कार्य में रत हैं ।

सबके आरोग्य "सर्वेसन्तु निरामयाः" की सदिच्छा हृदय में लेकर परोपकारमय जीवन व्यतीत करने वाले श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य को मैं बहुत वर्षोंसे जानता हूँ । मैंने उनको एक अच्छे मनुष्य और आर्य के रूप में पाया है । उनका जीवन विनम्रता, सरलता और सादगी जैसे गुणों से भरपूर है । परमात्मा ने उनको पर्याप्त समृद्धि प्रदान की है, फिर भी उनमें किसी प्रकार का नकारात्मक परिवर्तन नहीं आया । यह उनके चरित्र की महानता है । समाज में ऐसे स्वभाव और आचरण के मनुष्य बहुत कम मिला करते हैं । ऐसे मनुष्यों का होना परिवार और समाज के लिए सौभाग्य का विषय है क्योंकि उनके संपर्क से परिवार भी अच्छा बनता है और समाज भी ।

श्री आर्य जी अभिमान, क्रोध, ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट लोभ-लालच आदि दुर्गणों से अछूते हैं । जब-जब भी इनसे मिलते हैं इनके प्रति श्रद्धा का भाव प्रबल ही होता है और इनसे सद्गुणों की प्रेरणा प्राप्त होती है । क्योंकि आर्य जी नकारात्मक मनोभावों से दूर हैं तो उसके कारण इनका स्वास्थ्य भी उत्तम है । सतत्तर वर्ष से अधिक अवस्था में भी ये आज स्वस्थ एवं रोग रहित हैं । उत्तम विचार और उत्तम दिनचर्या का सुपरिणाम इनका अच्छा स्वास्थ्य है । परमात्मा से प्रार्थना है कि इनको दीर्घायु प्राप्त हो और सम्पूर्ण आयु पर्यन्त इनका स्वास्थ्य, आरोग्य, सुख, समृद्धि आदि बने रहें, परिवार में सुख-शान्ति रहे, दिनानुदिन वैभवशाली बनें । अमृत - महोत्सव के शुभ अवसर पर मेरी ओर से आर्य जी को शतशः शुभकामनाएं हैं - **"भूयश्च शरदः शतात्"** सौ वर्ष से भी अधिक स्वस्थ आयु आपको प्राप्त हो और आप इसी प्रकार जनता के कल्याणकारी कार्यों में संलग्न रहकर पुण्य अर्जित करते रहें । आप जैसे श्रेष्ठ पुरुष का इहलोक भी सफल है और परलोक भी ।

शुभकामनाओं सहित-
आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक
संचालक 'सत्यधर्म प्रकाशन'
गुरुकुल लाढ़ौत, रोहतक (हरियाणा)

अमृत महोत्सव के अवसर पर शुभकामनाएँ

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी, आर्यसमाज के उद्भट विद्वान् और लेखक हैं। आप मनुस्मृति के प्रक्षेपों के शोधकर्ता व भाष्यकार हैं। आप हरियाणा सरकार के कॉलेज केडेर से प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त हैं। गुरुकुल झज्जर की मासिक पत्रिका 'सुधारक' के संपादक हैं। आप द्वारा लिखित एवं सम्पादित बीस पुस्तके हैं जिनमें से सात महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) के पाठ्यक्रम में नियुक्त हैं।

राव हरिश्चन्द्र जी आर्य अपने जीवन के सतत्तर वर्ष पूर्ण कर चुके हैं। इस उपलक्ष्य में अमृत महोत्सव का आयोजन नागपुर में किया जा रहा है, यह बहुत ही प्रशंसनीय कार्य है। दूसरों का सम्मान करनेवाले श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान होना ही चाहिए। इससे सम्मानित व्यक्ति को उत्साह मिलता है और सामाजिक अच्छी परम्परा समाज में बनी रहती है, श्रेष्ठ सामाजिक मूल्यों को प्रोत्साहन मिलता है।

श्री हरिश्चन्द्र आर्य अनेक गुणों के कारण सम्मान के पात्र हैं। सरलता, सुशीलता, विनम्रता दानशीलता, मधुर व्यवहार, निरभिमानता आदि अनेक गुण इनमें हैं जो इनको विशिष्ट व्यक्ति बनाते हैं। समृद्धि पाकर संकीर्ण हृदय के लोग इतरा जाते हैं किन्तु आर्य जी समृद्धि पाकर उदार बने हैं, विनम्र बने हैं। यही कारण है कि इनका व्यवहार सबके साथ विनम्र और मधुर रहता है। शास्त्रों के आदेश का पालन करते हुए इन्होंने धन की सर्वोत्तम गति को स्वीकार किया है, और वह है दान और परोपकार। विद्वानों, संन्यासियों, साधुओं को सम्मानित करने के साथ-साथ इन्होंने अपने पैतृक गाँव 'बीगोपुर' (नारनौल, हरियाणा) में आर्यसमाज मन्दिर तथा निःशुल्क डिस्पेंसरी का निर्माण भी परोपकार के लिए किया है। इन पर यह श्लोक पूरी तरह चरितार्थ होता है -

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम्।।

अर्थात्- 'परिवर्तनशील संसार में सभी लोग उत्पन्न होकर मर जाते हैं किंतु जन्म लेना उसी का सार्थक है जिसके कारण उसका वंश उन्नति करता है, श्रेष्ठ बनता है। श्री आर्य ऐसे ही वंशोन्नति-कर्ता विशिष्ट व्यक्ति हैं। इनके कारण सारा परिवार आर्य संस्कारमय है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि ये दीर्घजीवी बनें, स्वस्थ सक्रिय रहें, सुख-शान्ति सदा घर में बने रहें, समृद्धि में 'दिन दूनी रात चौगुनी' की गति से बढ़ती होती रहे और आर्य जी तथा आर्य परिवार ईश्वरीय आदेश का पालन करते हुए परोपकार में संलग्न रहकर पुण्य के भागी बनें। अमृत-महोत्सव के अवसर पर मेरी ओर से शतशः शुभकामनाएँ। ईश्वरीय वाणी में इसके लिए प्रसिद्ध वचन है-

''भूयश्च शरदः शतात्''

यह वेद वाक्य आर्य जी पर चरितार्थ हो।

डॉ. सुरेन्द्रकुमार
(मनुस्मृति भाष्यकार)
प्राचार्य (से.नि) राजकीय स्नातकोत्तर महा. गुड़गांव

हार्दिक अभिनन्दन, शत-शत-वन्दन

श्री प्रो. महावीर जी आर्यजगत् के उच्चकोटि के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् ओजस्वी वक्ता ओर लेखक हैं। इस समय आप गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के आचार्य एवं उपकुलपति तथा उत्तराखण्ड राज्य के संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष हैं।

स्वनाम धन्य महापुरुषों के विषय में संस्कृत का एक श्लोक पठनीय है -

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ।।

अर्थात् जो मन,वाणी,कर्म में अमृत से परिपूर्ण हैं, जो उपकारों से तीनों भुवनों को प्रसन्न रखते हैं तथा औरों के अणु के समान गुणों को पर्वत के समान बनाकर अपने हृदय में उन्हें विकसित करते हैं, ऐसे सत्पुरुष संसार में कितने हैं ?

कवि की इस कसौटी पर जिन महात्माओं के जीवन सर्वथा सफल सिद्ध होते हैं ऐसे धर्मप्राण पुरुषों में परमादरणीय श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी का नाम अत्यन्त गौरव के साथ लिया जाता है। ऋषियों के प्रति अगाध आस्था, परमात्मा के प्रति अपार श्रद्धा, साधु संन्यासियों के प्रति अनन्य भक्ति रखने वाले महात्मा हरिश्चन्द्र ने अपना सम्पूर्ण जीवन यज्ञादि शुभ कर्मों में, परोपकार तथा मानवता की सेवा में अर्पित किया है। आप मनसा, वाचा,कर्मणा वेद,यज्ञ, देव दयानन्द और आर्य समाज के रंगों में रंगे हुये हैं। यही कारण है कि आपके पवित्र आवास पर निरन्तर श्रेष्ठ जनों का शुभागमन रहता है और उनकी सेवा कर गृहस्थ धर्म को पूर्ण करते हैं ।

आपने वैदिक विद्वानों, उपदेशकों, लेखकों और तपःपूत महात्माओं के अभिनन्दन एवं पुरस्कार की जो महान् परम्परा चला रखी है वह अद्भुत है । आप सच्चे अर्थो में प्रभु के अमृत पुत्र, आर्य महात्मा हैं। जीवन के ७७ बसन्त पूर्ण कर तुर्याश्रम में प्रवेश कर रहे हैं ।

यह हर्ष का विषय है कि अमृत महोत्सव की मंगल वेला में श्रद्धेय आर्य जी के सम्मान में एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है । ग्रन्थ के प्रकाशन से एक धर्मात्मा परोपकारी एवं सेवाव्रती का जीवन हजारों , लाखों सज्जनों को प्रेरणा प्रदान करेगा । श्री आर्य जी का जीवन **'शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकिर'** का प्रत्यक्ष उदाहरण है । आपके दोनों पुत्र एवं पुत्रवधुएं आदर्श गृहस्थ जीवन जी रहे हैं । आपकी गृह रूपी वाटिका को देखकर महाकवि का निम्नलिखित पद्य साकार होता हुआ प्रतीत होता है -

सानन्दं सदनं सुताश्च सुधियः कान्ताप्रियालापिनी,
सन्मित्रं सुधनं स्वयोषितिरतिश्चाज्ञापराः सेवकाः ।
आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे,
साधोः संगमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः ।।

मैं गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से, उत्तराखण्ड राज्य की समस्त जनता की ओर से तथा सम्पूर्ण संस्कृत जगत् की ओर से श्रद्धेय राव हरिश्चन्द्र आर्य जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ ।

डॉ.महावीर अग्रवाल आचार्य, उपकुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

त्वं जीव शरदः शतम्

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के संचालक आचार्य वेदव्रत शास्त्री गुरुकुल झज्जर के आरम्भिक स्नातकों में से है। आप व्याकरण-महाभाष्य' आदि अनेक उच्च कोटि के ग्रंथो के सम्पादक हैं। आपने कई साप्ताहिक, मासिक पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया है, अब भी सर्वहितकारी पत्र के सम्पादक है।
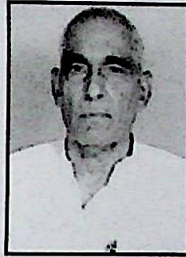
वैदिकधर्मानुयायी, दानी, तपस्वी और कर्मठ समाजसेवी राव हरिश्चन्द्र आर्य के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर इस वर्ष अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है । इस प्रसन्नता के अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जायेगा, यह जानकर अति प्रसन्नता हुई ।

राव हरिश्चन्द्र आर्य का जन्म वर्तमान हरियाणा प्रान्त के महेन्द्रगढ़ जिले की नारनौल तहसील के गांव बीगोपुर में १५ अप्रैल १९३४ ई को हुआ था । पिता धन्नाराम बचपन में ही स्वर्गवासी हो गये थे । माता शृंगारीदेवी और बड़े भाई धनसीराम ने ही ६ भाई बहनों के परिवार का पालन-पोषण किया। आप सबसे छोटे हैं। परिवार की आय का साधन खेती-बाड़ी ही था। आपने अपनी योग्यता के आधार पर २० वर्ष की आयु में श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड झांसी में लिपिक के रूप में सेवा कार्य प्रारम्भ किया था । अपनी ईमानदारी और कर्मठता के कारण आप आयुर्वेद भवन की नागपुर शाखा के महाप्रबन्धक पद तक पहुंचे और ३१ मार्च २००७ में सेवानिवृत्त हुए। अब आपका ज्येष्ठपुत्र महिपाल श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड का ५ जिलों का स्टॉकिस्ट बनकर सेवा कार्य कर रहा है । आपका द्वितीय पुत्र यशपाल पतंजलि योगपीठ हरिद्वार की दिव्य फार्मेसी से जुड़कर विदर्भ और महाराष्ट्र में सेवा कर रहा है।

२४ जनवरी २००३ को आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी का निधन हो गया था। अब आप वानप्रस्थ के रूप में सेवा कार्य कर रहे हैं। आपने अपने पुरुषार्थ द्वारा अर्जित धन से "राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट" बनाकर 'आर्य रत्न' और 'आर्य विभूषण' दो पुरस्कारों का प्रचलन किया है। प्रतिवर्ष दो महान् पुरुषों को पुरस्कार देकर सम्मानित करते हैं। आर्यसमाज के कार्यों में सदा सहयोग देते हैं । ऐसे समाजसेवी परोपकारी पुरुष के अमृत महोत्सव पर मेरी शुभकामना है । आप चिरायु हों, शतायु हों और उससे भी अधिक समय तक स्वस्थ जीवन जीवें । इसी प्रकार परोपकारी कार्य करते रहें ।

वेदधर्मी हरिश्चन्द्र ! श्रेष्ठकर्मपरायणः ।
त्वं जीव शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात् ।।

वेदव्रत शास्त्री
आचार्य प्रेस,दयानन्द मठ,रोहतक (हरियाणा)

शुभकामना सन्देश

आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के स्नातक, कई पत्रिकाओं के सम्पादक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामंत्री, विद्वान्, ओजस्वी वक्ता, सुलझे हुए युवा विद्वान् व लेखक हैं । आप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में रीडर है। साथ ही अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं ।

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य दयानन्दीय स्वप्न के ध्वजवाहक सेनानी हैं । उनके जीवन की बुनियाद दयानन्द प्रोक्त आर्ष भूमि पर आधृत है । परिस्थितियों के सम-विषम होने पर भी उन्होंने वैदिक जीवन-मूल्यों का अत्यन्त दृढ़ता से अनुपालन किया है । वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में जिस उच्च स्तरीय संयम और मर्यादा का उन्होंने उत्साहपूर्वक निर्वहन किया है वह प्रवृत्ति उन्हें अन्यों से विशिष्ट बनाती है । सामाजिक और धार्मिक विद्रूपताओं से लड़ने वाले प्रत्येक व्यक्ति तथा संस्थान को राव हरिश्चन्द्र आर्य ने प्रचुर सम्बल प्रदान किया है ।

मैं इस तथ्य से बहुत उत्साहित हूँ कि राव हरिश्चन्द्र आर्य जी के पिचहत्तर बसन्त पूरे होने पर संस्थाओं, मित्रों एवं परिवारजनों द्वारा उनके अभिनन्दन में अमृत महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है । इस अवसर पर मैं राव साहब के स्वस्थ शताधिकायुष्य की कामना करता हूँ । मुझे विश्वास है कि उनके उपवन की फुलवारी उनकी कीर्ति सुरभि को और अधिक विस्तारित करेगी ।

डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार
महामन्त्री
सार्वदेशिक आर्यवीर दल
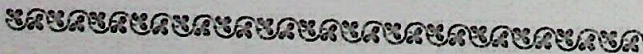
सुख में संयमी राव हरिश्चन्द्र दीर्घायु हों

सुख तथा ऐश्वर्य में साधारण मनुष्य की भावनायें मलिन और अहंकारी हो जाती हैं । धन और यश का घमंड उसको असंमयी बना देता है । असंयत मनुष्य अपना कर्त्तव्य खो बैठता है । सुख पाकर हम सुमति से दूर हो जाते हैं । एक भक्त की प्रार्थना है -

भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा नः स्तरभिमातये ।

अस्मान् चित्राभिरवतादभिष्टिभिरा नः सुम्नेषु यामय ।। (ऋग्वेद ८:३:२)

- 'हे प्रभो ! हम आपकी सुमति में सदा सुरक्षित रहें । हमारे मन में कल्याणकारी भावना जाग्रत हो । हे परमपिता ! हमें सुखों की वेला में संयमशील रखो ।'

विद्या, धन, क्षमता आदि मनुष्य की ज्योति है । परंतु ज्योति पाकर अहंकारी हो जाना अन्धकार हैं सुमति से ज्योति स्थायी होती है । ज्ञानी प्रतिक्षण मन में सुविचार और सद्भावना पोषण कर सुज्ञानी बनता है। बलवान् पराक्रमी होता है । सुमति में रहना शक्ति का परिचय है । विनम्रता परम धन है । संयम से प्राप्त सुख प्रसन्नता का कारण बनता है ।

आर्यवीर राव हरिश्चन्द्र जी मेरे मानस पट में उल्लिखित वेदमन्त्र का सफल उदाहरण हैं । जीवन की २० साल की यात्रा के बाद इन्होंने श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड में एक लिपिक के रूप में सेवा कार्य आरम्भ किया । अन्त में नागपुर शाखा के महा प्रबंधक बने। अपनी कर्मठता, नम्रता और सज्जनता द्वारा सब का हृदय जीत लिया। सुख की वेला में सदा संयमी रहे । जन्मग्राम से लेकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तक यशस्वी कार्यकर्त्ता बनना, धर्मार्थ ट्रस्ट स्थापना द्वारा उपदेशकों और सन्यासियों को सम्मानित करना, सामाजिक सेवा में हर समय समर्पित होना - इस सारी विनम्र साधना ने उनको एक वामन से महान् बृहस्पति बना दिया है ।

स्वभाव से सावधानता और सतर्कता अवलंबन करना जीवनयात्रा में शुभ गुन है । हरिश्चन्द्र जी विचारशील आदर्श व्यक्ति हैं । पुण्यकर्मा हमेशा निर्भीक होता है । अभय उसका पुण्य है । भयभीत मनुष्य की बुद्धि विचलित हो जाती है । आर्यत्व की भित्ति सदाचार और निश्चलता के ऊपर टिकी हुई है । राव हरिश्चन्द्र जी सच्चे आर्य हैं । मॉरिशस यात्रा में, चौ. मित्रसेन जी के अमृत महोत्सव में, हालेंड आर्य सम्मेलन में, रोहिणी (देहली) महोत्सव में और ऐसे अनेक अवसरों पर उनसे मिलने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है । हर बार उनकी सज्जनता से मैं मुग्ध रहा । ऐसे ऋषिभक्त और संस्कृति संपन्न महानुभाव के अमृत महोत्सव का आयोजन करना उल्लास का उत्सव बन जाता है । सेवाव्रती हरिश्चन्द्र जी दीर्घायु हों, उनकी सेवा अखंडनीय अदिति बने, यही परमात्मा से प्रार्थना है।

डॉ. प्रियव्रत दास
वैदिक अनुसंधान प्रतिष्ठान,
१३९, शहीद नगर, भुवनेश्वर.

शुभकामना सन्देश

आप वर्तमान में आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात के प्रधान हैं । महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त हैं । आप कुशल प्रकाशक एवं निष्ठावान् कार्यकर्ता हैं । आप वर्तमान में सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान भी हैं ।

श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य आज पूरे आर्यजगत् में सादा जीवन और उच्च विचार की एक जीती-जागती सर्वोत्कृष्ट मिसाल हैं । वैदिक धर्म का अनुसरण करने वाले एक सच्चे आर्यसमाजी के सभी सद्‌गुणों से विभूषित श्री हरिश्चन्द्रजी आर्य एक ऐसा चमकता हुआ हीरा हैं जिन्हें हर कोई अपनी अँगूठी में जड़कर रखना चाहेगा । जीवन के आठवें दशक में भी उनका अति उत्तम स्वास्थ्य और लावण्यपूर्ण चेहरा अनायास ही सबको अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है । उनकी सरलता, उनकी सादगी और उनकी मोहक मुस्कान, उनके अद्भुत व्यक्तित्व की आज पहिचान बन चुके हैं । ऐसे श्रेष्ठ आर्य पुरुष के प्रति अनायास ही सिर श्रद्धा से झुकने लगता है ।

आपके सादा जीवन का सबसे बड़ा उदाहरण सितम्बर २०१० में, हॉलैण्ड के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन के अवसर पर आयोजित यूरोप यात्रा में देखने को मिला । लगभग २० दिन की यूरोप यात्रा को आपने मात्र तीन कुरते व तीन धोती से पूर्ण कर लिया । प्रत्येक दिन कपड़े धोकर उन्हें अगले दिन पहिन लेना येआपके कर्मठ जीवन का आज की पीढ़ी के लिये आदर्शतम उदाहरण है । आप वृध्दावस्था में भी जवानों से अधिक कार्य करने की क्षमता रखते हैं ।

श्री हरिश्चन्द्रजी आर्य, आज आर्यसमाज के छठे नियम का पर्याय बन चुके हैं । अपनी और दूसरों की शारीरिक और आत्मिक उन्नति के साथ-साथ इन्होंने सामाजिक उन्नति में भी जो अपूर्व योगदान दिया है वह सदैव अविस्मरणीय रहेगा। आर्य संन्यासियों और विद्वानों के सम्मानार्थ आपके धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा दिये जाने वाले 'आर्य रत्न' और 'आर्य विभूषण' पुरस्कारों से आर्यजगत् में एक अनूठी ऋषि-भावना का संचार हुआ है । श्री आर्य जी दान देने में भी सबसे आगे रहते हैं । देश की अनेक संस्थाओं को, साधु-महात्माओं को तथा विद्वानों को आप प्रति वर्ष लाखों रुपये दान में देते हैं । दानशीलता की आपकी यह प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ती ही जा रही है ।

नम्रता, सौजन्यता तथा सूझबूझ की प्रतिमूर्ति श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य की हीरक जयन्ती के शुभ अवसर पर परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना और कामना है कि वह श्री आर्यजी को १०० वर्ष से भी अधिक का स्वस्थ और निरोगी मंगलमय जीवन प्रदान करें ताकि हम सब उनके मार्ग-दर्शन में उनके तपस्वी जीवन से प्रेरणा लेते हुए वैदिक धर्म की पताका को पूरे विश्व में सफलतापूर्वक फहरा सकें ।

अमृत महोत्सव की सफलता की अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ ।

सभी का स्नेहाकांक्षी
अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य

शुभकामना : जीवेम शरदः शतम्

आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मंत्री, वकील, लेखक, कर्मठ कार्यकर्ता व समाज सेवा में अग्रणी हैं ।
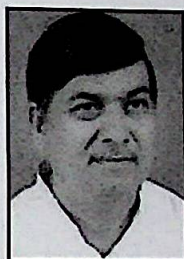
महर्षि दयानन्द के सिपाही, आर्य समाज के भामाशाह, अध्यात्म से सराबोर, मृदुभाषी श्रद्धेय राव हरिश्चन्द्र जी के अमृतोत्सव पर अनेक बधाइयाँ । स्वास्थ्य-सम्पन्नता, स्वाध्याय, मृदुस्वभाव और सेवाभाव एक व्यक्ति में होना यह अपने आप में ही परमात्मा की एक बहुत बड़ी सौगात है ।

आपके यशस्वी और कर्मशील जीवन से अनेक ज़न प्रेरणा प्राप्त करते हैं यही आर्यत्व की पहचान है ।

आपके जैसे व्यक्तित्व ने अपना व परिवार का ही नहीं, अपितु आर्य समाज संगठन का गौरव भी बढ़ाया है । आपका सहयोग व सान्निध्य आर्य समाज का संबल है, आपका जीवन इसी प्रकार परमार्थ से जुड़ा रहे, आपको परमात्मा स्वास्थ्य व दीर्घायु प्रदान करें । १०० बसंत से भी अधिक बसंत आपके जीवन में आते रहें, ऐसी परमात्मा से प्रार्थना करते हैं । पुनः अनेकानेक बधाइयां । इन्हीं शुभकामनाओं के साथ ।

भवदीय
प्रकाश आर्य
मंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
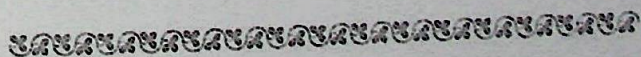
शुभकामना सन्देश

डॉ. रामप्रकाश जी आर्य, वर्तमान में राज्यसभा सांसद् हैं। आप अग्रणी आर्य नेताओं में हैं । आप हरियाणा सरकार में राज्य मंत्री व प्रदेश काँग्रेस अध्यक्ष रहे हैं। स्वामी दयानन्द व आर्य समाज के विषय में आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं ।
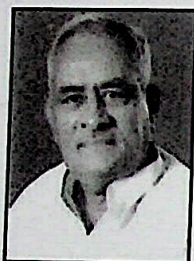
मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य के पिचहत्तर वर्ष पूर्ण हो जाने पर उनके अमृत महोत्सव का आयोजन किया गया है तथा इस अवसर पर उनका अभिनन्दन भी किया जा रहा है । राव हरिश्चन्द्र आर्य जी ऋषि दयानन्द सरस्वती के अनन्य अनुयायी हैं । जीवन में अनेक उतार-चढ़ावों के आने पर भी वे मजबूती से दयानन्दीय सिद्धान्तों के साथ खड़े रहे हैं । सामान्य पारिवारिक पृष्ठभूमि से जीवन प्रारम्भ करके निरन्तर सैद्धान्तिक जीवन जीते हुए उन्होंने जिस ऊंचाई पर खुद को पहुंचाया वह श्लाघनीय है ।

राव हरिश्चन्द्र आर्य ने आर्यसमाज के बड़े दानवीर के रूप में महती ख्याति अर्जित की है । आर्यसमाज के विभिन्न आयोजनों एवं आर्ष गुरुकलों के संचालन में उन्होंने मुक्तहस्त से सहयोग दिया है । निजी जीवन में वे अत्यंत विनम्र, मिलनसार और सादगी-प्रिय व्यक्ति हैं ।

योग, स्वाध्याय और सेवा ३६५ दिन उनकी दिनचर्या के अंग हैं । मैं जीवन के इस अमृत महोत्सव पर उनके स्वास्थ्य और दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ ।

डॉ. रामप्रकाश (सांसद् राज्यसभा)
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
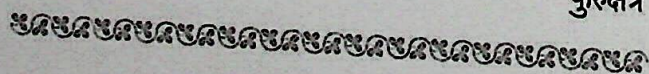
शुभकामना संदेश

श्री राजसिंह आर्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। आप ब्रह्मचारी रहकर समाज-सेवा में संलग्न हैं। आपकी वक्तृत्व शैली श्रोताओं को प्रभावित करले वाली होती हैं। अनेक देशों में आप आर्य समाज का प्रचार-कार्य कर चुके हैं।

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि स्वामी धर्मानन्द जी के संरक्षण एवं नेतृत्व में श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी का अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह मनाया जा रहा हैं। राव हरिश्चन्द्र आर्य जी का सारा जीवन समाजसेवा में लगा हुआ है और 'राव हरिश्चन्द्र ट्रस्ट' उसका एक माध्यम है। मेरा उनके साथ काफी समय से सम्बन्ध रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन शिकागो-२००७ तथा अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मॉरीशस-२००८ में वे मेरे साथ ही थे। तब मैंने उनके जीवन की जो सादगी देखी, उससे बहुत प्रभावित हुआ।

परमपिता से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें, जिससे उन्हें इन कार्यों को करने की ऊर्जा सदैव प्राप्त होती रहे।

आर्य जगत् के विद्वानों, यतियों तथा प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य करने वाले आर्य महानुभावों को आपके 'राव हरिश्चन्द्र ट्रस्ट' के माध्यम से जो 'आर्य विभूषण' और 'आर्य रत्न' पुरस्कार प्रदान किएजाते हैं वे अपने आप में आर्यसमाज के इतिहास में अंकित करने योग्य हैं।

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी के ७८ वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में स्मारिका का प्रकाशन और अमृत महोत्सव का आयोजन निश्चित रूप से प्रेरणा देने वाला है। आर्य समाज को दिशा देने के लिए ऐसे उत्सवों के आयोजन आर्यजनों के लिए प्रेरक और समाज में जागृति लाने वाले होते हैं।

इस सुअवसर पर स्मारिका के प्रकाशन और अमृत महोत्सव की सफलता के लिए मैं दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से हार्दिक शुभ कामनाएँ प्रेषित करता हूँ, साथ ही कामना करता हूँ कि महोत्सव परमपिता की अनुकम्पा से सफल हो।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

ब्र. राजसिंह आर्य
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. ९३५००७७८५८

शुभकामना संदेश

श्री विनय आर्य आर्यसमाज के ऐसे युवा अधिकारी हैं जिन्हें सदैव आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की लगन लगी रहती है। आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री हैं। आपका सार्वदेशिक आर्यवीर दल में भी सक्रिय योगदान है।

आप के द्वारा प्रेषित पत्र पढ़कर यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह आर्यजनों के द्वारा मनाया जा रहा है। निश्चित ही विद्वनों के मार्गदर्शन में आयोजित महोत्सव और आर्य जी का अभिनन्दन सम्बधी महोत्सव आर्य जगत् के लिए प्रेरक सिद्ध होगा। राव हरिश्चन्द्र आर्य जी का सारा जीवन समाजसेवा में लगा हुआ है, ट्रस्ट उसका एक माध्यम है। मेरा उनके साथ काफी समय से सम्बन्ध रहा है। अमेरिका सम्मेलन, २००८ तथा मॉरीशस में वे मेरे साथ ही थे। तब मैंने उनके जीवन की सादगी देखी, उससे बहुत प्रभावित हूँ। ये शब्द सुने तो बहुत हैं पर मैंने उनके जीवन में इन शब्दों की सार्थकता देखी है-"सादा जीवन उच्च विचार"।

परमपिता से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें चिरायु करे और उनमें इन कार्यों को करने की उर्जा सदा प्रदान करता रहे। ट्रस्ट के माध्यम से जो 'आर्य विभूषण' और 'आर्य रत्न' पुरस्कार आर्य जगत् के उन विद्वानों और यतियों को प्रदान किया जाता रहा है जिन्होंने आर्य समाज के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए हैं, वह अपने आप में आर्यसमाज के इतिहास में रेखांकित करने योग्य है। आपने ज्ञानपीठ पुरस्कार के साहित्यिक पुरस्कार के समकक्ष पुरस्कार प्रवर्तित करके आर्य जगत् में एक नया इतिहास रचा है।

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी इस वर्ष ७७ वर्ष पूर्ण करके ७८ वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं जिसके उपलक्ष्य में स्मारिका का प्रकाशन और अमृत महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। विद्वानों के मार्गदर्शन में इस प्रकार का कार्य निश्चित ही प्रेरणा देने वाला है। आर्य समाज को दिशा देने के लिए ऐसे उत्सवों के आयोजन आर्यजनों के लिए प्रेरक और समाज में जागृति लाने वाले होते हैं।

इस सुअवसर पर स्मारिका के प्रकाशन और अमृत महोत्सव की सफलता के लिए मैं अपनी शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूँ, साथ ही कामना करता हूँ कि महोत्सव परमपिता की अनुकम्पा से सफल हो। साथ ही 'श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य ट्रस्ट' के पुनीत कार्यों के लिए भी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

इन्ही शुभकामनाओं के साथ-

विनय आर्य
महामन्त्री,दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. ९९५८१७४४४१

शुभकामना संदेश

श्री धर्मपाल आर्य आर्यसमाज के एक सुपरिचित व्यक्तित्व हैं। उनमें आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार,संगठन की तीव्र लग्न है। वे वस्तुतः आर्यपिता के आर्यपुत्र हैं। अपने सफल व्यवसाय के साथ वे आर्यसमाज में भी यथाशक्ति तन-मन-धन से योगदान करते हैं। इस समय आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान हैं तथा केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान रह चुके हैं।

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी के ७८ वें जन्मदिवस को अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह के रूप में आयोजित किया जा रहा है। राव हरिश्चन्द्र आर्य जी का सारा जीवन समाजसेवा में लगा हुआ है और 'राव हरिश्चन्द्र आर्य ट्रस्ट' उसका एक माध्यम है। आर्यजनों द्वारा आदरणीय श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी का अमृत महोत्सव आयोजित किया जाना अपने आप में सौभाग्य का प्रतीक है।

श्री राव हरिश्चन्द्र जी अपने ट्रस्ट की ओर से आर्य जगत् के विद्वानों, यतियों तथा प्रचार-प्रचार में उल्लेखनीय कार्य करने वाले आर्य महानुभावों को 'आर्य विभूषण' और 'आर्य रत्न' पुरस्कार प्रदान करते हैं। सर्वोच्च राशि के पुरस्कारों का उनकी ओर से दिया जाना अपने आप में एक उल्लेखनीय ऐतिहासिक कार्य है।

कोई भी समाज और संगठन विचारों के प्रचार से जीवित रहता है और सुदृढ़ रहता है। विचारों के प्रचार के प्रसार का कार्य लेखन और प्रवचन के द्वारा उस समाज के संन्यासी, विद्वान् और भजनोपदेशक किया करते हैं। उनके उत्साह में विचारधारा तीव्रता से प्रवाहित रहती है, उनके निरुत्साह में विचारधारा भी क्षीण और मन्द हो जाती है। राव हरिश्चन्द्र जी आर्य आर्य-विचारधारा और संगठन के रक्षक प्रहरियों को अपनी ओर से दिये जाने वाले सम्मानों-पुरस्कारों के माध्यम से गत अनेक वर्षों से प्रोत्साहित करने में लगे हुए हैं। यह उनका आर्यसमाज की रक्षा के लिए किया गया महत्वपूर्ण कार्य है। समस्त आर्यजगत् को उन पर गर्व है।

आपके अमृत महोत्सव के सुअवसर पर स्मारिका के प्रकाशन हेतु मैं दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से हार्दिक शुभ कामनाएँ प्रेषित करता हूँ। आशा है इस स्मारिका में श्री राव साहब के पारिवारिक जीवन, उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व के साथ-साथ अनेक प्रेरणादायी लेख प्रकाशित होंगे, जिनसे समस्त महानुभाव प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे। परमपिता से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें, जिससे उन्हें इन कार्यों को करने की ऊर्जा सदैव प्राप्त होती रहे। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

धर्मपाल आर्य
वरिष्ठ उपप्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. ९८१००६१७६३

आर्यजगत् का ज्ञानपीठ पुरस्कार और उसके प्रवर्त्तक श्री राव हरिश्चन्द्रजी

डॉ. प्रियंवदा वेदभारती आर्यसमाज की अग्रगण्य विदुषी महिलाओं में से एक हैं। संस्कृत प्राचीन व्याकरण में आपकी प्रवीणता है। कन्या गुरुकुल संचालन के माध्यम से आप आर्ष शिक्षा पद्धति और राष्ट्र दोनों की सेवा कर रही हैं।

आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने वाले उसके विद्वान्, लेखक व उपदेशक ही होते हैं, उनको प्रोत्साहित व सम्मानित करना प्रशंसनीय कार्य है। विगत दो-तीन दशकों से सम्पन्न आर्य समाजें व कतिपय धनाढ्य आर्यजन वेद-वेदाङ्गादि नानाविध पुरस्कारों से विद्वानों को पुरस्कृत करते आ रहे हें किन्तु सबसे अधिक धनराशि वाला १,००,०००/- एक लाख का 'आर्यरत्न पुरस्कार' माननीय श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी के द्वारा ही प्रदान किया जा रहा है। निस्सन्देह राव जी का यह पुरस्कार भारत के साहित्यिक जगत् में दिये जाने वाले 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' के समतुल्य है और इसके लिये आपकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है। अब तक आप इस पुरस्कार से सात मूर्धन्य विभूतियों को पुरस्कृत कर चुके हैं। तीन को इस बार दिये जाने का कार्यक्रम है। ऋग्वेद के "उभयं ते न क्षीयते वसव्यं दिवे दिवे जायमानस्य दस्य। कृधि क्षुमन्तं जरितारमग्ने कृधि पतिं स्वपत्यस्य रायः।- (ऋ.२।९।५) के भावार्थ में महर्षि दयानन्द लिखते हैं " उसी के कुल से धन का नाश नहीं होता जो अपने धंन को सुपात्रों को संसार के उपकार के लिये देता है"। वेद के इस आदेश का आप अपने जीवन में अक्षरशः पालन कर रहे हैं, अतः अत्यन्त साधुवाद के पात्र हैं।

श्रद्धेय बाबू हरिश्चन्द्र जी को निकटता से जानने का अवसर मुझे 'घूड़मल साहित्य प्रकाशन हिन्डौन सिटी' के अभ्युदय भवन के उद्घाटन के अवसर पर माननीय भाई प्रभाकरजी के सौजन्य से प्राप्त हुआ। आप प्रकृत्या सरल, सज्जन व अहंकारशून्य हैं। आपने सम्पूर्ण कार्यक्रम दर्शकों के मध्य बैठकर ही श्रवण किया। मंच से आपका नाम मंच पर विराजमान होने के लिए लिया जाता रहा, पर आप सर्वथा दूर ही रहे।

ऐसे गुणाढ्य, विद्वत्सेवी, समाजसेवी, ऋषिभक्त, वेदभक्त आदरणीय बाबू हरिश्चन्द्र जी के अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर मैं प्रभु से प्रार्थना करती हूँ कि आप चिरायु हों, शतायु हों, और चिरकाल तक इसी प्रकार आर्यजगत् को अपनी सेवाओं से संतृप्त करते रहें।

सतामाराधने लग्नः सदा राष्ट्रहिते रतः।
हरिश्चन्द्ररावश्श्रीमान् जीवताच्छरदश्शतम्।।

शुभैषिणी
डॉ. प्रियंवदा वेदभारती
आचार्य, गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद

राज्यसभा सदस्य का शुभकामना सन्देश

VIJAY DARDA
Member of Parliament (Rajya Sabha)
Chairman, Lokmat Group of Newspapers

Member
Standing Committee on Finance
Consultative Committee for Ministry of Information & Broadcasting
Consultative Committee for Ministry of Civil Aviation
Consultative Committee for Ministry of Petroleum & Natural Gas (PSI)
Railway Convention Committee
Central Consumer Protection Council for Ministry of Consumer Affairs
Organizing Committee of the Commonwealth Games - 2010

क्र. सीएमडी/०१५४/पी
दि. १ जून, २०११

प्रिय श्री श्रीपाद रिसालदार जी,

सप्रेम वंदे,

विदर्भ के प्रसिद्ध समाजसेवी राव हरिश्चंद्र आर्य के सफल जीवन के ७७ वर्ष पूर्ण कर ७८ वें वर्ष में पदार्पण पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं. राव हरिश्चंद्र आर्य अमृत महोत्सव समारोह समिति ने २१ मई को उनका नागरी सत्कार कर निष्ठापूर्वक समाजसेवा करने वाले 'समाज रत्न' का सही अर्थों में अभिवादन किया है.

जीवन में सफलता अनेक लोगों को हासिल होती है लेकिन राव हरिश्चंदजी जैसे लोग बिरले होते हैं जो अपनी सफलता के सुफल को समाज के आम आदमी के साथ बांटते हैं. अपने संपूर्ण जीवन की पूंजी समाजसेवा के लिए अर्पित कर देने वाले राव हरिश्चंद्रजी जैसे विलक्षण तथा प्रेरणादायी व्यक्ति दुर्लभ होते हैं.

मैं उनके स्वस्थ तथा शतायु होने की कामना करता हूँ. पूर्व वचनबद्धताओं के कारण मैं २१ मई को आयोजित राव हरिश्चंद्रजी के अमृत महोत्सव में शामिल नहीं हो सका. आमंत्रण के लिए आभारी हूँ.

सधन्यवाद,

भवदीय,

(विजय दर्डा)

"Yavatmal House", 49, Lodhi Estate, New Delhi (India)-110003, Phone : +91-11-24601726-27
"Lokmat Bhavan", Post Box No. : 216, Nagpur, Maharashtra (India)-440 012, Phone:+91-712-2435145 Fax: +91-712-2435666
E-mail : vijaydarda@lokmat.com/ vijaydarda@sansad.nic.in

महाराष्ट्र विधानसभा सदस्य का शुभकामना सन्देश

महोदय,

आपले सामाजिक क्षेत्रामध्ये कार्य व्यापक आहे. असे सामाजिक क्षेत्रातील कार्य आपले निरंतर चालत राहो हि अपेक्षा. त्या करीता आपल्या वाढदिवसा निमित्य युवा स्वाभिमान, पतंजलि चॅरिटेबल ट्रस्टचे वतीने व राणा मित्र परिवारा तर्फे हार्दिक शुभेच्छा.

आपल्याला येणारे आयुष्य प.पु. स्वामी रामदेवबाबा यांच्या आर्शिवादाने निरोगी, सुख, समृद्धी व भरभराटीचे जावो हीच सदिच्छा, पुनश्चः आपल्याला अमृत महोत्सवी वाढदिवसाच्या हार्दिक शुभेच्छा.

आपला

रवि राणा
(आमदार)
बडनेरा मतदार संघ, जि. अमरावती

Office : Yuva Swabhiman, Rajkamal to Rajapeth, Amaravati-444605, Maharashtra.
Tel: 0721-2579671, fax: 721-2679398, mobile: 9969011111, 9594504504, 9049067331

बैद्यनाथ के प्रबन्ध निदेशक का शुभकामना सन्देश

तार : 'प्राणदा' फॅक्स : ०७१२-२७४३८५३ E-mail : baidyanathnagpur@dataone.in टेलीफोन : ६६४४९००, ६६४४९०१, ६६४४९०२ ६६४४९०३, ६६४४९०४, ६६४४९३४

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा. लि.

कोलकाता ○ पटना ○ झांसी ○ नागपुर ○ इलाहाबाद (नैनी)

ग्रेट नाग रोड, नागपुर-४४० ००९

दिनांक :

28-09-2010

महोदय,

आपके द्वारा राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के अभिनंदन ग्रंन्थ के सम्बन्ध में प्राप्त हुआ,

राव श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य ने श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन में एक छोटे से लिपिक के पद पर कार्य करना शुरू किया था, परन्तु अपने कार्य के प्रति सच्ची लगन एंव प्रतिष्ठान के प्रति अटूट निष्ठा के चलते इन्होने निरन्तर प्रगति करते हुये बैद्यनाथ प्रतिष्ठान के " महाप्रबंधक " का उच्च एवं प्रतिष्ठित पद प्राप्त किया ।

इनकी संयमित दिनचर्या एंव अनुशासित जीवन शैली, सूझबुझ एंव कार्यकुशलता से प्रतिष्ठान के सभी लोग प्रभावित थे, इन्होने कार्य के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन बहुत ही प्रभावशाली ढंग से किया, इनके कुशल प्रबंधन, उत्पादन एंव वित्तीय मामलों में इनके दीर्घ अनुभव का पूरा पूरा लाभ बैद्यनाथ प्रतिष्ठान को प्राप्त हुआ ।

हम इनके स्वास्थ्य दीर्घ जीवन एंव उज्वल भविष्य की सदैव कामना करते हैं ।

शुभ कामनाओं सहित ।

सुरेश शर्मा

(सुरेश शर्मा)
संयुक्त प्रबंध निदेशक

(रजिस्टर्ड कार्यालय : १, गुप्ता लेन, कोलकाता-६)

बैद्यनाथ : देशी दवाओं का सबसे बड़ा और विश्वासी कारखाना

प्रसिद्ध उद्योगपति का शुभकामना सन्देश

Brijmohan Lall

34, Basant Lok, Vasant Vihar,
New Delhi - 110 057
Tel. : 011-26147318, 26142451
Fax : 011-26143321, 26153913

मई 3, 2011

आदरणीय

आपका निमंत्रण मिला और यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप मई 21, 2011 को अपने जीवन के 78 वें वर्ष में प्रवेश कर रहे है । इस अवसर पर अमृत महोत्सव समारोह का आयोजन किया जा रहा है जिसमें परमपूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज आशीर्वाद देने हेतु पधार रहे है।

आपने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा में लगाया। आपके द्वारा आरंभ किये गए सेवा कार्य आपके कड़े परिश्रम व लगन का परिणाम है।

मैं अपनी ओर से व अपने परिवार की ओर से आप को इस शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको स्वास्थ्य लाभ व दीर्घायु दें व आपके जीवन में सुख, समृद्धि और शांति लाए।

कृपया मेरी ओर से स्वामी जी महाराज को चरण वन्दना कहिएगा।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

बृजमोहन लाल

बृजमोहन लाल

B-109, Greater Kailash I, New Delhi-110048

Email: brijmohan@herohonda.com | Tel.: +91-11-29246870-71 | Fax: +91-11-29246865

उद्योगपति श्री सत्यानन्द मुंजाल का शुभकामना संदेश

ओ३म्

सत्यानन्द मुंजाल

हीरो साईकिल्ज लिमिटेड
जी.टी. रोड, लुधियाना-141 003.
दूरभाष : दफ्तर- 2539448-52
घर - 2400834, 2406613
ई-मेल : sn_munjal@herocycles.com

दिनांक : 23.04.2011

आदरणीय श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य - सादर नमस्ते,

आपके 77वें जन्म दिवस पर आपको हार्दिक शुभकामनाएँ। आपके द्वारा समाज के प्रति सेवा भाव तथा जनकल्याणकारी कार्यों के लिए दिनांक 21 मई 2011 को आयोजित अमृत महोत्सव का आमन्त्रण पत्र प्राप्त हुआ - अतीव धन्यवाद। प्रमात्मा आपको स्वस्थ रखें और आप की आयु लम्बी करें। चहुं तरफा समाज की सेवा जितनी आप कर रहे हैं वह अति सराहनीय है। प्रभु आप को शक्ति दें कि आप इससे भी अधिक सेवा कर सकें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय।

सत्यानन्द

सत्यानन्द मुंजाल

समाजसेवक का शुभकामना सन्देश

- Editor, Green Hope Monthly (Eco Friendly Magazine)
- Recipient of Indira Gandhi Paryavaran Puraskar 2001 (Ministry of Forest & Enviornment, G.O.I.)
- Trustee Vanarai, Pune

Girish Gandhi

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव अभिनन्दन समिति की ओर से आयोजित आदरणीय राव हरिश्चन्द्रजी आर्य इनके ७७ वे जनमदिन के अवसर पर भेजी हुई निमंत्रण पत्रिका मिली, आभारी हूँ।

जनमदिन के शुभअवसर पर मन:पूर्वक अभिनंदन !

भविष्य में उनका जीवन तेजोमय, संस्मरणीय तथा निरामय हो, ऐसी शुभकामनाएँ।

कार्यक्रम की सफल संपन्नता के लिए मेरी अनेक शुभकामनाएँ।

घरमें सभींको प्रणाम।

सभी को प्रणाम।

आपका नम्र,

गिरीश गांधी

(गिरीश गांधी)

"Vanarai", Rahstrabhasha Sankul, North Ambazari Road, Shankar Nagar Chowk, Nagpur-440 010. Tele Fax : 0712-2235163, Email : vanaraingp@gmail.com

शुभकामना सन्देश

श्री आचार्य दयासागरजी विद्यार्थी काल से प्रतिभावान् छात्र हैं। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त करके आप आर्य समाज की सेवा में जुट गये। वर्तमान में आप छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं, पतंजलि योगपीठ के प्रभारी हैं, आर्यसमाज को इस आर्य नवयुवक पर गर्व है।

माननीय अध्यक्ष महोदय
अमृत महोत्सव समिति
सादर नमस्ते,

महामना, उदारदानी, निष्ठावान्, परिपक्व आर्यसमाजी, महर्षि दयानन्द के अनन्य अनुयायी, आर्यसमाजी संस्थाओं, गुरुकुलों एवं आर्य संन्यासियों, विद्वानों के समाज के हितैषी आदरणीय राव हरिश्चन्द्रजी का अमृत महोत्सव का समाचार पाकर हृदय हर्ष से गद्गद् हो उठा। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं विदर्भ के ऐतिहासिक आर्यनेता एवं आर्यदाता होने का गौरव श्री राव जी आर्य को प्राप्त है। आपने केवल स्वयं को ही नहीं अपितु अपने परिवार को भी आर्य बनाकर आर्यपरिवार का एक आदर्श संसार के सामने रखा है। परमात्मा की अपार कृपा आप पर और आपके परिवार पर बरसे। आप जैसे धन्यात्मा इस धरती पर असंख्य पुण्यों के प्रताप से जन्म लेते हैं। आप चिरायु, सुखायु एवं आर्यजनों के प्रोत्साहक हों, जिससे आर्यधर्म की समुन्नत पताका भव्य भारत का गौरवगान वायुतरङ्गों से संसार में झंकृत करता रहे। अभिनन्दन समिति के समस्त प्रबुद्धों को हमारा अशेष धन्यवाद, जिन्होंने आर्यरत्न पुरस्कार, आर्यविभूषण पुरस्कार आर्य विद्वानों को देकर सबको आर्यत्व प्राप्ति में अग्रसर किया और उनके अमृतमहोत्सव का आयोजन करके संसार को आर्यकर्मों से दीर्घायु एवं सुखायु होने की प्रेरणा दी।

भवदीय
आचार्य दयासागर
प्रधान,आर्य प्रतिनिधि सभा,छत्तीसगढ़

शुभ सन्देश

श्री रामनाथ जी सहगल आर्य समाज के कर्मठ, श्रध्दालु, लगनशील वरिष्ठ आर्यनेता हैं। आर्यजगत् की अनेक संस्थायें आपके नेतृत्व और मार्गदर्शन में आगे बढ़ रही हैं। आपके मार्गदर्शन में महर्षि दयानंन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा ने विशेष प्रगति की है ।

आदरणीय स्वामी धर्मानन्दजी

सर्वदा आनन्दमय रहो, मेरी शुभकामनायें ।

आशा है कि आप स्वस्थ एवं कुशल होंगे । मैं हर समय आपके स्वास्थ्य लाभ एवं दीर्घायु की कामना करता हूँ ।

आपका पत्र दिनांक १३/४/२०१० का प्राप्त हुआ । यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य का अमृत महोत्सव वर्ष मनाया जा रहा है और इस अवसर पर अमृत महोत्सव अभिनन्दन समिति के तत्वावधान में अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी ओर से, अपने परिवार की ओर से एवं श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

राव हरिश्चन्द्र आर्य वैदिक धर्म के दीवाने, ऋषि भक्त, आर्य समाज सेवक हैं और आर्य समाज के प्रत्येक कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। आपका जन्म हरियाणा प्रान्त के महेन्द्रगढ़ जिले के बीगोपुर गांव में हुआ। आपने सीमित आय होने पर वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. में लिपिक के रूप में कार्य आरम्भ किया। अपनी कार्यकुशलता एवं सूझबूझ से आपने जो उन्नति की, उसका कोई सानी नहीं है।

आर्य सिद्धांतों में आपकी पूरी श्रद्धा है। आपने बीगोपुर में आर्य समाज मन्दिर का निर्माण किया। अपनी सीमित आय से आपने राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट बनाया जिसके तत्वावधान में आपने आर्यजगत् के वैदिक विद्वानों, संन्यासियों एवं उपदेशकों को आर्य रत्न, आर्य विभूषण पुरस्कार से पुरस्कृत करने का प्रचलन किया जिसकी समस्त आर्य जगत् में भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही है।

मेरा उनसे लगभग पिछले ५० वर्षोसे सम्बध है, वे आर्यसमाज की समस्त संस्थाओं में तन-मन-धन से सहयोग देने में उद्यत रहते हैं । ऐसे निष्ठावान् ऋषि भक्त एवं आर्य सेवक का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने पर आपको पुनः हार्दिक बधाई ।

भवदीय

राम नाथ सहगल

मन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट,

टंकारा (गुजरात)
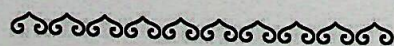
सेवा की प्रतिमूर्ति राव हरिश्चन्द्र जी के लिए मंगलकामना

आप आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के पूर्व मंत्री है । गुजरात के भूकंप पीड़ितों व बच्चों के सहायतार्थ चलाये जा रहे जीवनप्रभात संस्थान, गांधीनगर व पांडीचेरी के महामंत्री हैं। आप आर्यसमाज के कुशल व लगनशील कार्यकर्ता हैं ।

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई की आर्य समाज के शीर्ष नेता राव हरिश्चन्द्र जी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है ।

राव हरिश्चन्द्र जी एक ऐसे महामानव हैं जिन्होंने आर्यसमाज के छठे नियम अनुसार अपना संपूर्ण जीवन संसार के उपकार करने में अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति में लगा दिया है । आपने सत्य पथ पर चलकर अपने जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति हासिल की है । आप ईमानदारी, निष्ठा व समर्पण भावना के कारण आज भी संपूर्ण आर्यजगत् तथा वैद्यनाथ आयुर्वेद, नागपुर में भी सम्मानित हैं ।

आपने आर्य आश्रम व्यवस्था का पालन करते हुए एक धर्मार्थ न्यास की स्थापना करके अनेक शिक्षा संस्थानों, गुरुकुलों, गौशालाओं, सामाजिक संस्थानों को यथायोग्य सहयोग दिया है व सेवा करते रहे है । उन्होंने हमारे कच्छ के भूकम्प पीड़ित बालकों व विधवा बहनों की अविस्मरणीय सेवा की है, जिसका ऋण उतारना मुश्किल है ।

आर्यजगत् के इस विलक्षण व्यक्तित्व के धनी आदरणीय श्री राव हरिश्चन्द्र जी के अमृत महोत्सव समारोह पर उनके सुस्वास्थ्य व दीर्घायु की परमात्मा से मंगल कामना करते हैं ।

वाचोनिधि आर्य
महामंत्री
मो.- ०९४२८००६२३२
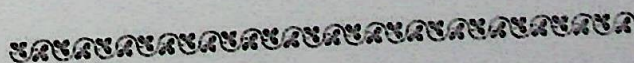
शुभकामना सन्देश

आप आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश भोपाल के उपप्रधान व वरिष्ठ समाज सेवक हैं ।

माननीय राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के अमृत महोत्सव के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं तथा परमपिता परमात्मा से उनकी दीर्घायु की प्रार्थना है । राव साहब आर्यजगत् के भामाशाह एवं कर्मठ कार्यकर्ता के साथ अति विनम्र हैं । ऐसे व्यक्तित्व से आर्यजगत् को प्रेरणा मिलती है ।

पुनः हार्दिक अभिनन्दन ।

भवदीय
भगवानदास अग्रवाल
वरिष्ठ उपप्रधान मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा,
भोपाल (म. प्र.)
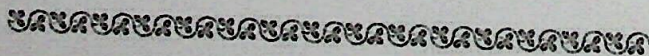
शुभकामना सन्देश

श्री दीनदयाल जी गुप्त आर्यजगत् के प्रसिद्ध समाजसेवक उदारमना, अनेक संस्थाओं के सहयोगी मार्गदर्शक तथा अपने उदारतापूर्वक दान से उन्हें आगे बढ़ा रहे हैं।

आदरणीय, स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती
अध्यक्ष
राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समिति
सादर नमस्ते,

जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आदरणीय राव हरिश्चन्द्र जी ७८ वें वर्ष में प्रवेश कर गये हैं और उनका अमृत महोत्सव मना रहे हैं । ऐसे आर्य विचारों से ओतप्रोत और सर्वात्मना वैदिक धर्मी, अनेक विद्वानों, गुरुकुलों समाजों, संस्थाओं के पोषक आर्य जी के प्रति हमारी हार्दिक शुभकामनाओं सहित परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि स्वस्थ रहते हुए शतायु होकर अमृत महोत्सव की तरह शतवर्षीय महोत्सव भी मनायें ।
शुभकामनाओं सहित,

भवदीय
दीनदयाल गुप्त
चेयरमैन, डालर इन्डस्ट्रीज लि.
कोलकाता
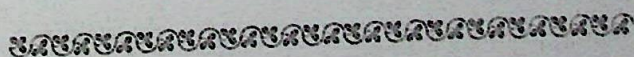
उज्ज्वल भविष्य की कामना

विद्वान आचार्य अभयदेवजी आर्य, गुरुकुल खानपुर (महेन्द्रगढ़) के आचार्य हैं। आप उच्च कोटि के साधक व गुरुकुल के स्नातक हैं।

यतो धर्मस्ततो जयः= जहाँ धर्म है वहाँ विजय है।

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वति पुरुषास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्।।

शूर, विद्वान् और सेवा धर्म को जानने वाले ये तीन प्रकार के मनुष्य पृथ्वी से सुवर्णरूपी पुष्पों का संचय करते हैं। इस विदुर जी की उक्ति को चरितार्थ करते हुए, क्रान्तिवीर राव तुलाराम की शहादत की पुण्यभूमि में पले-बढ़े श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य के अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर अपनी लेखनी को गति देते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस दानवीर का जन्म अभावों में हुआ जहाँ के तपस्थल में पैदा होकर मनुष्य दान तो कहाँ, जीवनचर्या पूर्ण करने में भी अभाव महसूस करता है। उस पुण्य भूमि में भामाशाह का पैदा होना किसी चमत्कार से कम नहीं है।

बहुआयामी प्रतिभा के धनी श्री आर्य जी! आपका व्यक्तित्व और कृतित्व अपने आप में विशिष्ट है। सेवा परोपकार, असहायों की सहायतार्थ आपने अपने जीवन को समर्पित किया है। आपके व्यक्तित्व की उज्ज्वलता के द्योतन में एक बात और अति महत्वपूर्ण है वो यह कि जहाँ आपने मानव सेवा को ईश्वर की आज्ञा मानकर सेवा और परोपकार का उन्नत मार्ग चुना वहीं दूसरी ओर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार व साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दिया।

आपने अपने सामाजिक परोपकार के कार्यों को व्यवस्थित तथा अनवरत चलाने हेतु 'आर्य हरिश्चन्द्र चेरिटेबल ट्रस्ट', की स्थापना की, इस न्यास के द्वारा आप संपूर्ण आर्यावर्त के गुरुकुलों, सामाजिक संस्थाओं तथा वैदिक विद्वानों को प्रायः प्रतिवर्ष एक विशिष्ट सम्मान से सम्मानित करते हैं। हमारी इस गुरुकुल संस्था ने भी आपके संरक्षकत्व में सदैव सुरक्षित रहकर अनवरत अध्ययन-अध्यापन तथा आर्य विचारों का प्रचार-प्रसार रूपी कार्य किया है। हम ईश्वर से करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा वैदिक ऋचाओं को चरितार्थ करने का सामर्थ्य दें, जिससे इस संसार को आपके अनुभव व सान्निध्य का अतिलाभ अर्जित हो सके।

अंत में हम समस्त गुरुकुल परिवार के अंतेवासी ब्रह्मचारीगण साचार्य आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

आपका शुभैषी-
आचार्य अभयदेवः
गुरुकुल खानपुर, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

शुभकामना सन्देश

श्री पं. जगदीशचन्द्रजी वसु आर्यजगत् के पुराने विद्वान् कर्मठ उपदेशक हैं। हरियाणा प्रान्त में आपका अच्छा प्रभाव है। आप ऋषि दयानन्द के श्रद्धालु भक्त एवं सरल हृदय हैं।

आशा है आप प्रभु कृपा से सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द में होंगे।

सविनय निवेदन है कि प्रचारार्थ यमुनानगर से पानीपत घर पहुँचने पर आपका "अमृत महोत्सव" समारोह का निमन्त्रण पत्र प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद।

पढ़कर अत्यन्त हार्दिक प्रसन्नता एवं आत्मा में आनन्द की अनुभूति हुई कि उदारता व दानशीलता की प्रतिमूर्ति, सौम्यस्वभाव, मान्य श्रद्धेय श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य अपने सेवाभाव, कर्तव्यनिष्ठ, प्राणीमात्र के हितचिन्तक हैं। मान्य श्री राव जी अपने जीवन के ७७ वर्ष पूरे करके ७८ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे है। यह समस्त आर्यजगत् के लिये प्रसन्नता एवं सौभाग्य की बात है।

आर्यसमाज ने आप जैसे (श्री राव जैसे) अनेक दिव्य महापुरुषों को जन्म दिया है - जिन्होंने अपने बौद्धिक वैभव के कारण मनीषी एवं औद्योगिक व्यापार जगत् में अपनी छाप छोड़ी है। साथ ही जो अपनी प्रचण्ड कर्मठता व पुरुषार्थ के बल पर देश और समाज के लिये एक प्रेरणा स्रोत बने, ऐसे दिव्य तेजस्वी महापुरुष का तो हमें शतशः अभिनन्दन करना ही चाहिये।

मैं अधिक गुणों के विस्तार में न जाता हुआ आपका शतशः 'अभिनन्दन' करता हुआ उस परम पिता परमात्मा से आपके उत्तम स्वास्थ्य, ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी दीर्घ जीवन के लिए कामना करता हुआ-समस्त 'राव हरिश्चन्द्र' परिवार की सुख-समृद्धि की भी कामना है । शतशः अभिनन्दन शुभ कामनाए स्वीकार कीजिये। शुभ कामनाओं के साथ सबको नमन ।

आपका
जगदीशचन्द्र वसु
वेदोपदेशक
७७, देसराज कॉलोनी
पानीपत (हरियाणा)

शुभकामना सन्देश

ग्राम बीगोपुर निवासी श्री छाजुरामजी स्नेक एक विचारशील शिक्षित समाजसेवी लोकप्रिय व्यक्ति है जो सदा ग्राम के सुख-दुःख में सहयोगी रहते हैं। आप यादव संसार के मासिक के संपादक भी रहे है।

राव हरिश्चन्द्र आर्य जी मेरे ही गाँव के हैं। नाते में मेरे दादाजी लगते हैं। मैं इनको बचपन से जानता हूँ। इनका जन्म एक बहुत ही गरीब परिवार में हुआ था। दादाजी बचपन से ही सीधे-साधे और सरल स्वभाव के हैं। इनका पूरा जीवन वृत्तान्त लिखूँ तो शायद एक ग्रन्थ में भी न समाये। इनके जनसेवा के कार्यों को देखते हुये गाँव की ही एक संस्था 'ग्राम सेवा समिति' ने इन्हें 'ग्राम गौरव' से सन्मानित किया था। यह बात दिनांक २६-१२-२००१ की है। उस वक्त मैंने भी इनके स्वागत में एक गीत सुनाया था। जिसमें इनके कुछ विशेष कार्यों का उल्लेख किया था।

बहुत दिनों पहले दादाजी ने गाँव में एक भव्य आर्य समाज मन्दिर और यज्ञशाला का निर्माण करवाया था। जहाँ हर वर्ष आर्यसमाज के विद्वानों के सम्मान के लिए और प्रचारार्थ सम्मेलन होता है। सम्मेलन में हजारों लोग प्रतिवर्ष धार्मिक व वैदिक आदेश सुनकर लाभान्वित होते हैं। इस सम्मेलन में हर वर्ष दादाजी गरीबों की सहायतार्थ लाखों रुपये का दान करते हैं। आसपास के गाँवों की जरूरत को देखते हुए अब दादाजी ने गाँव में ही जन सेवार्थ एक बहुत बढ़िया चिकित्सालय लाखों रुपये में बनवाया है। यह दादा जी की अपने आपमें एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस चिकित्सालय से हजारों गरीबों को लाभ होगा। कुछ समय पहले श्मशान घाट की चार दीवारी, व एक हाल बनवाकर और छायादार पेड़ लगाकर भी दादाजी ने गाववासियों की बहुत बड़ी सेवा की है। गाँव के अलावा भी दादाजी ने अनेक राज्यों में अलग-अलग धार्मिक स्थानों, धर्मशालाओं में कमरे बनवाकर जनसेवा की मिसाल कायम की है। जन सेवा में, गरीबों की सेवा में इन्होंने इतने काम किये हैं उनको गिनना भी मुश्किल है। सच्चाई तो यह है कि ऐसा उदारमना, दानशील और सहनशील व्यक्ति मैंने आज तक नहीं देखा। इनकी सादगी और जीवन दिनचर्या से मैं इतना प्रभावित हूँ कि शब्दों में बयाँ नहीं कर सकता। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ की इनका जीवन लम्बा हो और इन्हें कभी कोई कष्ट न हो।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

छाजुराम स्नेक
गाँव - बीगोपुर, पो. धौलेड़ा
जि. महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

सद्गुणोपेतश्रीर्विजयते सदा

श्री आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी मधुरभाषी, वैदिक साहित्य के ओजस्वी विद्वान् है । आप स्वाध्यायशील एवं वैदिक प्रवक्ता हैं। आप की वाणी में इतनी सरलता और मधुरता है कि एक बार आपके सम्पर्क में आनेवाला व्यक्ति सदा के लिए आप का बन जाता है ।

हरियाणा की ऊर्वरा भूमि ने अनेक महान् त्यागी, तपस्वी, सन्तों, योद्धाओं, दानवीरों को जन्म दिया है । जिन्होंने जिस क्षेत्र में कदम बढ़ाया वहीं सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किये । कल्पना चावला, भक्त छाजुराम, दादा बस्तीराम जैसे कुछ नाम उदाहरण हैं । स्वामी ओमानन्द जी महाराज का कार्यक्षेत्र हरियाणा रहा जहाँ उन्होंने आदर्श समाज सुधारक एवं तपस्वी सन्त की भूमिका निभाई।

हमारे लेखनायक श्री राव हरिश्चन्द्र जी का जीवन उपरोक्त श्रृंखला की एक कड़ी है । महेन्द्रगढ़ जिले के बीगोपुर गाँव में जन्मे श्री राव जी का जीवन भी संघर्ष एवं सफलता की कहानी है। आज सारे देश में बीगोपुर प्रसिद्ध है इसलिए कि एक श्रेष्ठ आर्यपुरुष का जीवन इससे जुड़ा हुआ है।

श्री राव हरिश्चन्द्र वेदभक्त, परोपकारप्रिय, सज्जन स्वभाव, आर्यपुरुष हैं। लगन के धनी श्री राव जी ने बचपन में ही ठान लिया था - **"कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।"** जब मेरे दायें हाथ में कर्मशीलता और लक्ष्यप्राप्त हेतु दृढ़ निश्चय है तो सफलता एक दिन अवश्य मिलेगी । वैद्यनाथ आयुर्वेद औषध संस्थान के माध्यम से आपने अपना कार्य शुरू किया, सत्यनिष्ठा और सद्व्यवहार से सब कर्मचारी एवं अधिकारियों के प्रिय बनकर खूब यश-धन-मान कमाया । लेकिन सज्जनों का स्वभाव सदा आदर्श रहा। आचार्य भर्तृहरि का नीतिश्लोक इनके स्वभावसिद्ध गुणों का वर्णन कर रहा है -

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा,
सदसि वाक्पटुता युधिविक्रमः ।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ।।

गुरुकुल आमसेना का स्नातक होने के कारण बहुत पहले ही राव साहब के नाम से परिचित था लेकिन साक्षात् दर्शन हुए हमारे गुरुवर्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी के "आर्यरत्न" सम्मान समारोह में ।

प्रतिवर्ष श्रेष्ठ विद्वानों के सम्मान की जो परम्परा आपने शुरू की वह अनूठी है और इससे भी अधिक उत्तम बात यह है कि आपने अपनी जड़ों को नहीं भुलाया। ग्राम बीगोपुर में आर्यसमाज के कार्यों का आरम्भ आपके ही सत्प्रयत्नों से हुआ। बेशक आपका कार्यक्षेत्र नागपुर है, लेकिन उत्सव होता है बीगोपुर में। मैं इन श्रेष्ठगुणों का ग्राहक और प्रशंसक हूँ ।

आपका "अमृत-महोत्सव" वर्ष आ रहा है । आप शतायु हों, समाज सेवा के कार्यों को इसी तरह विस्तार मिलता रहे। वेद मन्त्र के शब्दों में प्रार्थना है - **इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।** हे प्रभु ! हम तुम से वर पायें, आप बढ़ें प्रिय राष्ट्र बढ़ायें । अनेक - अनेक शुभ भावनाओं सहित सादर अभिनन्दन प्रेषित है ।

आचार्य वीरेन्द्र कुमार

शुभकामना सन्देश

स्वामी वैदिकानन्द जी इन्दौर के निवासी हैं। आप आर्यसमाज की गतिविधियों में विशेष रूप से रुचि लेते हैं। वैदिक साहित्य के प्रकाशन में आपका काफी लगाव है। आप का सारा परिवार वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत है। भारत के प्रख्यात पत्रकार श्री वेदप्रताप वैदिक आपके सुपुत्र हैं।

श्रद्धेय स्वामी धर्मानंदजी
सादर नमस्ते।

श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य के अमृतमहोत्सव का निमंत्रण मिला। मेरा उनसे प्रत्यक्ष में मिलने का अवसर नहीं आया । लेकिन समाचार पत्रों से उनके कार्यों की जानकारी मिलती रहती है।

हरिश्चंद्रजी अनेक संस्थाओं को दान करते रहते हैं। आपने एक ट्रस्ट बनाकर आर्यसमाज के अनेक विद्वानों और संन्यासियों को 'आर्य रत्न' एवं 'आर्य विभूषण' पुरस्कारों से सम्मानित किया है। यह महत्वपूर्ण है, कि आर्यरत्न पुरस्कार की राशि एक लाख रुपये है। जिन लोगों को पुरस्कार दिये गये हैं उनसे मैं परिचित हूँ । परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे दानी सौ वर्ष से भी अधिक जीवित रहें और उनके दोनों पुत्रों से आशा करता हूँ कि वे अपने पिता जी के पद चिन्हों पर चलकर आर्य समाज के विद्वानों और संन्यासियों की सेवा करते रहें।

राव हरिश्चन्द्रजी को मेरा हार्दिक आशीर्वाद ।

दयानंद का सेवक
स्वामी वैदिकानन्द सरस्वती
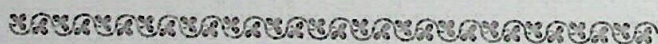
कल्याणकारी वचन

जब तक यह शरीर स्वस्थ अर्थात् रोगरहित है, जब तक बुढ़ापा दूर है। जब तक सभी इन्द्रियों में शक्ति विद्यमान है और आयु बची हुई है। तभी तक बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिए कि आत्मकल्याण के लिए महान् पुरुषार्थ करे, अन्यथा घर में आग लग जाने पर कुआँ खोदने से कोई लाभ नहीं होता वैसे मृत्यु काल निकट आने पर कुछ भी नहीं हो सकेगा। मनुष्य को चाहिए कि वह उत्तम परलोक की प्राप्ति के लिए प्रतिदिन पुण्यदायक कार्य करे।
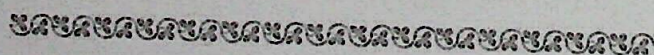
मधुरता एवं सदाचार की साक्षात् मूर्ति राव हरिश्चन्द्र जी आर्य को परमात्मा दीर्घायु करे

श्री ब्रह्मचारी महेन्द्रकुमारजी आर्य युवक एक सुशील,श्रद्धालु, उत्साही,कर्मठ,सेवाभावी,चरित्रवान्, पवित्रात्मा युवक हैं इन्होंने गुरुकुल आमसेना में शास्त्री आचार्य अच्छे अंको से उतीर्ण की है और अब अहर्निश गुरुकुल की सेवा में लगे है।

दुनिया बनाने वाले ने संसार में आश्चर्यजनक अनेक कृतियां बनाई हैं। उन्हीं में एक उत्कृष्ट कृति है - इंसान, और इंसानों में अनेक रूप, रंग ऐसे दिखाई देते हैं जो श्रेय और प्रेय मार्ग पर अग्रसर होते है । ऐसे ही श्रेय मार्ग पर चलने वाले श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का जन्म वि.सं. १९९१ वै. १ शुक्ल पक्ष तदनुसार १५ अप्रैल १९३४ रविवार को हरियाणा प्रान्त के महेन्द्रगढ़ जिले के नारनौल तहसील ग्रा. बीगोपुर, पो. धौलेड़ा में हुआ । परन्तु राव हरिश्चन्द्र जी सामान्य परिवार में होने पर भी उच्च विचार, कठिन परिश्रम, शुभ संकल्प तथा अपने सत्कर्मों से महान् व्यक्तियों में गिने जाते हैं । आप ऋषि दयानन्द जी के अनन्य भक्त हैं । आप में सामाजिक संगठन की अद्वितीय क्षमता है । आपको एक महान् समाजसेवी के साथ-साथ दानवीर कहना अतिशयोक्ति न होगा ।

आप का जैसे-जैसे कार्यक्षेत्र बढ़ता गया, आप की प्रगति होती गई, उसी प्रकार आपकी रुचि दान के प्रति बढ़ती गई । आप अनेक संस्थाओं को दान देने लगे । एक कहावत है -

**''बद्दल बरसे और गाथाएं ।
दाता देवे और शर्माएं ।।''**

इन विचारों से आपके मन से सदैव मधुरता व विनम्रता का जागरण होता रहता है । अहंकार रूपी राक्षस तो आपको छू भी नहीं सकता ।

**''पानी बाढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम ।
दोनों हाथ उलीचिए यह सज्जन का काम ।।''**

इसी भावानुसार आर्य जी जब धन-धान्य से भरपूर होने लगे तब से अपने पराये या परिचित अपरिचित का विचार मन में न लाकर समभाव से सुपात्रों एवं असहाय व्यक्ति में वितरण कर रहे हैं । ऐसे उदारता, मधुरता एवं सदाचार की साक्षात् प्रतिमूर्ति ऋषि दीवाने तथा महान् आर्य सेवक व्यक्ति का मैं इस अमृत महोत्सव के शुभअवसर पर अभिनन्दन करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपको भगवान् दीर्घायु प्रदान कर सदा प्रसन्न रखे ।

ब्र. महेन्द्र कुमार
गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा)

उदारता की प्रतिमूर्त्ति श्री राव हरिश्चंन्द्र जी आर्य की समृद्धि की कामना

आप गुरुकुल आमसेना के स्नातक हैं। स्वामी धर्मानन्दजी के प्रेरणा से आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी का सहयोग कर रहे है।

'उदारता की प्रतिमूर्त्ति श्री आर्य जी का स्वभाव अत्यन्त सरल, मृदुभाषी, विनम्रता का परिचायक है । नीतिकार कहते हैं- **'ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमः'** अर्थात् जिस पुरुष का आभूषण सज्जनता हो, शौर्य का अभूषण वाक्संयम हो। ऐसे सज्जन श्री आर्य जी हैं। इस संसार में विरले ऐसे भद्रव्यक्ति होते हैं जो कि **''शतहस्त समाहर सहस्र हस्त संकिरः''** अर्थात् **'सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से बाँटो'**, जो इस वेद सूक्ति को जीवन में चरितार्थ करने वाले हों श्री राव हरिश्चंन्द्र जी आर्य ऐसे व्यक्ति हैं।

आपका जीवन त्याग और परिश्रम का प्रेरणास्रोत है, जिससे सामान्य व्यक्ति को प्रेरणा मिलेगी। आपने सदा परिश्रम को विशेष स्थान दिया है । वेद में कहा है - **''कृतं मे दक्षिणेहस्ते, जयो मे सव्य आहितः ''**अर्थात् कर्म यदि दाहिने हाथ में है तो बायें हाथ में विजय सुनिश्चित है । इसी तरह सादगी का जीवन निर्वाह करते हुए **''दिन दुगुनी रात चौगुनी''** उन्नति के शिखर की ओर बढ़ते गये, जिसके परिणामस्वरूप आज आप जिस मुकाम पर हैं वहां कोई परिचय का मुहताज नहीं । आपने हर समय धार्मिक कार्योमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है । चाहे वह वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये हो, चाहे वह आर्षशिक्षण केन्द्र गुरुकुलों की चहुंमुखी विकास के लिये। आपने सदा मुक्तहस्त से सहयोग किया है । आज आपका भी नाम उच्चकोटि के दानवीरों में गिना जाता है । इसी कार्य के लिये आपने ट्रस्ट का भी गठन किया है जिसके माध्यम से साधु-सन्तों को सम्मानित करते रहते हैं । आपका निवास स्थल सदा से साधु-सन्तों को आश्रय देने वाला रहा है । आपके घर में सात्विक वातावरण बना रहने से परिजनों में एक दिव्य चेतना का संचार होता रहता है । इसलिये परिवार में न केवल पुत्र बल्कि हर सदस्य आपके धार्मिक कार्य में बढ़चढ़ कर भाग लेता आ रहा है । आपके द्वार से कोई भी खाली नहीं लौटा ।

मैं श्री राव हरिश्चंन्द्र जी आर्य की सर्वविध उन्नति एवं सुखमय जीवन के लिये कामना करता हूँ, जिससे उनका जीवन सुख-समृद्धि से परिपूर्ण हो ।

आचार्य सुरेश कुमार
गुरुकुल आश्रम कोसरंगी

शुभकामना सन्देश

आर्य तपस्वी श्री महात्मा सुखदेव जी सारे देश में भ्रमणशील वैदिक धर्म के प्रभावशाली प्रचारक एवं वक्ता हैं।
सारा आर्यजगत् आपको आर्य तपस्वी के नाम से जानता है।

'उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि ।
आ हि रोहेममममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदासि' अ.8/1/6

हे मनुष्य! तुझे पुरुषार्थ करते हुए ऊपर उठना है - नीचे नहीं गिरना । जीने के लिए सुख देने वाला शरीर मिला है । तुझ में उत्साह,बल,हिम्मत,हौसला आदि नाना प्रकार के साधन हैं । यह शरीर मुक्ति प्रदान करने वाला है । स्वयं को इस योग्य बना और सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान का उपदेश,सन्देश देकर स्वयं को भी और उन्हें भी उस लक्ष्य तक पहुंचा कर सच्चे आनन्द की अनुभूति कर ।

परमात्मा कभी नहीं मरते और उनका ज्ञान भी कभी नहीं मरता । वे मानव-संस्थाएं भी नहीं मरेंगी जो पुरुषार्थ करते हुए मानव जाति के कल्याण,परोपकार के लिए सब को जोड़ने का कार्य करती हैं ।

भारतवर्ष संसार का भौगोलिक व अध्यात्मिक दृष्टि से गुरु था और गुरु रहेगा । यह सब अपने आप नहीं हुआ। यहां के ऋषियों,संन्यासियों, सन्तों, विद्वानों,आप्त-पुरुषों, महान् नेताओं ने अपने आचरण,चरित्र,ज्ञान,बलिदान द्वारा इस देश को सींचा, रक्षा की और सम्पूर्ण विश्व में शान्ति,भाईचारे का संदेश देकर भारतीय सभ्यता,संस्कृति और संस्कारों को विश्व में जन-जन तक पहुंचाया ।

विश्व ब्रह्माण्ड में हिंसा, बलात्कार,लूट, आतंक आदि का कारण स्वार्थ है। स्वार्थ के कारण पाप का जागना, पाप जागने पर धर्म का छूट जाना होता है।

सभ्यता,संस्कृति,संस्कार और धर्म की रक्षा के लिए ऋषि पथ के पथिक श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी ने ऋषि के सिद्धान्तों को अपने जीवन में केवल अपनाया ही नहीं बल्कि आत्मा में,आचरण में,कर्मों में लाकर प्रमाणित कर दिया कि वेद विहित कर्मो द्वारा संसारी जनों का कल्याण व परोपकार करने वाले संसार रूपी भव सागर को पार कर के परमात्मा के संसार में वास व विचरण करने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं।

यह आशीर्वाद श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी ने अपने आप प्राप्त नहीं कर लिया बल्कि इसके पीछे एक दिव्य-ज्योति,दिव्य शक्ति,दिव्य ज्ञान जिसे वेद ज्ञान कहते हैं, जीवन में अपनाया और प्रभु की प्रेरणा,प्रकाश,आशीर्वाद और शुभ कामनाएं प्राप्त की ।

यह सब मेरा श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी के प्रति निजी अनुभव है । जब कभी मेरा नागपुर में जाना या पाण्डीचेरी से भारत वर्ष में प्रवचन के लिए आना-जाना लगा रहता था तो मेरा भोजन द्वारा,फल द्वारा,फूल मालाओं द्वारा स्टेशन पहुंच कर सम्मान करते थे । मैं स्वयं नहीं जानता कि मुझ जैसे मिट्टी के कण को आर्य विभूषण पद से कैसे सम्मानित कर दिया ? यह सब उनकी महानता का परिचय है ।

प्रभु सदैव ऐसे कार्यों के लिए उन्हें दीर्घायु ,नीरोगी, स्वस्थ, बलिष्ठ, सर्वगुण संम्पन्न रखें ।

आर्य तपस्वी सुखदेव(दिल्ली)

कर्मयोगी राव हरिश्चन्द्र आर्य को नमन

आप होनहार युवक हैं, व्याख्यान और वैदिक यज्ञों में आपकी रुचि है, आप स्वाध्याय शील हैं, आप से आर्य समाज को बहुत अपेक्षाएं हैं।

दानवीर आदरणीय श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के अमृत महोत्सव पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के तत्वावधान में अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित होगा । यह सुनकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। आर्य जी के अमृत महोत्सव पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए प्रसन्नता अनुभव हो रही है ।

मेरा पूर्व से परिचय तो नहीं है पर जब मैं २००९ में पूज्य स्वामी जी की सेवा में उनके साथ नागपुर गया तो आपकी सौम्यता, सरलता, सादगी भरा जीवन, मधुर व्यवहार मेरे मन को आश्चर्यचकित करने लगा, इतना सब कुछ होते हुए भी लेशमात्र का भी अभिमान आपको छू नहीं पाया है।

किसान परिवार में आपका जन्म लालन-पालन होने के साथ-साथ ''वेद का ज्ञान, यज्ञ का अनुष्ठान, संस्कारी संतान, राष्ट्र के लिए बलिदान'' जैसी भावनाओं को आपके मन-मस्तिष्क में आपके दादा, परदादाओं के माध्यम से प्राप्त हो चुका था और इन्हीं भावनाओं को अपना उद्देश्य एवं ध्येय समझकर आपने अपने जीवन को उन्नत एवं अग्रसर बनाया ।

कांटों में गुलाब तो कीचड़ में कमल उगा करते हैं।
ऐसे ही बुरे व्यक्तियों में अच्छे भी हुआ करते हैं ।

ऐसे ही ''शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर'' वेद के वाक्य को सार्थक करते हुए आपने राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट के माध्यम से आर्यरत्न, आर्य विभूषण पुरस्कार का प्रचलन करके आर्य संन्यासियों, आर्य विद्वानों का उत्साहवर्धन करके समाज में एक क्रान्ति का बिगुल बजाया है ।

आपका जीवन वैदिक धर्म, राष्ट्र की उन्नति एवं साधु, सन्तों, संन्यासियों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहता है । आप कहीं कमी महसूस करते हैं , उसे पूरा करने का प्रयास करते हैं । आपकी जीवनसंगिनी श्रीमती शान्तिदेवी के अचानक निधन पर सारा समाज दुःख अनुभव करता आ रहा है । अस्तु , परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इस धर्मपारायण उदारमना सज्जन महानुभाव को दीर्घायु प्रदान करे । आप निरन्तर अपने शुद्ध पवित्र दान को वैदिक धर्म की चहुँमुखी उन्नति के लिए अर्पित कर उन्नति और अधिक बुलन्दियों तक पहुंचें। इस अमृत महोत्सव पर मेरी आपको हार्दिक शुभकामनाएं एवं शत-शत अभिनन्दन!

वन्दन करें अभिनन्दन करें
इस आर्य विभूति को नमन करें ।
जिसने जीवन धर्म पर वारा,
'मनु' उसको सबने पुकारा ।।

ब्र. मनुदेव वाग्मी

शुभकामना सन्देश

श्री प्रभाकर देव जी (हिण्डौन निवासी) इस समय आर्य साहित्य के सबसे बड़े प्रकाशक हैं। इनकी दुर्लभ विशेषता यह है कि ये सुन्दर किन्तु सस्ता साहित्य प्रकाशित करते हैं। इस कार्य के लिए एक ट्रस्ट बनाकर उसके लिए इन्होंने अपना जीवन समर्पित किया हुआ है।

स्वामी श्री धर्मानन्दजी सरस्वती
संयोजक, राव हरिश्चन्द्रजी अमृत महोत्सव समिति,
नागपुर (महा.)।

सम्मान्य स्वामीजी
सादर नमस्ते

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आर्यश्रेष्ठि राव श्री हरिश्चन्द्रजी आर्य का 'अमृत महोत्सव' आपके संयोजन में मनाया जाएगा। यह सुखद अनुभूति है कि हम अपने अग्रजों का सम्मान करना सीख रहे हैं। कार्यकर्ता को इससे अन्तर नहीं पड़ता परन्तु आनेवाली पीढ़ियाँ इससे प्रेरणा लेती हैं और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपने-अपने सामर्थ्य व निष्ठा द्वारा योगदान करती हैं।

मेरे पूज्य पिता स्मृतिशेष श्री प्रहलादकुमारजी आर्य कहा करते थे कि आर्यजगत् में विद्वानों के सम्मान की राशि एक लाख रुपये प्रतिवर्ष हो। यह कामना हमारे अग्रज तथा आदर्श राव श्री हरिश्चन्द्रजी आर्य पूरी कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त भी आप विद्वानों का सम्मान करते हैं। अपनी मातृसंस्था तथा मानसगुरु के प्रति अनूठी निष्ठा मेरे निकट सम्मान का विशेष कारण है। इसके अतिरिक्त अभी आपने अपने पैतृक ग्राम में चिकित्सालय निर्माण द्वारा एक सच्चे आर्य की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है, जो देश काल परिस्थितिजन्य सीमाओं से ऊपर उठकर "सर्व जन हिताय" की पवित्र भावना को साकार कर रहे हैं।

मैं राव श्री का हार्दिक सम्मान करते हुए परमदेव परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपको लम्बा, कर्मठ, ऊर्जायुक्त, यशस्वी जीवन प्रदान करें।

आपका स्नेहाकांक्षी
प्रभाकरदेव आर्य
अध्यक्ष
श्री घूड़मल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास
हिण्डौन सिटी, राजस्थान

आर्यजगत् के आदर्श दानवीर के लिए शुभकामना

कुमारी ममता व्याकरणाचार्य शिक्षिका है, कन्या गुरुकुल आश्रम आमसेना को तन-मन-धन से योगदान दे रही है। यह गुरुकुल के लिए गौरव की बात है।

श्री राव जी का जन्म एक सामान्य किसान परिवार में ग्राम नारनौल के समीप बीगोपुर हरियाणा में हुआ । बचपन में ही आपसे पिता की छाया उठ गई । अतः आपकी माता जी और बड़े भाई ने ही आपका पालन-पोषण किया । आप प्रारम्भ से ही सरल हृदय और कुशाग्र बुद्धि के थे । अतः अच्छे अंकों से मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद आजीविका की समस्या सामने आई । तब किसी सहयोगी के कथन से वैद्यनाथ भवन झांसी में लिपिक के रूप में कार्य प्रारम्भ किया । आप अथक परिश्रम, पवित्र आचरण से उन्नति पथ पर बढ़ते गये । आप जहां भी जाते अपने अधिकारियों को प्रभावित करके आगे बढ़ जाते, इस प्रकार जैसे-तैसे आप अपने सेवा कार्य में आगे बढ़ते वैसे ही सामाजिक कार्योंमें ही बढ़चढ़कर भाग लेने लगे । शनैः - शनैः दान की मात्रा भी बढ़ती गई । आपकी उदारता की कोई सीमा नहीं । आपने आर्यजगत् में एक लाख रुपये का आर्यरत्न पुरस्कार चलाकर एक अपूर्व कार्य किया । इसके अंतर्गत आपने अब तक दस उच्चकोटि के साधु, महात्मा और आर्यविद्वानों को सम्मानित किया है । इसी प्रकार आपने २१००० रुपयों के 'आर्य विभूषण' पुरस्कार से भी अनेक आर्यविद्वानों को भी विभूषित किया है । फलस्वरूप आपकी गिनती प्रसिद्ध दानियों और नेताओं में हो रही है । ऐसी पुण्यात्मा के अमृत महोत्सव पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

कुमारी ममता व्याकरणाचार्या
कन्या गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा)

अपरिह्वृताः सनुयाम वाजम्। (ऋ०१.१००.१९)

हम कुटिलता-रहित होकर शक्ति को प्राप्त हों।

शुभकामना सन्देश

श्री लज्जाराम जी सैनी उच्च कोटि के व्यवस्थापक एवं विचारशील चिन्तक लेखक हैं। डी.ए.वी. ट्रस्ट झारखण्ड के आप आधार स्तम्भ हैं। झारखण्ड आदि पूर्वांचल में आपके मार्गदशन में सैकड़ों संस्थायें चल रही हैं ।

श्रद्धेय स्वामी जी,

सादर नमस्ते ।

मुझे यह जानकर अतिप्रसन्नता हुई कि "राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव" मनाया रहा है । इस अवसर पर प्रकाशित हो रहे "अभिनन्दन ग्रन्थ" के लिए हमारी बहुत-बहुत शुभ कामनाएँ हैं, साथ ही निस्सन्देह इस कार्य के द्वारा हम आने वाली पीढ़ी को सन्देश देना चाह रहे हैं कि समाज उन लोगों को ही याद करता है जिन्होंने अपने जीवन को समाज के लिए आहूत किया है और अपनी कर्मठता, सादगी तथा ईमानदारी से समाज की सेवा की है ।

राव साहब ने जमीन से उठकर ऊँचाइयों को छूआ; साथ ही तन-मन-धन से समाज की सेवा की है । वे आज के लक्ष्मीपतियों के लिए आदर्श हैं। जिन्होंने अपनी कमाई से "आर्य रत्न और आर्य विभूषण" नामक पुरस्कारों की स्थापना की है ताकि आने वाली पीढ़ी **"शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर"** के महत्त्व को समझ सके । राव साहब हरियाणा के छोटे से गाँव से निकलकर अपने कार्यक्षेत्र में सफल प्रशासक, सफल अभिभावक, सफल समाजसेवी के साथ विनम्रता, धैर्य, दानशीलता, कर्मठता आदि सद्गुणों के प्रतीक हैं। तभी तो पूज्य स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी आनन्दबोध जी, स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, योगऋषि स्वामी रामदेव जी आदि ने इनका आतिथ्य स्वीकार किया है ।

इस अवसर पर अभिनन्दन ग्रन्थ के सफल प्रकाशन हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ और अभिनन्दन समिति को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

सधन्यवाद !

शुभेच्छु
(एल.आर. सैनी)
निदेशक
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल्स एवं कॉलेजेज्
राँची क्षेत्र, बरियातु रोड, राँची, झारखण्ड

सौम्यता की प्रतिमूर्ति श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य शतायु हो

आप पोद्दारेश्वर राम मंदिर, नागपुर के संस्थापक, मुख्य ट्रस्टी, संचालक व नगर के वरिष्ठ समाज सेवी हैं । आप अनेक हिन्दु संस्थाओं से जुड़े हैं ।

मानव के छः दुर्गुणों को 'रिपु' अर्थात् दुश्मन की संज्ञा दी गई है । काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर इन छः रिपुओं में 'क्रोध' को सबसे प्रबल माना गया है जो न्यूनाधिक मात्रा में सबमें दिखाई देता है । राव हरिश्चन्द्रजी के जीवन में मैंने उन्हें इस 'रिपु' के विजेता के रूप में पाया है ।

सन् १९६७ में जब नागपुर नगर में श्री पोद्दारेश्वर राम मंदिर से श्रीराम जन्मोत्सव शोभायात्रा का आयोजन प्रारंभ हुआ, तब से आज तक श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. आयोजन का पृष्ठपोषक रहा है । उस समय श्री आर्यजी वहाँ कोषाध्यक्ष के रूप में सेवारत थे एवं उनसे कारखाने में अनेकों बार भेंट होती थी । चेहरे पर स्मित हास्य, वाणी में सौम्यता एवं मृदुता सदैव उनमें दिखाई दी । इसी गुण ने उन्हें अजातशत्रु बनाकर जीवन में उन उंचाइयों पर पहुंचाया जो प्रत्येक की अभिलाषा एवं अन्यों के लिए अनुकरणीय होती हैं ।

आर्य विद्वानों को प्रश्रय एवं दान देकर उन्होने आर्य समाज की अनुकरणीय सेवा की है । समाज एवं धर्म की सेवा के लिए शारिरिक एवं मानसिक सेवा के साथ-साथ दानहुत धनोपार्जन भी एक आवश्यक अंग है । उनके कुशल मार्गदर्शन एवं औषधि व्यवसाय में उनके विपुल अनुभव द्वारा उनके दोनों सुपुत्र अपने व्यवसाय में प्रशंसनीय प्रगति कर रहे है । जीवन संगिनी के असमय एवं आकस्मिक वियोग ने अवश्य उन्हें झकझोर दिया, पर वे दृढ़तापूर्वक पुनः साहस के साथ उठ खड़े हुए हैं एवं युवाओं की तरह सक्रियतापूर्वक सत्कर्मो में जुटे हैं ।

मैं परमेश्वर से उनके शतायु होने की कामना करता हूँ ताकि समाज एवं राष्ट्र को उनका अधिकाधिक लाभ मिल सके ।

रामकृष्ण पोद्दार
ट्रस्टी श्रीराम मन्दिर,सेन्ट्रल एवेन्यू रोड़,
निकट रेल्वे स्टेशन, नागपुर
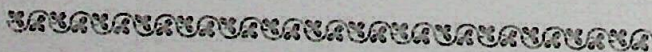
आर्यसमाज के रत्न श्री राव हरिश्चंन्द्र जी आर्य के लिए शुभकामना

श्री कोमल कुमार आर्य गुरुकुल आमसेना के स्नातक हैं, गुरुकुल के कार्यो में हाथ बँटाते हैं। आप एक स्वाध्यायशील नवयुवक हैं, नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं। ब्रह्मविद्या का अन्वेषण करते हुये ब्रह्म में विचरण करते हैं। आपसे आर्यसमाज को बहुत आशाएं हैं।

श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का नाम सारे आर्यजगत् में प्रसिद्ध है । एक सामान्य परिवार (किसान) में जन्म लेकर आप सर्वोच्च पद पर पहुंचे, यह सभी के लिए प्रेरणाप्रद और मार्गदर्शक है । अपनी अनूठी सूझबूझ और अनथक पुरुषार्थ से ही आप इतनी उन्नति कर सके, इतने ऊंचे पद पर पहुंचे, समाज में आगे बढ़ने वाले के लिए आपका जीवन मार्गदर्शक है ।

श्री आर्य जी से मेरा पुराना सम्बन्ध है । गुरुकुल में तो आपके यशस्वी कार्यों की चर्चा होती रहती है। यहां कई बार तो आपके दर्शन करने का सौभाग्य मिला। नागपुर में आपके घर में भी मुझे जाने का अवसर मिला। हर बार आपकी मधुर-मुस्कान और मीठी वाणी ने मुझे बहुत प्रभावित किया। ऐसे ऊंचे पद वाले व्यक्तित्व का इतना नम्र स्वभाव मुझे बहुत कम देखने को मिला । आपकी उदारता खुले दिल से दान देना, बिना मांगे भी देना, बिना पक्षपात के सभी संस्थाओं की सेवा करना, आर्य विद्वानों और आर्य संन्यासियों का अति नम्रतापूर्वक सम्मान करना और सहयोग देना, ये आपकी ऐसी विशेषताएं हैं जो अन्यत्र दुर्लभ हैं ।

'आर्यरत्न' और 'आर्यभूषण' पुरस्कार चलाकर आपने सारे आर्यजगत् का दिल जीत लिया है । आपकी नम्रता और सेवाभाव से आर्यसमाज के अधिकतर साधु, पुण्यात्मा महात्माओं और विद्वानों ने आपके घर को अपने चरणकमलों से पवित्र किया है । मेरे गुरुदेव पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के प्रति भी आपकी हार्दिक श्रद्धा है। वे भी आपके परिवार की प्रशंसा करते नहीं थकते, ऐसे पुण्यात्मा उदारमना महात्मा के अमृत महोत्सव पर मेरा शत-शत अभिनन्दन ।

भगवान् आपको लगातार अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु प्रदान करे, जिससे लम्बे समय तक आपकी छत्रछाया आर्यजगत् को मिलती रहे ।

ब्र. कोमल कुमार आर्य
गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा)

शुभकामना सन्देश

श्री मेहताजी सार्वदेशिक आर्य प्र.नि. सभा के प्रमुख विभाग अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान हैं। आपके निर्देशन व देखरेख में देश के पिछड़े इलाकों में वनवासियों के बीच शिक्षा एवं सेवा का महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है ।

श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

सादर नमस्ते !

आपका कृपा पत्र कुछ दिन पूर्व हमें प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद । वैसे तो मुझे श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी से मिलने एवं उनके विचार सुनने का अवसर व्यक्तिगत रूप से प्राप्त नहीं हुआ है। परन्तु आपके पत्र के साथ संलग्न परिचय पत्र से ज्ञात हुआ कि श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी एक कर्मठ, उदारमना, दानशील एवं आर्यजनों के लिए प्रेरणास्रोत विभूति हैं । श्री राव जी ने अपने जीवन में आर्य सिद्धान्तों पर चलते हुए समाज में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया और आने वाली पीढ़ियों के लिए उनका जीवन प्रेरणाप्रद है।

मैं राव जी के स्वास्थ्य एवं समृद्ध जीवन की कामना करते हुए यह आशा करता हूँ कि आपका जीवन भावी संतति के लिए मार्गदर्शन का कार्य करता रहेगा ।

सधन्यवाद !

भवदीय
वेदव्रत मेहता
प्रधान, अखिल भारतीय सेवाश्रम संघ
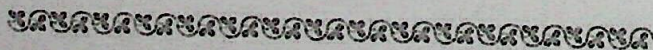
शुभकामना सन्देश

आप आर्यसमाज बीगोपुर हरियाणा के प्रधान हैं। महर्षि दयानन्द के प्रति अटूट श्रद्धा है, निष्ठावान् मृदुभाषी कार्यकर्ता हैं, आप राव हरिश्चन्द्र आर्य के बचपन के साथी हैं।

राव हरिश्चन्द्र आर्य मेरे बचपन के साथी हैं। ये बहुत ही परिश्रमी, सरल स्वभाव व तीक्ष्ण बुद्धि के धनी हैं। मुझसे बड़े होने के बावजूद इनका स्नेह मेरे प्रति आदरपूर्ण है।

मेरी अध्यक्षता में २७ दिसम्बर सन् २००१ को शहीद उधम सिंह जयन्ती के अवसर पर भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री कर्नल राव रामसिंह की गौरवमयी उपस्थिति में ग्राम सेवा समिति (रजि.) बीगोपुर के सौजन्य से इनका "ग्राम गौरव" सम्मान से गाँव की चौपाल में हजारों लोगों की मौजूदगी में सपत्नीक अभिनन्दन किया गया।

इन्होंने बीगोपुर में एक भव्य आर्य समाज मन्दिर, आयुर्वेदिक औषधालय का भवन तथा स्वर्गाश्रम का भव्य निर्माण करवाया।

आर्य समाज बीगोपुर की समस्त गतिविधियों को सुचारु रूप से संचालन हेतु हर वर्ष समाज की मांग अनुसार धन राशि उपलब्ध करवाते हैं। समस्त ग्रामवासी इनको प्रेरणा स्रोत मानते हैं।

आर्य समाज बीगोपुर इनकी दीर्घायु एवं उत्तम स्वास्थ्य की ईश्वर से कामना करता है।

बाबू फूलसिंह आर्य,
प्रधान
आर्य समाज बीगोपुर, (जिला-महेन्द्रगढ़, हरियाणा)
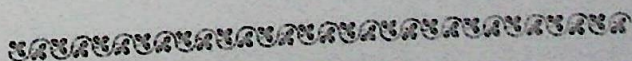
शुभकामना सन्देश

आदरणीय माता स्वतन्त्र लता शर्मा कर्नाटक में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाने में प्रमुख कार्य कर रही हैं, आप कर्मठ विदुषी आर्य महिला हैं, जिन पर कर्नाटक को गर्व है ।

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य के अमृत महोत्सव के पुनीत अवसर पर आप एक भव्य अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रकाशित करने जा रहे हैं । आपका यह प्रयास उस महान् व्यक्ति के प्रति समस्त आर्य जगत् की भावभीनी श्रद्धा एवं कृतज्ञता का प्रतीक है जिसने निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्यों के लिए स्वयं को अर्पित कर दिया । अपने लिए तो सभी जीते हैं जो दूसरों के लिए जिए वह वास्तव में वन्दनीय है । ऐसा व्यक्ति सम्मान का मोहताज नहीं होता, सम्मान स्वयं उसके द्वार पर आकर दस्तक देता है और उसका अभिनन्दन करता है क्योंकि वह उस सम्मान का अधिकारी होता है ।

आपने ऐसे ही महान् व्यक्ति के गुणों को प्रकाश में लाने का जो प्रयास किया है, वह अति उत्तम है क्योंकि श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य का जीवन औरो के लिए प्रेरणादायक और मार्ग दर्शक सिद्ध हो सकेगा ।

सेवा जिसका धर्म है, कर्म जिसका दान ।
ऐसे पुण्य-आत्मा का, सदा होवे कल्याण ।।

सद्भावना सहित,

भवदीया
स्वतन्त्र लता शर्मा
प्रधाना(कर्नाटक)
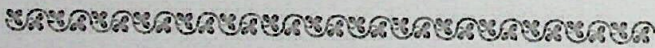
कल्याणकारी वचन

किसी के अच्छे बुरे कर्म का फल तत्काल प्राप्त होता न देख कर तुम यह मत विचारो कि इन कर्मों का फल आगे नहीं मिलेगा। कर्मफल से कोई भी बच नहीं सकता, क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा न्यायकारी है। जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है किन्तु कर्मफल भोगने में ईश्वरीय व्यवस्था के अधीन है। गीता में भी कहा है "अवश्य मेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्" अर्थात् किये हुये शुभ शुभ कर्म का फल कभी माफ़ नहीं होता, वह अवश्य भोगना पड़ता है।
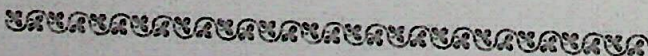
शुभकामना सन्देश

श्री वानप्रस्थ सत्यनारायण जी आर्य बहुत उदार श्रद्धालु, धार्मिक और ईश्वरभक्त हैं। आप आर्यसमाज की प्रायः सभी संस्थाओं को अनेक प्रकार से सहयोग कर रहे हैं। निर्धनों और दीन दुःखियों के प्रति आप के हृदय में बहुत दयाभाव है, अतःप्रतिवर्ष कम्बल,साड़ी,धोती तथा अन्न का वितरण करते रहते हैं।

परम आदरणीय
स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती,
अध्यक्ष राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समिति,
गुरुकुल आश्रम आमसेना खरियार रोड जिला नवा पारा (उड़ीसा)

सादर सप्रेम नमस्ते।

आपका पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि राव हरिश्चन्द्र आर्य का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है व अभिनन्दन किया जा रहा है । राव हरिश्चन्द्र आर्य से मेरा कई दफा मिलना नागपुर,आमसेना आदि स्थानों पर हुआ है। मेरी राय में आप आर्यरत्न,भारत के यशस्वी सपूत,विलक्षण व्यक्तित्व के धनी,दानवीर भामाशाह एवं महान् विभूति हैं ।

आपने अपने ट्रस्ट से "आर्य रत्न" एवं "आर्य विभूषण" नामक पुरस्कारों से जो एक-एक लाख रुपये के हैं, अभी तक आर्य श्रेष्ठों को सम्मानित कर दिया है जो एक ऐतिहासिक घटना बन चुकी है । आप प्रतिवर्ष साधु महात्माओं को एवं विभिन्न संस्थाओं को सहयोग करते रहते हैं।

आपके निवास स्थान नागपुर के घर पर अनेकानेक संन्यासीगण,आर्यनेता, विद्वान् एवं देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त योगऋषि पूज्य स्वामी रामदेवजी भी पधार चुके है। ऐसे त्यागी महामानव का अमृत महोत्सव मनाया जाना व अभिनन्दन करना हम सबके लिये गौरव की बात है । मैं ऐसे कर्मयोगी की शतायु ही नहीं,इससे ज्यादा आयु पाने की ईश्वर से प्रार्थना करता हूं ।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

आपका सदैव हितैषी
वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य
लाहोरी एन्ड कंपनी
१४,गणेशचन्द्र एवेन्यु,
दूसरा तल्ला,कोलकाता

शुभकामना सन्देश

श्री ब्रजपाल शर्मा 'कर्मठ' आर्य समाज के पुरानी पीढ़ी के मधुर भाषी सरलचित्त प्रसिद्ध भजनोपदेशक हैं, आर्यजगत् में अनेक भजनोपदेशक आपके के ही शिष्य हैं ।

ज्ञानवृद्ध, तपोवृद्ध, आयुवृद्ध, श्रद्धेय श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती गुरुकुल आमसेना खरियार रोड, नवापारा, उड़ीसा, सादर सस्नेह नमस्ते।

आशा है, आप गुरुकुल परिवार सहित स्वस्थ प्रसन्न होंगे, यँहा पर भी ईशकृपा और आपके स्नेह आशीर्वाद से सभी स्वस्थ-प्रसन्न हैं। आप का हस्ताक्षरांकित पत्र और विज्ञापन भी मिला, पढ़कर समाचार से अवगत हुआ, श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य का अमृत महोत्सव इस वर्ष मनाया जा रहा है यह जानकर मन को अत्यन्त ही प्रसन्नता हुई है । आप अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार कर रहे हैं, यह और भी उत्तम है, श्री राव साहब से प्रथम भेंट बीगोपुर आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर मैं गया हुआ था तब हुई थी। श्री राव साहब भी अपने ग्राम बीगोपुर के उत्सव पर गए हुये थे। आर्य समाज का भवन बन तो गया था किन्तु कुछ कार्य पूर्ण कराया जा रहा था, मंच पर मेरे गीत सुनकर राव साहब बहुत प्रसन्न हुए । कार्यक्रम के पश्चात् मेरा परिचय जाना, मैंने अपना परिचय दिया। मैं एक सारस्वत ब्राह्मण वशिष्ठ गोत्र परिवार में जन्मा हूँ। घोर पौराणिक परिवार, वकील, डाक्टरों का परिवार है। श्री महाशय केहरसिंहजी ग्राम गोधना के सम्पर्क में आकर आर्य प्रचारक बना हूँ। पौराणिक संस्कृत पाठशाला में ही श्री आचार्य मुरालीलाल के आचार्यत्व में शिक्षा ग्रहण की है।

यह जानकर बड़े प्रसन्न हो गये राव साहब, अपना नागपुर का पता,फोन सभी लिखकर दिया, कहा, कभी कोई आर्थिक परेशानी हो तो लिख दीजियेगा। हैदराबाद में बड़ा आर्य सम्मेलन था। मैने पत्र दिया हम २५ व्यक्ति अमुक ट्रेन से आ रहे हैं । नागपुर इतने समय पंहुँचेंगे, राव साहब ने सभी के लिए अति उत्तम भोजन, फल, मिष्ठान्न स्टेशन पर ट्रेन के पहुंचने से पूर्व ही भिजवा दिया। ऐसे दानी महानुभाव के अमृत महोत्सव अभिनन्दन पर बहुत-बहुत हार्दिक मंगल कामना प्रकट करता हूँ । श्री राव साहब शतायु प्राप्त करें । परिवार भी स्वस्थ सुखी रहे ।

आपका शिष्य
वृजपाल शर्मा कर्मठ

सरलता, सेवा एवं सादगी के प्रतीक श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य के लिए मंगलकामना

श्री आचार्य रामपाल जी शास्त्री देश-विदेश से परिचित हैं। प्रतिवर्ष कई विद्वानों और सैकड़ों छात्रों को छात्रवृत्ति देकर उनके जीवन-निर्माण में सहायक बन रहे हैं। सारा शिक्षाजगत् आपका हृदय से आभारी है ।

वैदिक धर्मानुयायी, परम ऋषिभक्त, समाजसेवी, विद्वदनुरागी मान्यवर श्रीयुत् राव हरिश्चन्द्र जी आर्य ! मैंने आपके प्रथम बार दर्शन ग्राम बीगोपुर (महेन्द्रगढ़) में "राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट" द्वारा आयोजित 'आर्यरत्न' एवं 'आर्य विभूषण' पुरस्कार सम्मान प्रदान समारोह में स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती (आमसेना) के सम्मान समारोह में किये थे । आपके कृतित्व एवं व्यक्तित्व के विषय में अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः पढ़ने को मिलता रहता था, परन्तु आपके विशिष्ट व्यक्तित्व को निकटता से जानने का शुभ अवसर ई. सन् २००७ में शिकागो (यू.एस.ए.) में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में प्राप्त हुआ, जब आप न्यूयार्क स्थित आर्यसमाज हिलसाईड में मेरे पास लगभग एक सप्ताह तक रुके।

मैंने आपके सान्निध्य में यह देखा कि आपमें समाजसेवा एवं वैदिक धर्म के प्रति गहरी आस्था एवं तड़प है। सरलता, सादगी एवं निरभिमानिता से विभूषित आपका जीवन अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। आप स्वयं निरभिमानिता से विभूषित हैं। आपका जीवन अनुकरणीय एंव प्रशंसनीय है। आप स्वयं तो अहर्निश वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहते ही हैं, साथ ही आप उन विद्वज्जनों को भी आर्यरत्न एवं आर्य विभूषण पुरस्कार से सम्मानित करके उत्साहित करते रहते हैं, जो वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज को समर्पित हैं ।

श्रीमान्! आपके आदर्श, कर्मठ एवं सेवाभावी जीवन को अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय मानते हुए मैं आपके जन्मदिवस के शुभ अवसर पर आयोजित अमृतमहोत्सव पर अपनी शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित करता हूँ ।

अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन पर मैं पुनः अपनी हार्दिक बधाई देते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवनयापन करते हुए अपने कार्य को करते रहें ।

मंगलाभिलाषी
रामपाल शास्त्री
(प्रधान)मानव सेवा प्रतिष्ठान (दिल्ली)

शुभकामना सन्देश

ऋषि दयानन्द की भावनाओं को साकार करने के लिए समर्पिते श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक जी आर्य आर्य समाज के सुपरिचित व्यक्तित्व हैं।

यह जानकर अतीव प्रसन्नता है कि वैदिक धर्म के दीवाने, ऋषि के प्रति अनुरक्त, माननीय श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य का अमृत महोत्सव प्रेरक रूप से आयोजित किया जा रहा है। देश-विदेश में आज कौनसा ऐसा व्यक्ति होगा जो माननीय राव साहब को नहीं जानता होगा । आपने, सीमित क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ करके, अपने पुरुषार्थ के बल पर उच्चतम स्तर के आयामों को स्पर्श किया और अपने पुरुषार्थ से कमायी हुई समृद्धि को उदार भाव से सुपात्रों तक पहुंचाने में और ऋषि ऋण को चुकाने में कभी उदासीनता नहीं रखी ।

आपने अनेक शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सालयों, समाज सेवकों को उदार सहयोग प्रदान किया। आर्य जगत् की माननीय विभूतियों को 'आर्य रत्न' एवं 'आर्य विभूषण, के नाम से पुरस्कार देने के क्रम को गति देते हुए आपने अनेक जानी मानी हस्तियों को इन पुरस्कारों से सम्मानित किया । ऐसे महनीय व्यक्तित्व के अमृत महोत्सव के अवसर पर हम उनके प्रति शुभकामनाएं प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से इनके निरामय दीर्घायुष्य की प्रार्थना करते हैं।

सधन्यवाद !

भवदीय

(अशोक आर्य)

कार्यकारी अध्यक्ष)
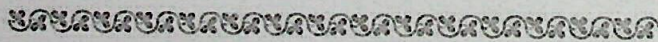
इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा। (ऋ०१.३२.१५)

परमेश्वर चराचर का शासक है। वही परमेश्वर उपासणीय है।
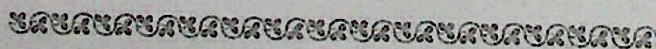
शुभकामना सन्देश

आप नागपुर के विशेष समाजसेवी हैं पतंजलि योगपीठ हरिद्वार एवं संस्थापक सदस्य भारत स्वाभिमान न्यास, हरिद्वार में आप जी जान से कार्य में जुटे हैं।

समाज के प्रति समर्पित व्यक्ति न केवल अपने जीवन को तेजोमय बनाता है, वह अपने आस-पास को भी आलोकित करता है । राव हरिश्चन्द्र आर्य एक ऐसा ही व्यक्तित्व है, जैसी की उनकी जीवन गाथा है, जीवन के अमृत काल तक पहुँचते-पहुँचते उन्होंने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। अपने परिश्रम से अपने जीवन को संवारने के साथ अपनी राह के हर पथिक को सहारा देकर उन्हें मंजिल तक पहुंचने की प्रेरणा दी । सामान्य किसान परिवार में जन्म लेकर भी अपनी असामान्य प्रतिभा के आधार पर आगे बढ़ते हुए जीवन में सुख-शान्ति और संतोष को हासिल किया ।

राव हरिश्चन्द्र आर्य ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने अपनी हर प्राप्ति में समाज को हिस्सेदार बनाया । वैदिक धर्म से प्रभावित होकर आर्य समाज की सेवा में जुटे तो वहां भी पद की लालसा से दूर रहकर सेवा भाव में स्वयं को समर्पित किया । स्वनिर्मित धर्मार्थ ट्रस्ट के माध्यम से "आर्यरत्न" और "आर्यविभूषण" पुरस्कारों का प्रचलन शुरू कर इस विचारधारा के प्रचार-प्रसार में लगी विभूतियों को प्रोत्साहित करने का कार्य किया ।

अपने पैतृक गांव में भव्य आर्य समाज मंदिर का निर्माण तथा सर्वसुविधा युक्त चिकित्सालय का निर्माण उनकी अपनी मिट्टी के प्रति कृतज्ञता का परिचायक है ।

अमृत महोत्सव पर समाज द्वारा उनका सम्मान, समाज में उनके सेवा कार्योको सम्मानित कर उनसे प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करेगा । एक मार्गदर्शक के रूप में वे दीर्घायु तक समाज को नई दिशा देने का कार्य करते रहें, यह शुभचिंतन हम इस अवसर पर करना चाहेंगे ।

उनके इस समर्पित जीवन में उनके परिवार का योगदान भी महत्व रखता है । महिपाल एवं यशपाल जैसे पुत्ररत्नों ने उनके कदमों पर चलते हुए अपने व्यवसाय के साथ समाज सेवा को जीवन का अंग बनाया है, जो युवा पीढ़ी के लिये गौरव की बात है ।

भवदीय
डॉ. शान्तिलाल कोठारी
अध्यक्ष, एकेडमी ऑफ न्यूट्रीशन इम्प्रुव्हमेन्ट एवं
कोरपोरेट सदस्य, पतंजलि योगपीठ,
हरिद्वार एवं संस्थापक सदस्य,
भारत स्वाभिमान न्यास, हरिद्वार,
नागपुर-४४० ०१२.

कर्मयोद्धा राव हरिश्चन्द्र आर्य के लिए आशीर्वाद एवं मंगलकामना

आप एक माने हुए सम्मानित सामाजिक कार्यकर्ता हैं, विशेषकर आप धार्मिक कार्यो में और नागपुर की सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते है। श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन से सेवा निवृत्त है।

एक दिन, मध्याह्न के अल्प अवकाश का समय था बैद्यनाथ परिवार के हम कुछ कार्यकर्तागण सदा की भांति गप्प-गोष्ठी कर रहे थे कि गौरवर्ण, सुन्दर शरीर, धोती-कुर्ता और सर पर टोपी, सादगी-भरा व्यक्तित्व 'नमस्ते' के संबोधन के साथ हमारे बीच आता है। मैं हरिश्चंद्र यादव झाँसी से आया हूँ। हमने 'जयरामजी' के अभिवादन के साथ पूछा-'आप यू.पी. के तो नहीं लगते?' उन्होंने कहां 'मै हरियाणा के गांव बीगोपुर का हूँ।' और यह 'हरियाणवी' आगे चलकर हमारा सखा, हमारा साथी बना और हमारे इस बैद्यनाथ परिवार में एक कड़ी और जुड़ गई।

शनैः-शनैः यह बंदा 'बैद्यनाथ' के कैशियर और पश्चात् प्रधान व्यवस्थापक के पद पर पहुँच गया और शुरू हो गया, हमारे इस साथी का, इस कर्मठ सखा का शून्य से अपनी सृष्टि रचने का तथा उत्तरोत्तर उड़ान भरते आकाश छूने का सफर।

हमारे शहर नागपुर के सीताबर्डी इलाके में मेन रोड पर एक छोटी-सी कपड़े की दुकान से प्रारम्भ जीवन-यात्रा तथा अपनी सद्गृहिणी अर्धांगिनी के साथ वाकर रोड महल के एक छोटे से टपरा छाप घर में जीवन-यापन करनेवाला यह कर्मठ इन्सान हरिश्चन्द्र यादव उसी महल क्षेत्र के वाकर रोड़ पर आज तीन-तीन कोठियों का स्वामी है। आयुर्वेद क्षेत्र में सेवारत यह कर्मयोद्धा अपने साहस, सूझ-बूझ कर्तव्य के प्रति सजगता और अहर्निश पराक्रम के बल पर अनेक व्यवसायी बड़े प्रतिष्ठानों का कुशल संचालक है। अपने दोनों सुपुत्रों श्री महिपाल और यशपाल का मार्गदर्शन करते हुए, श्री आर्य समाज के प्रचार - प्रसार सहित अनेक सामाजिक उपक्रमों में भी सलग्न हैं। दोनों होनहार और तेजस्वी पुत्रों द्वारा व्यवसाय में अभूतपूर्व ख्याति अर्जित करना भी इस परिवार की कर्मठता और परिश्रम का जीता जागता उदाहरण है। दोनों पुत्रवधुएं सरल स्वभाव, मिलन सरिता तथा अन्नपूर्णा के समान आतिथ्य सत्कार के लिये आज भी याद की जाती हैं।

'राम चरित मानस' के प्रचार - प्रसार में हम सभी के सहयोगी किन्तु आर्यसमाज के विचारों से अत्यन्त प्रभावित यह कर्मठ इन्सान कब हरिश्चन्द्र यादव से राव हरिश्चन्द्र आर्य बन गया, यह गौरव गाथा स्मरण करते हुए मैं स्वयं भी गौरवान्वित होता हूँ।

हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि कर्मठ कर्म-योद्धा अपने आप को केवल आर्यसमाज तक ही सीमित न रखें और धर्म के माध्यम से इन्सान को इन्सान से जोड़ने और अच्छे इन्सान ढ़ालने का सद्कार्य करें, यही प्रभु से प्रार्थना है। मैं उम्र में बड़ा होने से, आशीर्वाद प्रदान करते हुये सुखी एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करता हूँ।

उमेश शर्मा , नागपुर

शुभकामना सन्देश

श्री रणसिंह जी आर्य महर्षि दयानन्द जी एवं स्वामी सत्यपति जी के श्रद्धालु भक्त हैं। आप दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ की ओर से अनेक पुस्तकों को प्रकाशित कर रहे है, इस प्रकार साहित्य के प्रचार-प्रसार से वैदिक धर्म की सेवा कर रहे हैं।

सम्मानीय स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती,
सादर नमस्ते ।

ईश्वर की असीम अनुकम्पा, आर्य समाज के आप सब संन्यासियों, विद्वानों एवं धर्म प्रेमी सज्जनों पर बनी रहे, ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है ।

हर्ष का विषय है कि श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य के अमृत महोत्सव के अवसर पर उनके सम्मानार्थ एक अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है । मैं इस अवसर पर ग्रन्थ के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामना प्रेषित कर रहा हूँ । श्री राव जी का जीवन कर्मठता, परोपकारिता, दानशीलता, विद्वानों के प्रति सेवाभाव, अद्भुत सूझबूझ एवं उनकी वैदिक धर्म के प्रति ईमानदारी के साथ सेवाभाव के कारण आर्य जनों के लिये प्रेरणादायक है । प्रतिवर्ष लाखों रुपये विभिन्न धार्मिक संस्थाओं, संत महात्माओं, वैदिक विद्वानों को सहयोग देने वाले श्री राव जी सपरिवार उत्तम स्वास्थ, दीर्घायुष्य एवं ईश्वर से और अधिक शक्ति-सामर्थ्य प्राप्त कर देश धर्म की सेवा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहें, इसी कामना एवं विश्वास के साथ ...

शुभेच्छु
रणसिंह आर्य
न्यासी, वानप्रस्थ साधक आश्रम
आर्य वन रोजड़ (गुजरात)
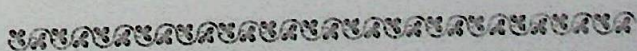
शुभकामना सन्देश

आचार्य आनन्दप्रकाश जी आर्ष शोध संस्थान अलियाबाद (आंध्र प्रदेश) के आचार्य व त्यागी, तपस्वी लेखक और जानेमाने विद्वान् हैं।
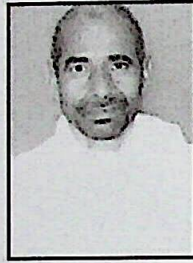
श्रीमान् प्रबन्धक महोदय

(श्री राव हरिश्चन्द्र अमृत महोत्सव स्मरिका)
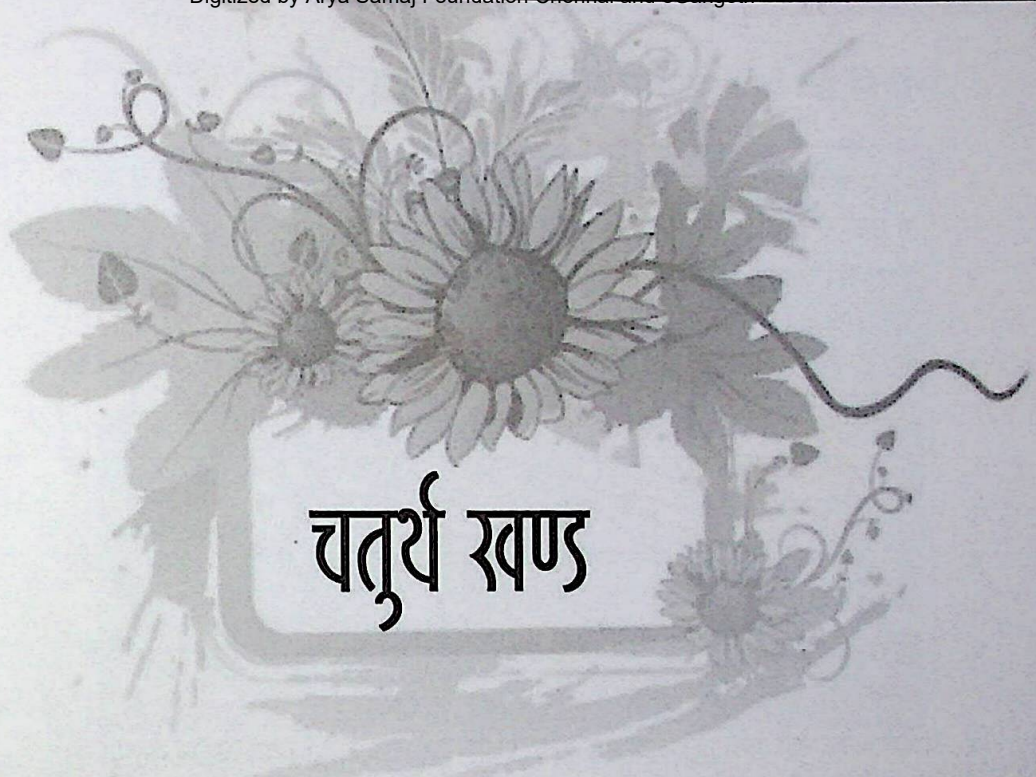
सादर नमस्ते

बड़ी प्रसन्नता की बात है, कि मान्य श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य जी के अमृत-महोत्सव के शुभ अवसर पर स्मारिका निकाली जा रही है। हम आयोजन की सफलता की मंगलकामना करते हैं।

आशा है, अन्य महानुभाव श्री राव हरिश्चंद्र जी आर्य के शुभ कर्मों एवं शुभकार्यों में 'यथासम्भव सहयोग के कार्यों से प्रेरणा प्राप्त करेंगे, जिससे समाज में ज्ञान-विज्ञान एवं सुख-शान्ति की वृद्धि होगी।

भवदीयो मंगलाभिलाषी
आचार्य आनन्द प्रकाश
आर्ष-शोध-संस्थान
अलियाबाद, मं. शामीरपेट
जि. रंगारेड्डि-५०० ०७८ (आं.प्र)
चलभाष - ०९९८९३९५०३३
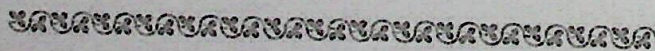
चतुर्थ खण्ड

फोटो गॅलरी

धारणीय- आप्त वचन

१. मानव मात्र का ईश्वर एक ही है। उसका मुख्य नाम ओ३म् है। ओ३म् का जप करने से परिवार में सुखशान्ति की प्राप्ति होती है।

२. ईश्वर सर्व व्यापक, सदा एकरस, अचल, अटल और अविनाशी है। वह जन्म-मरण के चक्र में कभी नहीं आता।

३. संसार में ईश्वर से महान और कोई नहीं है। वही हम सब का सच्चा गुरु है। ईश्वरीय ज्ञान का नाम वेद है।

४. ईश्वर सम्पूर्ण जगत् का रचयिता पालक संहारक और हम जीवों को हमारे शुभाशुभ कर्मों का यथावत् फल देनेवाला है।

५. कर्मो का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। इसलिए यदि सुख चाहते हो तो शुभ कर्म करो और पाप से बचो।

६. ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, निराकार, अनूपम, सर्वाधार, पवित्रत्तम है, और वह सुकर्मी मनुष्यों को सुख-शांति, साहस तथा सुबुद्धि प्रदान करता है।

७. धर्म अनेक नहीं होते। अनेक तो मत-पन्थ, मजहब,सम्प्रदाय होते हैं। धर्म तो सब मनुष्यों का एक ही होता है।

८. धर्म का सम्बन्ध किसी आडम्बर अथवा वेश के साथ नहीं होता। धर्म का सम्बन्ध तो जीवन, व्यवहार, आचरण के साथ होता है।

९. दूसरों के साथ वहीं व्यवहार करो जो आप दूसरों से अपने लिए चाहते हैं। यह धर्म का मर्म है, इस रहस्य को समझो।

१०. धर्मात्मा मनुष्य अपना लोक और परलोक सुधार लेते है। हम जीवों के साथ धर्म जाता है, भौतिक वैभव नहीं। इसलिए धर्म का संचय करो।

११. धर्मात्मा व्यक्ति रक्षक होते हे, भक्षक नहीं। अर्थात अन्य प्राणियों को सुख देते हे, दु:ख नहीं। वे अपनी आत्मा के समान दूसरों की आत्माओं को समझते है।

१२. भगवान से कुछ माँगो मत, क्यों की जितना भगवान दे सकते हैं, उतना तुम माँग नहीं सकते।

१३. मनुष्य में तीन चीजें वास करती है : पशुता, मनुष्यता और दिव्यता । आप जिसे चाहें बढ़ा सकते है।

१४. संसार में कोई ऐसा स्थान नहीं, जहां मनुष्य को उसके कर्मो का फल न मिलता हो।

१५. महान आदमी की महानता का पता इस बात से चलता है कि वह छोटे आदमी से कैसे पेश आता है।

पैतृक स्थान गांव बीगोपुर स्थित राव हरिश्चन्द्र आर्य का निवास

राव हरिश्चन्द्र आर्य के साथ परिवारजन

दयानन्द सेवाश्रम,बीगोपुर स्थित वेद मन्दिर का मुख्यद्वार

वेद मन्दिर दयानन्द सेवाश्रम,बीगोपुर का लोकार्पण

राव हरिश्चन्द्र द्वारा निर्मित
दयानन्द सेवाश्रम,
(वेद मन्दिर)बीगोपुर
का लोकार्पण करते हुये
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि
सभा के प्रधान
स्वामी आनन्दबोधजी सरस्वती

दयानन्द सेवाश्रम (वेद मन्दिर) बीगोपुर के लोकार्पण के समय
स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती राव हरिश्चन्द्र आर्य को आशीर्वाद देते हूए।

स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती राव हरिश्चन्द्र आर्यका तिलक द्वारा स्वागत करते हुए

स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती श्रीमती शान्तिदेवी आर्या को आशीर्वाद देते हुए।
साथ में विराजमान हैं स्वामी ओमानन्दजी एवं स्वामी सदानन्दजी दीनानगर (पंजाब)

दयानन्द सेवाश्रम, बीगोपुर स्थित विशाल सभागृह का आंतरिक दृश्य
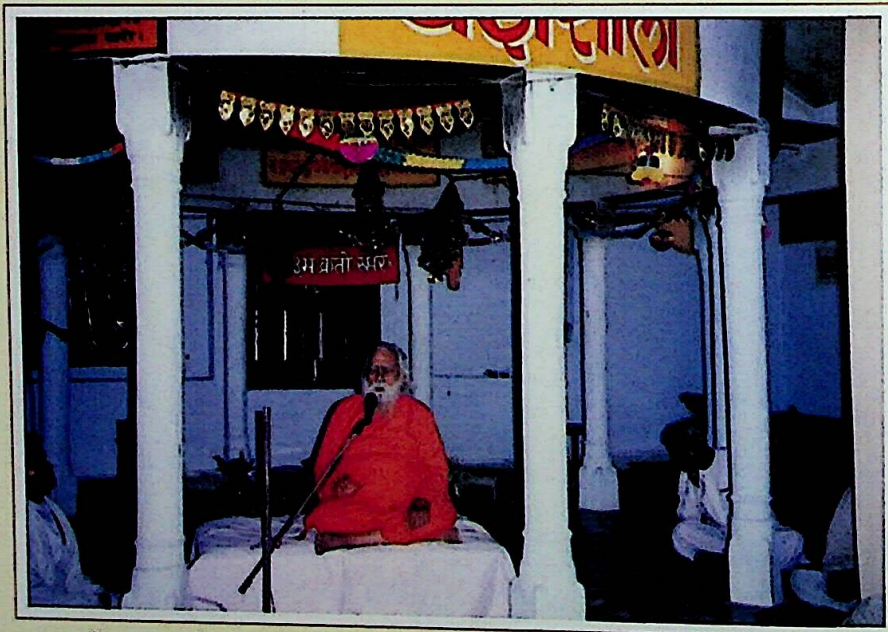
दयानन्द सेवाश्रम (वेद मन्दिर),बीगोपुर के लोकार्पण के समय यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती प्रवचन करते हुए।

दयानन्द सेवाश्रम (वेद मन्दिर) बीगोपुर, लोकार्पण के
समय ब्र. नन्दकिशोर(होशंगाबाद) के स्वागत का एक दृश्य

दयानन्द सेवाश्रम (वेद मन्दिर) बीगोपुर के लोकार्पण के समय
बड़े भाई श्री धनसीरामजी के द्वारा मुनीश्री का स्वागत
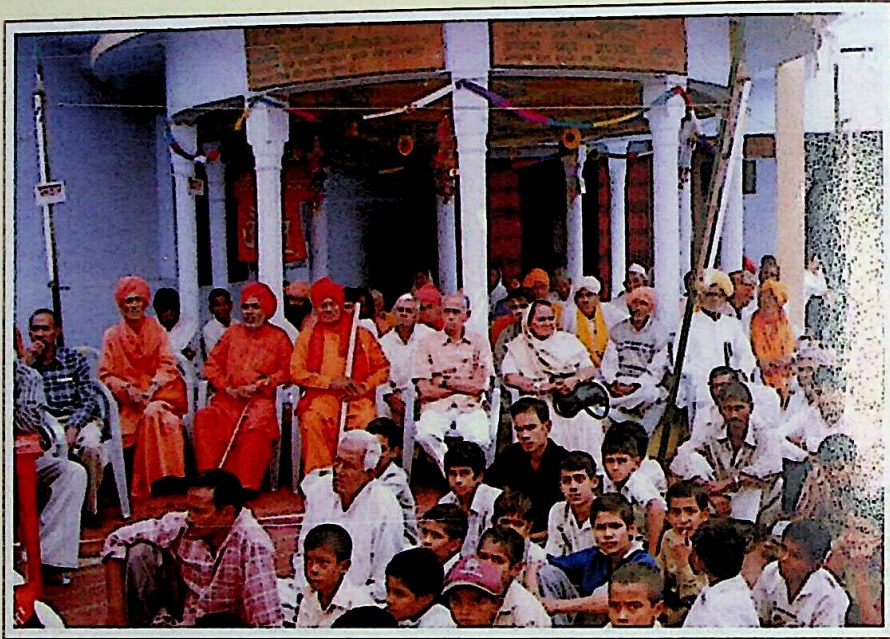
लोकार्पण के समय उपस्थित संन्यासी एवं विद्वत्जन

लोकार्पण उत्सव में उपस्थित ग्रामवासी एवं जनसमूह

दयानन्द सेवाश्रम, बीगोपुर स्थित वेद मंदिर के चिकित्सालय प्रांगण में उपस्थित परिवार एवं ग्रामीण जन

आर्य समाज बीगोपुर में यज्ञ करते हुए आर्य परिवार

'आर्यरत्न पुरस्कार' समारोह

स्वामी सर्वानन्दजी सरस्वती को आर्यरत्न पुरस्कार समर्पण के अवसर पर वाद्य करती दयानन्द आर्य कन्या विद्यालय नागपुर की छात्राएँ

आर्यरत्न पुरस्कार के समय मंच पर आसीन स्वामी सदानन्दजी, स्वामी ओमानन्दजी, स्वामी दीक्षानन्दजी आदि आर्यसमाज की विशिष्ट विभूतियां

पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी महाराज दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) को 'आर्यरत्न पुरस्कार' प्रदान करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै.देवरत्न आर्य, एवं राव हरिश्चन्द्र आर्य एवं श्रीमती शांतिदेवी आर्या

पूज्य स्वामी सर्वानन्द सरस्वती को दिये गये 'आर्यरत्न सम्मान' के स्मृतिचिह्न को ग्रहण करते हुए श्रद्धेय स्वामी सदानन्दजी,दयानन्द मठ,दीनानगर (पंजाब)

पूज्य स्वामी धर्मानन्दजी गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) को 'आर्यरत्न पुरस्कार' प्रदान करते हुए
केन्द्रीय मंत्री साहिब सिंह वर्मा, चौ. मित्रसेनजी,स्वामी व्रतानन्दजी एवं ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी राव हरिश्चन्द्र आर्य

आचार्य पूज्य विशुद्धानन्दजी मिश्र बदायूँ (उ.प्र.) को 'आर्यरत्न पुरस्कार'
प्रदान करते हुए राव हरिश्चन्द्र आर्य एवं चौ. मित्रसेनजी सिंधु

आचार्य पूज्य बलदेवजी नैष्ठिक कालवा (हरियाणा) को आर्यरत्न पुरस्कार प्रदान करते हुए योगऋषि पूज्य स्वामी रामदेवजी, श्री. रामनाथजी सहगल एवं परिवारिक जन

'आर्यरत्न पुरस्कार' के समय पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती परळी वैजनाथ (महाराष्ट्र) को साफा पहनाते हुये स्वामी रामदेवजी

पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती परळी वैजनाथ (महाराष्ट्र) को 'आर्यरत्न पुरस्कार' प्रदान करते स्वामी रामदेवजी एवं ट्रस्ट के मेनेजिंग ट्रस्टी राव हरिश्चन्द्र आर्य

पूज्य स्वामी रामदेवजी को 'आर्यरत्न पुरस्कार' प्रदाने के अवसर पर स्वागत गीत गाती दयानन्द आर्य कन्या विद्यालय नागपुर की छात्राएं

श्रद्धेय आचार्य रामनाथजी वेदालंकार (उत्तराखण्ड) हरिद्वार का 'आर्यरत्न पुरस्कार' स्वामी रामदेवजी से ग्रहण करते हुये उनके सुपुत्र

'आर्यरत्न पुरस्कार' के समय डॉ. कर्णसिंह सांसद (अलवर) का स्वागत करते हुए बड़े भाई श्री घनसीरामजी सरपंच

पूज्य स्वामी रामदेवजी को 'आर्यरत्न पुरस्कार' देते समय समारोह में उपस्थित अतिथिगण

आर्यरत्न सम्मान कार्यक्रम के समय स्वामी रामदेवजी महाराज के हाथों दीपप्रज्वलन। साथ में आचार्य बलदेवजी, राव हरिश्चन्द्र आर्य,पुलिस आई.जी. श्री. सत्यपाल सिंह, केन्द्रीय मंत्री श्री विलास मुत्तेमवार
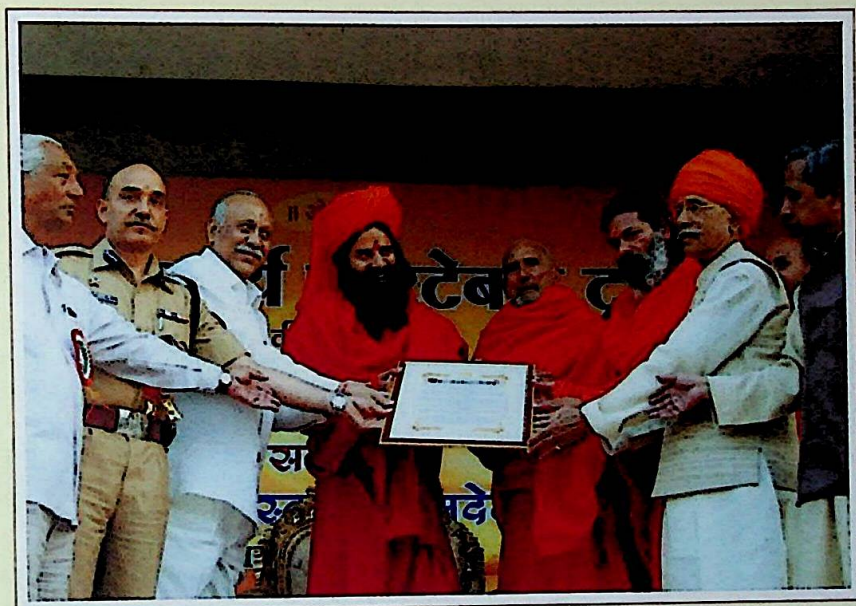
श्रद्धेय स्वामी रामदेवजी महाराज हरिद्वार (उत्तराखण्ड) को 'आर्यरत्न पुरस्कार' प्रदान करते हुए पुलिस आई.जी. श्री. सत्यपाल सिंहजी, केन्द्रीय मंत्री श्री विलास मुत्तेमवार, आचार्य बलदेवजी, आचार्य प्रद्युम्नजी, राव हरिश्चन्द्र आर्य

श्रद्धेय स्वामी रामदेवजी महाराज हरिद्वार 'आर्यरत्न पुरस्कार' स्वीकार करते हुए

पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, ज्ञानपुर भदोही (उ.प्र.) को 'आर्य विभूषण पुरस्कार' प्रदान करते हुये स्वामी रामदेवजी महाराज
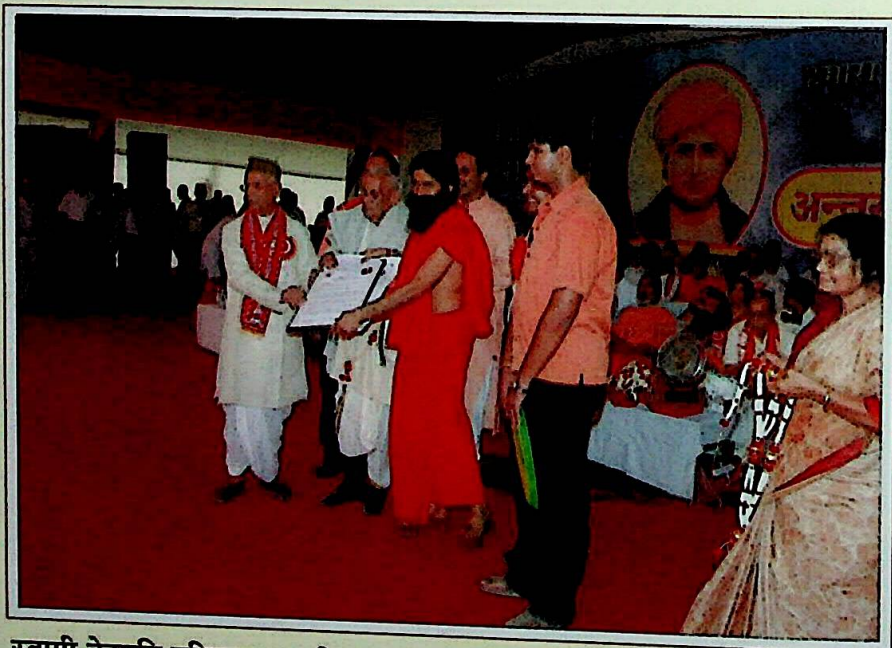
स्वामी वेदमुनि परिव्राजक नजीबाबाद का पुरस्कार ग्रहण करते हुए उनके प्रतिनिधि

डॉ. भवानीलालजी भारतीय,जोधपुर (राज.) को 'आर्य विभूषण पुरस्कार'
प्रदान करते हुए स्वामी रामदेवजी महाराज

प्रा. श्री. राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर (पंजाब) को 'आर्य विभूषण पुरस्कार'
प्रदान करते हुए स्वामी रामदेवजी महाराज

डॉ. महावीर (डी.लिट्) गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार (उत्तराखंड) को 'आर्य विभूषण पुरस्कार' प्रदान करते हुए स्वामी रामदेवजी महाराज

महात्मा सुखदेवजी आर्य तपस्वी दिल्ली को 'आर्य विभुषण पुरस्कार' प्रदान करते हुये राव हरिश्चन्द्र आर्य व सुपुत्र महिपाल आर्य

पण्डित ताराचन्दजी वैदिक तोप नारनौल हरियाणा को स्वामी रामदेवजी 'आर्य विभूषण पुरस्कार' देते हुए ।

डॉ. प्रियव्रत दासजी, भुवनेश्वर (उड़ीसा) को 'आर्य विभूषण पुरस्कार' प्रदान करते हुए स्वामी रामदेवजी महाराज

बीगोपुर स्थित चिकित्सालय भवन का शिलान्यास
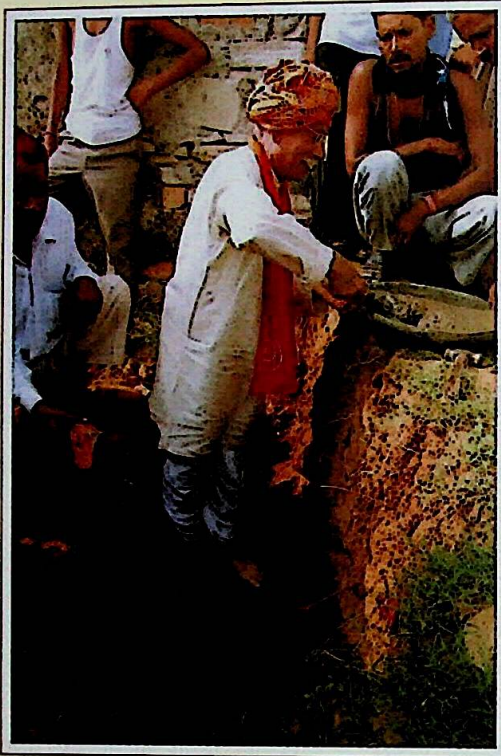
श्रीमती शान्तिदेवी हरिश्चन्द्र आर्य राजकीय चिकित्सालय बीगोपुर (हरियाणा) का शिलान्यास करते राव हरिश्चन्द्र आर्य

नवनिर्मित चिकित्सालय भवन

श्रीमती शान्तिदेवी हरिश्चन्द्र आर्य राजकीय चिकित्सालय बीगोपुर, हरियाणा का प्रवेश द्वार

श्रीमती शान्तिदेवी हरिश्चन्द्र आर्य, राजकीय चिकित्सालय बीगोपुर का नवनिर्मित भवन
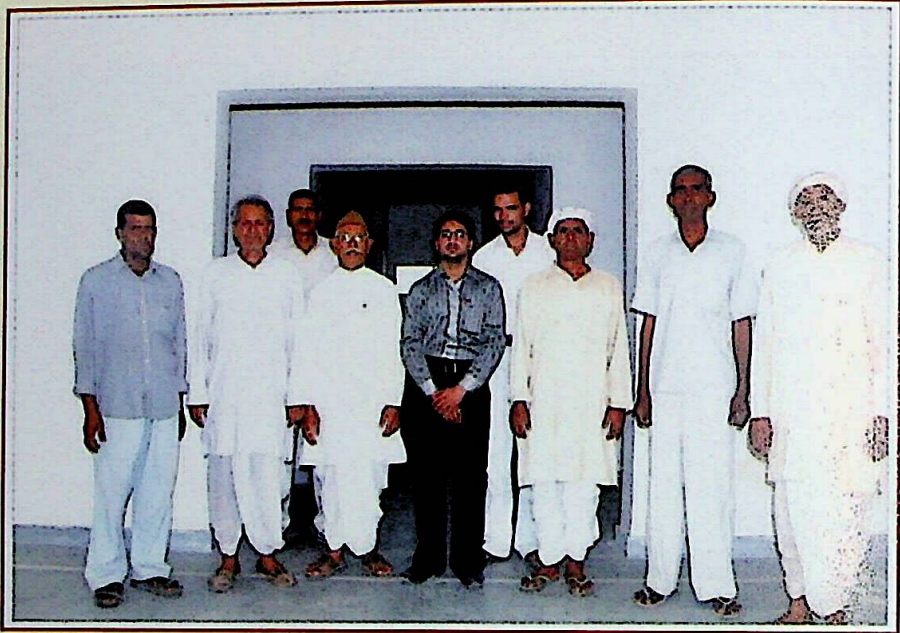
श्रीमती शान्तिदेवी हरिश्चन्द्र आर्य राजकीय चिकित्सालय बीगोपुर, हरियाणा में ग्रामीणजन एवं परिवार के सदस्यगण
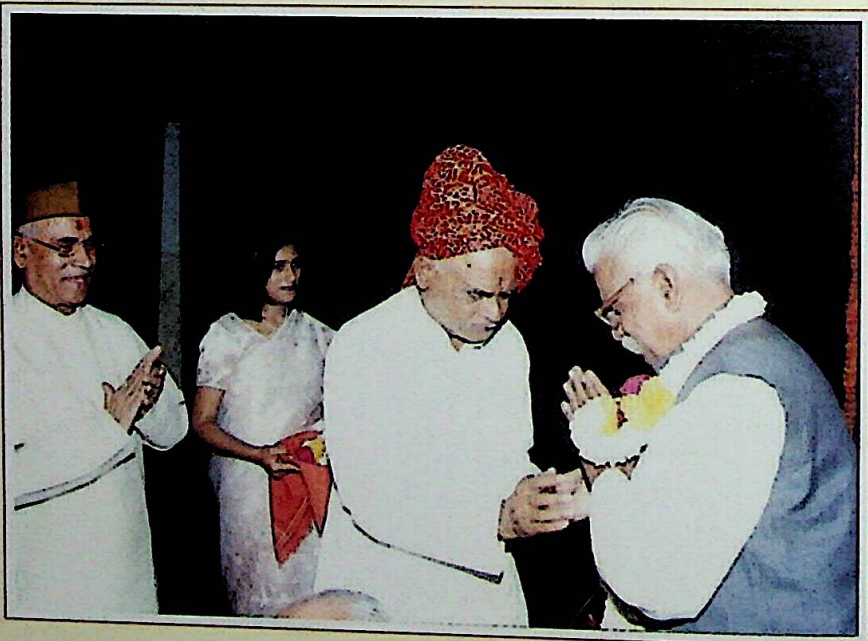
आर्य जी के बड़े भाई श्री धनसीराम जी श्री जयसिंह गायकवाड (जबलपुर) का स्वागत करते हुए।

आर्यरत्न पुरस्कार ग्रहण करते हेतु पधारे स्वामी रामदेवजी का चन्दन तिलक लगाकर स्वागत करती हुये कु. सुमेधा आर्य
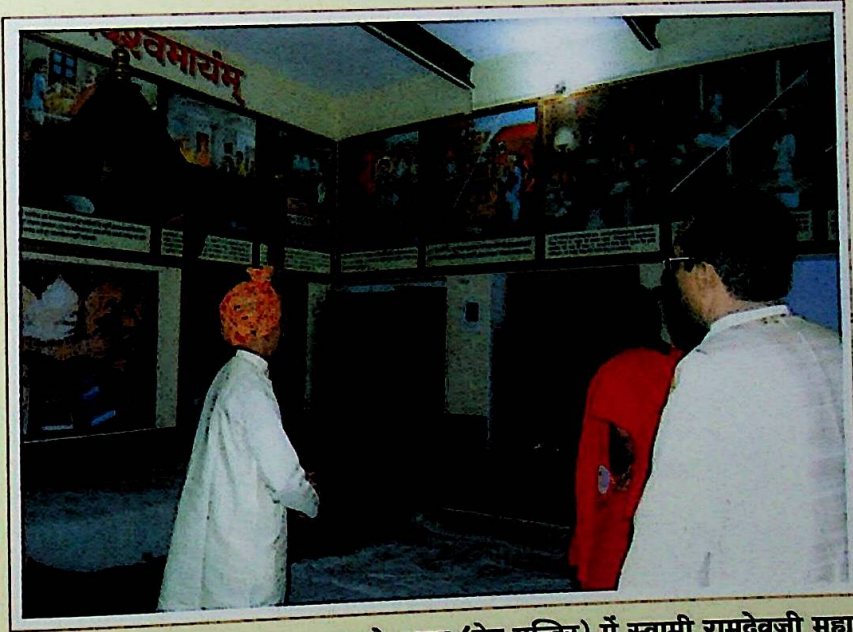
बीगोपुर आगमन के समय दयानन्द सेवाश्रम (वेद मन्दिर),में स्वामी रामदेवजी महाराज, सभागार में अंकित महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन वृत्त का अवलोकन करते हुए

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से सहायता

कारगिल युद्ध सहायता कोष में सहायता

कारगिल युद्ध के समय ट्रस्ट की ओर से जिलाधीश को ५१,०००/-
देते हुए राव हरिश्चन्द्र आर्य

गुजरात भूकंप पीड़ितों को सहायतार्थ चेक देते हुए राव हरिश्चन्द्र आर्य

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. में

प्रधान संस्थापक व संचालक पूज्य वैद्य रामनारायणजी का स्वागत करते हुए राव हरिश्चन्द्र आर्य

श्री धन्वन्तरि जयंती महोत्सव नागपुर में संबोधन करते हुए राव हरिश्चन्द्र आर्य

वैद्यराज श्री शिवकरण शर्मा छांगाणी का शाल श्रीफल से स्वागत करते हुए
राव हरिश्चन्द्र आर्य

आयुर्वेद के प्रसिद्ध वैद्यराज श्री शिवकरण शर्मा छांगाणी के स्वागत समारोह को सम्बोधित
करते राव हरिश्चन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव टंकारा में

राव हरिश्चन्द्र आर्य सम्बोधन करते हुए

महर्षि दयानन्द सरस्वती, बोधोत्सव टंकारा में उपस्थित जनसमूह और श्रोताओं के मध्य विराजमान श्रद्धालु राव हरिश्चन्द्र आर्य

दयानन्द आर्य कन्या विद्यालय, नागपुर के वार्षिकोत्सव के अवसरपर
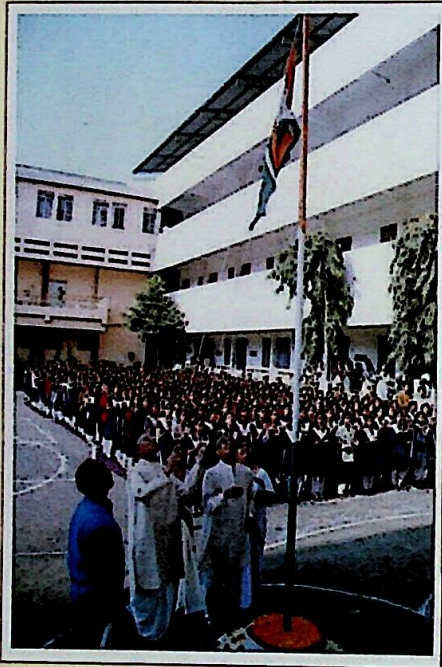
वाषिकोत्सव पर ध्वजारोहण
करते राव हरिश्चन्द्र आर्य

छात्राओं को सम्बोधित
करते राव हरिश्चन्द्र आर्य

राव हरिश्चन्द्र आर्य
चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा
(स्वर्ण पदक प्राप्त)
छात्रा को
गोल्ड मेडल देते
राव हरिश्चन्द्र आर्य

शिलान्यास समारोह

डी.ए.बी. पब्लिक स्कूल नारनौल (हरियाणा) की यज्ञशाला का शिलान्यास करते समय प्रमुख जनों के साथ हुए राव हरिश्चन्द्र आर्य

शिलान्यास के अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ज्ञानप्रकाशजी चोपड़ा का स्वागत करते हुए राव हरिश्चन्द्र आर्य

उद्घाटन समारोह
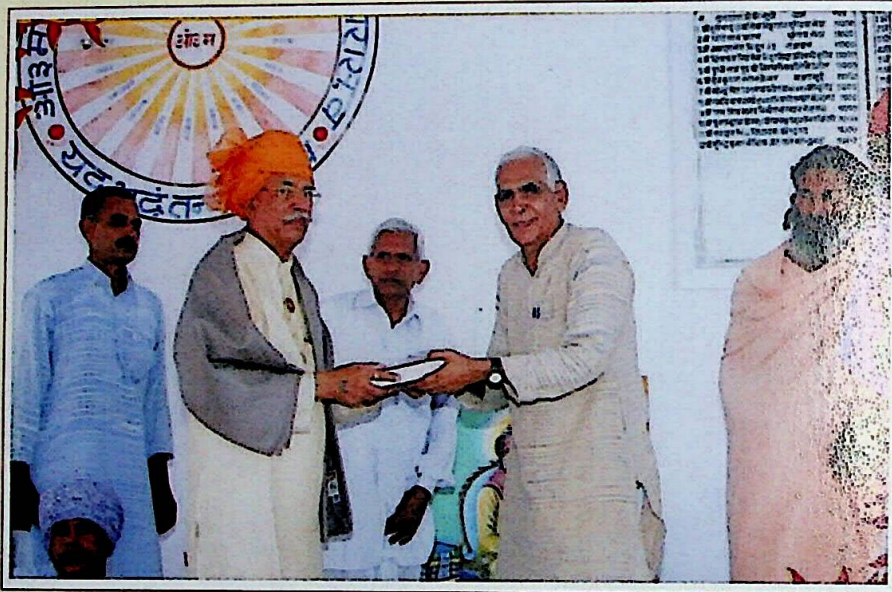
आर्य समाज महेन्द्रगढ़ के प्रधान राव हरिश्चन्द्र आर्य का स्वागत करते हुए

आर्य समाज महेन्द्रगढ़ वाचनालय का उद्घाटन
करते हुए राव हरिश्चन्द्र आर्य

दो आर्य दानी महानुभावों का स्नेहिल मिलन

चौधरी मित्रसेनजी सिंधु, रोहतक एवं राव हरिश्चन्द्र आर्य, नागपुर
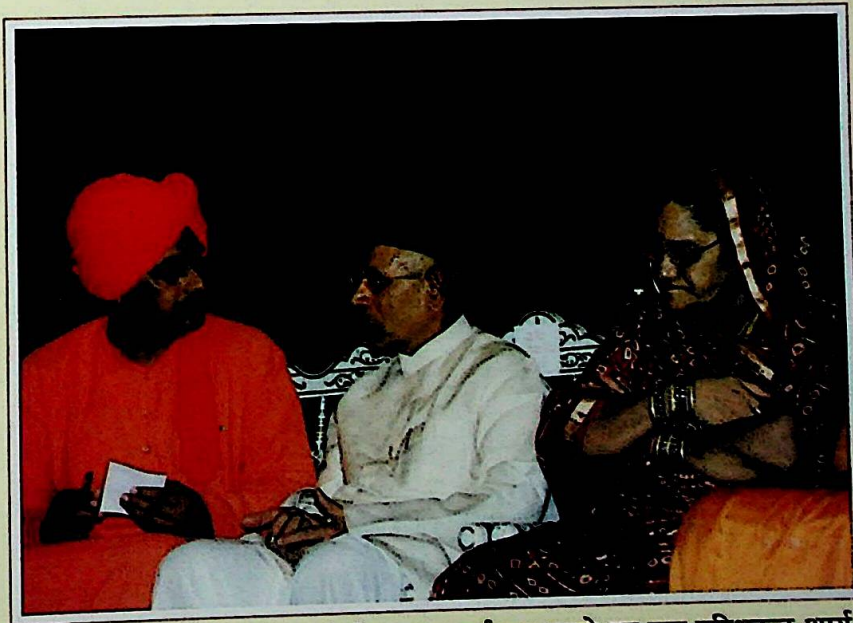
स्वामी सुमेधानन्दजी पिपराली के साथ वार्तालाप करते हुए राव हरिश्चन्द्र आर्य एवं श्रीमती शांतिदेवी आर्या
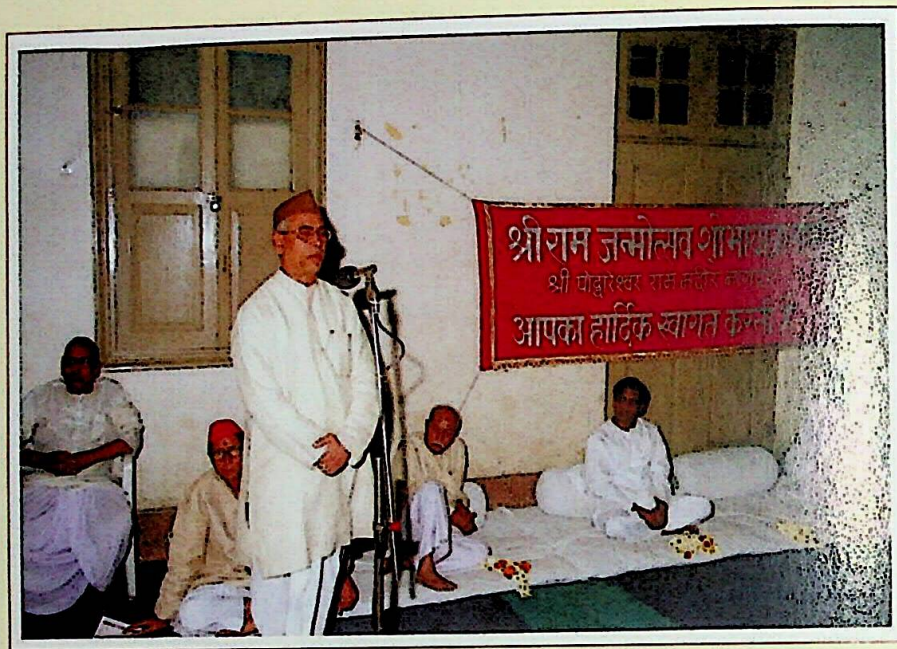
श्री राम जन्म शोभा यात्रा नागपुर की बैठक को सम्बोधित करते हुये राव हरिश्चन्द्र आर्य

बीगोपुर में,स्वामी रामदेवजी के पिता का स्वागत करते हुए श्रीमती स्नेहलता आर्या

पंचम खण्ड

अमृत महोत्सव

संगठन-सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।।१।।
हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन वृष्टि को ।।

सङ्गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।।२।।
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।।३।।
हों विचार समान सब के चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।४।।
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिस से बढ़े सुख सम्पदा।।

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव एवं नागरिक अभिनन्दन का आयोजन

संक्षिप्त विवरण

डॉ. सुरेन्द्रकुमार, सम्पादक

आर्य जगत् के उदार, सौम्य, समाजसेवी, ऋषि पथ के पथिक राव हरिश्चन्द्र आर्य का अमृत महोत्सव एवं सार्वजनिक नागरिक अभिनन्दन नागपुर स्थित 'वसन्तराव देशपांडे सांस्कृतिक सभागृह' में दिनांक २१ मई २०११ को उल्लास एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में श्रद्धेय स्वामी रामदेवजी के मुख्य आतिथ्य एवम् श्री बनवारीलाल पुरोहित पूर्व सांसद की अध्यक्षता व अनेक देश के जाने-माने विद्वान्,संन्यासी आर्यजन तथा राजनेताओं के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ ।

कार्यक्रम में अभिनन्दन समिति के अध्यक्ष पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी गुरुकुल आमसेना, सर्वश्री पूज्य आचार्य बलदेव जी, आचार्य विजयपालजी योगार्थी गुरुकुल झज्जर, स्वामी दिव्यानन्द जी ज्वालापुर, स्वामी व्रतानन्द जी उड़ीसा, स्वामी प्रणवानन्द जी दिल्ली, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी कुरुक्षेत्र, डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी गुडगांव, आचार्य सत्यानन्द जी नैष्ठिक, आचार्य देवशर्माजी दिल्ली, आचार्य दयासागर जी, स्वामी ऋतस्पति जी, ब्र. नन्दकिशोर जी व श्री सत्यपालजी मुम्बई, श्री विनय आर्य मन्त्री दिल्ली सभा,श्री. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती, नागपुर नगर की महापौर श्रीमती अर्चना डेहनकर, विधायक रवि राणा आदि व अनेक गणमान्य राजनेताओं की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ । सभागृह श्रोताओं से खचाखच भरा था ।

समारोह आरम्भ होने से पूर्व आयोजक मण्डल द्वारा राव हरिश्चन्द्र जी आर्य को एक फूलों से सुसज्जित खुली जीप में जुलूस के रूप में गाजे-बाजे के साथ सभागृह तक ले जाया गया। आर्यजगत् के गणमान्य संन्यासी, विद्वान् और नेता उनके साथ थे। खचाखच भरे सभागृह में श्रोताओं ने खड़े होकर और तालियों की गड़गड़ाहट के साथ पूरे उत्साह से आर्य जी के आगमन का स्वागत किया। शंखध्वनि ने वातावरण को गुंजायमान करके और जोश भर दिया। दीपप्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का आरम्भ हुआ। मंच संचालक श्री महेश तिवारी के द्वारा अभ्यागत विशिष्ट अतिथियों के परिचय एवं स्वागत के उपरान्त कन्या गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तदुपरान्त डॉ. महावीर आचार्य एवं उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने आर्य जी का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत किया। डॉ. सुरेन्द्रकुमार (मनुस्मृतिभाष्यकार) ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया और प्रमुख अतिथियों के साथ मिलकर वह आर्य जी को स्मृतिचिह्न के सहित भेंट किया। उसके पश्चात् अध्यक्ष द्वारा 'अभिनन्दन ग्रन्थ' का विमोचन किया गया। तत्पश्चात् अभिनन्दनीय व्यक्तित्व राव हरिश्चन्द्र जी आर्य ने सभा को संबोधित करते हुए दृढ़ता से कहा कि मैं आज जो कुछ भी हूं वह आर्य संस्कारों के कारण हूं। मैने अपने जीवन में आदर्शों को चुना और जीवनभर उनका पालन किया। मेरा यह विचार रहा है कि मनुष्य को अपने लिए धन-संग्रह खूब करना चाहिए किन्तु साथ-साथ समाज सेवा

करना भी उसका नैतिक कर्तव्य है। परमात्मा की कृपा और परिश्रम से प्राप्त सफलता से जो लोग साधन-सुविधा सम्पन्न हो गये हैं उनको जरूररतमन्दों की भी सहायता करनी ही चाहिए। इसी भावना से मैंने अपनी घनराशि से एक धमार्थ ट्रस्ट का निर्माण कर उसकी ओर से संन्यासियों ओर विद्वानों के लिए पुरस्कारों की व्यवस्था की है। ट्रस्ट के निर्माण से पूर्व और आज भी मैं अपनी तथा ट्रस्ट की ओर से अनेक गोशालाओं, गुरुकुलों, आश्रमों, मन्दिरों,संगठनों,आर्यसमाजों, सामाजिक सभाओं आदि को प्रतिवर्ष लाखों रुपयों के दान से सहायता कर रहा हूँ। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि मुझे शक्ति-सामर्थ्य और चिरायु प्रदान करे जिससे मै परोपकार के कार्य में संलग्न रहकर अपने जीवन को अधिक पुण्य का भागी बना सकूं और जरूररतमन्दों की सहायता कर सकूं।

इसके पश्चात् तुलादान का आयोजन हुआ। आर्य जी के शरीर-भार के बराबर स्कूल बैग तोलकर उनको स्थानीय अन्ध महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए दान में दे दिया गया। साथ ही पर्याप्त दानराशि भी प्रदान की।

तुलादान के पश्चात् शुभाशीष का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। विशिष्ट अतिथि एवं महापौर श्रीमती अर्चना डेहनकर ने अपने आरम्भिक वक्तव्य में श्री आर्य जी के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त कीं और इनको नागपुर का गौरव बताया। उन्होंने कहा कि नागपुर वासी श्री आर्य जी की समाजसेवा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। आर्य जी हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। वीतराग सन्त आचार्य बलदेव जी ने कहा कि आर्य जी जैसे दानी व्यक्तियों से समाज-सेवियों को प्रोत्साहन मिलता है। दान देना अपने लिए पुण्यकमाने का कार्य है तो साथ ही धर्म के प्रचार-प्रसार का साधन है। स्वामी सम्पूर्णानन्दजी ने कहा कि राव हरिश्चन्द्र जी ने जहां भी कहीं कार्य किया है वहां अपनी अलग पहचान बनाई है। इनमें विनम्र व्यवहार और मधुर भाषण के ऐसे गुण हैं जो व्यक्ति को अपना बना लेते हैं। आचार्य विजयपाल जी ने कहा कि समाजसेवा के माध्यम से आर्य जी ने नागपुर के साथ-साथ हरियाणा का नाम भी रोशन किया है। स्वामी प्रणवानन्द जी ने आर्य जी के मिलनसार और दानी स्वभाव की प्रशंसा की और उसे अनुकरणीय बताया। श्री सत्यपालजी आर्य आई.जी. ने अपने वक्तव्य में बताया कि जब मैं नागपुर में पुलिस कमिश्नर के पद पर नियुक्त हुआ तो मैंने लोगों से आर्य जी का नाम और प्रशंसा सुनी थी। इनसे मिलकर मुझे भी प्रेरणा मिलती है। इनके अतिरिक्त विधायक श्री रवि राणा,श्री देवशर्मा दिल्ली और श्री दयासागर, छत्तीसगढ़ ने भी आर्य जी को शुभकामनाएं प्रदान कीं। सभी वक्ताओं ने आर्य जी की दीर्घायु एवं सुस्वास्थ्य के लिए मंगलकामना की और उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया।

अभिनन्दन समिति के प्रधान श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्दजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा मै राव हरिश्चन्द्र को बहुत लम्बे समय से जानता हूँ । ये कोई बहुत बड़े पूंजीपति या कारखानों के मालिक नहीं हैं। लेकिन उदार मन के धनी,वैदिक धर्म के दीवाने,कर्मठ, समाजसेवक,वैदिक विद्वानों के श्रद्धालु, धर्म और श्रद्धा के प्रत्येक कार्य में बढचढ कर भाग लेनेवाले व्यक्तित्व के धनी हैं। उदार व दानशीलता की प्रतिमूर्ति हैं । आपने अपने कार्य को प्रभु का कार्य

समझकर लग्न, निष्ठा, व ईमानदारी से पूरा किया है । यही वजह है कि बैद्यनाथ भवन में एक छोटे पद से सेवा आरंभ करके उद्योग के सर्वोच्च पद महाप्रबंधक (जनरल मैनेजर) के पद से ५३ वर्षों के सेवाकाल के बाद अवकाश ग्रहण किया है ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रद्धेय स्वामी रामदेवजी ने कहा कि इस छोटे से जीवन को छोटे लक्ष्यों के साथ गुजारना इसका अपमान है । यह जीवन प्रभु का दिव्य उपहार है । हर मानव का कर्तव्य है कि वह बडे उद्देश्यों को सामने रखकर जीवन बिताएँ। आगे आपने कहा कि ब्रह्मांड हमें सेवा का सन्देशा देता है सूर्य, पृथ्वी, वृक्ष आदि हमें सेवा की प्रेरणा देते है । स्वामीजी ने राव हरिश्चन्द्र आर्य के विषय में कहा कि इन्होंने अपने जीवन में अच्छे कर्म करते हुए पुण्य कमाया है । शून्य से शुरुआत करते हुए अपनी मेहनत व निष्ठा के बल पर आगे बढकर समाज सेवा की है । यह सभी के लिये प्रेरणास्पद है ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री. बनवारीलाल पुरोहित ने कहा कि राव हरिश्चन्द्र आर्य से सादगी, विनम्रता, ईमानदारी की मानव मात्र को प्रेरणा मिलती है । साथ ही आपने कहा की स्वामी रामदेवजी के भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन का देश की जनता निश्चित रूप से साथ देगी । शुभाशीष कार्यक्रम के उपरान्त पुत्र श्री महिपाल एवं श्री यशपाल ने सभी अतिथियों और श्रोताओं का परिवार की ओर से आभार व्यक्त किया। स्वागत समिति के संयोजक श्रीपाद गोविन्द रिसालदार ने सभी श्रोताओं व आगन्तुकों का धन्यवाद किया कि उन्होंने समारोह की शोभा बढ़ाई। अन्त में अनेक सस्थाओं की ओर से अभिनन्दन तथा शान्ति पाठ व उत्तम भोज के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ ।

धन्यवाद !
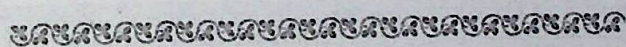
कल्याणकारी प्रार्थना

हे परमपिता परमेश्वर! मै अपने अन्तःकरण में आपकी भक्ति (स्तुति-उपासना) सदा श्रद्धापूर्वक करता रहूँ तथा वेदों में वर्णित धार्मिक कार्यों को भी प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक करता रहूँ। क्योंकि यही मुक्तिप्रद मार्ग है।

आपकी कृपा से मैं सदैव धार्मिक विद्वानों का सत्संग करता रहूँ और सज्जन लोगों के मार्ग पर ही चलता रहूँ। मुझ में ऐसी भावना भरो कि मैं पाप कर्मों से सदा डरता रहूँ और सत्कर्मों को सदा करता रहूँ

हे प्रभो! शरीर को अनेक रोग उत्पन्न होकर जर्जर कर रहे हैं। इन समस्त रोगों के निवारण हेतु ब्रह्मचर्यरूपी महा-औषधि का सदा सेवन करता रहूँ, ऐसी कृपा करो कि मैं अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करूँ।

सार्वभौम वैदिक नियम व उद्देश

१. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

३. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

अमृत महोत्सव की चित्रमय झलकियां

दीप प्रज्वलित कर अमृत महोत्सव का शुभारंभ करते हुए
आचार्य बलदेवजी, परिवार-जन एवं अध्यक्ष महोदय

समारोह में मंचासीन विद्वत्जन, संन्यासी और अधिकारीगण

सभागार में राव हरिश्चन्द्र आर्य का बृहत् पुष्पमाला के द्वारा स्वागत का दृश्य

अमृत महोत्सव में राव हरिश्चन्द्र आर्य एवं परिवार के सदस्यगण

राव हरिश्चन्द्र आर्य को अभिनन्दन पत्र प्रदान करते हुये डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी (मनुस्मृति भाष्यकार) श्री सत्यपाल सिंहजी, श्री. बनवारीलाल पुरोहित, आचार्य बलदेवजी , स्वामी संपूर्णानन्दजी, ब्र. नंदकिशोरजी एवं अन्य विशिष्ट जन

राव हरिश्चन्द्र आर्य अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन करते हुये श्री. सत्यपालसिंह जी,आई.जी.,मुम्बई, एवं नागपुर नगर की महापौर श्रीमती अर्चना डेहनकर, आमदार रवि राणा विधायक, अध्यक्ष श्री. बनवारीलालजी पुरोहित एवं अन्य विशिष्ट जन

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव के शुभअवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष पूर्व सांसद श्री. बनवारीलालजी पुरोहित सभा को सम्बोधित करते हुए

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए नागपुर नगर की महापौर श्रीमती अर्चना डेहनकर

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए आचार्य बलदेवजी, संरक्षक आर्य प्रति. सभा (हरियाणा) उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए अभिनन्दन ग्रन्थ समिति के अध्यक्ष पूज्य स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती, आमसेना (उड़ीसा)

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी, (मनुस्मृति भाष्यकार)

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए आचार्य देव शर्मा, वेदालंकार, दिल्ली

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए
स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार के उपकुलपति प्रो. महावीरजी, हरिद्वार
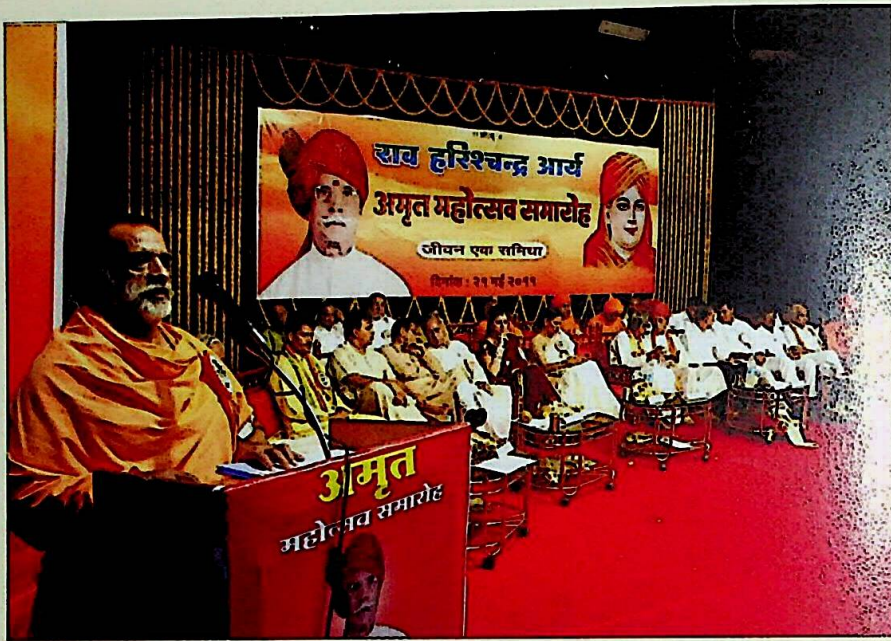
राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए आचार्य विजयपालजी, गुरुकुल महाविद्यालय, झज्जर (हरियाणा), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा
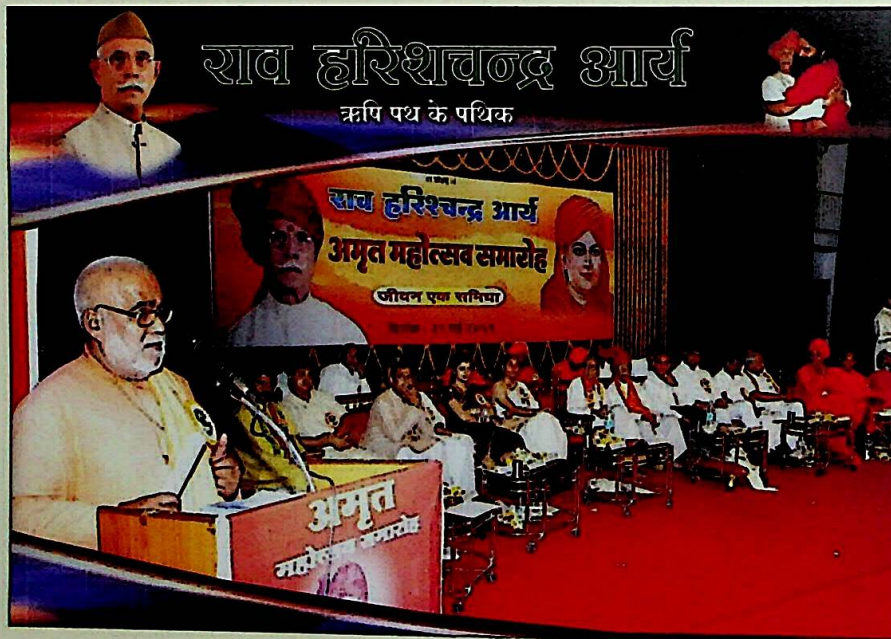
राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए स्वामी प्रणवानन्दजी, गुरुकुल गोतमनगर, नई दिल्ली

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए
पुलिस आई.जी. श्री. सत्यपालसिंह जी, मुंबई

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव को सम्बोधित करते हुए विधायक श्री. रवि राणा

अमृत महोत्सव के समय तुला दान का दृश्य

राव हरिश्चन्द्र आर्य का पुष्पमाला द्वारा स्वागत का एक दृश्य स्वामी रामदेवजी के साथ

पूज्य स्वामी रामदेवजी से राव हरिश्चन्द्र आर्य का स्नेहिल मिलन

राव हरिश्चन्द्र आर्य का स्वागत करते हुये पूज्य स्वामी रामदेवजी,
पूर्व सासंद श्री बनवारीलालजी पुरोहित एवं अन्य विशिष्ट जन

राव हरिश्चन्द्र आर्य को स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुये पूज्य स्वामी रामदेवजी व अन्य विशिष्ट जन

राव हरिश्चन्द्र आर्य अमृत महोत्सव में सम्बोधित करते हुए
पूज्य स्वामी रामदेवजी महाराज

पूर्व में संस्थाओं द्वारा सम्मानित कुछ अभिनन्दन पत्र

ओ३म्

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

अभिनन्दन - पत्र

श्रद्धामयी मातृशक्ति एवम् उपस्थित धर्मंहृदय श्रोतृवृन्द!

हमारे अपने ही बीगोपुर गांव की धरती पर जन्मा, पला, खेला-कूदा हमारा लाड़ला राव हरिश्चन्द्र आर्य [illegible] की भांति अपने महान् दान-कर्म से दिग्दिगन्त को गुंजाता हुआ हमारे मध्य आ पहुँचा है। आओ! हम सब मिलकर अपने प्यारे सुपुत्र का स्वागत करें, हृदय से अभिनन्दन करें और साथ में इसके आरोग्य व दीर्घायुष्य के लिये भगवान से प्रार्थना करें कि यह इसी प्रकार महान सौभाग्य को प्राप्त करता हुआ सौ वर्ष से भी अधिक लम्बी उमर प्राप्त करें। इनके पुत्र-पुत्रियाँ, पौत्र-प्रपौत्र इनकी ही तरह धार्मिक, सदाचारी, उदार, निर्व्यसनी, स्वाध्याय व सत्संग प्रेमी हों। इनका यश सागर व नदियों की तरह अनन्त काल तक सुस्थिर रहे। इनके द्वारा समाज कि की गयी सेवा हमारे पूर्व पुरुषा भामाशाह की याद दिलाने वाली है।

धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का [illegible] भारत संहिता के रचयिता महान् विद्वान् वेदव्यास की निम्न सूक्तियों को यह महापुरुष अपने जीवन में सदा चरितार्थ करता रहे, यही शुभाशंसा वा मंगल कामना है।

दानाद् दुष्करतरं पृथिव्यामस्ति किञ्चन। (वन. २५९/२८)

पृथिवी पर दान से ज्यादा मुश्किल कोई चीज नहीं है।

यानीमान्युत्तमानीह वेदोक्तानि प्रशंससि। तेषां श्रेष्ठतरं दानमिति मे नात्र संशयः॥ (१२०/१७)

महर्षि व्यास मैत्रेय से कहते हैं कि तुम जिन जिन वेदोक्त उत्तम कर्मों की यहां प्रशंसा करते हो, उन सबमें दान ही श्रेष्ठतर है, इस विषय में मुझे संशय नहीं है।

रूपं द्रव्यं बलं चायुर्भोगैश्वर्यं कुलं श्रुतम्। इत्येतत् सर्वमात्पुण्यं दानाद् भवति नान्यथा॥ (अ.१४५, पृ.५९६४)

रूप, द्रव्य, बल, आयु, भोग-ऐश्वर्य, उत्तम कुल और शास्त्रज्ञान इन सभी सद्गुणों की प्राप्ति दान से ही होती है।

अन्नप्रतिश्रयो दीपः पानीयं तृणमिन्धनम्।

स्नेहो गन्धश्च भैषज्यं तिलाश्च लवणं तथा एवमादि तथान्यच्च दानमनन्तमुच्यते॥ (अ.१४५, पृ.५९६५)

अन्न, निवास स्थान, दीप, जल, तृण (भूसा), ईन्धन, तेल, घी, गन्ध, औषधि, तिल और नमक ये तथा इसी प्रकार और भी बहुत सी वस्तुयें मिलकर दान करने योग्य बतायी गयी हैं।

नास्ति भूमौ दानसमं नास्ति दानसमो निधिः (अ.१४१, पृ.५९२३)

इस पृथिवी पर दान के समान कोई दूसरी वस्तु नहीं है और दान के समान कोई निधि नहीं है।

न वै देयमनुक्रोशाद् दीनायाप्यनुकम्पया। आप्ताचरितमित्येव धर्म इत्येव वा पुनः॥ (अ. २६/४४)

दीन-दरिद्र (क्षीण) तथा विप्र को भी तरस करते हुए (यह बेचारा दया के योग्य है इस भाव से) नहीं देना चाहिए किन्तु इसलिए कि आप्त (सत्यवादी धार्मिक पुरुष) ऐसा करते हैं अथवा इसलिए कि ऐसा करना धर्म है। (कारण कि तरस से दिया हुआ दान लेनेवाले को ऊँचा नहीं उठाता, उससे वह अपने आपको और तुच्छ समझता है)

शुभेन विधिना लब्धमर्हाय प्रतिपादयेत्। क्रोधमुत्सृज्य दत्त्वा च नानुतप्येन्न कीर्तयेत्॥ (शां. ३०५/११)

शुभ विधि से प्राप्त धन सुपात्र को दें। क्रोध न करते हुए दें, और देकर पश्चात्ताप न करे और न दूसरों के समक्ष अपनी वाणी से बतलावे।

दानं हि महती क्रिया। (अनु. ५/२६)

दान निश्चय ही एक महान् कर्म है।

सदैव याचमानेषु तथा दम्भान्वितेषु च। एतेषु दक्षिणा दत्ता दावाग्नाविव दुर्हुतम्॥ (शां. १८/२५)

जो नित्य माँगते रहते हैं (अर्थात् जो भिखारी हैं) और जो दम्भी हैं (अर्थात् दिखाने के लिए पाखण्डपूर्ण धर्माचरण करते हैं) उन्हें दान देना ऐसा ही व्यर्थ है जैसा जंगल की आग में घृत की हवि डालना।

दानधर्मं निषेवेत, नित्यमैष्टिकपौर्तिकम्। परितुष्टेन भावेन, पात्रमासाद्य शक्तितः॥ (मनु. ४/२२७)

गृहस्थ सदा सन्तुष्ट मन से इष्ट अर्थात् यज्ञादि कार्यों के लिए और पूर्त अर्थात् कूप, तडागादि सार्वजनिक कार्यों के लिए स्वसामर्थ्यानुसार सत्पात्र को दान देवे।

अक्रोधना धर्मपराः, सत्यनित्या दमे रताः। तादृशाः साधवो विप्रास्तेभ्यो दत्तं महाफलम्॥

जो क्रोध न करनेवाले, धर्मपरायण, सदा सत्य व्यवहार करनेवाले, और मन को वश में रखने में तल्लीन हैं ऐसे सज्जन स्वभाववाले ब्राह्मणों को दिया गया दान महान् फलदायक होता है।

अमानिनः सर्वसहा दृढार्था विजितेन्द्रियाः। सर्वभूतहिता मैत्रास्तेभ्यो दत्तं महाफलम्॥

निरभिमानी, सबको सहन करनेवाले, दृढ़ लक्ष्यवाले, जितेन्द्रिय, सब प्राणियों का हित करनेवाले और सबके प्रति मित्र भाव रखनेवाले मनुष्यों को दिया गया दान महान् फलदायक होता है।

अलुब्धाः शुचयो वैद्या ह्रीमन्तः सत्यवादिनः। स्वकर्मनिरता ये च तेभ्यो दत्तं महाफलम्॥ (अनु. २२/११-१४)

निर्लोभी, पवित्र, दयापूर्वक चिकित्सा करनेवाले, लज्जाशील, सत्य के बोलनेवाले और अपने निर्धारित कर्म में तल्लीन मनुष्यों को दिया गया दान महान् फलदायक होता है।

दत्तं मन्येत यद् दत्त्वा तद् दानं श्रेष्ठमुच्यते। (अनु. ५९/४)

जब देकर यह समझे कि मैंने दे दिया (अब मेरा इसके साथ कुछ सम्बन्ध नहीं) वही श्रेष्ठ दान कहा जाता है।

दातव्यमिति यद् दानं दीयतेऽनुपकारिणे। देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं विदुः॥ (भीष्म ४१/२०)

निर्मल बुद्धि से जो दान, देश, काल और पात्र का विचार करके अनुपकारी (जिसने तुम्हारा पहले उपकार नहीं किया है) को दिया जाता है उसे सात्त्विक दान कहते हैं।

शुभाकांक्षी

आचार्य प्रद्युम्न

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, खानपुर (हरियाणा)

समर्पण स्थल : बीगोपुर

दिनांक : २३ अक्टूबर २००१

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के कोषाध्यक्ष विनम्रता की मुर्ति श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य को समर्पित

आदरणीय बंधु !

हमारा यह परम सौभाग्य है कि आप जैसे कर्मठ तेजस्वी आर्य नेता का हरियाणा की इस तेजस्वी पुण्य भूमि में पितामह श्री चेतरामजी, पिता श्री घन्नारामजी माता श्रीमति शृंगारी देवी की कोख से बीगोपुर ग्राम में जन्म लेकर जो आपकी जन्मभूमि है, हम समस्त आर्य बन्धु श्रद्धापूर्वक आपका स्वागत करते हुए अपरिमित सुख का अनुभव कर रहे हैं।

आर्य समाज के प्रहरी !

महर्षि दयानन्द की विचारधारा से प्रभावित श्री आर्य जी एक सत्य निष्ठ उपासक हैं। आप आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर के पिछले ११ वर्षों से लगातर कोषाध्यक्ष के सम्माननिय पद को विभूषित करते हुए सभा को एक शक्तिशाली संगठन तथा समृद्ध बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। संस्थागत आपके अमूल्य सुझावों का सदा सम्मान तथा क्रियान्वयन किया जाता हैं ।

कुशल एवं योग्य प्रशासक !

आप आर्य समाज के गौरव तो हैं ही साथ ही कुशल प्रशासक तथा संगठनकर्ता भी हैं। आप देश के प्रमुख आयुर्वेद प्रतिष्ठान श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. नागपुर में सीनियर मैनेजर जैसे ऊँचे पद पर पदासीन हैं।

विनम्र दानी !

आपके द्वारा संस्थापित राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा की जा रही सामाजिक सेवाओं से जहां आपकी धर्म एवं संस्कृति के प्रति उदारता प्रस्फुठित होती है वहीं करुणा तथा मानवीय भावना भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। आपके ट्रस्ट द्वारा बिना किसी ऊंच - नीच भेदभाव के दुःखी पीड़ितों, गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं एवं जनहित कार्यों में यथाशक्ति अधिकतम आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है।

हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए ईश्वर से आपकी शतायु:की कामना करते हैं। परमात्मा आपको सदा धर्म एवं समाज के परोपकार में सन्नद्ध रखे। हमारा यह अभिनन्दन पत्र आप सादर स्वीकार करें।

हम हैं आपके सहयोगी

समर्पण, बीगोपुर
दिनांक, ३ नवम्बर, १९९६

पं. सत्यवीर शास्त्री
प्रधान

डॉ. सत्यव्रत वि. मोपले
मंत्री

एवं समस्त पदाधिकारी
व अंतरंग सदस्य

आर्यप्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर

॥ ओ३म् ॥

अमर शहीद पं० लेखाराम बलिदान शताब्दी समारोह

(गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ-६ जून १९९९)
के अवसर पर

प्रशस्तिपत्रम्

श्रीमान् राव हरिश्चन्द्र आर्य निवासी नागपुर

आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् - लेखक - महोपदेशक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। जिस पर सारे आर्य समाज को गौरव है। ऐसी विभूति को 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' 'अमर शहीद पं० लेखराम बलिदान शताब्दी समारोह' पर "आर्य रत्न" उपाधि से विभूषित करके अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करती है।

गुरुकुल आश्रम आमसेना में सम्पन्न पं. लेखराम बलिदान शताब्दी समारोह में प्रदत्त

कार्यकर्ता प्रधान — मन्त्री — स्वागताध्यक्ष

तिथि:- 16-2-97

पं० लेखाराम बलिदान शताब्दी समारोह समिति
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

अस्थायी पता - आर्य समाज नया बांस, दिल्ली-६

मध्यप्रदेश शासन द्वारा पंजीयन क्रमांक IND5231/2001

श्रीकृष्ण कला साहित्य अकादमी
SHRI KRISHNA KALA SAHITYA ACADEMY

हाऊस नं. १२७, गोकुलगंज, (कन्डीलपुरा) इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 530707 फैक्स नं. (0731) 431968

जाति-पाति पुछे नहिं कोई। कृष्ण को भजे सो कृष्ण का होई।।

सम्मान-पत्र

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, नागपुर

आपने समाज में रहकर अपनी अद्भुत प्रतिभा से अपनी अमिट छाप छोड़ी है। एवं एक सच्चे समाज सेवी के रूप में आपको भगवानसिंह यादव सम्मान से सम्मानित करते हुए असीम हर्ष एवं गौरव प्राप्त हो रहा है। आपका जीवन प्रारंभ से ही देशभक्ति एवं समाज सेवा के प्रति रहा है, आपकी सेवाएँ, लगन, निष्ठा, दक्षता उल्लेखनीय तथा प्रशंसनीय है। अकादमी आपका सम्मान करके गौरवान्वित है।

समर्पण स्थल इन्दौर
दिनांक 24 नवम्बर 2001

रमेश यादव
केन्द्रीय अध्यक्ष
श्रीकृष्ण कला साहित्य अकादमी
हाऊस नं. १२७, गोकुलगंज कन्डीलपुरा,
इन्दौर-६ (म.प्र.)

॥ श्री धन्वन्तरये नमः॥

श्री बैद्यनाथ
आयुर्वेद भवन प्रा. लि. नागपुर

श्रीमान् राव हरीश्चन्द्र जी आर्य
को सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा. लि. नागपुर में आपके द्वारा ५५ वर्ष तक की गई उल्लेखनीय सेवाओं के लिए हम आपका हृदय से अभिनन्दन करते है। आपने अपने सेवाकाल में प्रतिष्ठान की सेवा बड़ी मेहनत और लगन से की है और प्रतिष्ठान के प्रगती में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
हम आशा करते है कि आप इसी प्रकार बैद्यनाथ परिवार के प्रति स्नेह रखते हुए आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार में निरन्तर लगे रहेंगे।

हम आपके दीर्घ जीवन व उज्ज्वल भविष्य की कामना करते है।

नागपुर
दिनांक : ३१.०३.२००७

स्नेहांकित
बैद्यनाथ परिवार

सम्पर्क सहयोग सेवा

ओ३म्

ग्राम गौरव अभिनन्दन-पत्र

सहयोग एवं सेवा हेतु तत्पर ग्राम गौरव श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य को सप्रेम भेंट

हे प्रेरणादायी

आज 26 दिसम्बर 2001 को शहीद ऊधमसिंह जयन्ती के पावन पर्व पर ग्राम गौरव सम्मान समारोह में आपके ग्राम बीगोपुर के समस्त ग्राम वासी, ग्राम सेवा समिति (रजि.) की ओर से आपका 'ग्राम गौरव' के सम्मान सें अभिन्दन करने पर अत्याधिक हर्ष का अनुभव कर रहे है।

ग्राम गौरव

आपकी दान वृति ने ग्राम बीगोपुर के गौरव को देश के लगभग सभी प्रदेशों और विदेशों में भी बढ़ाया है। आपने अपनी जन्म भूमी को एक विशाल और भव्य भवन स्वामी दयानन्द सरस्वती के सत्यनिष्ठ वैदिक सिद्धान्तो को आगे बढ़ाने हेतु समर्पित किया है। आप समय-समय पर ग्राम की विशेष जरूरतों पर उदारता से दान देकर अपना सहयोग देते रहे है। आप बीगोपुर के युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत है। एतव आप ही प्रथम 'ग्राम गौरव' सम्मान के वास्तविक अधिकारी हैं।

वैदिक सिद्धान्तों में अगाध श्रद्धा

आप वैदिक परम्पराओं और सिद्धान्तों में अगाध श्रद्धा रखते है। आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान तथा प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के कोषाध्यक्ष पद पर रहते हुये सभा की उन्नती हेतू प्रयासरत हैं। आर्य समाज बीगोपूर आपके संरक्षकत्व में दिनों-दिन उन्नती के पथ पर अग्रसर है।

उच्च अधिकारी एवं कुशल प्रशासक

आप देश के प्रमुख आयुर्वेद संस्थानं श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि0 में महाप्रबन्धक के पद पर पदासीन हैं। आप अच्छे संगठन कर्ता तथा कुशल प्रशासक हैं।

सुखद गृहस्थ जीवन

आपने साधारण किसान श्री धन्नाराम यादव एवं श्रीमती शृंगारी देवी के घर जन्म लेकर, जीवन संगिनी श्रीमती शान्ती देवी के साथ गौरवपूर्ण गृहस्थ जीवन का निर्वाह करते हुए, अपने दोनों पुत्रों एवं पुत्र वधुओं को भी सुसंस्कारों से सुशोभित किया है।

स्वये समाज सेवी

आपने समाज सेवार्थ राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ न्याय की स्थापना की है। जिससे गरीब, बेसहारा, विधवा, अपाहिजों और धार्मिक, समाजिक व शिक्षण संस्थाओं को दान देकर समाज सेवा का पुरूषार्थ कर रहे हैं।

ग्राम सेवा समिति आपका हार्दिक अभिनन्दन करती हुई आपकी दीर्घायु की कामना करती है तथा परमात्मा से प्रार्थना करती है, कि आपको स्वस्थ, सुखी एवं समृद्ध रखे। हमारा यह अभिनन्दन पत्र आप सादर स्वीकार करें।

-: हम हैं आपके स्नेही :-

समर्पण- ग्राम बीगोपुर
दिनांक- 26 दिसम्बर, 2001

मास्टर लक्ष्मण सिंह यादव
प्रधान
ग्राम सेवा समिति
बीगोपुर

समस्त कार्यकारिणी
ग्राम सेवा समिति (रजि0)
एवं
ग्राम बीगोपुर वासी

ऋग्वेद | यजुर्वेद

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्दमठ, गोहानामार्ग, रोहतक

प्रशस्ति-पत्र

सम्माननीय श्रीमान् राव हरिश्चन्द्र जी आर्य

बिरोपुर, महेन्द्रगढ़ निवासी के

वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज, गुरुकुल, शिक्षण-संस्था तथा विविध धार्मिक समारोहों में सर्वोच्च दानशीलता के आदर्श व्रत को स्मरण करते हुये समस्त आर्यजगत् आपका हार्दिक अभिनन्दन करता है और उसकी पावन स्मृति में इस शुभ अवसर पर यह प्रशस्ति-पत्र एवं शाल अतिशय सम्मान एवं श्रद्धापूर्वक अर्पण किया जाता है।

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन
कमला नेहरू पार्क, गुड़गांव।
दिनांक २५ अप्रैल, १६६६ ई०

ओमानन्द सरस्वती
स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान

सामवेद | अथर्ववेद

श्री बैद्यनाथ सेवकों की सहकारी पत संस्था, मर्या. नागपुर

की ओर से

श्री राव हरिश्चन्द्रजी आर्य

जनरल मैनेजर - श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा.लि., नागपुर

को समर्पित

अभिनन्दन -पत्र

आदरणीय बंधु,

हमारा यह परम सौभाग्य है की, आप जैसे समाज के सम्मानीत आर्य नेता के गौरव पात्र होनेपर भी श्री बैद्यनाथ सेवकों की सहकारी पत संस्था, नागपुर जैसे एक कामगारों की पत संस्था के अध्यक्ष रहकर आपने अपना कार्य बड़े अच्छे लगन और निःस्वार्थ रुपसे किया है।

हम समस्त श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रतिष्ठान के कर्मचारी तथा पत संस्था के सदस्य आपका सहर्ष स्वागत करते है।

कुशल एवं योग्य प्रशासक —

मानवता सत्कार मूर्ति आप आर्य समाज के गौरव तो है ही, साथ ही एक कुशल प्रशासक तथा संघटनकर्ता भी है। देश के प्रमुख आयुर्वेद प्रतिष्ठान श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा.लि. नागपुर मे जनरल मैनेजर जैसे ऊंचे पद पर पदासीन रहे है। आपने अपनी आयु के ७४ में से ५४ साल तक प्रतिष्ठान की सेवाकर, कार्य लाभ दिया है।

विशेष दानी —

सामाजिक सेवाओंसे आपकी धर्म एवं संस्कृती के प्रति उदारता प्रतीत होती ही है। आपके द्वारा संस्थापित राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा बिना किसी ऊँच-नीच भेदभावके दुखी, पिड़ितों, गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं एवं जनहित कार्यों "जे का रंजले गांजले, त्यासी म्हणे जो आपुले" इन संतो के अमृतवाणी को कार्यान्वयन करने के उद्देश्य से आप अपने ट्रस्ट द्वारा यथाशक्ति अधिकतम सहयोग प्रदान किया जाता है।

हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए ईश्वर से आपकी स्वास्थ एवं शतायु की कामना करते है। परमात्मा आपको सदा धर्म एवं समाज के परोपकार मे संलग्न रखें।

हमारा यह अभिनन्दन पत्र आप सादर स्वीकार करेंगे।

आपके सहयोगी
श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के कर्मचारी गण एवं पत संस्था सदस्यगण, नागपुर

॥ ओ३म् ॥

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव

स्वामी श्रद्धानंदजी बलिदान दिवस

पर्व के उपलक्ष्य में

दिनांक : ०७ जनवरी, २००७

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ एवं छत्तीसगढ़

दयानंद भवन, मंगलवारी बाजार, सदर नागपुर.

आर्य-श्रेष्ठ सम्मान पत्र

माननीय आर्य श्री/श्रीमती राव हरिश्चंद्रजी आर्य आर्य समाज नागपुर, ने अपने अथक प्रयासों द्वारा तन-मन-धन से महर्षि देव दयानंद के कार्यों को प्राणी मात्र के कल्याण हेतु एवं राष्ट्रीय उत्थान के लिए जो रचनात्मक कार्य किए हैं, तदर्थ, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ एवं छत्तीसगढ आपको

"आर्य-श्रेष्ठ" की उपाधि से सम्मानित करती है।

भविष्य में भी आप ऋषि देव दयानन्द के मार्गों पर चलकर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को सार्थक बनाने का प्रयास करेंगे।

(पं. सत्यवीर शास्त्री)	(प्रा. अनिल शर्मा)	(अशोक यादव)	(श्रीमती राजेश हाण्डा)
प्रधान	मन्त्री	कार्या. मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ एवं छत्तीसगढ़, नागपुर.

YADAV SEWAK SAMAJ (REGD.) DELHI

Certificate of Honour

We the members of Yadav Sewak Samaj feel pleasure to honour Sh./~~Smt.~~ RAO HARISH CHANDER ARYA for his/~~her~~ dedicated and meritorious services in the field of Education, Medical Science, Literature, Social Service and Sports.

New Delhi
Date : 05-12-2004

President

General Secretary

ओ३म्

On the occasion of jointly organized

International Arya Maha Sammelan Chicago (U.S.A.) 2007

by Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha & Arya Samaj of Chicagoland

We take great pride in honoring

Shri/Shrimati राव हरिश्चन्द्र आर्य (नागपुर)

for their outstanding participation and lasting contribution

Granted : July 9, 2007

Dr. S. C. Soni (Chairman) Arya Maha Sammelan

Pt. Ramlall (Chairman) Reception Committee

Dr. Dilip Vedalankar

Dr. Anil Oonkar

अमृत महोत्सव, २१ मई २०११

राव हरिश्चन्द्र आर्य

"शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकिर" (वेद)